धि विस स्थानकना तपनी विधि यथा पञ्चक्खाणो ए करी हेत आ पूस्तक तैयार करवामां आव्युं छे के दरेक धर्म कार्यमां आ ठज पूस्तक उपयोगी थइ पडे. जेने जेने जे वस्तुनी जरुर पडे ते नुक्रमणिका जोवाथी मली जशे.

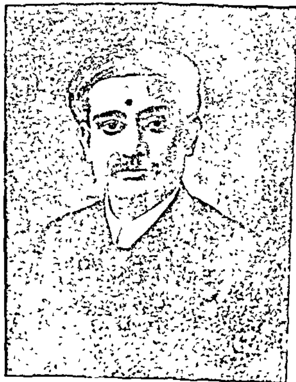
बंधुओ आ उपरथी आपने जणाशे के आ पूस्तक केटलुं बधुं योगी छे. तेने सहाय आपनार भाग्यशाळी पण केटलुं पुन्य उपा- न करे तेम छे.

आ पूस्तकने सहाय आपनार अमदावादना नगरशेठ पेमाभाइ- गाभाइना सुपुत्र शेठ. लालभाइना चीरंजीवि शेठ चमनभाइनगरशेठ । पटवीने अपूर्व शोभावी–उत्तमोत्तम् जैन शासनना काम करी टुंक खतमां अवशान पामेला छे. तेमनाज पगले चालनारा अने महा दार भद्रीक तेमना सुपत्नि विधवा शेठाणी महालक्ष्मीबेननी उदार हायताथी आ पूस्तकनी नकलो ८०० वहार पाडवामां आवी छे ओ शेठजी साहेब–शेठ चमनलालभाइनो फोटो तथा तेमनुं टुंक वनवृत्तांत आ साथे जोडवामां आवेलुं छे साथे पूज्य गुरुवर्य मान् श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी महाराजना फोटा साथे तेमनुं क जीवनवृत्तांत पण मुकवामां आव्युं छे. सुज्ञ जैन बंधुओ वा भाग्यशाळी पुरुषोनी पछवाडे पण आवा सुकृत्योमां मनी शु कमाणीनो सद्व्यय थाओ अने तेमना आत्माने तो मलो एवी शुभ आशिश साथे आ लेख समाप्त करतां आ पूस्तकनी अंदर कंइ भुलचुक थइ होय के प्रेस दोष अथवा दृष्टि दोषथी जे कंइ अशुद्धता रही होय तेने माटे मिच्छामि- दुक्कडं दउंछुं अने सर्व गुज्ञ बंधुओने सुधारीने वांचवा भलामण करुं छुं वली ते विषे मने कोइ जणावशे तो हुं आभार मांथे बीजी आवृत्तिमां ते सुधारो करश एवी विनंति साथे आ लेख समाप्त करवामां आवे छे.

सुज्ञेषु किं बहुना. ली. प्रसिद्धकर्ता.

મર્હૂમ નગરશેઠ ચીમનભાઈ લાલભાઈ

નગરશેઠ—અમદાવાદ.



महुम नगरशेठ चीमनलाल लालभाइनुं
टुंक जीवन वृतांत,

श्रीमान् नररत्न शेठ चीमनभाइनो जन्म प्रसिद्ध गुर्जर देशना मुख्य शहेर राजनगर (अमदावाद) मां, संवत १९४० ना असाड मासमां थयो हतो. ते बादशाही वखतमां नगरशेठनी पदवीने मेळवनार शेठ शांतिदासना वंशमां थएला प्रतापी शेठ हीमाभाइना पुत्र थता हता.

चीमनभाइनो जन्म थया पछी थोडाज वखतमां तेमनी मातुश्री देवगत थया. अने त्यार पछी केटलाक वखतना अंतरे तेमना पीताश्री पण आ असार संसारमांथी परलोके पहोंच्या. आवी रीते शेठ चीमनभाइ आशरे आठेक मासनी नानी वयमांथीज मावाप विनाना थइ पडया.

तेओ प्रथम केटलोक वखत पोताना मोसालमां रह्या, अने त्यार पछी तेमना काका शेठ मणीभाइए तेमने पोतानी पांसे राखी धार्मीक तथा व्यवहारीक केळवणी आपवा माटे योग्य व्यवस्था करी.

त्यार पछी थोडाक वखत केडे शेठ मणीभाइ पण स्वर्गवासी थया. एटले शेठ चीमनभाइने पोतानो वहीवट संभाळवानुं तेमना पोताना शीर उपर आवी पडयुं.

शेठ चीमनभाइ स्वभावे उदार मायाळु अने नम्र तथा विचक्षण हता. तेओ आपणी जैन कोमनी श्री आणंदजी कल्याणजीनी पेढीना प्रमुख हता, तेमज अमदावादनी पांचमी श्री जैन श्वेतांबर कोन्फरन्सनी रीसेप्शन कमीटीना पण प्रमुख हता. तेओ धर्ममां संपूर्ण श्रद्धावान हता एटलुंज नहीं पण परम उपकारी शासनरक्षक गुरुमहाराज श्री विजयनेमि सूरीश्वरजी महाराजना परम भक्त हता जैन

सासनना गमेते काम आवे तेमां पूर्ण उत्साहथी अने
करता हता जरुर पडे गुरुमहाराजनी सलाह पूछता ह
पार पाडवामां घणा उत्साहि हता.

आ असार जगतनी स्थिति अनियमित छे,
-ति पण विषम छे. आ वखते शेठ चीमनभाइने ता
ागु थइ, अने घणी तरेहनी योजना करवा छतां
ति फायदो थयो नहि, छेवटे शरीर वधारे नरम थतं
वत १९६८ ना श्रावण मासमां पोतानी अडावीस
ग फानी दुनिआनो त्याग करी गया.

तेओ पोतानी पाछळ एक विधवा तथा एक पुत्री
छे. तेओश्रीनुं नानी वयमां मरण थवाथी आखी जैन
दिलगिरि फेलाइ हती तेमना आत्माने सदा शांति
प्रार्थना. अस्तु.

तेओ साहेब गुजरी गया पछी पण तेमनां
सुपत्नि विधवा शेठाणी. महालक्ष्मी बेन पण तेमना
जैन शासननी यनतीं सेवाओ कर्यांज करे छे. तेम
गुप्त दानादि थया करे छे. वनतो गरिबने आश्र
तेमज साधु, साध्वीनी वैयावच्च आदिकमां पण यथा
कर्या करे छे तेमनीं सुपुत्री सविता बेन पण उत्साहि
आनंदि अने अभ्यास करवामां रोकाया छे. शेठाण
ज्ञान दानमां आवा उपयोगी पुस्तकोने मदद कर्ता
करे छे तमनो आ स्थळे. आभार मानी अत्रे विरमुं

सु. अमदावाद
ट श्रावण क. ... सा.
पा[illegible] उमेद

सासनना गमेते काम आवे तेमां पूर्ण उत्साहथी अने खंतथी काम करता हता जरुर पडे गुरुमहाराजनी सलाह पूछता हता अने काम पार पाडवामां घणा उत्साहि हता.

आ असार जगतनी स्थिति अनियमित छे, तेमज काळनी गति पण विषम छे. आ वखते शेठ चीमनभाइने तावनी बीमारी लागु थइ, अने घणी तरेहनी योजना करवा छतां पण कोइ पण रीते फायदो थयो नहि, छेवटे शरीर वधारे नरम थतुं चाल्युं, अने संवत १९६८ ना श्रावण मासमां पोतानी अठावीस वरसनी उमरे आ फानी दुनिआनो त्याग करी गया.

तेओ पोतानी पाछळ एक विधवा तथा एक पुत्रीने मुकी गया छे. तेओश्रीनुं नानी वयमां मरण थवाथी आखी जैन कोममां बेहद दिलगिरि फेलाइ हती. तेमना आत्माने सदा शांति मळो एज प्रभु प्रार्थना. अस्तु.

तेओ साहेब गुजरी गया पछी पण तेमनी पछवाडे तेमना सुपत्नि विधवा शेठाणी. महालक्ष्मी बेन पण तेमनाज पगले चाली जैन शासननी बनती सेवाओ कर्याज करे छे. तेमना हाथे घणा गुप्त दानादि थया करे छे. बनतो गरिबने आश्रय पण आपे छे तेमज साधु, मार्ध्वीनी वैयावच्च आदिकमां पण यथाशक्ति द्रव्यव्यय कर्या करे छे तेमनी सुपुत्री सविता बेन पण उत्साहि सरल स्वभावि आनंदि अने अभ्यास करवामां खंताळ छे. शेठाणी महालक्ष्मीबेन ज्ञान दानमां आवा उपयोगी पुस्तकोने मदद करतां आव्या छे अने करे छे तेमनो आ स्थळे. आभार मानी अंत्र विरमुं छुं.

मु. अमदावाद
ढे वीबारङ.

ली.
मास्तर उमेदचंद रायचंद.

तपागच्छाधिपति तीर्थरक्षक शासनप्रभावक परमपूज्य विद्वरत्न
शिरोमणि पूज्यपाद आचार्य महाराज.



श्री विजयनेमिसूरीश्वरजी महाराज.

तपागच्छाधिपति तीर्थरक्षक शासन प्रभावक पूज्यपाद आचार्य महाराज श्री विजयनेमिसूरीश्वरजीनुं

टुंक जीवनवृतांत.

आ महापुरूषनो जन्म काठीआवाडमां आवेला प्रसिद्ध महुवा नामे गाममां थयो हतो. महुवानी भूमी उत्तम विद्वानोनी उत्पति माटे अभिमान धरावे छे, केमके त्यांना निवासी घणाक प्रसिद्ध वक्ताओ अने लेखकोनां नामो वारंवार सांभळवामां आव्यां छे.

आपणा आ पूज्य सुरीश्वरनी पण वकतृत्व कळा अने उपदेश छटा एटली वधी तो रसीक अने असरकारक छे के जे सांभळतां पाषाण पण पाणीरुप थइ जाय तो पछी कोमळ दिलना मानवीओ तेमनीं अमृत वाणीथी पोताना आत्मानो उद्धार करी शके तेमां तो कहेवानुंज शुं.

तेमना चारित्रनी उत्तमता अने दृढता अवर्णनीय छे. बार वर्षनी नानी वयमांथी पोते चारित्र लइ अद्यापी सुधी नीराबाध नीष्कलंक पाळ्युं छे, अने हजु पण तेवीज रीते निर्मळताथीं तेनुं पालन करे छे.

तेमना अखंड बाळ ब्रह्मचारीपणानो प्रताप एटलो बधो तो प्रचंड छे के, शासन द्रोही घुवडो तेमनी पाछळ भले चीचीआरीओ करे, परंतु तेमनी सामे तो दृष्टि सरखी पण करी शके तेम नथी.

ब्रह्मचर्यनी श्रेष्ठता अने पवित्रतानो प्रताप एटलो बधो तो प्रभावशाळी छे के, दरेक दर्शनवाळाओ वगर आनाकानीए तेनो

एकांत स्वीकार करे छे, तो तेनी छत्र छायामां रहेनार माणस आ लोकमां उज्वल यश अने परलोकमां आत्मकल्याणनी प्राप्ति करे तेमां तो शुं आश्चर्य.

पूज्यसूरीश्वरजीनी स्वसिद्धान्त तथा परदर्शनना न्यायादि शास्त्रोमां अकुंठ तीक्ष्ण बुद्धि माटे तो कोइ बे पगे चालनारनो विसंवाद छेज नहि वळी आ पूज्य सूरीश्वरे काठीआवाड गुजरात, मारवाड, मेवाड, माळवा विगेरे घणा देशोमां गामोगाम वीचरी पोतानी उपदेश छटाथी जनसमुदायना मन एटला बधा तो हरी लीधा छे के, शासन द्वेषी अने कदाग्रहीजनो शीवाय दरेक जण पोताना खरा अंतःकरणथी तेमनुं यशोगान हमेशां गाया करे छे.

आखा साधु समुदायमां अत्यारे शासनद्रोही कंटकोने निर्मूळ करवानी खरी हींमत, जो कोई पण साधु मुनिराज धरावी होय तो ते आज श्रीमद्विजय नेमिसूरीश्वरजीज छे, अने तेने लइने तेवा धर्मद्रोहीओ अने तेना लागता वळगताओए एक साधारण व्यक्तिने पण न घटे तेवा तुच्छ आक्षेपो तेमनी उपर घणी वखत कर्या छे; परंतु जेम सूर्यनो उदय थतां नीशाचर घुवडोमा उडी जाय तेवीज रीते आ मुनिश्वर तरफथी सत्र सिद्धांतनो खरेखरो खुलासो थतां अने सत्यासत्यनो प्रकाश पडता, अत्यारे एक पण धर्मद्रोही जाहेरमां देखवामा आवतो नथी.

सनातनना मगर शासनना नेता पुरुषोने घणी वखते दुरुउ लोको तरफथी अनराहनी मुश्केलीओमो भोगवनी पडे छे, तथापी तेनी

उन्नति एज जेनुं साध्य बिंदु छे एवा अग्रगण्य पुरुषो तेवा दुर्गीनीत मनुष्यो तरफ जरा पण लक्ष आपता नथी.

अत्यारे आ महापुरुष अमदावाद राजनगरनी भूमी उपर विचरे छे, के ज्यां आगळ श्रोताओ घणी मोटी संख्यामां भेगा मळी तेमना उपदेशामृतनुं पान करी आनंद पामे छे, अने अन्यदर्शन वाळाओ पण तेमनी वार्णानुं रहस्य विचारता थका छक थईजायछे.

पूज्यसूरीश्वरजी महाराजना श्री सिद्धगिरि—गिरनारजी समेतशिखरजी-तारंगाजी विगेरे आपणा परम पवित्र तिर्थ रक्षण माटे कराता सतत प्रयासो श्री कावरडाजी-शेरीसाजी-कलोल-श्री स्तंभतीर्थ विगेरे तीर्थ भूमीयोनो उद्धार तथा प्रतिष्ठाओ-मेवाड विगेरेमां तेरापंथ विगेरे पाखंड मतोमां भळी गयेला श्रावक भाइओ ना धार्मिक जीवननो पुनरुद्धार विगेरे विगेरे अशीम उपकारना कार्योनो आभार समग्र जैन कोमथी आ चन्द्रदिवाकर पण भूली शकाय तेम छेज नहि ?

राजनगरमां आ महा पुरुषना भक्तोमां जैन आगेवान मनाता घणा सेवको छे. तेमांना आ नगरशेठ मणीभाइ भाइ पण मुख्य हता के जेनुं वचन अलंघनीय गणाते जरा पण आनाकानी कर्या वगर जैन सासना गमे तेवा कार्य-फरमाने तैयार रहेता. अने ते केम पार उतरे तेवुं खंतथी ध्यान आपता हता तेमना पगले चाल [illegible] हालना नगरशेठ तथा तेमना कुटुंब मंडल पण
भ [illegible] छे, आ महापुरुष मारा पण घणाज

जेमना वडे हुं. यत् किंचित् ज्ञानादि धर्म सारी रीते पामी छुं, आवा शासन रक्षक परोपकारी महापुरुषना जेटला गीतगा तेटला ओछा छे. कारणके लाखो जीभ्याथी जेना गुण शकाय नहीं त्यां मारा जेवा पामर प्राणीनी एक जीभथी गुण शी रीते जणावी शकाय. टुंकामां अत्यारे आ महापुरु शासन माटे महत् उपकारी छे. अस्तु.

हालमां पण अनेक शासनप्रभावनाना कार्यो अहर्निश रह्या छे अने तेज प्रमाणे शासन प्रभावनाना कार्यो वि जयवंता वर्तो.

ली० प्रसिद्धकर्ता.



अथ चोवीस तिर्थंकरोनां कल्पाणक १२०

કેટલામા તીર્થંકર	તિથીયો,	ક્યું કલ્યાણક.	કેટલામા તીર્થંકર.	તિથીયો.	ક્યું કલ્યાણક.
	કારતક,				
૩	વદ ૫	કેવલ	૮	વ. ૧૨	જન્મ
૨૨	વ. ૧૨	ચ્યવર્ન	૮	વ. ૧૩	દિક્ષા
૬	વ. ૧૨	જન્મ	૧૦	વ. ૧૪	કેવલ
૬	વ. ૧૩	દિક્ષા	૧૩	શુ. ૬	કેવલ
૨૪	વ. ૩૦	મોક્ષ	૧૬	શુ. ૯	કેવલ
૯	શુ. ૩	કેવલ	૨	શુ. ૧૧	કેવલ
૧૮	શુ. ૧૨	કેવલ	૪	શુ. ૧૪	કેવલ
	માગશર.		૧૫	શુ. ૧૫	કેવલ
૯	વ. ૫	જન્મ		માહા.	
૯	વ. ૬	દિક્ષા	૬	વ. ૬	ચ્યવન
૨૪	વ. ૧૦	દિક્ષા	૧૦	વ. ૧૨	જન્મ
૬	વ. ૧૧	મોક્ષ	૧૦	વ. ૧૨	દિક્ષા
૧૮	શુ. ૧૦	જન્મ	૧	વ, ૧૩	મોક્ષ
૧૮	શુ. ૧૦	મોક્ષ	૧૧	વ. ૩૦	કેવલ
૧૮	શુ. ૧૧	દિક્ષા	૪	શુ, ૨	ન્મ
૧૯	શુ. ૧૧	જન્મ	૧૨	શુ. ૨	કેવલ
૧૯	શુ. ૧૧	દિક્ષા	૧૫	શુ. ૮	જન્મ
૧૯	શુ. ૧૧	કેવલ	૧૩	શુ ૩	જન્મ
૨૧	શુ. ૧૧	કેવલ	૧૩	શુ. ૪	દિક્ષા
૩	શુ. ૧૪	જન્મ	૨	શુ. ૮	જન્મ
૩	શુ ૧૫	દિક્ષા	૨	શુ. ૯	દિક્ષા
	પોસ.		૪	શુ. ૧૨	દિક્ષા
૨૩	વ ૧૦	જન્મ	૧૫	શુ. ૧૩	દિક્ષા
૨૩	વ ૧૧	દિક્ષા		ફાગણ.	

કેટલામા તીર્થંકર.	તિથીયે।	ક્યું કલ્યાણક.	કેટલામા તીર્થંકર.	તિથીયે।	ક્યું કલ્યાણક.
૭	વ. ૬	કેવલ	૨૪	શુ. ૧૩	જન્મ
૭	વ. ૭	મોક્ષ	૬	શુ. ૧૫	કેવલ
૮	વ. ૭	કેવલ		વઇશાખ.	
૯	વ. ૯	ચ્યવન	૧૭	વ. ૧	મોક્ષ
૧	વ. ૧૧	કેવલ	૧૦	વ. ૨	મોક્ષ
૨૦	વ. ૧૨	કેવલ	૧૭	વ. ૫	દિક્ષા
૧૧	વ. ૧૨	જન્મ	૧૦	વ. ૬	ચ્યવન
૧૧	વ. ૧૩	દિક્ષા	૨૧	વ. ૧૦	મોક્ષ
૧૨	વ. ૧૪	જન્મ	૧૮	વ. ૧૩	જન્મ
૧૨	વ. ૩૦	દિક્ષા	૧૪	વ. ૧૪	દિક્ષા
૧૮	શુ. ૨	ચ્યવન	૧૪	વ. ૧૪	કેવલ
૧૯	શુ. ૪	ચ્યવન	૧૭	વ. ૧૮	જન્મ
૩	શુ. ૮	ચ્યવન	૮	શુ. ૪	ચ્યવન
૨૦	શુ. ૧૨	દિક્ષા	૧૫	શુ. ૭	ચ્યવન
૧૯	શુ. ૧૨	મોક્ષ	૪	શુ. ૮	મોક્ષ
	ચૈત્ર.		૫	શુ. ૮	જન્મ
૨૩	વ. ૪	ચ્યવન	૫	શુ. ૯	દિક્ષા
૨૩	વ. ૪	કેવલ	૨૪	શુ. ૧૨	કેવલ
૮	વ. ૫	ચ્યવન	૧૩	શુ. ૧૨	ચ્યવન
૧	વ. ૮	જન્મ	૨	શુ. ૧૩	ચ્યવન
૧	વ. ૮	દિક્ષા		જેઠ	
૧૭	શુ. ૩	કેવલ	૧૧	વ. ૬	ચ્યવન
૧૪	શુ. ૫	મોક્ષ	૨૦	વ. ૮	જન્મ
૨	શુ. ૫	મોક્ષ	૨૦	વ. ૯	મોક્ષ
૩	શુ. ૫	મોક્ષ	૧૬	વ. ૧૩	જન્મ
૫	શુ. ૯	મોક્ષ	૧૬	વ. ૧૩	મોક્ષ
૫	શુ. ૧૧	કેવલ	૧૦	વ. ૧૪	દિક્ષા

કેટલામા તીર્થંકર,	તિથીયો.	કયું કલ્યાણક.	કેટલામા તીર્થંકર.	તિથીયો.	કયું કલ્યાણક.
૧૫	શુ ૫	મોક્ષ	૧૭	વ. ૯	ચ્યવન
૧૨	શુ. ૯	ચ્યવન	૫	શુ. ૨	ચ્યવન
૭	શુ. ૧૨	જન્મ	૨૨	શુ. ૫	જન્મ
૭	શુ. ૧૩	દિક્ષા	૨૨	શુ. ૬	દિક્ષા
	અશાડ		૨૩	શુ. ૮	મોક્ષ
૧	વ. ૪	ચ્યવન	૨૦	શુ. ૧૫	ચ્યવન
૧૩	વ, ૭	મોક્ષ		ભાદરવો	
૨૧	વ. ૯	દિક્ષા	૧૬	વ. ૭	ચ્યવન
૨૪	શુ. ૬	ચ્યવન	૮	વ. ૭	મોક્ષ
૨૨	શુ. ૮	મોક્ષ	૭	વ. ૮	ચ્યવન
૧૨	શુ. ૧૪	મોક્ષ	૯	શુ. ૯	મોક્ષ
	શ્રાવણ			આસો	
૧૧	વ. ૩	મોક્ષ	૨૨	વ. ૩૦	કેવલ
૧૪	વ. ૭	ચ્યવન	૨૧	શુ. ૧૫	ચ્યવન
૨૧	વ. ૮	જન્મ			

ઉપરના મહીના પુનમીયા પ્રમાણે ગણવા. એટલે કે આસો વદી ૦)) ને કારતક વદી ૦)) ગણવી, અને પછી કારતક સુદ ગણવી. એ પ્રમાણે દરેક મહીનામાં સમજવું.

ગુણણું ગણવાની રીત નીચે મુજબ:—

॥ च्यवन ॐ श्री (........) परमेष्टि नमः ॥

॥ जन्म ॐ श्री (........) अर्हते नमः ॥

॥ दिक्षा ॐ श्री (........) नाथाय नमः ॥

॥ केवल ॐ श्री (........)सर्वज्ञाय नमः ॥

॥ मोक्ष ॐ श्री (........) पारंगताय नमः ॥

अनुक्रमणिका.

स्तोत्र संग्रहनी अनुक्रमणीका.

श्री नित्यस्मरणस्तोत्रसंग्रह.

मंगळाचरणप्रवेशिका.

१ श्री आत्मरक्षा नवकारमंत्र.

ॐ परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षाकरं वज्र-पंजराय स्मराम्यहं ॥१॥ ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितं । ॐ नमो सव्वसिद्धाणं, मुखे मुखपटांबर ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी । ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयो र्दढं ॥३॥ ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे । एसो पंचनमुक्कारो शिलावज्रमयी तले ॥ ४ ॥ सव्वपावप्पणासणो वप्रो वज्रमयो बहिः । मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरंगारघातका ॥ ५ ॥ स्वाहांतं च पदं ज्ञेयं पढमं हवइ मंगलं । वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥ महाप्रभावी रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी । परमेष्ठिपदोद्भूता । कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैनं-कुरुते रक्षां, परमेष्ठि

पदैः सदा । तस्य न स्यादुभयं व्याधिराधिश्चापि कदाचन. ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रीनव स्मरणानि प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम नवकार ॥

॥ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति प्रथम स्मरणं ॥१॥

॥ अथ उवसग्गहरं द्वितीय स्मरणं ॥

॥ उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमंतं. कंठे धारेइ जो सया मणुओ ॥ तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर तिरिएसु वि जीवा. पावंति न दुक्ख दो गच्चं (दोहग्गं) ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे

चिंतामणि कप्पपायवप्पहिए ॥ पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस; भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ॥ता देव दिज्ज बोहिं. भवे भवे पास जिनचंद ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ संतिकरस्तोत्र तृतीयं स्मरणं ॥

॥ संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिभत्त पालग, निव्वाणी गरुड कयसेवं ॥ १ ॥ ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं संतिसामि पायाणं ॥ ॐ। स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरिअ हरणाणं ॥२॥ ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं॥ सौँ ह्रीँ नमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥ वाणी तिहुअणसामिणि, सिरिं देवी जक्कराय गणि पिडगा ॥ गहदिसिपाल सुरिंदा, सयावि रख्खंतु जिणभत्ते ॥ ४ ॥ रख्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला यसया ॥ वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ताकालिमहाकाली ॥ ५ ॥ गोरी तह गंधारी, महजालामाणवीअ वइरुट्टा ॥ अच्छुत्ता माणसिया, महामाण-

सिया ओ देवीओ ॥ ६ ॥ जक्खा गोमुह महज,
क्ख तिमुह जक्खेस तुंवरू कुसुमो ॥ मायंगो विज-
याजिय, वंभो मणुओ सुरकुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुह
पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तहय जरिंकदो ॥ कूबर
वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥ देवी-
ओ चक्केसरि, अजिआदुरिआरि कालि महाकाली ॥
अच्चुअ संता जाला, सुतार या सोय सिरिवच्छा ॥
॥ ९ ॥ चंडा विजयंकुसि पन्नइति, निव्वाणिअच्चु-
आ धरणी ॥ वइरुट्ट छुत्त गंधारि, अंव पउमावई
सिद्धा ॥ १० ॥ इअ तित्थ रक्खणरया, अन्नेविसुरा
सुरी चउहावि ॥ वंतर जोडणि पमुहा, कुणंतु रक्खं
सया अम्हं ॥ ११ ॥ एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिओ
संघस्स संति जिणचंदो ॥ मज्झवि करेउ रक्खं, मु-
णि सुंदरसूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअ संति नाह
सम्म-दिट्ठि रक्खं सरइ तिकालं जो ॥ सव्वोवद्दव र-
हिओ, स लहइ सुह संपयं परमं ॥ १३ ॥ तवगच्छ
गयण दिणयर, जुगवर सिरिसोम सुंदर गुरुणं ॥ सु-

पसाय लद्ध गणहर, विद्या सिद्धिं भणइ सीसो॥१४॥
इति श्रीतृतीयं स्मरणं ॥ ३ ॥

॥ अथ तिजयपहुत्त चतुर्थं स्मरणं ॥

॥ तिजय पहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेर जुत्ताणं ॥ समयक्खित्त ठिआणं, सरेमिं चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो ॥ नासेउ सयल दुरिअं, भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥ गह भूअ रक्खसाइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥ पण पन्ना य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥ रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणमिया सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहःसरसुं, सः हरहुंहः तह चेव सरसुंसः ॥ आलिहियनाम गब्भं, चक्कं किरसव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्ज अंकुसिया॥

तिजय पहुत्तनो यंत्र.

ॐ वरकणयसंख विद्दुम

ॐ भूर्भुवः स्वः अर्हं

ॐ रोहिणय नमः २५ ह	ॐ पन्नत्तिय नमः ८० र	क्षि	ॐ वज्रसिंखलाय नम १५ हुं	ॐ वज्रअंकुसियायनम ५० ह
ॐ चक्केसरिय नमः २० स	ॐ नरदत्ताय नमः ४५ र	प	ॐ कालिय नमः ३० सु	ॐ महाकालिय नमः ७५ स
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
ॐ गोरिय नमः ९० ह	ॐ गंधारिय नमः ३५ र	स्वा	ॐ महाज्वालाय नमः ६० हु	ॐ माणविय नमः ५ ह
ॐ वइरुट्टाय नमः ६५ स	ॐ अच्छुत्ताय नमः १० र	हा	ॐ माणसिय नम ६५ सु	ॐ महामाणसिय नमः ४० स

[illegible]

सत्तरिसय जिणाण

सव्वामरपूइअंवंदे स्वाहा

पार्श्वेभ्यो नमः

असिआउसा

मरगयघणसन्निहं विगय मोहं

चक्केसरि नरदत्ता, कालिं महाकालि तह गोरी ॥७॥
गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता ॥
माणसि महामाणसिया, विद्यादेवीओ रक्खंतु ॥८॥
पंचदस कम्म भूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआई
॥ ९ ॥ चउतीस अइसय जुआ, अठ्ठम हापा-
डिहेर कयसोहा ॥ तित्थयरागयमोहा, झाए-
अव्वा पयत्तेणं ॥ १० ॥ ॐ वर कणय संख विद्दुम,
मरगय घण सन्निहं विगयमोहं ॥ सत्तरिसयं जिणाणं,
सव्वामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ
वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥ जे के वि
दुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥
चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअंपीअं ॥ए-
गंतराइ गह भु, अ साइणि मुग्गं पणासेई ॥ १३ ॥
इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं ॥
दुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्च मचेह ॥ १४ ॥

॥ अथ नमिऊण पंचमं स्मरणं ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चुडामणि किरण रं-

जिअं मुणिणो ॥ चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय कर चरण नह मुह, निवुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥ कुट्ठ महा रोगा नल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेय वुड्ढिय छाया ॥ (उच्छाहा) वण दवदड्ढा गिरिपा, यव्व पत्ता पुणो लच्छीं ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय जलनिहि, उब्भड कल्लोल भीसणारावे ॥ संभंत भय विसंट्ठुल, निज्जामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥ अविदलिअजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥ पासजिण चलण जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयलदुमगहणे ॥ डज्झंत मुद्धमयवहु, भीसणरव भीसणंमि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वा विअसयल निहुअणाभोअं ॥ जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत भोग भीसण, फुरिआरुण नयण तरल जीहालं ॥ उग्गभुअंगं नवजलद, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नं-

ति कीड सरिसं, दूर परिच्छूढ़ विसम विसवेगा ॥ तुह नामक्खर फुडासि, द्धमंतगुरुआ नरा लोए ॥ ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥ भयविहुर वुन्न कायर, उल्लूरिअ पहिअ सन्नासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इछियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नहकुलिसघाय विअलिअ, गइंद कूंभन्नलाभोयं ॥ १२ ॥ पणयससभंमपत्थिव, नहमणि माणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥ तुह वयणपहरणधरा, सीहं खुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दंत मुसलं, दीहकरुल्लाल वुढ्रि उन्नाहं ॥ महु पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नविगणंति ॥ जे तुम्ह चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उद्धुय कचंधे ॥ कुतविणि भिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार प-

उरंमि ॥ १६ ॥ निज्झियदप्पुद्धररिउ, नरिंद निवहा-
भडा जसं धवलं ॥ पावंति पाव पसामिण, पास जिण
तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,
चोरारि मइंद गय रण भयाइं ॥ पासजिण नामसं-
कि, त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महा भय-
हरं, पास जिणिंदस्स संथवमुआरं ॥ भविय जणाणं
दयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १९ ॥ राय भय ज-
क्ख रक्खस, कुसुमिण दुसउण रिक्ख पीडासु ॥
संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥
जो पढइ जो अ निसुणई. ताणं कइणोय माणतुंग
स्स ॥ पासो पावं पसमे. उ सयल भुवणच्चिअ चल-
णो ॥ २१ ॥ उवसग्गंते कमठा, सुरम्मिझाणाओ जो
न संचलिओ ॥ सुर नर किन्नरजुवइहिं. संथुओजय
उ पासजिणो ॥ २२ ॥ एअस्स मज्झयारेअट्ठारस अ
क्खरेहिं जो मंतो ॥ जो जाणइ सो झायइ. परम
पयत्थं फुडं पासं ॥ २३ ॥ पासह समरण जो कुणइ.
संतुट्ठे हिअएण ॥ अट्ठुत्तर सय वाहि भय. नासइ

तस्स दूरेण ॥ २४ ॥ इति श्री महाभयहरनामकं पंचमं स्मरणं ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीअजित शांति स्तवषष्ठ स्मरणं ॥

॥ अजिअं जिय सव्व भयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥ जयगुरु संति गुणकरे, दोवि जिणवरे पणि वयामि ॥ १ ॥ गाहा ॥ ववगय मंगुल भावे, तेहं विउल तव निम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प भावे, थोसामि सुदिट्ठ सप्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्व दुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिय संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजिअ जिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नाम कित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥ किरिआ विहिसंचिअ कम्म किलेस विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणे हिं महामुणि सिद्धि गयं ॥ अजिअस्स य संति महा मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ कारण

यं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्ख वारणं, जइ अविमग्गह सुक्ख कारणं ॥ अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय जर मरणं ॥ सुर असुर गरुल भुयग वइ, पयय पणिवइअं ॥ अजिअ महमविअ, सुनय नय निउण मभयकरं, सरण मुवसरिअ भुवि दिविज, महिअं सयय मुवण मे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दवखंति विमुत्ति समाहि निहिं ॥ ॥ संतिकरं पणमामि दमुत्तम तित्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थिन्न संथियं ॥ थिर सरिच्छ वच्छं मयगल लीलायमाण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं ॥ हत्थि हत्थ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजर, पवर लक्खणो वचिय सोम चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिराम परम रमणिज्ज वर देव दुंदुहि निनाय महुर

यर सुहगिरं ॥ ९. ॥ वेड्डओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव्वभयं भवो हरिउं ॥ पणमामि अहं पयओ, पावं पसमे उ मे भयवं॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ युग्मं ॥ कुरु जण वय हत्थिणा उर, नरीसरो पढमं तओ महा चक्कवट्टि भोए महप्पभावो ॥ जो बावत्तरि पुर वर सहस्स वर नगर निगम जणवय वइ, वत्ती सा राय वर सहसाणुयाय मग्गो ॥ चउदस वर रयण नव महानिहि चउसट्ठि सहस्स पवर जुवईण सुंदर वइ, चुलसी हय गय रह सय सहस्स सामी, छणवइ गामकोडि सामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥११ ॥ वेड्डओ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिणं सव्वभया ॥ संतिं थुणामि जिणं, संतिं वेहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं युग्मम् ॥ इक्खाग विदेह नरीसर, नर वसहा मुणि वसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअ रया ॥ आजि उत्तम तेअ गुणेहिं, महा मुणि आमिअ वला विउल कुला ॥ पणमामि ते भव भय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥

देव दाणविंद चंद सूर वंद हट्ठतुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठ रूव धंत रूप्प पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥दंत पंति संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर,दित्त तेअ वंद धेअ सव्व लोअ भाविअ प्पभावणेअ पइस मे समाहिं ॥ ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल ससि कलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर कराइरेअ तेअं ॥ तिअसवइ गणाइरेअ रूवं, धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्तेअ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरंगिअं ॥ सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय ससी ॥ तेअगुणेहिं पावइ न तं, नव सरय रवि ॥ रूवगुणेहिं पावइ न तं, तिअ सगणवइ ॥ सार गुणेहिं पावइ न तं. धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवर पवत्तयं तम रय रहियं धीर जण थुअ च्चिअं चुअ कलि कलुसं ॥ संति सुहप्पवत्तयं तिगरण पयओ संति महं महामुणि सरणं मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विण-

ओणय सिरि रइ अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं॥
विबुहाहिव धणवइ नरवइ थुय महिअच्चिअं बहुसो॥
अइरुग्गय सरय दिवायर समहि अ सप्पभं तवसा
॥ गयणंगण वियरण समुइअ चारण वंदिअं सिरसा
॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुर गरुल परिवंदिअं,
किन्नरोरग णमंसिअं ॥ देवकोडि सय संथुअं, सम-
णसंघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं
अरयं अरुयं अजियं अजियं पयओ पणमे ॥ २१ ॥
विज्जुविलसियं ॥ आगया वर विमाण दिव्व कणग
रह तुरय पहकर सएहिं हुलियं ॥ ससंभमो अरण,
क्खुभिअ लुलिअचल कुडलं गय तिरीड सोहंत म-
उलिमाला ॥२२॥ वेड्ओ॥ जं सुरसंघा सासुर संघा
वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता ॥ आयर भुसिय संभम
पिंडिय, सुट्ठु सुविह्मिय सव्व बलोधा॥ उत्तम कंचण
रयण परूविय, भासुर भूसण भासुरिअंगा ॥ गाय
समोणय भत्ति वसागय, पंजलि पेसिय सीस प-
णामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिउण थोउण तो

जिणं, तिगुण मेवय पुणो पयाहिणं ॥ पणमिऊणय
जिणं सुरासुरा. पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४॥
खित्तयं ॥ तं महामुणि महं पिपंजली, राग दोस भय
मोह वज्जियं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं, संति मुत्त
म महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतर विआ
रणि आहिं, ललिय हंस वहु गामिणिआहिं ॥ पीण
सोणि थण सालिणिआहिं,सकल कमल दललोअणि
आहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतर थणभर विण
मिय गायलआहिं ॥ मणि कंचण पसिढिल मेहल
सोहिय सोणितडाहिं वरखिंखिणि नेउर सतिलय
वलय विभूसणिआहिं ॥ रइ कर चउर मणोहर सुंदर
दंसणिआहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ॥ देव सुंदरीहिं पाय
वंदियाहिं वंदिया य जस्स ते सुविक्कमा कमा अप्प-
णो निडालएहिं मंडणोड्डणपगारएहिं केहिं केहिंवि
अवंग तिलय पत्तलेह नामएहिं चिल्लएहिं संगयं ग-
याहिं भत्ति संनिविट्ठ वंदणागयाहिं हुंति ते वंदिया
पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं ॥

जिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव्व किलेसं, पयओ पण-
मामि ॥ २९ ॥ नंदिअयं ॥ थुअ वंदिअस्सारिसि
गण देव गणेहिं, तो देव वहूहिं पयओ पणमिअस्सा,
जस्स जगुत्तम सासणयस्सा, भत्ति वसागय पिंडि-
अयाहिं देव वरछरसा वहुयाहिं सुरवररइ गुण पंडि-
यआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंस सद्द तंतिताल मे-
लिए तिउख्खराभिराम सद्द मीसए कएअ सुइ स-
माणणे असुद्ध सज्झगीअ पायजाल घंटिआहिं ॥ वं
लय मेहला कलाव नेउराभिराम सद्द मीसए कए अ
देव नट्टिआहिं हाव भाव विप्भम प्पगारएहिं ॥ न-
च्चिउण अंग हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्क
मा कमा तयं तिलोय सव्व सत्त संति कारयं॥ पसंत
सव्व पाव दोसमेस हं नमामि संति मुत्तमं जिणं
॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्त चामर पडाग जूव जव
मंडिआ झय वर मगर तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥
दीव समुद्द मंदर दिसागय सोहिया सत्थिअ वसह
सीह रह चक्क वरंकिया ॥ पाठांतर ॥

छणा ॥ ३२ ॥ ललिययं ॥ सहाव लट्ठा सम प्पइट्ठा, अदोस दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ॥ पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिया ॥ ते तवेण धुय सव्व पावया, सव्वलोअहियमूलपावया ॥ संथुया अजिअ संति पायया, हुं तु मे सिव सुहाण दायया ॥३४॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण जुअलं ॥ ववगय कम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहु गुण प्पसायं, मुक्ख सुहेण परमेण अविसायं ॥ नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मभिनंदिं ॥ परिसावि य सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअ संति थयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विना-

संति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥ जइ इछह परम पयं, अहवा किंत्तिं सुविछडं भुवणे ॥ तातेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

॥ अथ भक्तामरनामकं सप्तमस्मरणं ॥

॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रभाणा, मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वालंवनं भव जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्व वोधा, दुद्भूतवुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रैर्ज्जगत्रित यचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥ वुद्ध्या विनापि विवुधार्चितपाद पीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्र पोऽहम् ॥ वालं विहाय जलसंस्थि तमिंदुविंब, मन्यः कइछति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥ वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्, कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि वुद्धया ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंवुनिधिं भुजा-

भ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्म वीर्य-मविचार्य मृगीमृगेंद्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परि-पालनार्थम् ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चा रुचूतकलिकानिक-रैकहेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसान्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम ॥ आक्रांतलोकमलि-नीलम शेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्य-ते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥ चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदविंदुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवन मस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि, जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवं-तमभिष्टुवंतः ॥ तुल्या भवंति भवतो ननु तेन किंवा,

भूत्याश्रितं यइह नात्म समं करोति ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध सिंधोः क्षारं जलं जलनिधेरशि तुं क इच्छेत् ॥ ११ ॥ यैः शांतरा गरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितास्त्रिभुवनैकललामभूत ॥ तावंतएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२॥ वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्ज्जितजगत्रित योपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनंक्व निशाकरस्य, यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥ संपूर्णमंडलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोय थेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि, र्नीतं मनागपि मनोन विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन, किंमंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५॥ निर्धूमवर्तिरपवर्ज्जि ततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्रयमिदं प्रकटीकरोपि ॥ गम्योन

जातु मरुता चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहु-गम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नाभोध-रोदरनिरुद्धमहाप्रभावः सूर्यातिशायिमहिमासिमुनींद्र लोके ॥ १७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं नराहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मु-खाब्जमनल्पकांति, विद्यो तयज्जागदपूर्वशशांकबिं-बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ निष्पन्नशालि-वनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार-नम्रैः ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकु-लेपि ॥ २० ॥ मन्ये वरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टे-षु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,

नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसुता॥ सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामा मनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथा; ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुव नत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रि जगतः परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥ कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै, स्त्वंसंश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षि-

तोसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, मा-
भाति रूपममलं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किर-
णमस्ततमोवितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति॥
॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं
वियद्विलसदंशुलतावितानं, तुंगोदयाद्रि शि-
रसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचामरचा-
रुशोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम् ॥ उद्-
यच्छशांकशुचिनिर्झर वारिधार, मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव
शातकौंभम ॥ ३० ॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांक-
कांत, मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरप्रतापम ॥ मुक्ता-
फलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमे-
श्वरत्वम ॥ ३१ ॥ उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति, पर्यु-
ल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र
जिनेंद्र धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥

प्रहतांधकारा, तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥
॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्त-
भ्रमद्‍ भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताभमिभमुद्ध
तमापतंतं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्
॥ ३४ ॥ भिन्नेभकुंभगलदुज्वल शोणिताक्त, मुक्ता-
फलप्रकरभूपितभुमिभागः ॥ वद्धक्रमः क्रमगतं हरि-
णाधिपोऽपि, नाक्रामतिक्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥३५॥
कल्पांतकालपवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्वलित-
मुज्ज्वल मुत्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुख-
मापतंतं, त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥
रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिन-
मुत्फणमापतंतम् ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निर
स्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥
वल्गत्तुरं गगजगर्जितभीमनाद, माजौ वलं वलवता-
मपि भूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्र-
भिन्नगजशोणितवारिवाह, वेगावतारतरणा तुरयोध-

भीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणोलभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्र चक्र, पाठीनपीठभयदोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥ उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपादकंठमुरु शृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम ॥ तस्याशुनाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

इति भक्तामरस्तोत्रं समाप्तम् ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्रं अष्टम स्मरणं प्रारभ्यते ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुर गुरुर्गरिमांबुराशेः स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो, स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशाः कथमधीश भवंत्यधीशाः ॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवांधो, रूपं प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसद संख्यगुणाकरस्य ॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥६॥ आस्तामचिंत्यमहिमाजिनसंस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगंति ॥ तीव्रात पोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति, जंतोः क्षणेन निबिडाअपि कर्मबंधाः सद्यो भुजंगममयाइव मध्यभाग, मभ्यागते वनशिखंडिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यंतएव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्ररुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशुपशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वंतारकोजिनकथं भविनां तएव, त्वामुद्वहंति हृदयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेषनूनं, मंतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥१०॥ यस्मिन् हरप्रभृत योऽपि हतप्रभावाः, सोऽपि त्वया रतिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन, पीतं न किं तदपि दु-

द्धूरवाडवेन ॥११॥ स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथमहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लंघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्योन हंत महतां यदि वा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथं किल कर्मचौराः ॥ प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके, नीलद्रमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयंति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥१४॥ ध्यानाज्जिनेश भवतोभाविनः क्षणेन, देहं विहाय परमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥१५॥ अंतः सदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं, भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यविवर्त्तिनोहि, यद्वि ग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥ १६॥ आत्मा मनीपिभिरयं त्वदभेदबुद्ध्या, ध्यातोजिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः॥पानीय मप्यमृतमित्यनुचिं-

मतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तं हि पार्थिव निपस्य
सतस्तवैव चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः॥२९॥
विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं किं वाक्षरप्रकृति-
रप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्रा-
ग्भारसंभृतनभांसि रजांसि रोषा,दुत्थापितानि कम-
ठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ
हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा
॥ ३१ ॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्त-
डिन्मुसलमांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ
दुस्तरवारि दध्रे, तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृ-
त्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड-
प्रालंबभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः प्रेतव्रजः प्रतिभवंत-
मपीरितो यः, सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥
॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराध-
यंति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्म-
लदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः
॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न

मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपद्विपधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां जातोनिकेतनमहं मथिताशयानाम्॥३६॥ नूनं न मोह तिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभोसकृदपि प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंतिहि माम- नर्थाः प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥ आकर्णि तोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि,नूनं न चेतासि मया- विधृतोऽसि भक्त्या ॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधवदुःख पात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलं ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथदुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्य पुण्यवसते वशिनां वरेण्य ॥ भक्तया नते मयि महेश दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥३९॥ ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसार शरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणि- धानवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि

स्यमानं, किं नामनो विषविकारमपाकरोति॥१७॥त्वामेव
वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विभो हरिहरा दिधिया
प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिभिरीश सितोपि शंखो
नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेश
समये सविधानुभावा, दास्तां जनो भवति ते तरु
रप्य शोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोपि, कि
वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः ॥ १९ ॥ चित्रं
विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव, विष्वक् पतत्यविरल
सुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश
गच्छंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने ग
भीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव गिरः सम्
दीरयंति ॥ पीत्वायतः परमसंमदसंगभाजो, भव्या
व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् २१ ॥ स्वामिन् सुदू
रमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचाम
रौघा. ॥ येस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नू
नमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः ॥ २२ ॥ श्यामं गभी
[illegible] सिंहासनस्थमिह भव्यशिखं

नस्त्वाम् ॥ आलोकयंति रभसेन नदंतमुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥ उद्गच्छता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभुव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्यनिर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगत्रयाय, मन्ये नदन्नभिनभःसुरदुंदुभिस्ते ॥ २५ ॥ उद्द्योतितेषु भवता भुवनेषू नाथ, तारान्वितोविधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र, व्याजात्रिधा घृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्रयपिंडितेन, कांतिप्रतापयश सामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेम रजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्नभितोविभासि ॥ २७ ॥ दिव्यस्रजोजिन नमत्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्संगमे सुमन सो न रमंतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्यसु-

॥४० ॥ देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक विभो भुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाह्रद मां पुनीहि, सीदंतमद्य भयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ भवदंघ्रिसरोरुहाणां, भक्तेःफलं किमपि संततिसंचितायाः॥तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य भूयाः स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियोविधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्षा ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥ ४३ ॥ आर्या ॥ जननयन कुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदोभुक्त्वा ॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥४४॥ इति श्रीकल्याण मंदिरनामकं अष्टम स्मरणं ॥ ८ ॥

॥ अथ बृहच्छांति स्तवननामक नवम स्मरण प्रारंभः ॥

॥ भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं

मेतत्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा, दारोग्य श्रीधृति मतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ गद्यं ॥ भो भो भव्यलोकाइह हि भरतैरावत विदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानंतरं सकल सुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा ॥ ततोऽहं कृतानुकार मितिकृत्वा महाजनोयेन गतः स पंथाः इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्र पीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रा स्नात्रादिमहोत्सवानंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां भगवतोर्हंतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन स्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः ॥ ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्रभ सुपार्श्व चंद्रप्रभ

सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लिमुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांता जिनाः शांताः शांतिकराभवंतु स्वाहा॥ ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपुविजय दुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतुवोनित्यं स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्यासाधन प्रवेशन निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥ ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला वज्रांकुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली माहाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरुट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्याय प्रभृति चातुर्वर्णस्य श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥ ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवादित्य स्कंद विनायकोपेता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंता

प्रीयंतां अक्षीणकोशकोष्ठागारानरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन संबंधि बंधुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणअस्मिँश्च भूमंडलायतन निवासि साधु साध्वी श्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधि दुःख दुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यंतु दुरितानि ॥ शत्रवः पराङ्मुखा भवंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥१॥ शांतिःशांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥ शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट,ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥ संपादितहितसंप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३॥ श्रीसंघजगज्जानपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥ गोष्ठिकपुर मुख्यानां, व्याहरणव्याहरेच्छांतिम् ॥४॥ श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शांतिर्भवतु, श्रीजनपदानां

शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शांतिर्भवतु, श्रीराज्य सन्निवेशानां शांतिर्भवतु श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रा स्नात्राद्यवसानेषु शांतिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवास कुसुमांजलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचंदनाभरणालंकृतःपुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति ॥ नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान, कल्याण भाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ २ ॥ अहं तित्थयर माया, सिवा देवी तुम्ह नयर निवासिनी ॥ अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ ३ ॥ उपसर्गाः

क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥ मनः प्रसन्नता मेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति वृहछांतिनामकं नवमस्मरणं समाप्तम् ॥ ९ ॥

॥ अथ श्रीभद्रबाहूस्वामिविरचितग्रहशांतिः प्रारभ्यते ॥

॥ जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ॥ ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ ॥ १ ॥ जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पुजनीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै, र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तंड, श्चन्द्रश्चन्द्र प्रभस्य च ॥ वासुपुज्ये भूमिपुत्रो, वुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माराः, शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा ॥ वर्द्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे वुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रूषभाजितसुपार्श्वा, श्चाभिनंदन शीतलौ ॥ सुमतिः संभवः स्वामी, श्रेयांसश्चेषु गी-

स्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनै
श्चरः ॥ नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः
॥ ६ ॥ जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीडंति खेचराः
॥ तदा संपूजये द्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान्

॥ अथ नवग्रहपूजा ॥

॥ पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर ॥
शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ ८ ॥
इति श्रीसूर्यपूजा ॥ चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना
तारागणाधिप ॥ प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु
जयं श्रियम् ॥ ९ ॥ इतिश्री चंद्रपुजा ॥ सर्वदा वासु
पूज्यस्य, नाम्ना शांति जयश्रियं ॥ रक्षां कुरु धराप
त्रो, अशुभोऽपि शुभोभव ॥ १० ॥ इतिश्रीभौमपूजा
॥ विमलानंतधर्माराः, शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा ॥ मह
वीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥ ११
इतिश्री बुधपूजा ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा, साभिनंद
नशीतलौ ॥ सुमतिः संभव स्वामी, श्रेयांसश्च जिने

मः ॥ १२ ॥ एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः
भो भव ॥ शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणा-
र्चित ॥१३॥ इति श्रीगुरुपुजा ॥ पुष्पदंतजिनेन्द्रस्य,
ाम्ना दैत्यगणार्चित ॥ प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां
ुरु कुरु श्रियम् ॥१४ ॥ इतिश्री शुक्रपूजा ॥ श्रीसु-
व्रतजिनें द्रस्य, नाम्ना सूर्यांगसंभव ॥ प्रसन्नो भव
शांतिं च, रक्षां करु कुरु श्रियम् ॥ १५ ॥ इतिश्री
शनैश्चरपूजां ॥ श्रीनेमिनाथ तीर्थेश,नामतः सिंहिका-
सुत ॥ प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम्
॥१६॥इतिश्री राहुपुजा ॥ राहो सप्तमराशिस्थ,कारेण
दृश्यसंवरे ॥ श्रीमल्लीपार्श्वयोर्नाम्ना, केतो शांतिं
जयश्रियम् ॥ १७ ॥ इति श्री केतु पूजा ॥
इति भणित्वा स्वस्ववर्णकुसुमांजलिक्षेप जिनग्रह
पूजा कार्या ॥ तेन सर्वपीडायाः शांतिर्भवति ॥ अथ
सर्वेषां वा ग्रहाणामेकदा पीडायामयं विधिः ॥ नव-
कोष्टकमालेख्यं, मंडलं चतुरस्रकम् ॥ ग्रहास्तत्र प्रति-
ष्ठाप्या, वक्ष्यमाणक्रमेण तु ॥ १८ ॥ मध्ये हि भास्करः

स्थाप्यः, पूर्वदक्षिणतः शशी ॥ दक्षिणस्यां धरासुतु,
र्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्व
स्यां भृगुनंदनः ॥ पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्द
क्षिणपश्चिमे ॥ २० ॥ पश्चिमोत्तरतः केतु, रिति स्था
प्याः क्रमाद्ग्रहाः पट्टे स्थालेऽथ वाग्नेय्यां, ईशान्यां
नु सदा बुधैः ॥ २१ ॥ आर्या ॥ आदित्यसोम मंगल
बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटा,
जिनपति पुरतोऽवतिष्ठंतु ॥ २२ ॥ इति भणित्वापंच
वर्णकुसुमांजलिक्षेपश्चजिनपूजा च कार्या ॥ पुष्पगं
धादिभिर्धूपै, र्नैवेद्यैः फलसंयुतैः ॥ वर्णसदृशदानैश्च
वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिननामकृतोच्चारा,
देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ पूजिताः संस्तुता भक्त्या, ग्रहा
संतु सुखावहाः ॥ २४ ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्र
हाणां शांतिहेतवे ॥ नमस्कार शतं भक्त्या, जपेद
ष्टोत्तरं नरः ॥ २५ ॥ एवं यथानामकृताभिषेके, रा
लेपने धूपनपूजनैश्च ॥ फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना
ग्रहेन्द्रा वरदा भवंतु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो दीयते दान

होत्साहोजिनालये ॥ चतुर्विधस्य संघस्य, वहुमानेन
जनम् ॥ २७॥ भद्रवाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली
वेयप्रभावतः पूर्वात्, ग्रहशांतिरुदीरिता ॥२८॥ इति
भद्रवाहुस्वामिविरचितावृहद्ग्रहशांतिः समाप्ता ॥ १ ॥

अथ

कस्मिनरिष्ट ग्रहे कस्य जिनस्य कया रीत्य .पूजा कार्या, तदा-
ख्याति ॥ रविपीडायां:-रक्तपुष्पैःश्रीपद्मप्रभपूजा कार्या. ॐ ह्रीं
नमोसिद्धाणं. तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः चंद्रपीडायां:-चंदनसेवंत्र
पुष्पैः श्रीचंद्रप्रभ पुजा कार्या. ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टो-
त्तरशतजपः कार्यः ॥ भौमपीडायां:-कुंकुमेन च रक्तपुष्पैः श्रीवासु
पूज्यपूजा विधेया. ॐ ह्रीं नमोसिद्धाणं. तस्य अष्टोत्तरशत जपः
कार्यः ॥ बुधपीडायां:-दुग्ध स्नाननैवेद्यफलादितः श्रीशांतिनाथपूजा
कर्त्तव्या. ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः ॥
गुरुपीडायां:-दधिभोजन जंबीरादिफलेन च चंदनादिविलेपनेन श्री
आदिनाथपूजा करणीया. ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तर
शतजपः कर्त्तव्यः ॥ शुक्रपीडायां:-श्रीश्वेतपुष्पैश्चंदनादिना श्रीसुवि-
धिनाथपूजा कार्या.चैत्ये घृतदानं कार्य. ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं तस्य
अष्टोत्तरशतजपः कार्यः ॥ शनैश्चरपीडायां:-नीलपुष्पैः श्रीमुनिसुव्रत
पूजा कार्या तैलस्नानदाने कर्त्तव्ये ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं

तस्य अष्टोत्तर शतजपः कार्य॥ राहुपीडायां:—नीलपुष्पं श्रीनेमिनाथ पूजाकरणीया. ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः ॥ केतुपीडायां:—दाडिमादिपुष्पैः श्रीपार्श्वनाथपूजा कार्या ॥ ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः ॥ इति नवग्रहपूजाविधिः ॥ सर्वग्रहपीडायां:—श्रीसूर्यसोमांगारबुधबृहस्पति शुक्रशनैश्चरराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः मम सानुग्रहाः भवंतु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अ. सि. आ. उ. साय नमः स्वाहा ॥ अस्य मंत्रस्य अ- ष्टोत्तरशतजपः कार्यः तेन नवग्रहपीडोपशांतिः स्यात् ॥ इति नवग्रह पूजाप्रकारः ॥

॥ अथ लघुशान्तिस्तवः ॥

॥ शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य ॥ स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शान्तिजिनाय जयवते, यश- स्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषक महा-संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह स्वामिकसंपूजिताय न जिताय भुवनजनपालनोद्

ततमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४॥ सर्वदुरितौघनाशन
कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्टग्रहभूतपिशाच शा-
किनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममन्त्र-
प्रधानवाक्योपयोगकृततोपा ॥ विजया कुरुते जन
हित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम् ॥ ६ ॥ भ-
वतु नमस्तेभगवति ! विजये ! सुजये ! परापरे रजिते!
अपराजीते॥जगत्यां,जयतीति जयावहे भवति!॥७॥स-
र्वस्यापि च सङ्घस्य,भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ॥ साधूनां
च सदा शिव-सुतुष्टि. पुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भ-
व्यानां कृतसिद्धे !, निर्वृतिनिर्वाण जननि ! सत्त्वा
नाम्, अभयप्रदान निरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे !
तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्य
मुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्र-
दानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां
च जगति जनतानां ॥ श्रीसंपत्कीर्तियशो-वर्द्धनि !
जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविपविप

---

१. नि जिताय इति पाठांतरे.

द्योतिबलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरःसिद्धः। अचिंतः
अक्षयो विभुः । अमूर्त अच्युतोत्रम । विष्णुरोतः
प्रजापतिः ॥ ८॥ अनिंद्यो विश्वनाथ श्च । अजो
अनुपमोभवः । अप्रमेयो जगन्नाथ: । बोधरूपो जि
नात्मक: ॥ ९ ॥ अव्यय: सकलाराध्यो । निष्पतो
ज्ञानलोचन: । अज्ञेयो निर्मलो नित्य: । सर्वशल्यवि
वर्जित: ॥ १० ॥ अजेय: सर्वतोभद्र: । निष्कषायो
भवांतक: । विश्वनाथ: स्वयंबुद्ध: । वीतरागोजिनेश्वर
॥ ११ ॥ अनको महजानंद: । अवष्ट निसगोचर:
असाध्य:शुद्धश्चनन्य: कर्म नोकर्म वर्जित: ॥ १२ ।
अनंतो विमल ज्ञानी । मूर्तीश्च निष्प्रकाशक: । स्व
र्गाजितो महात्मान: । लोकत्रयशिरोमणि: ॥ १३ ।
अन्यायारी स्व:शंभु । विश्ववेदी पितामह: । स
थूलनिंदक । सर्वलोकसमयपर: ॥ १४ ॥ आनंद
[illegible] । [illegible] । अनंतानंतर्धाशक:
[illegible] ॥ १५ ॥ अष्टकर्मारिनिर्मु
[illegible] । [illegible] । [illegible]

संयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः ! निर्माणो निरपेक्षकः। निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः। सर्वेशःसत्सुखावासः । जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो भगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवनाधीशः । सचितः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहात्मानं ।विमुक्तो मुक्तिवल्लभः योगींद्रो नादिसंसिद्धः। निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः । सत्सौख्य त्रिपुरातकः ।त्रिनेत्रःत्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोष्टमर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपाप विवर्जितः सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूताहितंकरः ॥ ॥२३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धःपापनाशनः । तनुसात्रश्चिदानंदः।चैतन्यश्चैत्यवैभवः।२४।सकलातिशयो देव,मुक्ति स्थोमहतांमहः।मुक्तिकार्यायसंतुष्टो।निराग:परमेश्वर:।२५।महादेवो महावीरो।महामोहविनाश

धर-दुष्टग्रहराजरोगरण भयतः राक्षसरिपुगणमारी-
चौरेतिश्वापदा दिभ्यः ॥१२॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं,
कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरुकुरु
पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥ भ-
गवति ! गुणवति ! शिवशान्ति तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह
कुरु कुरु जनानाम ॥ ओमिति नमोनमो ह्रॉं ह्रीं हूं
ह्रः ॥ यः क्ष ह्रीं फुट् फुट्० स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं
यन्नामाक्षरपुरस्सरं संस्तुता जयादेवी ॥ कुरुते शान्ति
नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्व
सूरिदर्शित-मन्त्र पदविदर्भितः स्तवः शान्तेः सलि-
लादिभयविनाशी.शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम ॥१६॥
यश्चैन पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायो
गम ॥ सहि शान्तिपदं यायात सूरिः श्रीमानदेवश्च
॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः ।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्व
मङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम ॥ प्रधानं सर्व-

र्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति लघु शान्तिस्तवः समाप्तम्

जिनसहस्रनाम लघु स्तोत्रम्.

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने । वक्ष्ये तस्यैव नामानि । मोक्षसौख्याभिलापया ॥ १ ॥ निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पो निरामयः । निः शरीरो निरांतंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥ निष्कलंको निरालंवो । निर्मोहो निर्मलोत्तमः । निर्भयो निरहंकारो । निर्विकारोऽथनिष्क्रियः ॥ ३ ॥ निर्दोषो निरुजःशांतः । निर्भेद्यो निर्ममःशिवःनिस्तरंगो निराकारो । निष्कर्मोनिष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥ निर्वादो निरुपज्ञानः । निरागो निरघोजिनः । निःशब्दःप्रति मश्लेष्टः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥ निःसंगात् प्राप्त कैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः । अनिंद्योमहा पूतात्मा । जगत्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥ निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः । सोपियोगात् शुभंप्राप्तः । कर्म

द्योतिबलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरःसिद्धः। अचिंत्य
अक्षयो विभुः । अमूर्त अच्युतोव्रम । विश्वगुरुः
प्रजापतिः ॥ ८ ॥ अनिंद्यो विश्वनाथ श्च । अजो
अनुपमोभवः । अप्रमेयो जगन्नाथः । बोधरूपो जि
नात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययः सकलाराध्यो । निष्पापो
ज्ञानलोचनः । अछेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यवि
वर्जितः ॥ १० ॥ अजेयः सर्वतोभद्रः । निष्कषायो
भवांतकः । विश्वनाथः स्वयंबुद्धः । वीतरागोजितेंद्रियः
॥ ११ ॥ असंगो सहजानंदः । अबद्ध निसर्गोत्तरः ।
असाध्यःशुद्धअनन्यः कर्म नोकर्म वर्जितः ॥ १२ ॥
अनंतो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः । क
र्मातितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥
अव्याबाधो स्वःशंभुः । विश्ववेदी पितामहः । स
[illegible] । सर्वलोकस्वरूपकः ॥ १४ ॥ आनंदरू
[illegible] । भवाग्निजलदःपुण्य । अनंतानंत[illegible] ।
[illegible] ॥ १५ ॥ अष्टकर्मारिनिर्मुक्तः ।
[illegible] । गौरवादिप्रदायकः । सर्व[illegible]

संयुतः ॥ १६ ॥ अभयः प्राप्तकैवल्यः ! निर्माणो नि-
रपेक्षकः। निष्कलं केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः
॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः।
सर्वेशःसत्सुखावासः । जिनेंद्रोमुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥
अन्यूनपरमज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः । प्रबुद्धो
भगवान्नाथः । प्रस्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः
सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनांतकः । ईश्वरो भुवना-
धीशः । सचितः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सद्योजातमहा-
त्मानं । विमुक्तो मुक्तिवल्लभः योगींद्रो नादिसंसिद्धः।
निरीहो ज्ञानगोचरः ॥ २१ ॥ सदाशिवां चतुर्वक्रः ।
सत्सौख्य त्रिपुरातकः । त्रिनेत्रःत्रिजगत्पूज्यः । कल्या-
णकोष्टमर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्वंद्यः । सर्वपाप
विवर्जितः सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूतहितंकरः ॥
॥२३॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धःपापनाशनः ।
तनुमात्रश्चिदानंदः।चैतन्यश्चैत्यवैभवः।२४।सकलातिश-
यो देव,मुक्ति स्थोमहतांमहः।मुक्तिकार्यायसंतुष्टो।निरा
गःपरमेश्वरः॥२५॥महादेवो महावीरो।महामोहविनाश

कः । महाभावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदायकः ॥२६॥
महाज्ञानी महायोगी । महातपो महात्मकः । महर्द्धि
को महावीर्यो । महांतिकपदास्थितः ॥ २७ ॥ महा
पूज्यो-महावंद्यो । महाविघ्नविनाशकः । महासौम्य
महापुंसो । महामहिमअच्युतः ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्ति
संबोधः । एकानेकविनिश्चलः । सर्वबंधविनिर्मुक्तो ।
सर्वलोकप्रधानकः ॥ २९ ॥ महाशूरो महाधीरो । महा
दुःखविनाशकः । महामुक्तिप्रदोधीरो । महाहृद्यो महा
गुरुः ॥ ३० ॥ निर्मार्गमार्गविध्वंसी । निष्कामोविरता
च्युतः । भगवंतो महाशांतो । शांतिकल्याणकारकः ।
॥ ३१ ॥ परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्ठी परमेश्वरः ।
परमात्मारमानंदः परंपरम आत्मकः ॥ ३२ ॥ प्रज्ञ
ानंतविज्ञानी । संख्यानिर्वाणसंयुतः । नाभूति नाभि
गोरसी । व्योमरूपी निरात्मकः ॥ ३३ ॥ [illegible]
[illegible] । संसारच्छेद कारणः । [illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible] । [illegible]
[illegible] । [illegible] । [illegible]

विभवःस्तुतः ॥३५॥ वर्णातीतो महातीतो । रूपातीतो निरंजनः । अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेशनायकः॥३६॥ वरेण्योभवविध्वंसी । योगिनांज्ञानगोचरः । जन्ममृत्यु-जरातीतः । सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक्भव्य संवंद्यः । पवित्रागुण सागरः । प्रसन्नः परमाराध्यः लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो जगत्स्वामी। इंद्रवंद्यःसुरर्चितः । निष्प्रपंचोनिरातंको । निःशेषक्लेश नाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोकसंसेव्यो । लोकालोक विलोकनः । लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्रशिखर स्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसहस्राणि । ये पठन्ति पुनः पुनः । ते निर्वाणपदंयांति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ इति भद्रबाहुस्वामिना विरचितं लघुसहस्रनाम स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथस्य ॥

॥ मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः ॥

॥ नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥
सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः ॥ सर्वसत्
हिता योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्व
सिद्धश्चिदानन्दमयः शिवः ॥ परमात्मापरब्रह्म,परम
परमेश्वरः ॥३॥ जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरु
त्तमः ॥ सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासःशुभार्ण
॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्वदेवेशः,सर्वदःसर्वगोत्तमः॥ सर्वा
सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥ तत्वमू
परादित्यः, परब्रह्मप्रकाशकः ॥ परमेन्दुः परप्रा
परमामृतमिश्रितः ॥६॥ अजःसनातनःशम्भुरीश्व
सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा,क्षेत्राधीशः शु
भप्रदः ॥७॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्क
लश्च: निर्ममो निर्विकारश्च,निर्विकल्पो निरामयः॥८॥
अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तःशिवात्मकः ॥ अल
[illegible], ध्यान [illegible] निरञ्जनः ॥९॥ ओंकाराकृ
[illegible], [illegible] ॥ ब्रह्म[illegible]
[illegible] ॥१०॥ [illegible]

मृतमयोऽच्युतः ॥ आद्योनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी
परःपुमान् ॥ ११ ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशः, स्वयंभू,
परमाच्युतः ॥ व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभा-
सकः ॥ १२ ॥ ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणरूढो मनः
स्थितिः ॥ मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यःपरापरः
॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः ॥
भगवान् सर्वतत्त्वेशः शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥
इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः ॥ दिव्य
मष्टोत्तरं नामशतमंत्र प्रकीर्तितम् ॥१५॥ पवित्रं परमं
ध्येयं, परमानन्ददायकम् ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं,
पठते मङ्गलप्रदम् ॥ १६॥ श्रीमत्परमकल्याणसिद्धिदः
श्रेयसेऽस्तुवः ॥ पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान्
परमः शिवः ॥१७॥ धरणेद्रफणछत्रालंकृतो वः श्रियं
प्रभुः दद्यात्पद्मावतीदेव्या, समाधिष्ठितशासनः ॥१८॥
ध्यायेत्कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वं जगदीश्वरम् ॥ ॐ
ह्रीं श्रीं ह्रः समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥ १९ ॥
पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे ॥ परितोऽ

ष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्टपत्र-
स्थितैः पञ्चनमस्कारैस्तथा त्रिभिः ॥ ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं
नाथं, धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥ शतषोडशदला-
रूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् ॥ चतुर्विंशतिपत्रस्थं
जिनमातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ मायावेष्टय त्रयाग्रस्थं
क्रौंकारसहितं प्रभुम् ॥ नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्द-
शभिर्वृतम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मन्त्राद्यचतुर्बीजा-
न्वितैर्जिनैः ॥ चतुरष्टदशद्वित्रिद्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥
॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाङ्कितेन च ॥
चतुरस्रेण वज्राङ्कक्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥
श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् ॥ तं सर्व-
पापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥ जिनेशः
पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा ॥ ध्यातस्त्वं
यैः क्षणं वापि, सिद्धिस्तेषां महोदया ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्व-
मन्त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् ॥ शान्तिपुष्टि-
करं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कुरु त्वं [illegible]

जपनान्नन्दताज्ञनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्याज्जरामृत्युविवर्जितः ॥अणिमादिमहासीद्धिं:लक्षजापेन चाप्नुयात्॥३०॥प्राणायाममनोमन्त्र,योगादमृतमात्मनि ॥ त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् ! सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः ॥ पातु वःपरमानन्दलक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्व मङ्गलसिद्धिदम् ॥ त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥ ३३ ॥

इति श्रीपार्श्वनाथस्य मन्त्राधिराजस्तोत्रम् ॥

॥ जयतिहुअणस्तोत्रम् ॥

जयतिहुअणवरकप्परुक्खजयजिणधन्नंतरि, जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि; तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ, कुणसु सुहाइ जिणेसपास थंभणपुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंतिझत्ति वरपुत्त कलत्तइ, धण्ण सुवण्ण हिरण्ण पुण्ण

जण भुंजइ रज्जुइ; पिक्खइ मुक्ख असंख-सुक्ख तुह
पास पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ
कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जरपरिजुण्ण-कण्ण न-
ट्टट्टसुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नरसल्लि-
सूलिण; तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुण-
ण्णव, जय धन्नंतरि पास. महवि तुह रोगहर
भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउ अपयत्ति-
भुवणब्भुउ अट्ठविहसिद्धि सिज्झहि तुह नामिन
तुह नामिण अपवित्त ओवि जण होइ पवि-
त्तउ. तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥
॥ ४ ॥ खुद पउत्तइ मंततंत जंताइ विसुत्तइ, च-
र थिर गरल गहुग्ग खग्ग रिउवग्गि विगंजइ; दुत्थि-
यसत्थ अणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि. दुरियइ हर-
उ स पास देउ दुरियकरि केसरि ॥ ५ ॥ तुह आणा
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मिय ॥ ६ ॥ पत्थिय अत्थअणत्थ-तत्थ भत्तिब्भर नि-
ब्भर, रोमंचंचिय चारुकार किन्नरनर सुरवर; जसु
सेवहि कमकमलजुयल पक्खालिय कलिमलु सो भुव-
णत्तय सामिपास मह मद्दउ रिउबलु ॥ ७ ॥ जय
जोइमणकमलभसलभयपंजरकुंजर, तिहुअणजणआ-
णंद-चंद भुवणत्तय दिणयर; जय मइ मेइणि वा-
रिवाह जय जंतुपियामह, थंभणयट्ठिय पासनाह ना-
हत्तण कुण मह ॥ ८ ॥ बहुविहु वन्नुअवन्नु-सुन्नु
वन्निउ छप्पन्निहि, मुक्खधम्म कामत्थ-कामनर निय-
निय सत्थिहि; जं झायहि बहु दरिसणत्थ बहु नाम
पसिद्धउ, सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पव-
द्धउ ॥ ९ ॥ भयविब्भलरणझणिर-दसण थरहरिय
सरीरय, तरलियनयणविसुन्न-सुन्न गग्गरगिर करुण-
य; तइसहसत्ति सरंत हुंति नरनासियगुरुदर, मह
विज्झवि सिज्झिसइ पास भयपंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइं
पासि वियसंतनित्तपत्तंत पवित्तिय, वाह पवाह पवू-
ढरूढ दुहदाह सुपुलइय; मन्नइ मन्नु सउन्नुपुन्नु

अप्पाणं सुरनर, इय तिहुतण आणंद-चंद जय पा-
सजिणेसर ॥ ११ ॥ तुह कल्लाणमहेसु घंटटंकारअ-
पिल्लिय वल्लिरमल्लमहल्लभत्ति सुरवरगंजुल्लिय, हल्लु-
प्फलिय पवत्त-यंति भुवणवि महूसव, इय तिहुअण-
आणंद-चंद जय पास सुहुब्भव ॥ १२ ॥ निम्मलके-
वलकिरण-नियरविहुरियतमपहयर, दंसियसयलप-
यत्थसत्थ वित्थरियपहायर; कलिकलुसियजणघूयलो-
यलोयणह अगोयर, तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवणत्त-
यदिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिस-सित्त मा-
णवमइमेइणि, अवरावरसुहुमत्थ-बोहकंदलदलरेहिणि:
जायइ फलभरभरिय-हरियदुहदाहअणोवम, इय म-
इमेइणि वारिवाह दिस पास मई मम ॥ १४ ॥ कय
अविकलकल्लाण वल्लि-उल्लूरिय दुहवणु, दाविय सग्ग
पवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु; जग जं तुह जणणि
[illegible] जणिय हियावह, रम्मु धम्मु सो जयइ पास
[illegible] ॥ १५ ॥ भुवणारण्णनिवास—दरि-
[illegible]

पसुवय; तुह उत्तट्ठसुनट्ठ–सूट्टु अविसंठुल्लु चिट्ठहि, इय तिहुअणवणसीह पास पावाइ पणासहि ॥ ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरंत–रयणकररंजियनहयल, फलिणी कंदलदलतमाल निलुप्पलसामल; कमठासूरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय, जय पच्चक्ख जिणस पास थंभणयपुरट्ठिय ॥१७॥ मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु, नेय तणुरवि अविणयसहावु अलसविहलंथलु, तुह माहप्पुपमाणु देव! कारुण्यपवित्तउ, इय मइ मा अवहीरि पास पालिहि विलवंतउ ॥ १८ ॥ किं किं कप्पिउ नेय कलुणु किं किं व न जंपिउ, किं व न चिट्ठिउ किट्टु देव दीणयमवलंविउ, कासु न किय निप्फल्लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि, तहवि न पत्तउ ताणुं किंपि पइ पहु परिचत्तिहि ॥ १९ ॥ तुहु सामिउ तुहु माय वप्पु तुहु मित्त पियंकरु तुहु गइ तुहु मइ तुहु जिताणु तुहु गुरु खेमंकरु; हउं दुहभरभारिउ वराउ राउ निब्भग्गह लीणउ तुह कमकमल सरणु जिण पालहि

चंगह ॥ २० ॥ पइ किविकय नीरोयलोय किवि पा-
विय सुहसय. किवि मइमंत महंत केवि किवि सा-
हिय सिवपय: किवि गंजिय रिउवग्गकेवि जसधवलय
भूयल, मइ अवहीरहि केणपास सरणागयवछल ॥
॥ २१ ॥ पच्चुवयार निरीहनाह निप्पन्नपओयण, तुह
जिणपासपरोवयार करणिक्कपरायण, सत्तुमित्तसम-
चित्तवित्ति नयनिंदयसमसमण: मा अवहिरियउजुग-
उवि मइ पास निरंजण ॥ २२ ॥ हउ बहुविहदुहत-
त्तगत्तु तुह दुहनासणपर, हउ सुयणह करुणिक्कठाणु
तुह निरु करुणापर: हउ जिणपास असामि सामु
तुहु तिहुअण सामिय, जं अवहीरहि मइ झखंत इय
पास न सोहिय ॥ २३ ॥ जुग्गाजुग्गविभाग-नाह
नहु जोयहि तुह सम, भुवणुवयारसहाव-भाव क-
[illegible] समविसमइं किं घणुनियइ भुवि दाह समं-
[illegible] पास मइ पाल थुणंतउ ॥ २४ ॥
[illegible]
[illegible]

नाहिणचत्तउं,तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइ चंगउ॥ २५ ॥ अह अन्नुवि जुग्गय विसेसु किवि मन्नहि दीणह,जं पासिवि उवयारु करइ तुह नाह समग्गह; सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह, किं अन्निण तं चेवदेव मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥ तुह पत्थण न हु होइविहलु जिण जाणउ किं पुण हउ, दुक्खिय निरुसत्त चत्त दुक्खहु उस्सुयमण;तं मन्नउ निमिसेण एउ एउवि जइ लब्भइ, सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥ २७ ॥ तिहु अणसामिय पासनाह मइ अप्पु पयासिउ, किज्जउ जं निय रूव सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ; अन्नु न जिण जग्गि तुह समोवि दक्खिन्नु दयासउ, जइ अवगन्नसि तुह जिणअहह कह हो सु हयासउ ॥ २८ ॥ जइ तुह रुविण किणवि–पेयपाइण वेलवियउ, तुवि जाणउ जिणपास तुह्मि हउं अंगीकरिउ; इय महं इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खं खंतह नियकित्तिणेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ २९ ॥ एह महारिय

जत्त देव इहु न्हवण महुसउ, जं अणलिय गुणगहण तुम्ह मुणिजण अणिसिद्धउ; एम पसीय सुपासना· हर्थंभणपुरट्टिय; इय मुणिवरु सिरि अभय-देउ विन्नवइ अणिंदिय.

इति श्री जयतिहुअणस्तोत्रं संपूर्णमिति । भद्रं भवतु सकलस्य जगतः । शान्तिः ॥

श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्रं ॥

(शार्दूलविक्रीडितं)

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चन्द्ररोचिर्मयं ।
किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं ।
शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनपतेर्भूयाद्भवालम्बनम् ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्
दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणीं च विस्मापयन्
ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन् ।
श्रीचिन्तामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुम्भे श्रृणिर्मोक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः ॥ दाने देवमणिर्नतोत्तमजन श्रेणिः कृपासारिणी । विश्वानन्दसुधाघृणिर्भव भिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥ ३ ॥

श्री चिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनस्त्वं मया । दृष्टस्तातः ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम् ॥ मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवांछितं । दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४ ॥

यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामाऽजगजंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपदं समस्तकमलाकेलिगृहं राजते । स श्री पार्श्वजिनो जने हितकृते चिन्तामणिःपातु माम् ॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोऽपि कल्पाङ्कुरो । दारिद्राणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः ॥ पीयूपस्य लवोऽपि रोगनिवहं यद्वत्तथा

ने विभो ॥ मूर्त्तिः स्फूर्त्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्त्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

श्री चिन्तामणिमन्त्रमोंकृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितां श्रीमर्हन्नमिऊणपाशकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् । द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभावाश्रयं । सोल्लासं वसहाङ्कितं जिन फुल्लिङ्गानन्दनं देहिनाम् ॥ ७ ॥

ह्रींश्रीं कारवरं नमोऽक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणीसंज्ञकम् ॥ भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे । पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्यहो ॥ ८ ॥

नो रोगा नैव शोका न कलहकलना नारिमारिप्रचारो, नैवाधिर्नासमाधिर्न च दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥ नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥ ९ ॥

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्तस्याङ्गणे रङ्गिणो देवा दानवमानवाः सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥

लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्माण्डसंस्थायिनी। श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथमनिशंसंस्तौति योध्यायते१०

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षःप्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः । त्रिभुवनजनवांछा दानचिन्तामणीकः,शिवपदतरुबीजंबोधिबीजंददातु११

॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ अथ ऋषिमंडल स्तोत्र लिख्यते ॥

आद्यंता क्षर संलक्ष्य मक्षरं वाप्य यत्स्थितं। अग्निज्वाला समं नाद विन्दुरेखासमन्वितम् ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रान्तं मनोमलविशोधनम्। देदीप्यमानंहृत्पद्मे तत्पदंनौमिनिर्मलं ॥ २ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्यईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः ॐ नमः सर्व सूरिभ्य ॐउपाध्यायेभ्योनमोनमः ॥ ३ ॥ ॐ नमः सर्व साधुभ्य ॐज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐनमस्तत्वदृष्टिभ्य श्चारित्रेभ्योनमोनमः ॥ ४ ॥ अर्हमित्यक्षरंब्रह्म वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्यसद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेऽस्त्वेत दर्हदाद्यष्टकंशुभं । स्थानेष्वष्टसुसंन्यस्तं पृथग् बीजसमन्वितं ॥६॥

आद्यंपदं शिरो रक्षेत् परं रक्षतु मस्तकम् । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे तुर्यं रक्षेत्तु नासिकाम् ॥ ७ ॥ पञ्चमंतु मुखंरक्षेत् षष्ठं रक्षतु घंटिकाम् । सप्तमं रक्षेन्नाभ्यंतं पादान्ते चाष्टमंपुनः ॥ ८ ॥ पूर्वं प्रणवतः सान्तं सं. फोद्विद्विपञ्चशान् । सप्ताष्टदश सूर्याङ्कान् श्रितोबि. न्दुस्वरानपृथक्॥९॥पूज्यनामाक्षरा आद्या पञ्चैते ज्ञान दर्शन॥चारित्रेभ्यो नमो मध्ये ह्रींसान्तः समलङ्कृतः ॥१०॥ ॐह्रांह्रींह्रुंह्रूंह्रेंह्रैंह्रोंह्रः ॐअसिआउसाज्ञान दर्शन चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ॥ इति श्रीमंडलस्तवस्य मूलमंत्रआराधकस्य । शुभः नर्वाता. क्षरः अष्टादशशुद्धाक्षरः ॥ ११ ॥ जंबू वृक्ष [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] [illegible] । ३० [illegible] [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]

जसंमतम् । तामसं विरसं वद्धं तेजसं शर्वरी सम्
॥ १६ ॥ साकारंच निराकारम् सरसं विरसं परम् ।
परापरं परातीतं परंपर परापरम् ॥ १७ ॥ एक वर्णं
द्विवर्णंच त्रिवर्णं तुर्य वर्णकम् । पंचवर्णं महावर्णं स-
परंच परापरम् ॥ १८ ॥ सकलं निष्कलंतुष्टं निवृतं
भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निराकारम् निर्लेपं वित्त-
संश्रयम् ॥ १९ ॥ ईश्वरं ब्रह्म संरुद्धम् बुद्धं सिद्धं म-
तं गुरुम् । ज्योती रूपं महादेवम् लोकालोक प्रका-
शकम् ॥ २० ॥ अर्हदाख्यसुवर्णान्त सरेफो विन्दु
मंडितः । तुर्यस्वर समायुक्तो वहुधा नादमालितः
॥ २१ ॥ अस्मिन्वीजे स्थिताःसर्वे ऋषभाद्याजिनो-
त्तमाः । वर्णै निजनिजैर्युक्ता ध्यातव्या स्तत्र संगताः
॥ २२ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो विन्दु नीलसमप्रभः ।
कलारुण समासान्त स्वर्णाभःसर्वतोमुखः ॥ २३ ॥
शिरसंलीनईकारो वलिनो वर्णतः स्मृतः । वर्णानु-
सारिसंलीनं तीर्थकृन्मंडलंनुमः ॥ २४ ॥ चन्द्रप्रभपु-
ष्पदन्तौ नाद स्थिति समाश्रितौ । विन्दुमध्यगतौ-
नेमि सुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २५ ॥ पद्म प्रभ वासुपू-

ऱ्यौ कलापद मधिश्रितौ । शिरसिस्थिति संलीनौ
पार्श्वमल्लिजिनोत्तमौ ॥ २६ ॥ ऋषभं चाजितं वन्दे
संभवं चाभिनंदनम । सुमतिं तथा सुपार्श्वं वंदे श्री
शीतलं जिनम ॥ २७ ॥ श्रेयांसं विमलंवन्दे अनंत
धर्म नायकम । शान्ति कुन्थुमरर्हन्तं नमिं वीरं न-
माम्यहम ॥ २८ ॥ एतांश्च षोडशजिनान् गांगेय द्यु-
तिसन्निभान् । त्रिकालं नौमि भक्त्या हराक्षर स-
निष्ठितान् ॥ २९ ॥ शेषास्तीर्थकराःसर्वे हरस्थाने नि-
योजिताः । मायाबीजाक्षरंप्राप्ता चतुर्विंशतिरर्हताम
॥ ३० ॥ गत राग द्वेष मोहाः सर्व पाप विवर्जिताः
सर्वदा सर्वकालेषु ते भवन्तिजिनोत्तमाः ॥ ३१ ॥ दे-
वदेवस्यचक्रम तस्यचक्रस्य या विभा । तयाच्छा-
दितसर्वांगम मा मा हिंसन्तु पन्नगाः ॥ ३२ ॥ देव-
देव० ॥ नागिनी ॥ ३३ ॥ देवदेव० गोनसा ॥ ३४ ॥
देवदेव० वृश्चिका ॥ ३५ ॥ देवदेव० शाकिनी ॥ ३६ ॥
[illegible] ॥ ३७ ॥ देवदेव० [illegible]
[illegible] देवदेव० [illegible] ॥ ३८ ॥ देवदेव [illegible]
[illegible] देवदेव० [illegible] ॥ [illegible] ॥ देवदे

शाकिनी ॥ ४२ ॥ देवदेव० योगिनी ॥ ४३ ॥ देव-
देव० हाकिनी ॥ ४४ ॥ देवदेव स्थावराः ॥ ४५ ॥
देवदेव० ॥ जङ्गमाः ॥ ४६ ॥ देवदेव किन्नराः ॥४७॥
देवदेव० ॥ राक्षसाः ॥ ४८ ॥ देवदेव० ॥ भेषजाः
॥ ४९ ॥ देवदेव० ॥ देवताः ॥ ५० ॥ देवदेव० ॥
वायवः ॥ ५१ ॥ देवदेव० ॥ तस्कराः ॥ ५२ ॥ देवदे-
व० वह्नयः ॥ ५३ ॥ देवदेव० शृङ्गिणः ॥ ५४ ॥ दे-
वदेव० दंष्ट्रिणः ॥ ५५ ॥ देवदेव० ॥ द्राविणः॥५६॥
देवदेव० ॥ रेपलाः ॥ ५७ ॥ देवदेव० ॥ पक्षिणः ॥
॥ ५८ ॥ देवदेव० मुद्गलाः ॥ ५९ ॥ देवदेव० जृंभ-
काः ॥ ६० ॥ देवदेव० ॥ तोयदाः ॥ ६१ ॥ देवदेव०
॥ सिंहकाः ॥ ६२ ॥ देवदेव० शूकराः ॥ ६३ ॥ देव-
देव० चित्रकाः ॥ ६४ ॥ देवदेव० ॥ हस्तिनः ॥ ६५ ॥
देवदेव० ॥ भूमिपाः ॥६६॥ देवदेव० ॥ शत्रवः ॥६७॥
देवदेव० ॥ ग्रामिणः ॥ ६८ ॥ देवदेव० ॥ दुर्जनाः
॥ ६९ ॥ देवदेव० ॥ व्यंतराः ॥ ७० ॥ देवदेव० ॥
व्याधयः ॥ ७१ ॥ देवदेव० ॥ विग्रहाः ॥ ७२ ॥ देव-
देव० ॥ दुष्ग्रहाः ॥ ७३ ॥ श्री गौतमस्ययामुद्रा त-

न्याया भुविलब्धयः । नाभिरभ्यधिकंज्योति रहंसर्व
निर्धीश्वर: ॥ ७४ ॥ पाताल वासिनोदेवा देवाभूपीठ
वासिन । स्वर्वासिनोऽपियेदेवा सर्वेरक्षन्तु मामितः
७५ ॥ येऽवधि लब्धयोयेत्र परमाऽवधिलब्धयः।
तेसर्वे मुनयो दिव्या मांसंरक्षन्तु सर्वतः ॥ ७६ ॥
भवनेन्द्र व्यंतरेन्द्र ज्योतिष्केन्द्र कल्पेन्द्रेभ्यो नमः।
श्रुतावधि देशावधि परमावधि सर्वावधि बुद्धिऋद्धि
प्राप्त सर्वौषध्यृद्धिप्राप्तानन्त बलर्द्धि प्राप्त तपर्द्धिप्राप्त
रसर्द्धिप्राप्त वैक्रियर्द्धिप्राप्त क्षेत्रर्द्धिप्राप्ताक्षीणमहान
सर्द्धिप्राप्तेभ्यो नमः ७७ ॥

[illegible] श्री। श्रुतिलक्ष्मी। गौरी चण्डी [illegible]
[illegible] त्रिसा जिना नित्या मदद्रवा ॥७८॥
[illegible] मानंदानन्दमालिनी। [illegible]
[illegible] ॥७९॥ [illegible]
[illegible] । सर्वे सर्वाः [illegible]
[illegible] ॥ ८० ॥ [illegible]
[illegible] । [illegible]
[illegible]

प्राप्यः श्री ऋषिमंडलस्तवः। भाषितस्तीर्थनाथेन जगदानन्द दायकः ॥ ८२ ॥ रणे राजकुलेवह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ। स्मशाने विपिने घोरे स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ८३ ॥ राज्य भ्रष्टानिजंराज्यं पद भ्रष्टा निजं पदम्। लक्ष्मी भ्रष्टा निजांलक्ष्मीं प्राप्नुवन्तेन संशयः ॥ ८४ ॥ भार्यार्थी लभते भार्या सुतार्थी लभतेसुतं। धनार्थी लभते वित्तम् नरः स्मरण मात्रतः ॥ ८५ ॥ स्वर्णेरूप्येपटे कांस्ये लिखित्वायस्तुपूजयेत्। तस्यैवाऽष्टमहासिद्धि र्गृहे वसति शाश्वती ॥ ८६ ॥ भुर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्निवाभुजे। धारितं सर्वदा दिव्यं सर्व भीति विनाशनम् ॥ ८७ ॥ भूतैः प्रेतै र्ग्रहै र्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः। वात पित्त कफोद्रेकै र्मुच्यते नाऽत्रसंशयः ॥८८॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठे वर्तिनः शाश्वता जिनाः। तैः स्तुतैर्वंदितैर्दृष्टै र्यत्फलंतत्फलं स्मृते ॥ ८९ ॥ एत द्गोप्यंमहास्तोत्रं नदेयंयस्य कस्यचित्। मिथ्यात्व वासिनोदत्तं वालहत्या पदे पदे ॥९०॥ आचाम्लादितपः कृत्वा पूजयित्वाजिनावलिम्। अष्ट सहस्त्रको जापः कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ९१ ॥ शतम-

ष्टोत्तरंप्रान येपठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो·
देहे प्रभवन्तिनसंशयः ॥१२॥ अष्टमासाऽवधियावत्
प्रातः प्रातस्तुयः पठेत् ॥स्तोत्रमेतन्महातेज सर्वहिं·
म्वंसपद्यति ॥१३॥ दृष्टेसत्यर्हतोबिंबे भवे सतमर·
ध्रुवम । पद्म् प्राप्नोति धर्मात्मा परमानंद संपदम॥
॥१४॥ विश्ववंद्यो भवेद्ध्याता कल्याणानिचसोऽश्नुते
गत्वास्थानं परंसोऽपि भूयस्तुन निवर्तते ॥१५॥
इदंस्तोत्रममहास्तोत्रम स्तुतीनामुत्तमंपरम । पठ·
नात् स्मरणाज्जापा ल्लभते पद्मव्ययम ॥१६॥
॥ इति श्री गौतम स्वामि विरचितं [illegible]

॥ अथ चेगट्या स्तोत्रम् ॥

नमिऊण जिणं पासं, नागिंदसुरिंदवंदिअं देव [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]

धरणिंदपडमपंत्ती, वइरुट्टा नाम नागिणी विज्जा । सप्प करंडगहत्था, सव्वाभरणा य जा निच्चं ॥ ४ ॥ वासुगि अणंत तक्खग, कंकोल य नाम पउम मह पउमा॥संख कुलीससि नामा, अट्ठकुलाणं च धारेई॥ ॥ ५ ॥ विच्छु अ कन्नासिआली, कंकाही गोरसप्पस प्पे य । गोहे उंदिरचित्ती, ककिंडु अहिंडु अविसेय ॥ ६ ॥ वंतर गोणसजाई, सत्तवंडाअहिवंडा य प- रंडा य । भमर सिराहि घिरोलि, अ घिरोलिआणं च नासेइ ॥ ७ ॥ फुंक्कारंतं च विसं, अविसट्टं विसपल्लवे चरइ । पारस नाम श्रीं हिं, पउमावइ धरणराएण ॥ ८ ॥ सप्प विसप्पसरीसव, धरणिं गच्छाहिं आहि तुरिअं । जंभणि थंभाणि वंधाणि, मोहाणि झू फुटका रेणं ॥ ९ ॥ जो पढइ जो निसुणइ, वइरुट्टा मंतसं- थवं पुरिसो । तस्सासेसविसाइं, कायं न फुसंति भ- त्तस्स ॥ १० ॥ घय गुळ दहि अविमिस्सं, महुरपउरं च जो वलि देइ । साहुण भत्तपाणं, वइरुट्टा तंपि रक्खेइ ॥ ११ ॥ इअ धरणोरगदइआ, अन्नेहिं वि- निअतुलेहिं विउलेहिं । देवी करेइ रक्खं, वइरुट्टा

भविअलोगस्स ॥ १२ ॥ नागिणि नागलोअ,सग्ग सिरावी । जो तस्स नाउं लेइ, तसु असुह निवारी । अज्ञानंदिलेणसंनिढं, एहिथंडिलिनाहि विसेरउ ॥ १३ ॥ अह ववसेवउं नाहिड सेवउं, जाहिर आर्म विसमंडलि । नागिणि पुत्तहगकहिज्जउ । पहुआनन्द यन्लंघिज्ञउ ॥ १४ ॥ जीवउ नागिणि नागलोअ । अनउं अग्निजग वाउ । जेण अणाह सणाह कि नेउर कुहुपाय ॥ १५ ॥ दिसिबंधउं विदिसिबंधउं । थंभउं नह पायालु । अम्हे अरिहंताह किंकरा, मंति पालुं जाल ॥ १६ ॥ देवदेवस्स जं छत्तं, तस्स छ स्स जोअओ । तेणच्छाएमि अप्पाणं, मा मे हिंसं [illegible] ॥ १७ ॥ देव० भुअगा ॥ १८ ॥ देव० [illegible] सा ॥ १९ ॥ देव जोडणि ॥ २० ॥ देव० [illegible] ॥ २१ ॥ देव० [illegible] ॥ २२ ॥ देव० [illegible] । २३ देव० [illegible] ॥ २४ ॥ देव० [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ २६ ॥ देव० [illegible] ॥ २७ ॥ देव० [illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]

[illegible]

मठ महासुर कय उवसग्गं झाडि अकोवनं झंहंसं। २९ ॥ मुहि चंदप्पह हिअइ, जिणु मत्थइ पारस त्थु । पणिहिं मुदिं मुदिउ को फेंडणह समत्थ ॥ ३० ॥ उरिड्डइ, सिरिमुद्द पाय मुद्दमत्थह दिन्नी मुद्द। ईणिंहिं मुद्दिहिं, मुदिउ हिडइ व्यारि समुदं ॥ ३१ ॥ संखहि करहि आवह, सामइं दिन्नीमुद्द । एदुदुलधिको लघसि, पारसनाथी मुद्द ॥ ३२ ॥

॥ इति श्री वैरोट्यास्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

मन्त्राधिराजाक्षरवर्णयुक्ति, स्तेषां जिनांगेषु निवेश्य भंगी । वक्ष्ये यथावत्प्रथमं च तत्र, उमक्षरं नीलरुचिं ललाटे ॥ १ ॥ ॐ दक्षिणांशे पुनरेव शोणं वामांसके ह्रीं भज पंचवर्णम् । सिंदूर भं ह्रीं स्मर वामहस्ते, ह्रीं धूम्रवर्णं भण वामकुक्षौ ॥ २ ॥ हः कृष्णवर्णं कटिवामदेशे यः सव्यजानु स्थिति धूम्रवर्णं। क्षः पीतभं पादतले च वामे ह्रीं पञ्चवर्णं पुनरेव नाभौ ॥ ३ ॥ फुधूम्रवर्णं कथयति गुह्ये द् व्यजनं पा-

दतलेऽपसव्ये । फुट् दक्षिणे जानुनि धूम्र वर्णद् द-
क्षिणायां च कटी च कृष्णं ॥ ४ ॥ स्वाःकृष्णत्रं द-
क्षिणकुक्षि लक्ष्यं ह्रा दक्षिणे हस्ततले वि नीलम् ।
ए स्फाटिकं दक्षिण वक्षसोंऽसे गं वामवक्षोजगते सि
तांशुं ॥ ५ ॥ इति सप्तदशाक्षराणि साक्षादिव निं-
न्यस पुरःस्थजिनमूर्त्तौ ध्यायति विजया जया सर्व प-
म भवति नित्यवर्द्धी कृतात्र सिद्धिः ॥ ६ ॥ इह हि
भवति तुष्टो यस्य संघाधिराजः स भवति भुवि विजय
गैरवशतवर्त्ती । सदाविजयसमृद्धिः सर्व कल्याणानि
सिद्धिनिसानिरतिर्वर्तिनिः श्रीयति धाम कीर्तिः ॥ ७ ॥

इति [illegible] । [illegible]

[illegible] विरचितं

॥ श्री ॥

॥ जिनपञ्जरस्तोत्रं ॥

[illegible]

[illegible]

श्री अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ ऑं ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॥ऑं ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः ॥ उँ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषं पञ्चनमस्कारः, सर्वपापक्षयंकरः ॥ मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥२॥ ऑं ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं परमात्मने नमः ॥ कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥ ३ ॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालंयःपठेदिदम् ॥ मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥ ४ ॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलोभविवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥ ५ ॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अङ्कसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षे, दाग्नेयीं विजितेन्द्रियः ॥ दक्षिणाशां परब्रह्म, नैरुतीं च

त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां
परमेश्वरः उत्तरां तीर्थकृत्सर्वामीशानेऽपि निरञ्जनः
॥ १० ॥ पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः रोहि-
णीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥११॥ ऋषभो
मस्तकं रक्षेदजितोऽपि विलोचनम् ॥ संभवः कर्णयु-
गलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥१२॥ ओष्ठं श्री सुमती
रक्षे, दन्तान्पद्मप्रभो विभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं
तालु चन्द्रप्रभाभिधः ॥ १३ ॥ कण्ठं श्रीसुविधी रक्षे-
द्धृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो बाहु युगलं, वासुपूज्यः
करद्वयम् ॥ १४ ॥ अङ्गुलीर्विमलो रक्षेदनन्तोऽसौ न-
खानपि श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि श्रीशान्तिर्नाभि-
मण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षेदरो लोमकटी-
तटम् ॥ मल्लिरूरुपृष्ठवंशं जङ्घे च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥
पादाङ्गुलीर्नमी रक्षेच्छ्रीनेमिश्चरणद्वयम् ॥ श्रीपार्श्व-
नाथः सर्वाङ्गं, वर्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथ्वी
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]

ग्रामे शत्रुसंकटे ॥ व्याघ्रचौराग्निसर्पादिभूतप्रेतभ-
याश्रिते ॥ १९ ॥ अकालेमरणेप्राप्ते, दारिद्यापत्समा-
श्रिते ॥ अपुत्रत्वे [1]महादुःखे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥
॥ २० ॥ डाकिनीशाकिनीग्रस्ते, महाग्रहगणार्दिते ॥
नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥
प्रातरेव समुच्छाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम् ॥ तस्य कि-
ञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसंपदः ॥ २२ ॥ जिनप-
ञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरम् ॥ कमलप्रभराजेन्द्र
श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातःसमुत्थाय पठेत्कृ-
तज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जरस्य ॥आसादयेच्छ्रीकम-
लप्रभाख्यां, लक्ष्मींमनोवाञ्छितपूरणाय ॥ श्री रुद्र-
पल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः ॥ वादी-
न्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद्गुरुःश्रीकमलप्रभाख्यः
॥ इति श्रीकमलप्रभाचार्यविरचितसर्वरक्षाकरं श्री
जिनपञ्जरस्तोत्रं समाप्तम् ॥



---

१ महादुःखे आ श्लोक मूळ पुस्तकमां नथी परंतु कमल प्रभा-
चार्यना शिष्ये बनावेल छे एम लागे छे.

बीजोरा कारण रायमहाबल, व्यंतरदुष्टविरोध; जेणे नवकारे हत्या टाळी, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध; नवलाख जपंतां थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार सो० ॥ ७ ॥ पल्लीपति शिख्यो मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध; परभव ते राजसिंह प्रथिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध, ए मंत्रथकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार सो० ॥ ८ ॥ सन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले; दीठो श्रीं पासकुमारे पन्नग, अधबलतो ते टाले, संभलाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार. सो० ॥ ९ ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रीयसंयोग; इणे ध्यान थकी कुष्ठ टल्यो उंबरनो, रक्तपित्तनो रोग; निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्मतणो आधार. सो० ॥ १० ॥ घटमांही कृष्णभुजंगमघाल्यो, घरणीकरवाघात; परमेष्ठिप्रभावे हारफुलनो, वसुधा मांही विख्यात. कमलावतिए (कलावतिए) पिंगलकीधो, पापतणोपरिहार, सो० ॥ ११ ॥ गयणां गणजाति राखीग्रहीने,

पाडी त्राग प्रहार; पदपंच सुणंतां पांडुपति घर, ते धइ कुंता नार; ए मंत्र अमुलखमहिमामंदिर, भा दुःख भंजणहार. सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबले कादव काढया, शकट पांचशें मान; दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी संपत्ति वसुधा लही.विलसे जैनविहार.सो०॥१३॥आगे चोवीशी हुइ अनंती.होशेवार अनंत; नवकारतणी कोइ आदि न जाणे, एम भाखे अरिहंत; पूरव दिशि चार आदि प्रदेशे, समर्या संपत्ति सार. सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृतकर्म कठोर; पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेखो, मणिधर ने एक मोर; सद्गुरु सन्मुख विधिए समरंता, सफल जनम संसार. सो० ॥ १५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] नवकार गुणाव्यो, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सो० ॥ १६ ॥ [illegible]

ति समकित; पंचप्रमाद विषय तजो पंचह, पालो
ाचार. सो० ॥ १७॥ कलश—छप्पय ॥नित्य जपी-
नवकार, सार संपत्ति सुखदायक; सिद्धमंत्र ए शा-
तो, एम जपे श्री जगनायक; श्री अरिहंत सुसि-
, शुद्ध आचार्य भणी जे; श्री उवज्झाय सुसाधु,
च परमेष्ठिथुणी जे; नवकार सार संसार छे, कुशल
ाभवाचक कहे; एक चित्ते आराधतां, विविधरीद्धि
ांछितलहे. ॥ १८ ॥

श्री रत्नाकर पचीशी.

श्रेयःश्रियां मंगल केलिसद्म, नरेंद्रदेवेंद्र नतां-
घ्रिपद्म; सर्वज्ञ सर्वातिशय प्रधान, चिरंजय ज्ञानक-
लानिधान. ॥ १ ॥ जगत्रयाधार कृपावतार, दुर्वारसं-
सारविकारवैद्य; श्रीवीतराग त्वयि मुग्धभावा, द्विज्ञ
प्रभो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥ किं बाललीलाक-
लितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः;

तथा यथार्थं कथयामि नाथ, निजाशयं सानुश
वामि. ॥ ३ ॥ दत्तं न दानं परिशीलितं च, न
शीलं न तपोभितसं: शुभो न भावोऽप्यभ
स्मिन्, विभो मया भ्रांतमहो मुधैव. ॥ ४ ॥
ग्धिना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोभाख्यमह
ग्रस्तोऽभिमानाजगरेण माया–जालेन बद्धोऽस्मि
भजे त्वां ॥ ५ ॥ कृतं मयामुत्र हितं न चेह
ऽपि लोकेश सुखं न मे ऽभूत्: अस्मादृशां के
जन्म, जिनेश जज्ञे भव पूरणाय. ॥ ६ ॥ मन्
यन्न मनोज्ञवृत्तं. त्वदास्यपीयूषमयूखलाभा
महानंदरसं कठोर, मस्मादृशां देव तदश्म
॥ ७ ॥ त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं
[illegible] प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्र
[illegible] पूत्करोमि. ॥ ८ ॥ वैराग्यरंगः परवंचना
[illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible]

विचिंतनेन, कृतं भविष्यामि कथं विभोऽहं. ॥१०॥ विडंबितं यत् स्मरघस्मरार्ति, दशावशात्स्वं विषयांधलेन; प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, सर्वज्ञ सर्वं स्वयमेव वेत्सि. ॥ ११ ॥ ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठि मंत्रः, कुशास्त्रवाक्यै र्निहतागमोक्तिः, कर्तुं, वृथा कर्म कुदेवसंगा, दवांछिहे नाथ मतिभ्रमोमे ॥ १२ ॥ विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवंतं, ध्याता मया मूढधिया हृदंतः, कटाक्ष वक्षोजगभीरनाभी, कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः ॥ १३ ॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, योमानसे रागलवो विलग्नः; न शुद्धसिद्धांत पयोधि मध्ये, धौतोप्यगात्तारक कारणं किं. ॥१४॥ अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपिकलाविलासः; स्फुरत् प्रभा न प्रभुता च काऽपि, तथाऽप्यहंकारकदर्थितोऽहं. ॥ १५ ॥ आयुर्गलत्याशु न पाप बुद्धि, र्गतं वयो नो विषयाभिलापः; यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडंबना मे. ॥ १६॥ नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयं; अधारि

कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देव धिग् माम्
॥ १७ ॥ न देव पूजा, न च पात्रपूजा, न श्राद्ध
धर्मश्च न साधु धर्मः लब्ध्वापि मानुष्य मिदं समस्तं,
कृतं मयारण्यविलापतुल्यं. ॥ १८ ॥ चक्रे मया स
त्स्वपि कामधेनु, कल्पद्रुचिंतामणिषु स्पृहार्तिः न
जैनधर्मे स्फुटशर्मदेऽपि, जिनेश मे पश्य विमूढभावं
॥ १९ ॥ सद्भोगलीला न च रोग कीला, धनागमो
नो निधनागमश्च; दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्य
चिंति नित्यं मयकाधमेन.॥२०॥ स्थितं न साधोर्हृदि सा
धुवृत्तात् परोपकारान्न यशोऽर्जितं च, कृतं न तीर्थोद्धरणादि
कृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म.॥२१॥ वैराग्यरंगो न
गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शांतिः नाध्यात्मलेशो
मम कोऽपि देव, तार्यः कथंकारमयं भवाब्धिः ॥२२॥
पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य, मागामि जन्मन्य
पि नो करिष्ये, यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा भूतोद्भ
वद्भावि भवत्रयीश ॥२३॥ किं वा मुधाहं बहुधा सु
धाभुक् पूज्य त्वदग्रे चरितं स्वकीयं, जल्पामि [illegible]

त्रिजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥ २४ ॥

शार्दूलविक्रीडित छंद.

दीनोद्धारधुरंधरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा, पात्रं नात्र जने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियं । किंत्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्री रत्नाकर मंगलैकनिलय श्रेयस्करं प्रार्थये! ॥ २५॥

श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजीकृत.

श्री परमात्म ज्योति पचीशी.

ऐन्द्रं तत्परमं ज्योति, रुपाधि रहितं स्तुमः; उदीते स्यु र्यदंशेपि, संनिधौ निधयो नव. ॥ १ ॥ प्रभा चंद्रार्कभादीनां, मितक्षेत्रप्रकाशिका; आत्मनस्तु परंज्योति, र्लोकालोक प्रकाशकं. ॥ २ ॥ निरालंबं निराकारं, निर्विकल्पं निरामयं; आत्मनः परमं ज्योति, र्निरुपाधि ॥ ६ ॥ दीपादिपुद्गलापेक्षं, समलं निर्मलं केवलं ज्योति,

/

निरपेक्ष मनीन्द्रियं. ॥ ४ ॥ कर्मणा कर्ममानेपु, आ-
गम्केष्वपि प्रभु · नमस्मानाउन स्वात्मा . करति ज्यो-
तिषा स्वयं ॥ ५ ॥ परम ज्योतिष [illegible] ज्योति
स्थितः यथा सूर्यकरस्पर्शात् [illegible]
॥ ६ ॥ पश्यन्न परमज्योति, [illegible] पर-
मज्योतिरन्विष्यन्, नाविवेकं निमज्जति. ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible]प्रकाशाय, परमज्योतिषे नम [illegible] नेव [illegible]
[illegible] पश्यं. ॥ ८ ॥ ज्ञानदर्शनसम्पन्न, [illegible]
[illegible] परमात्म प्रकाशो मे, [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ यां विना निष्फला [illegible]
[illegible] आत्मध्यान कल्पोमेरी, [illegible]
[illegible] ॥ निश्चिभिर्निवर्णी गते, [illegible]
[illegible] कल्पना, [illegible]
[illegible] सदा [illegible]
[illegible] परम [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

द्योतिताभ्यं तराशयाः; जीवन्मुक्ता महात्मानो, जायंते विगतस्पृहाः. ॥ १४ ॥ जाग्रत्यात्मनि ते नित्यं, वहिर्भावेषु शेरते; उदासेते परद्रव्ये, लिंगते स्वगुणामृते. ॥ १५ ॥ यथैवाभ्युदितः सूर्यो, विदधाति महान्तरं; चारित्रं परमज्योति, द्योतितात्मा तथा मुनिः ॥ १६॥ प्रछन्नं परमं ज्योति, रात्मना ज्ञानभस्मना; क्षणादाविर्भवत्युग्र, ध्यानवातप्रचारतः. ॥१७॥ परकीय प्रवृत्तौ ये, मूकांधवधिरोपमाः; स्वगुणार्जनसज्ञास्तैः; परम ज्योति राप्यते. ॥ १८ ॥ परेषां गुण दोषेषु, दृष्टिस्ते विपदायिनी; स्वगुणानुभवालोकाद्, दृष्टिः पियूष वर्षिणी. ॥१९॥ स्वरूपदर्शनं श्लाघ्यं, पररूपेक्षणं वृथा; एतावदेव विज्ञानं, परं ज्योतिः प्रकाशकं. ॥ २० ॥ स्तोकमप्यात्मनो ज्योतिः, पश्यतो दीप वाद्धितं; अंधस्य दीपशतवत्, परं ज्योतिर्न वह्वपि. ॥ २१ ॥ समता मृतमग्नानां, समाधिधूतपाप्मनां; रत्नत्रयमयं शुद्धं, परंज्योतिः प्रकाशते. ॥ २२ ॥ तीर्थकरा गणधरा लब्धि सिद्धाश्च साधवः; संजातास्त्रि जगद्वंद्याः, पर-

ज्योतिःप्रकाशतः. ॥ २३ ॥ न रागं नापि च द्वेषं, विषमेसु यदा व्रजेत्; औदासीन्य निमग्नात्मा, तदाप्नोति परं महः ॥ २४ ॥ विज्ञाय परमज्योति, माहात्म्य मिदमुत्तमं; यः स्थैर्य याति लभते, स यशोविजय श्रियं. ॥ २५ ॥

श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी कृत.

श्री परमात्म दर्शन पचीशी.

अनुष्टुप् वृत्त.

परमात्मा परं ज्योतिः, परमेष्ठि निरंजनः अज
सनातनः शंभुः, स्वयंभु जयताजिनः. ॥ १ ॥ नि
त्यम् विज्ञानं, ब्रह्म यत्र प्रतिष्ठितं, शुद्धबुद्धस्वभा
वाय, नमस्तस्मै परात्मने. ॥ २ ॥ अविद्या तमि
[illegible] निरवद्यं
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

न यत्र मनसो गतिः;शुद्धानुभवसंवेद्यं, तद्रूपं परमात्मनः. ॥ ४ ॥ न स्पर्शो यस्य नो वर्णो, न गंधो न रसश्रुतिः; शुद्धचिन्मात्र गुणवान्, परमात्मा स गीयते. ॥ ५ ॥ माधुर्यातिशयो यद्वा, गुणौघः परमात्मन; स्तथाख्यातुं न शक्योऽपि, प्रत्याख्यातुं न शक्यते. ॥ ६ ॥ बुद्धो जिनो हृषीकेशः शंभु र्ब्रह्मादिपूरुषः; इत्यादिनामभेदेऽपि, नार्थतः सविभिद्यते. ॥७॥ धावंतोऽपि नयानेके, तत् स्वरूपं स्पृशन्ति न । समुद्रा इव कल्लोलैः, कृत प्रातिनिवृत्तयः ॥ ८ ॥ शब्दोपरक्तद्रूप, बोधकृन्नयपद्धतिः; निर्विकल्पं तु तद्रूपं, गम्यं नानुभवं विना. ॥ ९ ॥ केषां न कल्पनादर्वी, शास्त्रक्षीरान्नगाहिनी; स्तोकास्तत्वरसास्वाद, विदोनुभव जीव्हया. ॥ १० ॥ जितेन्द्रिया जितक्रोधा, दान्तात्मानः शुभाशयाः परमात्मगतिं यान्ति, विभिन्नैरपिवर्त्मभिः ॥ ११ ॥ नूनं मुमुक्षवः सर्वे, परमेश्वरसेवकाः; दूरासन्नादिभेदस्तु, तद् भृत्यत्वं निहन्ति न. ॥१२॥ नाममात्रेण ये दृप्ता, ज्ञानमार्गविवर्जिताः;

न पश्यन्ति परात्मानं, ते घूका इव भास्करम्. ॥१३॥
श्रमः शास्त्राश्रयः सर्वो, यद्ज्ञानेन फलेग्रहिः स्यात-
द्योऽयमुपास्योऽयं, परमात्मा निरंजनः ॥ १४ ॥ ना-
न्तरायो न मिथ्यात्वं, हास्यो रत्यरती च नः नभी-
र्यस्य जुगुप्सा नो, परमात्मा स मे गतिः ॥ १५ ॥
न शोको यस्य नो कामो, नाज्ञानाविरती तथा; नो-
पकाशश्च निद्रायाः, परमात्मा स मे गतिः ॥ १६ ॥
रागद्वेषौ हतौ येन, जगत्त्रयभयंकरौ; स त्राता प-
रमात्मा मे, स्वप्नेऽपि जागरेऽपि वा. ॥ १७ ॥ उपाधि-
जनिता भावा, ये ये जन्मजरादिकाः तेषां तेषां नि-
षेधेन, सिद्धं रूपं परात्मनः ॥ १८ ॥ अत [illegible]
[illegible], सिद्धान्ताः कथयन्ति तं; [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible], न [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

योगमयमूर्तयः, आकालं परमात्मनः, सिद्धाः सन्ति- निरामयाः, ॥ २२ ॥ लोकाग्रशिखरारूढाः, स्वभावस- मवस्थिताः; भवप्रपंचनिर्मुक्ता, युक्तानन्तावगाहनाः ॥२३ ॥ इलिका भ्रमरीध्यानाद्, भ्रमरीत्वं यथाऽश्नुते; तथा ध्यायन् परात्मानं, परमात्मत्वमाप्नुयात्. ॥२४॥ परमात्म गुणानेवं, ये ध्यायन्ति समाहिताः; लभन्ते निभृतानंदा, स्ते यशोविजय श्रियम्. ॥ २५ ॥

यशस्वी धर्मशीलमहाराजाधिराज श्रीकुमारपालकृत आत्मनिन्दारूप.

जिनेंद्र स्तुति.

उपजाति वृत्तम्.

नम्राखिलाखंडलमौलिरत्न,रश्मिच्छटापल्लवितांघ्रिपीठ; विध्वस्तविश्वव्यसनप्रबंध-त्रिलोकबंधो ज- यताज्जिनेन्द्र. ॥ १ ॥ मूढोस्म्यहं विज्ञपयामि यत्त्वा मपेतरागं भगवन् कृतार्थम्; नहि प्रभुणामुचितस्वरूप

निरूपणाय क्षमतेर्थिवर्गः ॥२॥ मुक्तिंगतेपीश विशुद्ध
चित्ते. गुणाधिरोपेण ममासि साक्षात्ः भानुर्दवीया-
नपि दर्पणंशु, संगान्न किंयोतयते गृहान्तः ॥ ३ ॥
तव स्तवेन क्षयमंगभाजां, भजन्ति जन्मार्जितपात
कानिः कियचिरं चंद्रूचैर्मरीचि-स्तोमे तमांसि
स्थितिमुज्झन्ति ॥ ४ ॥ शरण्यकारुण्यपरः परेशः
निलीयते मोहजरमाश्रितानामः मम त्वदाज्ञां यदि
विमूर्च्छा-शान्ति नयान्यैर कुतोऽपि हेतोः ॥ ५ ॥
भवाद्दीर्घलंघनसार्थवाहं, त्वामाश्रितो मुक्ति मतं वि
धाशुः स्वापमोर्गर्जिनन्तुप्यमानं,रत्नत्रयं मे तद्वेत्तां
विम. ॥ ६ ॥ [illegible] स [illegible], भवं
कृपी [illegible] [illegible] आः [illegible] नतां न
[illegible]. न [illegible] [illegible] न नु [illegible] ॥ ७ ॥
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

निह्रोर्भवतास्मि नाथ. ॥९॥ तव त्रियामापतिकान्ति कान्तैर्गुणैर्नियम्यात्ममनः प्लवंगम्; कदा त्वदाज्ञामृतपानलोलः स्वामिन् परब्रह्मरतिं करिष्ये. ॥ १० ॥ एतावतीं भूमिमहं त्वदंघ्रि–पद्मप्रसादादागतवानधीश. हठेन पापास्तदपि स्मराद्या, हि मामकार्येषु नियोजयन्ति. ॥११॥ भद्रं न किं त्वय्यपि नाथनाथे, संभाव्यते मे यदपि स्मराद्याः अपाक्रियन्ते शुभभावनाभिः पृष्टिं न मुंचन्ति तथापि पापाः ॥१२॥ भवांबुराशौ भ्रमतः कदापि, मन्ये न मे लोचनगोचरो भूः; निस्सीमसीमन्तकनारकादि-दुःखातिथित्वं कथमन्यथेश. ॥ १३ ॥ चक्रासिचापांकुशवज्रमुख्यैः, सल्लक्षणैर्लक्षितमंह्रियुग्मम्; नाथ त्वदीयं शरणं गतोस्मि, दुर्वारमोहादिविपक्षभीतः ॥ १४ ॥ अगण्यकारुण्य शरण्य पुण्य, सर्वज्ञ निष्कंटक विश्वनाथ; दीनं हताशं शरणागतं च, मां रक्षरक्ष स्मरभिल्लभल्लेः त्वया विना दुष्कृतचक्रवालं, नान्यः क्षयं नेतुमलं ममेश; किंवा विपक्षप्रतिचक्रमूलं, चक्रं विना छे-तु-

मलं भविष्णुः ॥ १६ ॥ यद्देवदेवोसि महेश्वरो[illegible] चुक्षोसि विश्वत्रयनायकोसिः तेनान्तरंगारिगणाभि[illegible] स्त्वाग्रतो रोदिमि हा सवेदम्. ॥ १७ ॥ स्वामि[illegible] धर्मव्यसनानि हित्वा मनःसमाधौ निदधामि यावत् तावत्कुधेवान्तर वैरिणो मा.—मनल्पमोहान्धगतं नय[illegible] न्ति. ॥ १८ ॥ त्वदागमाहोषि मदैव देव. मोहाद[illegible] गन्मम वैरिणोर्माः तथापि मुक्त्य परमनुकंपा. [illegible] [illegible] न किमप्यकृत्यम्. ॥ १९ ॥ [illegible]

[illegible]

स्येव. ॥ २३ ॥ सामर्थ्यमेतद्र भवतोस्ति सिद्धिं, स-
त्वानशेषानपि नेतुमीश; क्रिया विहीनं भवदंघ्रिलीनं
दीनं न किं रक्षसि मां शरण्य.॥२४॥त्वत्पादपद्मद्वितीयं
जिनेन्द्र, स्फुरत्यजस्रं हृदि यस्य पुंसः,विश्वत्रयी श्रीरपि
नूनमेति, तत्राश्रयार्थं सहचारिणीव. ॥ २५ ॥ अहं
प्रभो निर्गुण चक्रवर्त्ती, क्रूरो दुरात्मा हतकः सपाप्मा;
ही दुःखराशौ भववारिराशौ, यस्मान्निमग्नोस्मि
भवद्विमुक्त. ॥ २६ ॥ स्वामिन्निमग्नोस्मि सुधासमुद्रे,
यन्नेत्रपात्रातिथिरद्यमेभूः चिन्तामणौ स्फूर्जति पाणि-
पद्मे पुंसामसाध्यो नहि कश्चिदर्थः. ॥ २७ ॥ त्वमेव
संसारमहांबुराशौ, निमज्जतो मे जिन यानपात्रम्;
त्वमेव मे श्रेष्ठसुखैकधाम, विमुक्तिरामाघटनाभिरामः.
॥ २८ ॥ चिन्तामणिस्तस्य जिनेश पाणौ, कल्पद्रुम-
स्तस्य गृहांगणस्थः; नमस्कृतो येन सदापि भक्त्या,
स्तोत्रैः स्तुतो दामभिरर्चितोसि. ॥ २९ ॥ निमील्य
नेत्रेमनसः स्थिरत्वं, विधाय यावज्जिन चिन्तयामि;
त्वमेव तावन्न परोस्ति देवो, निःशेपकर्मक्षयहेतु-
रत्र. ॥ ३० ॥

वसन्ततिलकावृत्तम्.

भक्त्या स्तुता अपि परं परया परेभ्यो, मुक्तिं जिनेन्द्र ददते न कथंचनापि; सिक्ताः सुधारसघटै-रपि निम्बवृक्षा, विश्राणयन्ति नहि चूतफलं कदाचित्. ॥ ३१ ॥

मालिनीवृत्तम्.

भवजलनिधिमध्यान्नाथ निस्तार्यकार्यः शिवनगरकुटुम्बी निर्गुणोपि त्वयात्मः नहि गुणमगुणं वा संश्रितानां महान्तो, निरुपमकरुणार्द्राः सर्वथा चिन्तयन्ति. ॥ ३२ ॥

शार्दूलविक्रीडित.

[illegible] ॥ ३३ ॥

संस्कृत तीर्थवंदना.

स्रग्धरा वृत्तम्.

सद्भक्त्या देवलोके रवि शशि भुवने, व्यंतराणां निकाये; नक्षत्राणां निवासे, ग्रहगणपटले, तारकाणां विमाने; पाताले पन्नगेंद्रे, स्फुटमणि किरणे, ध्वस्तसान्द्रांधकारे; श्रीमत् तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे. ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे, रुचकगिरिवरे, कुंडले हस्तिदंते; वक्षारे, कूट नंदीश्वर कनकगिरौ, नैषधे नीलवंते; चित्रे शैले विचित्रे, यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ; श्रीमत्० ॥ २ ॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा; सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले, सह्याद्रौ वैजयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरेरोहणाद्रौ; श्री० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितटमुकुटे चित्रकूटे; त्रिकूटे; लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे देवकूटे विराटे; कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भेदे. श्री० ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा, मालियिनि

वलये, यानिचैत्यालयानि. ॥ ९ ॥ इत्थं; श्री जैनचैत्य, स्तवनमनुदिनं, ये पठन्ति प्रवीणाः; प्रोद्यत्; कल्याण हेतुं, कलिमलहरणं, भक्ति भाज स्त्रि संध्यम्; तेषां, श्री तीर्थयात्रा, फलमतुलमलं, जायते मानवानाम्; कार्याणां, सिद्धि रुच्चैः प्रमुदितमनसां, चित्तमानंद-कारि. ॥ १० ॥

॥ श्री तत्वार्थसूत्रम् ॥

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः ॥ १ ॥ तत्वार्थश्रद्धानं सम्यग्दर्शनम् ॥ २ ॥ तन्निसर्गादधिगमाद्वा ॥ ३ ॥ जीवाजीवाश्रवबंधसंवरनिर्जरामोक्षास्तत्वम् ॥ ४ ॥ नामस्थापनाद्रव्यभावतस्तन्न्यासः ॥ ५ ॥ प्रमाणनयैरधिगमः ॥ ६ ॥ निर्देशस्वामित्वसाधनाधिकरणास्थितिविधानतः ॥ ७ ॥ मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलानि ज्ञानम् ॥ ८ ॥ सत्संख्याक्षेत्र स्पर्शनकालांतरभावाल्पबहुत्वैश्च ॥ ९ ॥ तत्प्रमाणे

॥ १० ॥ आद्ये परोक्षम् ॥ ११ ॥ प्रत्यक्षमन्यत् ॥ [illegible]
मतिस्मृतिसंज्ञाचिताभिनिबोध इत्यनर्थान्तरम् ॥ [illegible]
तदिंद्रियाऽनिंद्रिय निमित्तम ॥ १४ ॥ अवग्रहेहावा
धारणाः ॥ १५ ॥ बहुबहुविधक्षिप्रानिश्रितासंदि
ध्रुवाणां सेतराणाम् ॥१६॥ अर्थस्य ॥ १७॥ व्यंजन
स्यावग्रहः ॥ १८ ॥ न चक्षुरनिंद्रियाभ्याम ॥ १९ ॥
श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम ॥ २० ॥ द्विवि
धोऽवधिः ॥ २१ ॥ भवप्रत्ययो नारकदेवानाम ॥ २२ ॥
यथोक्तनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम ॥ २३ ॥ ऋजु
विपुलमती मनःपर्यायः ॥ २४ ॥ विशुद्धप्रतिपा
ताभ्यां तद्विशेषः ॥ २५ ॥ विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषये
[illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

पलब्धेरुन्मत्तवत् ॥३३॥ नैगमसंग्रहव्यवहारर्जुसूत्रश ब्दानयाः ॥३४॥ आद्य शब्दौ द्वित्रिभेदौ ॥ ३५ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ।

॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥

औपशमिकक्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्व तत्वमौदयिकपारिणामिकौ च ॥ १ ॥ द्विनवाष्टादशै-कविंशतित्रिभेदा यथाक्रमम् ॥ २ ॥ सम्यक्त्वचारित्रे ॥ ३ ॥ ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याणि च ॥ ४ ॥ ज्ञानाज्ञानदर्शनदानादिलब्धयश्चतुस्त्रित्रिपंच-भेदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंयमाश्च ॥ ५ ॥ गति कषायलिंगमिथ्यादर्शनाज्ञानासंयतासिद्धत्वलेश्याश्च-तुश्चतुस्त्र्येकैकैकैकषड् भेदाः ॥६॥ जीवभव्याभव्यत्वादीनि च ॥ ७ ॥ उपयोगो लक्षणम् ॥ ८ ॥ सद्विविधोऽष्ट चतुर्भेदः ॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च ॥१०॥ समनस्का अमनस्काः ॥ ११ ॥ संसारिणस्त्रसस्थावराः ॥ १२ ॥ पृथिव्यंबुवनस्पतयःस्थावराः ॥ १३ ॥ तेजोवायुद्वींद्रि-यादयश्चत्रसाः ॥ १४ ॥ पंचेंद्रियाणि ॥ १५ ॥ द्विवि-

संबन्धेच ॥ ४२ ॥ सर्वस्य ॥४३॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदेकस्याचतुर्भ्यः ॥४४॥ निरूपभोगमंत्यम् ॥४५॥ गर्भसंमूर्छनमाद्यम् ॥४६॥ वैक्रियमौपपातिकम् ॥४७॥ लब्धिप्रत्ययं च ॥ ४८ ॥ शुभं विशुद्धमव्याघाति चाहारकं चतुर्दशपूर्वधरस्यैव ॥ ४९ ॥ तैजसमपि ॥५०॥ नारकसंमूर्च्छिनोनपुंसकानि ॥ ५१ ॥ न देवाः ॥ ५२ ॥ औपपातिकचरमदेहोत्तमपुरूषासंख्येयवर्षायुषोऽनपवर्त्यायुषः ॥ ५३ ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ तृतीयोऽध्यायः ॥

रत्नशर्करावालुकापंकधूमतमो महातमः प्रभाभूमयोघनांबुवाताकाशप्रतिष्ठाः सप्ताधोऽधः पृथुतराः ॥ १ ॥ तासु नारकाः ॥ २ ॥ नित्याशुभतरलेश्यापरिणामदेहवेदनाविक्रियाः ॥ ३ ॥ परस्परोदीरितदुःखाः ॥ ४ ॥ संक्लिष्टासुरोदीरितदुःखाश्चप्राक् चतुर्थ्याः॥५॥ तेष्वेकत्रिसप्तदशसप्तदश द्वाविंशतित्रयस्त्रिंशत्सागरो-

पमासत्वानांपरास्थितिः ॥ ६ ॥ जंबूद्वीपलवणाद्य
शुभनामानो द्वीपसमुद्राः ॥ ७ ॥ द्विर्द्विर्विष्कंभाःपूर्व
परिक्षेपिणो वलयाकृतयः ॥ ८ ॥ तन्मध्ये मेरुना
भिर्वृत्तोयोजनशतसहस्रविष्कंभो जंबूद्वीपः ॥९॥ तत्र
भरतहैमवतहरिविदेहरम्यक् हैरण्यवतैरावतवर्षाःक्षे
त्राणि ॥ १० ॥ तद्विभाजिनः पूर्वापरायता हिमव
न्महाहिमवान्निषधनीलरुक्मिशिखरिणो वर्षधरपर्वता
॥ ११ ॥ द्विर्धातकीखंडे ॥१२॥ पुष्करार्धे च ॥ १३ ॥
प्राग्मानुषोत्तरान्मनुष्याः ॥ १४ ॥ आर्याम्लिच्छा
भरतैरावतविदेहाः कर्मभूमयोऽन्यत्र देवकुरूत्तरकु
रूभ्यः ॥ १६ ॥ नृस्थिती परापरे त्रिपल्योपमांतर्मुहूर्ते
॥ १७ ॥ तिर्यग्योनीनां च ॥ १८ ॥

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥

॥ अथ चतुर्थोऽध्यायः ॥

देवाश्चतुर्निकायाः ॥ १ ॥ तृतीयः पीतलेश्यः
॥ २ ॥ दशाष्टपंचद्वादश विकल्पाःकल्पोपपन्नपर्यन्ता

॥ ३ ॥ इंद्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषद्यात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्याकिल्बिषिकाश्चैकशः ॥४॥ त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यंतरज्योतिष्काः॥ ५ ॥ पूर्वयोर्द्वींद्राः ॥ ६ ॥ पीतांतलेश्याः ॥ ७ ॥ कायप्रवीचारा आऐशानात् ॥ ८ ॥ शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनः प्रवीचाराद्वयोर्द्वयोः ॥ ९ ॥ परेऽप्रवीचाराः ॥ १० ॥ भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ॥ ११ ॥ व्यंतराः किंनरकिंपुरुषमहोरगगांधर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ॥ १२ ॥ ज्योतिष्काः सूर्याचंद्रमसोग्रहनक्षत्रप्रकीर्णताराश्च ॥ १३ ॥ मेरुप्रदक्षिणानित्यगतयोनृलोके ॥ १४ ॥ तत्कृतः कालविभागः ॥ १५ ॥ वहिरवस्थिता; ॥ १६ ॥ वैमानिकाः ॥ १७ ॥ कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ॥१८॥ उपर्युपरि॥१९ ॥ सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकलांतकमहाशुक्रसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजयवैजयंतजयंतापराजितेषु सर्वार्थसिद्धेच ॥ २० ॥ स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्या-

विशुद्धीं द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ॥ २१ ॥ गतिश-
रीरपरिग्रहाभिमानतो हीना ॥२२॥ उछ्वासाहारवे-
दनोपपातानुभावतश्च साध्याः ॥ २३ ॥ पीतपद्मशु-
क्ललेश्याद्वित्रिशेषेषु ॥ २४ ॥ प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः
॥ २५ ॥ ब्रह्मलोकालयालोकांतिका ॥ २६ ॥ सारस्व-
तादित्यवन्ह्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधमरुतः ॥२७॥
विजयादिषु द्विचरमाः ॥ २८ ॥ औपपातिकमनुष्ये-
भ्यःशेषास्तिर्यग्योनयः ॥ २९ ॥ स्थितिः ॥३०॥भ-
वनेषु दक्षिणार्धाधिपतीनां पल्योपममध्यर्धम् ॥३१॥
शेषाणां पादोने ॥ ३२॥ असुरेंद्रयोः सागरोपममधि-
कम ॥ ३३ ॥ सौधर्मादिषु यथाक्रमम ॥ ३४ ॥ सा-
गरोपमे ॥ ३५ ॥ अधिके च ॥३६॥ सप्तसनत्कुमारे
॥ ३७ ॥ विशेषत्रिसप्तदशैकादशत्रयोदशपंचदशभि-
रधिकानि च ॥ ३८ ॥ आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन न-
वसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धे च ॥ ३९ ॥
अपरापल्योपममधिकं च ॥ ४० ॥ सागरोपमे ॥४१॥
अधिके च ॥ ४२ ॥ परतः परतः पूर्वापूर्वानंतरा ॥

॥ ४३ ॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु ॥ ४४ ॥ दश वर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ॥ ४५ ॥ भवनेषु च ॥४६॥ व्यंतराणां च ॥ ४७ ॥ परा पल्योपमम् ॥ ४८ ॥ ज्योतिष्काणामधिकम् ॥ ४९ ॥ ग्रहाणामेकम् ॥५०॥ नक्षत्राणामर्द्धम् ॥ ५१ ॥ तारकाणां चतुर्भागः ॥५२॥ जघन्यात्वष्टभागः ॥ ५३ ॥ चतुर्भागः शेषाणाम् ॥५४॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥

॥ अथ पञ्चमोऽध्यायः ॥

अजीवकायाधर्माधर्माकाशपुद्गलाः ॥ १ ॥ द्रव्याणि जीवाश्च ॥२॥ नित्यावस्थितान्यरूपीणि॥३॥ रूपिणः पुद्गलाः ॥ ४ ॥ आकाशादेकद्रव्याणि ॥५॥ निष्क्रियाणि च ॥ ६ ॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्माधर्मयोः ॥ ७ ॥ जीवस्य च ॥ ८ ॥ आकाशस्यानंताः ॥ ९ ॥ संख्येयासंख्येयाश्च पुद्गलानाम् ॥१०॥ नाणोः ॥ ११ ॥ लोकाकाशेऽवगाहः ॥ १२ ॥ धर्माधर्मयोःकृत्स्ने ॥ १३ ॥ एक प्रदेशादिषुभाज्यःपुद्गलानाम् ॥१४॥

असंख्येयभागादिषु जीवानाम् ॥१५॥ प्रदेशसंहारविसर्गाभ्यांप्रदीपवत् ॥१६॥ गतिस्थित्युपग्रहो धर्माधर्मयोरुपकारः ॥ १७ ॥ आकाशस्यावगाहः ॥ १८ ॥ शरीरवाङ्मनःप्राणापानाःपुद्गलानाम् ॥ १९ ॥ सुखदुःखजीवितमरणोपग्रहाश्च॥२०॥ परस्परोपग्रहो जीवानाम् ।२१। वर्त्तनापरिणामः क्रियापरत्वापरत्वे च कालस्य।२२। स्पर्शरसगंध वर्णवंतः पुद्गलाः ॥ २३ ॥ शद्बगंध सौक्ष्म्यस्थौल्यसंस्थानभेदतमश्छायातपोद्योतवंतश्च ।२४। अणवः स्कंधाश्च ॥२५॥ संघातभेदेभ्य उत्पद्यंते॥२६॥ भेदादणुः ॥२७॥ भेदसंघाताभ्यां चाक्षुपाः ॥ २८ ॥ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ॥ २९ ॥ तद्भावाव्ययं नित्यम ॥ ३० ॥ अर्पितानर्पितसिद्धेः ॥३१॥ स्निग्धरूक्षत्वाद्बंधः ॥ ३२ ॥ न जघन्यगुणानाम् ॥ ३३ ॥ गुणसाम्ये सदृशानाम ॥ ३४ ॥ द्व्यधिकादि गुणानां तु ॥ ३५ ॥ बंधे समाधिकौ पारिणामिकौ ॥ ३६ ॥ गुणपर्यायवद्द्रव्यम ॥ ३७ ॥ कालश्चेत्येके ॥ ३८ ॥ सोऽनंतसमयः ॥ ३९ ॥ द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः

४० ॥ तद्भावः परिणामः ॥ ४१ ॥ अनादिरादि-
मांश्च ॥ ४२ ॥ रूपिष्वादिमान् ॥ ४३ ॥ योगोपयोगौ
जीवेषु ॥ ४४ ॥

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

कायवाङ्मनःकर्म योगः ॥ १ ॥ स आश्रवः
॥ २ ॥ शुभः पुण्यस्य ॥ ३ ॥ अशुभःपापस्य ॥ (शेषं
पापम्) ॥ ४ ॥ सकषायाकषाययोः सांपरायिकेर्यापथयोः
॥ ५ ॥ इंद्रियकषायाव्रतक्रियाः पंचचतुःपंचपंचविंशतिसंख्याः पूर्वस्य भेदाः ॥ ६ ॥ तीव्रमंदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणविशेषेभ्यस्तद्विशेषे (विशेषात्तद्विशेषः) ॥ ७ ॥ अधिकरणं जीवाजीवाः ॥ ८ ॥ आद्यं संरंभसमारंभारंभयोगकृतकारितानुमतिकषाय विशेषैस्त्रिस्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः ॥ ९ ॥ निर्वर्त्तनानिक्षेपसंयोगनिसर्गाद्विचतुर्द्वित्रिभेदाःपरं ॥ १० ॥ तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाताज्ञानदर्शनावरणयोः

र्पर्ययो नीचैर्वृत्त्यनुत्सेको चोत्तरस्य ॥ २५ ॥ विघ्नकरणमंतरायस्य ॥ २६ ॥

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥

॥ अथ सप्तमोऽध्यायः ॥

हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्योविरतिर्व्रतम् ॥१॥ देशसर्वतोऽणुमहती ॥ २ ॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाःपंच पंच ॥३॥ हिंसादिष्विहामुत्रचापायावद्यदर्शनम् ॥४॥ दुःखमेववा ॥ ५ ॥ मैत्रीप्रमोदकारुण्यमाध्यस्थ्यानि सत्वगुणाधिकक्लिश्यमानाविनेयेषु ॥ ६ ॥ जगत्कायस्वभावौ च संवेगवैराग्यार्थम् ॥ ७ ॥ प्रमत्तयोगात्प्राणव्यपरोपणं हिंसा ॥८॥ असदभिधानमनृतम् ॥९॥ अदत्तादानं स्तेयम् ॥ १० ॥ मैथुनमब्रह्म ॥ ११ ॥ मूर्छा परिग्रहः ॥ १२ ॥ निःशल्यो व्रती ॥ १३ ॥ अगार्यनगारश्च ॥ १४ ॥ अणुव्रतोऽगारी ॥ १५ ॥ दिग्देशानर्थदंडविरतिसामायिक-पौपधोपवासोपभोगपरिभोगपरिमाणातिथिसंविभागव्रतसंपन्नश्च ॥ १६ ॥

मारणांतिकीं संलेखनां जोषिता ॥ १७ ॥ शंकाकां-
क्षाविचिकित्सान्यदृष्टिप्रशंसा संस्तवाः सम्यग्दृष्टेरति-
चाराः ॥१८॥ व्रतशीलेषु पंच पंच यथाक्रमम् ॥१९॥
बंधवधच्छविच्छेदातिभारारोपणान्नपाननिरोधाः ॥२०॥
मिथ्योपदेशरहस्याभ्याख्यानकूटलेखक्रिया न्यासाप-
हार साकारमंत्रभेदाः ॥ २१ ॥ स्तेनप्रयोगतदाहृता-
दानविरुद्धराज्यातिक्रमहीनाधिकमानोन्मानप्रतिरूप-
कव्यवहाराः ॥ २२ ॥ परविवाहकरणेत्वरपरिगृहीता-
गमनानंगक्रीडातीव्रकामाभिनिवेशाः ॥ २३ ॥ क्षेत्र-
वास्तुहिरण्यसुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यप्रमाणाति-
क्रमाः ॥ २४ ॥ ऊर्ध्वाधस्तिर्यग्व्यतिक्रमःक्षेत्रवृद्धि-
स्मृत्यंतर्धानानि ॥ २५ ॥ आनयनप्रेष्यप्रयोगशब्दरू-
पानुपातपुद्गलप्रक्षेपाः ॥ २६ ॥ कंदर्पकौत्कुच्यमौखर्या-
समीक्ष्याधिकरणोपभोगाधिकत्वानि ॥ २७ ॥ योग-
दुःप्रणिधानानादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥ २८ ॥ अप्र-
त्यवेक्षिताप्रमार्जितोत्सर्गादाननिक्षेपसंस्तरोपक्रमणा-
नादरस्मृत्यनुपस्थापनानि ॥ २९ ॥ सचित्तसंबंधसं-

मिथ्राभिपवदुःपक्वाहाराः ॥ ३० ॥ सचित्तनिक्षेपपिधानपरव्यपदेशमात्सर्यकालातिक्रमाः ॥३१॥ जीवितमरणाशंसामित्रानुरागसुखानुबंधनिदानकरणानि॥३२॥ अनुग्रहार्थं स्वस्यातिसर्गो दानम् ॥ ३३ ॥ विधिद्रव्यदातृपात्रविशेषात्तद्विशेषः ॥ ३४.॥

॥ ईति सप्तमोऽध्यायः ॥

॥ अथ अष्टमोऽध्यायः ॥

मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाययोगा बंधहेतवः ॥ १ ॥ सकषायत्वाज्जीवः कर्मणो योग्यान्पुद्गलानादत्ते ॥ २ ॥ स बंधः ॥ ३ ॥ प्रकृतिस्थित्यनुभावप्रदेशास्तद्विधयः ॥ ४ ॥ आद्योज्ञानदर्शनावरणवेदनीयमोहनीयायुष्कनामगोत्रांतरायाः ॥ ५ ॥ पंचनवद्व्यष्टाविंशतिचतुर्द्विचत्वारिंशद्द्विपंचभेदा यथाक्रमम् ॥ ६ ॥ मत्यादीनां ॥ ७ ॥ चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानां निद्रानिद्रानिद्राप्रचलाप्रचलाप्रचलास्त्यानगृद्धिवेदनी यानि च ॥ ८ ॥ सदसद्वेद्ये ॥ ९ ॥ दर्शनचारित्रमोहनीय

स यथानाम॥२३॥ततश्च निर्जरा ॥२४॥ नामप्रत्ययाः सर्वतोयोगविशेषात्सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाढस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनंतानंतप्रदेशाः ॥ २५ ॥ सद्वेद्यसम्यक्त्वहास्य रतिपुरुषवेदशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ॥ २६ ॥

॥ इति अष्टमोऽध्यायः ॥

॥ अथ नवमोऽध्याय ॥

आश्रवनिरोधः संवरः ॥१॥ स गुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरिषहजयचारित्रैः ॥ २ ॥ तपसा निर्जरा च ॥३॥ सम्यग्योगनिग्रहो गुप्तिः ॥ ४ ॥ इर्याभाषैषणादाननिक्षेपोत्सर्गाः समितयः ॥ ५ ॥ उत्तमः क्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्मः ॥ ६ ॥ अनित्याशरणसंसारैकत्वान्यत्वाशूचित्वाश्रवसंवरनिर्जरालोकबोधि दूर्लभधर्मस्वाख्यातस्वतत्वानुचिंतनमनुप्रेक्षाः ॥ ७ ॥ मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परिषहाः ॥ ८ ॥ क्षुत्पिपासाशीतोष्णदंशमशकनाग्न्यारतिस्त्रीचर्यानिषद्याशय्याक्रोशवधयाचना-

लाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारपुरस्कारप्रज्ञाज्ञानदर्शना-
नि ॥ ९ ॥ सुक्ष्मसंपरायछद्मस्थवीतरागयोश्चतुर्दश
॥ १० ॥ एकादश जिने ॥ ११ ॥ बादरसंपराये सर्वे
॥ १२ ॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥ १३ ॥ दर्शनमोहांत-
राययोरदर्शनालाभौ ॥ १४ ॥ चारित्रमोहे नाग्न्यार-
तिस्त्रीनिषद्याक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ॥ १५ ॥
वेदनीये शेषाः ॥ १६ ॥ एकादयो भाज्या युगपदेको-
नविंशतिः ॥ १७ ॥ सामायिकछेदोपस्थाप्यपरिहारवि-
शुद्धिसुक्ष्मसंपराययथाख्यातानि चारित्रम् ॥ १८ ॥
अनशनावमोदर्यवृत्तिपरिसंख्यानरसपरित्यागविविक्त-
शय्यासनकायक्लेशा बाह्यं तपः ॥ १९ ॥ प्रायश्चित्तवि-
नयवैयावृत्त्यस्वाध्यायव्युत्सर्गध्यानान्युत्तरम् ॥ २० ॥
नव चतुर्दश पंच द्विभेदं यथाक्रमं प्राग्ध्यानात् ॥२१॥
आलोचनप्रतिक्रमणतदुभयविवेकव्युत्सर्गतपश्छेदपरि-
हारोपस्थापनानि ॥ २२ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रोपचाराः
॥ २३ ॥ आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्ष्यग्लानगणकु-
लसंघसाधुमनोज्ञानाम् ॥ २४ ॥ वाचनापृच्छनानु-

प्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः ॥ २५ ॥ बाह्याभ्यंतरोपध्योः ॥ २६ ॥ उत्तमसंहननस्यैकाग्रचिंतानिरोधश्च ध्यानम् ॥ २७ ॥ आमुहूर्त्तात् ॥ २८ ॥ आर्त्तरौद्रधर्म्मशुक्लानि ॥ २९ ॥ परे मोक्षहेतू ॥ ३० ॥ आर्त्तममनोज्ञानां संप्रयोगे तद्विप्रयोगाय स्मृतिसमन्वाहारः ॥ ३१ ॥ वेदनायाश्च ॥ ३२ ॥ विपरीतं मनोज्ञानाम् ॥ ३३ ॥ निदानं च कामोपहतचित्तानां पुनः ॥ ३४ ॥ तदविरतदेशविरतप्रमत्तसंयतानाम् ॥ ३५ ॥ हिंसाऽनृतस्तेयविषयसंरक्षणेभ्यो रौद्रमविरतदेशविरतयोः ॥ ३६ ॥ आज्ञाऽपायविपाकसंस्थानविचयाय धर्म्ममप्रमत्तसंयतस्य ॥ ३७ ॥ ऊपशांतक्षीणकषाययोश्च ॥ ३८ ॥ शुक्लेचाद्ये ॥ ३९ ॥ पूर्वविदः पूर्वविदः ॥ ४० ॥ परे केवलिनः ॥ ४१ ॥ पृथक्त्वैकत्ववितर्कसूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिव्युपरतक्रियानिवृत्तीनि ॥ ४२ ॥ तत् त्र्येककाययोगायोगानाम् ॥ ४३ ॥ एकाश्रये सवितर्के पूर्वे ॥ ॥ ४४ ॥ अविचारं द्वितीयम् ॥ ४५ ॥ वितर्कःश्रुतम् ॥ ४६ ॥ विचारोऽर्थव्यंजनयोगसंक्रांतिः ॥ ४७ ॥ सम्य-

अथ श्रीमदाचार्यआनन्दसागरसूरिविरचितं

श्री तत्त्वार्थपरिशिष्टम्।

सप्तम्यां पञ्चधनुःशतमानं वपुः ॥ १ ॥ अर्वाग्र्धार्धे आद्यादिप्रस्तटे हस्तत्रयं ॥ २ ॥ विरहश्चतुर्विंशतिमुहूर्तसप्तपञ्चदशादिनैकाद्विचतुःषण्मासाः ॥३॥ द्वयादिषु सेवार्ताद्यैः ॥ ४ ॥ उद्वृत्ताश्चक्रिहरियुगलार्हज्जिनयतिदेशसम्यक्त्ववन्तः ॥ ५ ॥ चत्वार्यर्धचत्वारि गव्यूतान्यवधिराद्ये परापरः ॥ ६ ॥ परतोऽर्धार्धगव्यूतहीनं ॥ ७ ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
विंशतिदशाष्टशतचतुर्दशाष्टशताद्विचतु-
९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७
रष्टशतचतुर्द्वौ विंशत्यष्टशतदशाविंशत्यष्टशतदशचतुः
१८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७
षड्दशदशविंशतिदशपञ्चदशविंशत्यष्टशत विंशतिसि-
द्धिः

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९
स्त्रीनपुंसकपुरुषगृह्यन्यस्वलिंग गुरुलघुमध्यावगा-
१० ११ १२ १३ १४ १५ १६
होर्ध्वाधस्तिर्यङ्नरकातिर्यग्द्वयनरामरत्रिपृथ्वी भूदक-
१७ १८ १७ २० २१ २२ २३
दपवनस्पति तिर्यक्तिर्यक्स्त्री नारीव्यन्तरान्ततद्देवी-

ढाः ॥ १५ ॥ आविदेहेभ्यो द्विगुण उभयतो वर्षवर्ष-
धराणां व्यायामः ॥ १६ ॥ द्रहाःसदेव्यावासकमलाः
गिर्युच्चत्वदशगुणदैर्घ्या अर्धविस्तीर्णा दशयोजनोद्विधाः
॥ १७ ॥ गङ्गासिन्धू रोहितांशारोहिते हरिकान्ताहरि
सलिलेसीतोदासीते नरकान्तानारीकान्ते सुवर्णरूप्य
कूले रक्तारक्तवत्यौ भरतादिषु पूर्वपश्चिमोदधिगे
॥ १८ ॥ अपविदेहेभ्यो द्विगुणपरिवारा उभयतः
॥ १९ ॥ चतुर्दशसहस्राणि आदौ ॥ २० ॥ विदेहेषु
चतुर्दशसहस्रपरिवारा द्वात्रिंशद्विजया द्विनदीका ॥२१॥
युग्मिक्षेत्रे चतुरशीतिसहस्रनदीके ॥ २२ ॥ षडन्तराः
॥ २३ ॥ चतुस्त्रिंशद्वैताढयविद्युत्प्रभनिषधनीलमाल्य-
वत्सुरगिरिषु नव नव कूटाः ॥ २४ ॥ सौमनसगन्ध-
मादनयोः सप्त ॥ २५ ॥ रुक्मिमहाहिमवतोरष्ट ॥२६॥
शेषवर्षधरयोरेकादश ॥ २७ ॥ षोडशसु वक्षस्का-
रेषु चत्वारः ॥ २८ ॥ शतद्वयं कनकगिरीणां ॥ २९ ॥
चत्वारो वृत्तवैताढ्याः ॥ ३० ॥ द्वौ चित्रविचित्रौ ॥
॥ ३१ ॥ द्वौ यमकसमकौ ॥ ३२ ॥ सुषमसुषमं सुषमं

षट्चतुश्च तुरष्ट क्रमात् देव्यः॥४६॥पंचासुरयोः॥४७॥ ऊर्ध्वं परिगृहीतेतराणां पल्यमधिकं सप्तपञ्चाशन्नवपञ्चाशत् द्वयोः ॥ ४८ ॥ द्वयोस्त्रयोदशद्वयोर्द्वादश षट् पञ्च चत्वारश्चत्वारोद्वयोश्चत्वारि दशोपरि प्रस्तटाः ॥ ४९ ॥ आद्यद्वये उत्कृष्टनिजप्रतरभक्तेष्टप्रतरगुणा

अ ..

॥ ४९ ॥ शेषेषु विश्लेषस्य साधस्तना पुनः ॥ ४९ ॥

व

त्र्यस्रचतुरस्रवृत्ता दिक्षु द्वाषष्टिरुपर्येकैकहीना विमानाः ॥ ५० ॥ वृत्तमिंद्रकं मध्ये ॥ ५१ ॥ स्वयंभूद्वीपे षोडश ॥ ५२ ॥ न प्रागाल्यां पुष्पावकीर्णाः ॥ ५३ ॥ षट् सहस्राणि सामानिकाः ॥ ५४ ॥ चतुः षष्टिः षष्टिश्चासुरयोः ॥ ५५ ॥ चतुर्गुणा आत्मरक्षाः ॥ ५६ ॥ व्यन्तराणां चत्वारि ॥ ५७ ॥ चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशदष्टत्रिंशत् पंचकृत्वः चत्वारिंशत् पञ्चाशच्चत्वारिंशल्लक्षा उत्तरतश्चतुर्लक्षहीनाः भवनाः ॥ ५८ ॥ चूडामणिफणिगरुडवज्रकलशसिंहाश्वा (भिषेक) गजमकरवर्धमानांकाः ॥ ५९ ॥ समभुवो दशोनाष्टशत्यास्तारकाः

प्राकारावृताः त्र्यस्राः ॥ ७७ ॥ मृगमहिषवराहसिंहा-
जदर्दुरहयगजभुजगखङ्गिवृषभाविडिमाङ्काः ॥ ७८ ॥
चतुरशीत्यशीतिद्वासप्ततिसप्ततिषष्टिपञ्चाशच्चत्वारिंशत्
त्रिंशद्विंशतिदशसहस्राः सामानिकाः॥७९॥द्वित्रित्रिशे-
षा घनोदधिवातोभयाकाशप्रतिष्ठाः ॥ ८० ॥ द्वयोर्द्वा-
त्रिंशद्युतयोजनानि पृथ्वीविमानबाहल्यं ॥ ८१ ॥ द्वि-
द्विद्विचतुर्नवपञ्चस्वेकैकशतपरावृत्तिः ॥ ८२ ॥ द्विद्वि-
द्विद्विशेषेषु पञ्चचतुस्त्रिद्विश्वेतवर्णाः ॥ ८३ ॥ सौधर्म-
माहेन्द्रलांतकसहस्राराच्युतग्रैवेयकलोकान्ता एका-
दिरज्ज्वाः ॥ ८४ ॥ आ ईशानात्सप्तहस्तं वपुः ॥८५॥
द्विद्विद्विचतुर्ग्रैवेयकानुत्तरेष्वेकैकहीनं ॥ ८६ ॥ मध्ये
प्रस्तरं जघन्यादेकादशैकभागाधिकं ॥ ८७ ॥ द्वाद-
शमुहूर्त्ता उपपातविरहः ॥ ८८ ॥ आ ईशानाच्चतुर्विं-
शतिः ॥ ८९ ॥ त्रिभागोनदश सत्रिभागद्वादश सार्ध-
द्वाविंशति पञ्चचत्वारिंशदशीतिशतदिना उर्ध्वम्॥९०॥
द्वयोर्द्वयोस्त्रिषु त्रिषु त्रिषु विजयादिषु सर्वार्थे च सङ्-
ख्यातमासवर्षशतसहस्रलक्षवर्षपल्यासंख्यसंख्यभागाः

साधिकलक्षापिण्डाः ॥ १०३ ॥ विंशतिः सहस्राणि धनोदधिः ॥ १०४ ॥ षडर्धपञ्चमसार्धयोजनैर्घनाम्बुघनतनुवातैर्वलयं ॥ १०५ ॥ योजनत्रिभागैकत्रिभागगव्यूतवृद्धं क्रमात् ॥ १०६ ॥ त्रिंशत्पञ्चविंशतिपञ्चदशदशत्रिपञ्चोनैकलक्षपञ्चावासाः ॥ १०७ ॥ द्विद्विहीनास्त्रयोदश प्रस्तटाः ॥ १०८ दिक्ष्वेकोनपञ्चाशदष्टचत्वारिंशद्विदिक्षु ॥ १०९ ॥ विष्कम्भवर्गदशगुणमूलं परिधिः ॥११०॥ पादगुणोऽसौ गणितपदं॥१११॥ वीपुपृथक्त्व चतुर्गुणेषुगुणमूलं जीवा ॥ ११२ ॥ इषुवर्गषड्गुणजीवावर्गयुतमूलं धनुः ॥ ११३ ॥ अन्त्येषु जीवा गुण चतुर्भक्तवर्गदशगुणमूलं प्रतरः ॥ ११४ ॥ हिमवच्छिखरिणोःशतवृद्धास्त्रिशतादिविष्कम्भा अन्तरद्वीपाः वृत्ताः प्रतिकोणं सप्त ॥ ११५ ॥ पल्यासंख्यांशायुर्योजनदशमांशतनुचतुर्थभोजिचतुः षष्टिपृष्ठैकोनाशीतिदिनापत्यपालना युग्मिनः ॥ ११६ ॥ लवण आपञ्चनवतिसहस्रेभ्यः सहस्रावगाढः सप्तशतोच्छ्रयः ॥ ११७ ॥ मध्ये शिखा सप्तदश सहस्राणि ॥ ११८ ॥

दयठाण; कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरणकमल सेवे चोसठइंदा. ॥ १ ॥ (गाथा) जो नियगुण पज्झव रम्यो तसु अनुभव एगंत; सुहपुग्गल आरोपतां, जोत सुरंगनिरत्त. ॥ २ ॥ (ढाल) जे निजआतमगुणआणंदी, पुग्गलसंगे जेह अफंदी; जे परमेश्वर निजपदलीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन; कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा. तोरा० ॥ २ ॥ (गाथा) निम्मलनाणपयासकर, निम्मलगुण संपन्न, निम्मलधम्मोवएसकर, सोपरमप्पाधन्न. ॥३॥ (ढाल) लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजनतारण जेहनी वाणी; परमानंद तणी नीशाणी, तसुभगते मुज मतिठहराणी; कुसुमांजलि मेलो नेमिजिणंदा. तोरा० ॥ ३ ॥ (गाथा) जें सिज्झा सिज्झंति जे, सिज्झंसंति अणंत; जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो अरिहंत० ॥ ४ ॥ (ढाल) शिव सुख कारण जेह त्रिकाले, समपरिणामे जगत निहाले; उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरणपखाले; कुसुमांज

याम्योत्तरायतौ द्शशतपृथुत्वौ पञ्चशतोच्चौ इषुगिरी धातकीपुष्करार्धयोः ॥ ११९ ॥ स्वपराभासि ज्ञानं प्रमाणं ॥१२०॥ अनाक्षेप एक धर्मको वक्त्राभिप्रायो नयः ॥ १२१ ॥ उपशमो मोहे मिश्रो घातिषु क्षयः सर्वेषु औदयिकपारिणामिकौ च ॥ १२२ ॥ जघन्याग्रम्याभव्यानन्तगुणाए् कावर्गणा ॥ १२३ ॥ सर्वाःस्यानन्तभागवृद्धाः ॥१२४॥ सिद्धानन्तांशाधिका अग्रहणाः ॥ १२५ ॥

॥ इति तत्त्वार्थ परिशिष्टं संपूर्ण ॥

श्री देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा

[illegible] दोधी.)

[illegible] अहमयतुओ, यचना निमग [illegible] [illegible] [illegible] भावे, [illegible]. ॥ १ ॥ ([illegible] [illegible] [illegible] जगभान, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

द्रयठाण; कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा च-
रणकमल सेवे चोसठइंदा. ॥ १ ॥ (गाथा) जो
नियगुण पज्झव रम्यो तसु अनुभव एगंत; सुहपु-
ग्गल आरोपतां, जोत सुरंगनिरत्त. ॥ २ ॥ (ढाल)
जे निजआतमगुणआणंदी, पुग्गलसंगे जेह अफंदी;
जे परमेश्वर निजपदलीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन;
कुसुमांजलि मेलो शांति जिणंदा. तोरा० ॥ २ ॥
(गाथा) निम्मलनाणपयासकर, निम्मलगुण संपन्न,
निम्मलधम्मोवएसकर, सोपरमप्पाथन्न. ॥३॥ (ढाल)
लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजनतारण जेहनी
वाणी; परमानंद तणी नीशाणी, तसुभगते मुज म-
तिठहराणी; कुसुमांजलि मेलो नेमिजिणंदा. तोरा०
॥ ३ ॥ (गाथा) जें सिझ्झा सिझ्झंति जे, सिझ्झं-
संति अणंत; जसु आलंबन ठविय मण, सो सेवो
अरिहंत० ॥ ४ ॥ (ढाल) शिव सुख कारण जेह
त्रिकाले, समपरिणामे जगत निहाले; उत्तम साधन
मार्ग देखाडे, इंद्रादिक जसु चरणपखाले; कुसुमांज-

सी, इसी भावदया मनउल्लसी. ॥२॥ लही परिणाम एहवुंभलुं, निपजावी जिन पद निर्मलुं; आयुबंधवच्चे-एकभव करी, श्रद्धासंवेगे ते थिरधरी. ॥ ३ ॥ त्यांथी चविय लहे नरभव उदार, भरते तेम ऐरवतेज सार; महाविदेहे विजय वरप्रधान, मध्य खंडे अवतरे जिननिधान. ॥ ४ ॥

अथ सुपनानी ढाल त्रीजी.

पुण्ये सुपनाह देखे, मनमांहे हर्षविशेषे; गजवर उज्वल सुंदर, निर्मलवृषभ मनोहर. ॥ १ ॥ निर्भयकेशरी सिंह, लक्ष्मी अतिहीअबीह; अनुपमफूलनीमाल, निर्मलशशिसुकुमाल. ॥ २ ॥ तेजे तरणी अति दीपे, इंद्रध्वजा जग झीपे; पूरणकलशपंडूर, पद्म सरोवर पूर. ॥ ३ ॥ अग्यारमे रयणायर, देखे माता गुणसायर; बारमे भुवनविमान, तेरमे अनुपम रत्ननिधान. ॥ ४ ॥ अग्निशिखा निर्धूम, देखे माताजी अनोपम; हरखी रायने भासे, राजा अरथ प्रकाशे. ॥ ५ ॥ जगपतिं जिनवर सुखकर होशे पुत्र मनोहर;

इंद्रादिक जसु नमशे. सकल मनोरथ फलशे. ॥६॥
(वस्तु छंद) पुण्यउदय पुण्यउदय उपन्नाजिन-
नाह. माता तव रयणीसमे. देखी सुपन हरखंति जा-
गीय. सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ सांभलो
सोभागीय. त्रिभुवनतिलक महागुणी. होशे पुत्रनि-
धान. इंद्रादिक जसु पाय नमी करशे सिद्धिविधान.॥१॥

[illegible] वार्ता

[illegible] आसन कंपाओ देइ अवधि मन
[illegible] निज आतम निर्मलकरणकाज. भव-
[illegible] ॥ १ ॥ भवअटवीपारग
[illegible] गुणअगाह; शिवसाधन-
[illegible] आसादिसेह. ॥ २ ॥
[illegible] आदिकमां जिनतनु
[illegible] प्रणमंतो जिन
[illegible] साहसो आरि-
[illegible] सुणी भारी
[illegible] उदार. ॥४॥

रे रे निसुणो सुरलोयदेव, विषयां नल तापित तुम सवेव; तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्याविष-चूरण गरुडध्यान. ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण समथ्थ, प्रगटयो तस प्रणमीं हुवो सनथ्थ; एम जंपी शक्रस्तव करेवि, तव देवदेवी हरखे सुणेवि. ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीतगान, सुरलोकें हुवो मंगल निधान; नरक्षेत्रे आरिजवंसठाम जिनराज वधे सुरहर्षधाम. ॥ ७ ॥ पितामाता घरेओच्छव अशेष, जिनशासन मंगल अति विशेष; सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयमअर्थि जनने उमंग. ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्षसाथ; सुख पाम्या त्रिभुवन सर्वजीव, वधाइ वधाइ थइ अतीव. ॥ ९ ॥

आ ठेकाणे अक्षते वधाववा.

पछी जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन (जयवीयराय अरधा सुधी) करवुं पछी हाथ धोइ लुछी नाखवा, नवकार एक गणी कळशने धुप दइ हाथमां लइने लुगडे ढांकीने कळश कहेवो.

इंद्रादिक जसु नमशे. सकल मनोरथ फलशे. ॥६॥
(वस्तु छंद) पुण्यउदय पुण्यउदय उपन्नाजिन-
नाह. माता तव रयणीसमे. देखी सुपन हरखंति जा-
गीय. सुपन कही निज कंतने सुपन अरथ सांभलो
सोभागीय. त्रिभुवनतिलक महागुणी. होशे पुत्रनि-
धान. इंद्रादिक जसु पाय नमी. करशे सिद्धिविधान.।१।

[illegible]

[illegible] कर्यो ओ; देह अद्यपि मन
[illegible] निर्मलकरणकाज, भव-
[illegible] ॥ १ ॥ भवउदधीपारग
[illegible] अगाह; शिवसाधन-
[illegible] आस्वादिमेह. ॥ २ ॥
[illegible] आदिकमां निजतनु
[illegible] प्रणमेतो जिन
[illegible] आदि-
[illegible] सुरी आगे
[illegible] ॥ ४ ॥

रे रे निसुणो सुरलोयदेव, विषयां नल तापित तुम सवेव; तसु शांतिकरण जलधर समान, मिथ्याविष-चूरण गरुडवान. ॥ ५ ॥ ते देव सकल तारण सम-त्थ, प्रगटयो तस प्रणमी हुवो सनथ्थ; एम जंपी शक्रस्तव करेवि, तव देवदेवी हरखे सुणेवि. ॥ ६ ॥ गावे तव रंभा गीतगान, सुरलोके हुवो मंगल नि-धान; नरक्षेत्रे आरिजवंसठाम जिनराज वधे सुरह-र्षधाम. ॥ ७ ॥ पितामाता घरेओच्छव अशेष, जिन-शासन मंगल अति विशेष; सुरपति देवादिक हर्ष संग, संयमअर्थि जनने उमंग. ॥ ८ ॥ शुभ वेला लगने तीर्थनाथ, जनम्या इंद्रादिक हर्षसाथ; सुख पाम्या त्रिभुवन सर्वजीव, वधाइ वधाइ थइ अ-तीव. ॥ ९ ॥

आ ठेकाणे अक्षते वधाववा.

पछी जगचिंतामणीनुं चैत्यवंदन (जयवीयराय अरधा सुधी) करवुं पछी हाथ धोइ लुछी नाखवा, नवकार एक गणी कळशने धुप दइ हाथमां लइने लुगडुं ढांकीने कळश करवो.

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदनम् ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? इच्छं ॥ जगचिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगभावविअक्खण ॥ अट्ठावयसंठविअरूव कम्मट्ठविणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहयसासण ॥१॥ कम्मभूमिहिं, कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलिण, कोडिसहस्सनवसाहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि, बिहुं कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस्सदुअ, थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥२॥ जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जिंतपहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरिमंडण ॥ भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुहदुरिअखंडण ॥ अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि ॥ तीआणागय संपइअ, वंदुं जिण सव्वे वि ॥३॥ सत्ताणवइसहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठकोडीओ ॥ बत्तीससय बासीआइं, तिअ-

लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पनरसकोडिसयाइं, कोडि-
बायाल लख्खअडवन्ना ।छत्तीससहसअसिआइं, सास-
यबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

(ढाल पांचमी)

श्री तीर्थपतिनुं कलशमज्जन, गाइए सुखकार,
नरखित्तमंडण दुह विहंडण, भविकमनआधार; तिहां
रावराणा हर्षओच्छव, थयो जगजयकार, दिशिकु-
मरी अवधि विशेषजाणी, लह्यो हर्ष अपार. ॥ १ ॥
निय अमरअमरी संगकुमरी, गावती गुण छंद,
जिनजननीपासे आवि पोहोति, गहगहती आणंद,
हे माय ! तें जिनराज जायो, शुचिवधायोरम्म, अम-
जम्मनिम्मलकरणकारण, करीश सुइकम्म. ॥ २ ॥
तिहां भूमिशोधन दीपदर्पण, वायवींजणधार, तिहां
करीय कदलीगेह जिनवर, जननि मज्जनकार; वर-
राखडी जिनपाणी बांधी, दीए एम आशीष, जुगको-
डाकोडि चिरंजीवो. धर्मदायक इश. ॥ ३ ॥

॥ ढाल छट्ठी. ॥

जिन रयणीजी दशदिशि, उज्वलता धरे, शुभ-

रीं स्वामि वधाविया. (त्रुटक) वधाविया जिन पंचहुले, धन्य हुं कृतपुण्य ए, त्रलोक्यनायक देव ठो, मुजसमो कोण अन्यए; हे जगतजननी ! पुत्र तुमचो, मेरुवरमज्ञानकरी, उत्संग तुमचे वलीय थापीश, आतमा पुण्ये भरी. ॥ ३ ॥ (ढाल) सुरनायकजी, जिन निजकरकमले ठव्या, पंचरुपेजी, अतिशे महिमाए स्तव्या; नाटकविधिजी, तव बत्रीश आगल वहे, सुर कोडिजी जिनदर्शनने उमहे (त्रुटक) सुरकोडाकोडि नाचती वली, नाथशुचिगुण गावती, अप्सरा कोडी हाथजोडी हावभाव देखावती; जयो जयो तुं जिनराज जगगुरु, एम दे आशीषए, अम्ह त्राण शरण आधार जीवन, एक तुं जगदीशए. ॥ ४ ॥ (ढाल) सुरगिरिवरजी पांडुकवनमें चिहुं दिशे, गिरिशिलापरजी, सिंहासन सासय वसे; तिहां आणीजी, शक्रेजिन खोले ग्रह्या, चोसठेजी, तिहां सुरपति आवी रह्या. (त्रुटक) आविया सुरपति सर्व भगते, कलशश्रेणि बणावए, सिद्धार्थपमुहा

णो; अणाइ तिण्हाविणासणो, देवाहिदेवो दीठ वो-
हियकामेहिं ॥ ५ ॥ (ढाल तेहीज) एम पभणंत व-
भवणजोईसरा; देववेमाणिया भत्तिधम्मायरा, केवि
कप्पंठिया केवि मित्ताणुगा; केवि वररमणिवयणेण-
अइउच्छगा. ॥ ६ ॥ (वस्तुच्छंद) तथ्थ अच्चुअ त-
थ्थ अच्चुअ इंद्र आदेस. कर जोडि सवि देवगण,
लेय कलस आदेस पामिय; अद्भूत रुपसरुपअनु-
कवण एह उत्संग सामिय, इंद्र कहे जगतारणो पारग
अम परमेस; नायक दायक धम्मनिहि, करिए तसु
अभिसेस. ॥ १ ॥

(ढाल आठमी.)

पूर्णकलशशुचिउदकनी धारा, जिनवरअंगे ना-
मे; आतमनिर्मल भाव करंता, वधते शुभपरिणामे;
अच्चुतादिक सुरपतिमज्जन, लोकपाललोकंत; सा-
मानिक इंद्राणी पमुहा, एम अभिषेक करंत. ॥ १ ॥
(गाहा) तव इसाणसुरिंदो, सक्कं पभणेइ करइ सु-
पसाओ; तुम अंके महन्नाहो, खणमित्तं अम्ह अ-

गायो, जन्म महोत्सवछंद; बोधबीजअंकुरो उलस्यो, संवसकल आनंद. ॥ ७ ॥ (कलश) इमपूजाभगतेकरो, आतमहितकाज; तजियविभाव निजभावमें, रमता शिवराज. ॥ १ ॥ कालअनंते जे हुआ, होशे जेह जिणंद; संपय सीमंधरप्रभु, केवलनाणदिणंद. ॥ २ ॥ जन्म महोत्सव एणीपरे श्रावक रुचिवंत; विरचे जिनप्रतिमातणो, अनुमोदनखंत ॥३ ॥ देवचंद्र जिनपूजना, करतां भवपार; जिनपडिमा जिनसारखी, कही सूत्रमझार. ॥ ४ ॥

अष्टप्रकारी पूजा.

ढाल पहेली.

दूहो—एणीपरेजलपूजाकरी करीएअप्पाशुद्ध; मानेखिणजेएहमां, जाणोतेहअबुद्ध. ॥ १ ॥ न्हवणपूजा, मेरुशिखरन्हवरावे. ए देशी, मेरु शिखर न्हवरावे-सुरपति, मेरु शिखर न्हवरावे; जनम काल जिनवर-

कोजाणी, पंचरुप करी भावे. सु० ॥ १ ॥ रतनप्रभुअ-
डजातिनाकलशा, ओषधिचूरण मिलावे; खीरसकों-
डतीर्थादिक आणी, स्नात्रकरीगुणगावे. सु० ॥ २ ॥
एणीपरेजिनप्रतिमाह न्हवणकरी, बोधबीजमानुवावे;
अनुक्रमेगुणरत्नाकरफरसी, जिन उत्तम पद्पावे.
सु० ॥ ३ ॥

ढाल २ जी.

दुहो–पूजाने परिणामदोउ करो चंदनकि रीति;
शीतलतानेसुगंधता जेनेभांजिभवभ्रांति. ॥ १ ॥ चंद-
नपूजा, गिरिवरदर्शनर्वीनस्नापारे. ए देशी. चंदन-
पूजाकरो भविभावे. जिम निज आत्मा शुद्धतापावे;
[illegible] चं०
॥ १ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ढाल श्रीजी.

दूहो—प्रणियानंसद्गतिहोय, पूजथीकिमनवि-
; सुमनसभावेदुर्गता, पूजपंनाशकजोय. ॥ १ ॥
सुम पूजा, नवपद्धरजोप्यान. ए देशी. पूजाकरो-
नवरकीभवितुम्हे. पुजा करोजिनवरकीः विविध-
गतिवरकुसुमग्रहीने, रचनाकरोसुखकरकी, भवि०
॥ १ ॥ जाइजुइवरडमरोचंवेली, भरीयथाळरुपनकीः
जिमसूरपतिजिनभक्तिकरतशुभ, तिमभावे तुमेकरो-
जिनकी. भवि० ॥ २ ॥ काल अनादिकुवासटालनकुं.
पीरहरनमदनकीः द्रव्यपूजाहेभावकोकारण, जिनवा-
णीएवदनकी. भवि० ॥ ३ ॥

ढाल चोथी.

दूहो—एणीपरेधूपपूजाकरी, जिन आगलशुभ-
भाव; टालीविभावनीपरिणति, दूरकरोपरभाव.॥ १॥

धूप पूजा.

धूप प्रगटकरीए. भविआं, जिनमंदिरमांजइएरे;
जिमपरिमलदिशोदिशमरकत, अशुभकरमतेमदहि-
एए. भ० ॥ १ ॥ दोयकरजोडीसन्मुख प्रभुकुं; निरखी

( ] -

अक्षत पूजा.

स्वस्तिकपुरोउदाररे, म्हारा प्रभुजीनेआगे स्व-
स्ति० ए टेक. रतनरेकचिमांहिमनोहर, वासितकरी
घनसाररे; म्हा० अक्षतपूजाप्रसिद्ध प्रवचनमां, अक्ष-
यफळदातारेरे. म्हा० ॥ १ ॥ भावमंगलकोएजका-
रण, द्रव्य प्रधानविचाररे; म्हा० इणविधपूजा करन
जिनवरकी, लहतउत्तमभवपाररे म्हा० ॥ २ ॥

ढाल सातमी.

दूहो—कर्त्ताभोक्तामुजनही, पुद्गलभावनोजीव;
तेणेपुद्गलनीत्याजना, करतांशर्मसदेव. ॥ १ ॥

नैवेद्य पुजा.

नैवेद्यथाळभरीजे, जिणंदमुख नैवेद्यथाळभरीजे; ॥
करजोडीसन्मुख प्रभुनिरखी, एणीपरेभावनाकीजे. ॥
जि० ॥ १ ॥ पुद्गलिपुद्गलसंगीअनादिको, पुद्गल-
भावतजीजे; शुभपुद्गलप्रभुपायठविने, अणहारी-
कुंभजीजे. जि० ॥ २ ॥ विग्रहगतिअणाहारीहोवे, पण
विग्रहतेचहिजे; विग्रहातीतअणहारीपदतिणे, जिनउ-
त्तममुजदीजे. जि० ॥ ३ ॥

सत्यवचन भापकसत्यविजये, संवेगीतसवावो; कपूरसमीउज्वलजसकीरति, कर्पूर विजयबुधध्यावोरे. भ० ॥ ४ ॥ ताव शशिअडचंद्र (१८१३) संवत्सर, खिमाविजयजिनगावो; उत्तमपदकजपूजाकरतां उत्तम पदतुमेपावोरे. ॥ भ० ॥ ५ ॥

श्री विनयविजयोपाध्याय विरचित.

श्री पुन्य प्रकाशनुं स्तवन.

दुहा.

सकलसिद्धिदायकसदा, चोवीशेजिनराय ॥ सदगुरुसामिनीसरसती, प्रेमेप्रणमुंपाय ॥ १ ॥ त्रिभुवनपतित्रिशलातणो, नंदनगुणगंभीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्धमानवडवीर ॥ २ ॥ एकदिनवीरजिणंदने, चरणे करीप्रणाम ॥ भविकजीवनाहितभणी, पुछेगोतमस्वामि ॥ ३ ॥ मुक्ति मार्गआराधीए, कहो किणपेरेअरिहंत ॥ सूधासरसतववचनरस, भाखेश्रीभगवंत ॥ ४ ॥ अतिचारआळोइए, व्रतधरीएगुरुसाख ॥ जीवखमावो सयळजे, योनिचोराशीलाख ॥ ५ ॥ विधिशुंवळीवोसराविए, पापस्थान अढार ॥

पा ॥ साधुतणीनिंदापरिहरजो, फळसंदेहमराखरे ॥ प्रा० स० ॥ ६ ॥ मूढपणुंछंडोपरशंसा, गुणवंतने आदरीए ॥ साम्मिनेधर्मेकरीथीरता, भक्तिप्रभावनाकहीएरे ॥ प्रा० स० ॥ ७ ॥ संघचैत्यप्रासादतणोजे, अवर्णवाद मनलेख्यो ॥ द्रव्यदेवकोजेविणसाडयो, विणसंतांउवेख्योरे ॥ प्रा० स० ॥ ८ ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, समकितखंडयुंजेह ॥ आभवपरभववलीरेभवोभव, मिच्छामिदुक्कडतेहरे प्रा० चारित्रल्यो चित्तआणी ॥ ९ ॥ पांचसुमतित्रणगुप्तिविराधी, आठप्रवचनमाय ॥ साधुतणेधर्मेंपरमादे, अशुद्धवचनमनकायरे ॥ प्रा० चा० ॥ १० ॥ श्रावकनेधर्मेसामायक, पोसहमांमनवाळी ॥ जेजयणापूर्वकएआठे; प्रवचनमायनपाळीरे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ११ ॥ इत्यादिकविपरीतपणाथी, चारित्रडोळयुंजेह ॥ आभव० ॥ मिछा० ॥ प्रा० चा० ॥ १२ ॥ वारेभेदे तपनविकीधो. छतेजोगे निजशक्ते॥धर्ममनवचकायावीरज,नविफोरवीउभगतेरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ तपवीरज आचारेएणीपरे, वि विधीवराध्यांजेह ॥ आभव० मि० ॥

ण ॥ साधुतणीनिंदापरिहरजो, फळसंदेहमराखरे ॥
प्रा० स० ॥ ६ ॥ मूढपणुंछंडोपरशंसा, गुणवंतने आ-
दरीए ॥ साम्मिनेधर्मकरीथीरता, भक्तिप्रभावनाक-
हीएरे ॥ प्रा० स० ॥ ७ ॥ संघचैत्यप्रासादतणोजे,
अवर्णवाद मनलेख्यो ॥ द्रव्यदेवकोजेविणसाडयो,
विणसंतांउवेख्योरे ॥ प्रा० स० ॥ ८ ॥ इत्यादिक-
विपरीतपणाथी, समकितखंडयुंजेह ॥ आभवपरभव-
वळीरेभवोभव, मिच्छामिदुक्कडतेहरे प्रा० चारित्रल्यो
चित्तआणी ॥ ९ ॥ पांचसुमतित्रणगुप्तिविराधी, आ-
ठप्रवचनमाय ॥ साधुतणेधर्मेपरमादे, अशुद्धवचन-
मनकायरे ॥ प्रा० चा० ॥ १० ॥ श्रावकनेधर्मेसामा-
यक, पोसहमांमनवाळी ॥ जेजयणापूर्वकएआठे; प्र-
वचनमायनपाळीरे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ११ ॥ इत्या-
दिकविपरीतपणाथी, चारित्रडोळयुंजेह ॥ आभव० ॥
मिछा० ॥ प्रा० चा० ॥ १२ ॥ बारेभेदे तपनविकी-
धो. छतेजोगे निजशक्ते॥धर्मेमनवचकायावीरज,नवि-
फोरवीउभगतेरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ तपवीरज आचारे-
एणीपरे, वि विधीवराध्यांजेह ॥ आभव० मि० ॥

डी ॥ कंदमुळफळवेचीयांए ॥ ६ ॥ एमएकेंद्रीजीव, हण्याहणावीया ॥ हणताजेअनुमोदियाए, आभवपरभवजेह ॥ वळीयभवोभवे ॥ ते मुज मिछामिदुकडंए ॥ ७ ॥ क्रमीसरमीयाकीडा, गाडरगंडोला ॥ एळपूराअलशीयांए ॥ वाळाजळोचुडेल, विचलीतरस तणा ॥ वळीअथाणां प्रमुखनाए ॥ ८ ॥ एमवेइंद्रीजीव, जेमेंदुहव्या ॥ तेमुजमिच्छामिदुकडंए ॥उधेहीजुलीख, मांकडमंकोडा, चांचडकीडीकुंथुआए ॥ ९ ॥ गद्धीआं धीमेलकानखजुरडा ॥ गींगोडाधनेरीयांए ॥ एमतेइंद्रीजीव, जेमेंदुहव्यातेमुजमिछामिदुकडंए ॥ १० ॥ माखीमछरडांस, मसापतंगीयां ॥ कंसारीकोलियावडाए ॥ ढींकणविंछुतीड, भमराभमरीयो, कोतांचगखडमांकडीए ॥ ११ ॥ एमचौरिंद्री जीव, जेमेंदुहव्या ॥ तेमुजमिछामिदुकडंए ॥ जळमांनांखीजाळ, जलचरदुहव्यावनमांमृगसंतापीयाए ॥ १२ ॥ पीडयापंखीजीव, पाडीपासमां ॥ पोपटघाल्यापांजरेए ॥ एम पंचेंद्रीजीवजेमेंदुहव्या ॥ तेमुजमिछामिदुकडंए ॥ १३ ॥

(ढाल ४ थी.)
॥ साहेलडीनी देशी ॥
पंचमहाव्रतआदरोसाहेलडीरे ॥ अथवाल्योव्रत
ारतो ॥ यथाशक्ति व्रतआदरीसाहेलडीरे ॥ पालो
नेरतिचारतो ॥ १ ॥ व्रतलीधांसंभारीए ॥ सा० ॥
हेडे धरीयविचारतो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥
सा० ॥ ए बीजो अधिकारतो ॥ २ ॥ जीवसर्वे ख-
मावीए ॥ सा० ॥ योनिचोराशी लाखतो ॥ मनशुद्धे
करी खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुंरोषनराखतो ॥ ३ ॥
सर्व मित्रकरीचिंतवो ॥ सा० ॥ कोइनजाणो शत्रु तो
॥ राग द्वेषएमपरिहरो ॥ सा० ॥ कीजेजन्मपवित्रतो
॥ ४ ॥ साहम्मिसंघखमावीए ॥ सा० ॥ जे उपनी अ-
प्रीतितो ॥ सज्जनकुटुंबकरोखामणां ॥ सा० ॥ ए जिन
शासनरीतितो ॥ ५ ॥ खमीएनेखमावीए ॥ सा० ॥
एहजधर्मनुंसारतो शिवगतिआराधनतणो ॥ सा० ॥
एत्रीजोअधिकारतो ॥ ६ ॥ मृषावादहिंसाचोरी ॥
सा० ॥ धनमुर्छीमैथुन तो ॥ क्रोधमान मायातृष्णा
। सा० ॥ प्रेमद्वेषपैशुनतो ॥ ७ ॥ निंदाकलहनकी-
जीए ॥ सा० ॥ कुडोनदीजेआलतो ॥ रतिअरति
मिथ्यातजो ॥ सा० ॥ मायामोस जंजालतो ॥ ८ ॥

रभव जे कर्याए, एमअधिकरण अनेक तो ॥ त्रिवि-
धेत्रिविधेवोसरावीए ए, आणी हृदयविवेकतो ॥८॥
दुक्कृतनिंदा एमकरीए. पापकरो परिहारतो ॥ शि-
वगतिआराधन तणोए, ए छठो अधिकारतो ॥९॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

धन्यधन्यतेदिनमाहरो, जीहांकीधोधर्म ॥ दान-
शियळतपआदरी, टाळयांदुष्कर्म ॥ धन्य० ॥ १ ॥
शेत्रुंजादिकतीर्थनी, जेकीधीयात्र ॥ जुगतेजिनवरपू-
जीया, वळीपोख्यां पात्र ॥ धन्य० ॥ २ ॥ पुस्तक
ज्ञान लखावीयां, जिनहरजिन चैत्य, ॥ संघचतुर्विध-
साचव्या; ए सातेखेत्र ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ पडिकमणा
सुपरेकर्या, अनुकंपादान ॥ साधु सूरिउवझायने; दि-
धांबहुमान ॥ धन्य ॥ ४ ॥ धर्मकाजअनुमोदिए, एम
वारोवार, ॥ शिवगतिआराधनतणो, सातमोअधिकार
॥ धन्य० ॥ ५ ॥ भावभलोमनआणीए, चित्तआणी-
ठाम, समता भावेभावीए, एआतमराम ॥ धन्य० ॥
॥ ६ ॥ सुखदुःख कारणजीवने, कोइअवरनहोय, क-
र्मआपजे आचर्या, भोगविएसोय ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

कोइसार, इहभवनेपरभवे, सुखसंपतिदातार ॥ ५ ॥ जुओभीलभीलडी, राजाराणीथाय. नवपदमहिमाथी; राजसिंहमहाराय, राणीरत्नवतीबेहु, पाम्यांछेसुरभोग, एकभवपछी लेशे, शिववधुसंयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीनेएवळी, मंत्र फळयोततकाळ, फणीधरफीटीने, प्रगटथइ फुलमाळ, शिवकुमरेजोगी. सोवनपुरुषोकीध, एमएणेमंत्रे, काजघणानांसिद्ध ॥ ७ ॥ ए दशअधिकारे, वीरजिणसरभाख्यो, आराधनकेरो, विधिजेणेचित्तमांराख्यो, तेणेपापपखाळी, भव भय दुरेनांख्यो, जिन विनयकरंतां, सुमतिअमृतरसचाख्यो ॥ ८ ॥ इति.

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ देशी ॥

सिद्धारथ रायकुळतिलोए, त्रिशलामातमल्हारतो, अवनि तळेतमे अवतर्याए, करवाअमउपकार ॥ जयोजिनवीरजीए ॥ १ ॥ में अपराधकर्याघणाए,कहेतां नलहुंपारतो, तुमचरणे आव्याभणीए, जोतारेतोतार ॥ जयो० ॥ २ ॥ आशाकरीने आवीयो ए, तुमच महाराजतो. आव्याने उवेखशोए, तो केमर

॥ जयो० ॥ ३ ॥ कर्मअलुजणआकरांए, जन्ममरण जंजाळनो ॥ हुंलुंएहथीउभग्योए, छोडावोदेवदयाळ ॥ जयो० ॥ ४ ॥ आजमनोरथमुजफळ्या ए, नाठां दुःख दंदोळनो, तुठयोजिनचोवीशमो ए, प्रगटया पुन्यकाळ ॥ जयो० ॥ ५ ॥ भवभवविनयतुमार· रांए, भावभक्तितुमपायनो, देवदयाकरदीजीए ए, बोधिबीजसुपसाय ॥ जयो० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥

[illegible]रण, सुगतिकारण, दुःख निवारण, जग· जयो ॥ श्री [illegible]जिनवर, चरणयुगनां, अविरमन उलटथयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेवसूरींदपटधर, [illegible] [illegible] ॥ [illegible] श्रीविजयप्रभसूरि,सूरि [illegible] ॥ श्री [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

॥ ॐ श्री वीतरागायनमः ॥

॥ ॐ नमो गुरुभ्यः ॥

॥ वीरभद्दकयं चउसरणपइन्नयं ॥

आ पयन्नानी विधि त्रण आंबिल करीने भणवानी छे.

॥ मंगलाचरणम् ॥

प्रणम्य श्रीसुव्रततीर्थराजं, गुरूंश्च योगत्रितयस्य शुद्धया ॥ चतुःशरण्याख्यप्रकीर्णकेऽहं, बालावबोधादित्रयं करिष्ये ॥ १ ॥

आ संसारमां प्राणीओने दुःखथी बचाववाने माटे संसारना पुद्गल पदार्थो समर्थ होता नथी, परंतु अरिहंतादिक चारनुं शरणज समर्थ होय छे माटे भव्य प्राणीओ गुणना सांभळवा सहित अरिहंतादिक चारनुं स्मरण करी शके एवा हेतुथी श्री महावीर स्वामि भगवानना खुद शिष्य वीरभद्र मुनि चउसरण पयन्नो करता हवा.

तेमां आ पयन्नो मंगलरूप छे तोपण तेमां मंगलपणुं शिष्योने बताववा ग्रंथकार छ आवश्यकरूप मंगलाचरण करे छे. तेमां प्रथम तो छए आवश्यकनां नाम मात्र कहे छे.

सावज्जजोगविरई उक्कित्तण गुणवओ अ पडिवत्ती
खलियस्स निंदणा वण-तिगिच्छ गुणधारणा चेव॥१

[illegible]

इयकोथी कया कया आचारनी शुद्धि थाय छे ने तेओनुं स्वरुप शुं (अथवा शा थकी थाय) ते कहे छे.

चारित्तस्स विसोही, कीरइ सामाइएण किल इहयं॥सावज्जेयर-जोगाण, वज्जणा-सेवणत्तणओ॥२॥

भावार्थः-बीजा दर्शनोमां सामायिक एहवुं नाम पण नथी तेथी आ जिनसासनमां जे रागद्वेषथी थता मन वचन कायाना व्यापाररुप पाप व्यापारोने तजवाथी अने सम्यक्त्व आवश्यकादिक निरवद्य व्यापारोने सेववाथी थता सामायिके करी देशविरति अने सर्वविरतिरुप चारित्रनी विशुद्धि निश्चे करीने थाय छे. ॥ २ ॥

हवे चउविसथ्था नामना बीजा आवश्यकथी शानी शुद्धि थाय छे तेनुं स्वरुप कहे छे.

दंसणयार-विसोही, चउवीसायह्णएण किच्चइ य ॥ अच्चभुअ-गुणकित्तण,-रूवेणं जिणवरिंदाणं॥३॥

भावार्थः-जिनेश्वर भगवानना, लोकमां उद्योत करवा आदिक अति आश्चर्यकारि गुणोनी स्तवना करवारूप, वर्त्तमान चोवीशीना चोविसे तीर्थकर महाराजनी स्तुतिए करीने आठे प्रकारना दर्शनाचारनी शुद्धि थाय छे. ॥ ३ ॥

हवे वंदन नामना त्रीजा आवश्यकथी कया गुणोनी शुद्धि थाय ते बतावे छे.

नाणाइआउगुणा, तस्संपन्न-पडिवत्तिकरणाओ ॥ वंदणएणं विहिणा, कीरइ सोहीउ तेसिं तु ॥४॥

चरणाइयाइयाणं, जहक्कमं वणतिगिछरूवेणं ॥
पडिक्कमणासुद्धाणं, सोही तह काउस्सग्गेणं ॥ ६ ॥

भावार्थः—जेम गुमडु थएलुं होय ने सामान्य ओषधे न मटे तो विशेष ओषध करवानी जरुर पडे छे तेम प्रतिक्रमण नामना चोथा आवश्यके करीने पण शुद्ध नहीं थएला एहवा चारित्रादिना अतिचारादिनी शुद्धि अनुक्रमे आवेला पांचमा काउसग नामना आवश्यकथी थाय छे, ॥ ६ ॥

दर्शनाचार ज्ञानाचार तथा चारित्राचाररूप त्रण आचारनी शुद्धि अनुक्रमे कह्या पछी, हवे एकज गाथाए करी तपआचारनी शुद्धि पच्चख्खाण नामना छठा आवश्यके तथा वीर्याचारनी सर्व आवश्यके शुद्धि थाय ते बतावे छे.

गुणधारणरूवेणं, पच्चक्खाणेण तवइआरस्स ॥
विरिआयारस्स पुणो, सव्वेहिवि कीरए सोही ॥ ७ ॥

भावार्थः—आश्रवने रोकवाथी तृष्णानो नाश थाय छे, तृष्णाना नाशथी अपूर्व शांत गुण प्रगट थाय छे, शांत गुणथी चारित्रनी निर्मलता थाय छे, चारित्रनी निर्मलताथी घातिकर्मनो क्षय करी केवलज्ञान पामे छे अने पछी भवोपग्राही चार अघातिकर्मनो क्षय करी मोक्ष पामे छे. एवी रीतना अनुक्रमे रहेलाने धारण करवारूप पच्चख्खाण नामना छठा आवश्यके करी तपमां लागेला अतिचारादिनी शुद्धि थाय छे, अने छए आवश्यक विधिपूर्वक करवाथी वीर्याचारनी शुद्धि थाय छे. अहिंमां आश्रव बंध करवाथी तृष्णानो छेद बतावे

तेथी समजवुं जोइए के पहेलां व्रतादिक लइने आश्रव बंध कर्या पछी तृष्णानो छेद थइ मन शुद्ध थाय छे पण तृष्णा छेद करीने आश्रव रोकवा एम एकांते कहेवा नथी आ उपरथी मन शुद्ध करवाने माटे पहेलां दृढपणे पण अवश्य विधिपूर्वक व्रत–अभिग्रहादि करवा जोइए एम सिद्ध थाय छे. ॥ ७ ॥

हवे जे स्वप्नाओथी सर्व तीर्थंकरोनी स्तुति थइ शके एवां चउद स्वप्नानुं स्मरण करवारूप मंगल करे छे.

गयवसह सीह अभिसेअ. दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं ॥ पउमसर सागर विमाण. भवण रयणु-च्चय सिहिं च ॥ ८ ॥

भावार्थ:—सर्व तीर्थंकर महाराज जेमनां माताना [illegible]

[illegible]

ा कम्मट्टगाइ अरिहंता ॥
िहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥

ाद्देराग अने दृष्टिराग रूप त्रण प्रकारना
नाश करनार तेमज आठकर्म अने आदि
परिसहआदि रूप शत्रुनो नाश करनार,
अनंतकाल सुधी संसारमां अनंत दुःख
व इंद्रियोना त्रेवीश विषय अने शोलक-
ा पचीश कपाय ते रूप जे शत्रुओ तेना
ंत भगवान मने संसारनुं भ्रमण दुःख
। १३ ॥

सेत्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरि-
ता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१४॥

ना लक्ष्मी त्याग करीने अने थोडा पराक्रमवा-
ाय एवा तप अने चारित्रने सेवीने तेना वले
रणीय, मोहनीय, अने अंतरायरूप चार घाती-
गी केवलज्ञानरूप आत्माना स्वाभाविक गुणनी
ा (पामेला) एहवा अरिहंत भगवान आ सं-
मने काढवाने माटे शरणभूत थाओ ॥१४॥

ा, ... ंद-पूअमरहंता
ाम सरणं ॥१५॥
ाथी करातां वंदनने

जीए अवश्य करवा जोइए. ॥ १० ॥

हवे पहेला अधिकारना प्रसंगमां चारशरण करवां कह्यां अने तेवां शरणां जे प्राणी ते चारनुं शरण पामे ते बतावे छे.

अरिहंत सिद्ध साहू, केवलिकहिओ सुहावहो धम्मो ॥ एए चउरो चउगइ-हरणा सरणं लहइ धन्नो ॥ ११ ॥

भावार्थ–जेओनुं वर्णन आगळ करवामां आवशे एवा अरिहंत सिद्ध साधु अने केवलिए कहेलो धर्म एवा सुख करनार अने ए चारे चतुर्गति रूप संसारना दुःखोनो नाश करनार छे तेने शरण-पात्र जे भाग्यशाली प्राणीओ होय ते धन्य छे ॥ ११ ॥

अह सो जिणभत्तिभरु,–च्छरंतरोमंचकंचुअकरा-लो॥पहरिसपणउम्मीसं, सीसंमि कयंजली भणइ॥१२॥

[illegible]

रागद्दोसारीणं, हंता कम्मट्ठगाइ अरीणं ॥ विसयकसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥

भावार्थः–कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग रूप त्रण प्रकारना राग अने द्वेषरूप शत्रुओनो नाश करनार तेमज आठकर्म अने आदि शब्दथी उपसर्ग अने बावीस परिसहआदि रूप शत्रुनो नाश करनार, वळी जेना पासमां रहेवाथी अनंतकाल सुधी संसारमां अनंत दुःख सहन करवुं पडयुं तेहवा पांच इंद्रियोना त्रेवीस विषय अने सोळक- षाय अने नव नोकषाय रूप पचीस कषाय ते रूप जे शत्रुओ तेना नाशने करनार एहवा अरिहंत भगवान मने संसारनुं भ्रमण दुःख मटाडवाने शरण भूत हो. ॥ १३ ॥

रायसिरिमवकसित्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ॥ केवलसिरिमरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१४॥

भावार्थः–राज्यनी लक्ष्मी त्याग करीने अने थोडा पराक्रमवाळा माणसे दुःखे कराय एवा तप अने चारित्रने सेवीने तेना बळे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अने अंतरायरूप चार घाती- कर्मनो मूळथी क्षय करी केवलज्ञानरूप आत्माना स्वाभाविक गुणनी लक्ष्मीने पामवाने योग्य (पामेला) एहवा अरिहंत भगवान आ सं- साररूप बंदीखानामांथी मने काढवाने माटे शरण भूत थाओ ॥१४॥

थुइवंदणमरहंता, अमरिंद–नरिंद–पूअमरहंता ॥ सासयसुहमरहंता, अरिहंता हुंतु मम सरणं ॥१५॥

भावार्थः–वचनथी करातो स्तुति अने शरीरथी करातां वंदनने

रागदोसारीणं, हंता कम्मट्टगाइ अरिहंता ॥
विसयकसायारीणं, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ १३ ॥

भावार्थः-कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग रूप त्रण प्रकारना राग अने द्वेषरूप शत्रुओनो नाश करनार तेमज आठकर्म अने आदि शब्दथी उपसर्ग अने बावीस परिसहआदि रूप शत्रुनो नाश करनार, कर्मो जेना पासमां रहेवाथी अनंतकाल सुधी संसारमां अनंत दुःख सहन करवुं पडयुं तेहवा पांच इंद्रियोना त्रेवीश विषय अने शोलकषाय अने नव नोकषाय रूप पचीश कषाय ते रूप जे शत्रुओ तेना नाशने करनार एहवा अरिहंत भगवान मने संसारनुं भ्रमण दुःख मटाडवाने शरण भूत हो. ॥ १३ ॥

रायसिरिमवकसित्ता, तवचरणं दुच्चरं अणुचरित्ता ॥ केवलसिरिमरहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१४॥

भावार्थः-राज्यनी लक्ष्मी त्याग करीने अने थोडा पराक्रमवाला प्राणीए दुःखे कराय एवा तप अने चारित्रने सेवीने तेना वले ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अने अंतरायरुप चार घातीकर्मनो मूलथी क्षय करी केवलज्ञानरुप आत्माना स्वाभाविक गुणनी लक्ष्मीने पामवाने योग्य (पामेला) एहवा अरिहंत भगवान आ संसाररुप बंदीखानामांथी मने काढवाने माटे शरणभूत थाओ ॥१४॥

थुइवंदणमरहंता, अमरिंद-नरिंद-पूअमरहंता ॥ सासयसुहमरहंता, अरिहंता हुंतु मम सरणं ॥१५॥

भावार्थः-वचनथी कराती स्तुति अने शरीरथी करातां वंदनने

अमरिंद–नरिंद–मुणिंद,–वंदिअं वंदिउं महा-
वीरं ॥ कुसलाणुबंधिबंधुर, मययणं कित्तइस्सामि ।९।

भावार्थः–देवता तथा तेमना चोसठ इंद्र; मनुष्य तथा तेमना इंद्र, चक्रवर्त्ति आदि; मुनि महाराज तथा तेमना इंद्र, श्रुत केवली आदि ए बधाए जेमनी स्तवना करेली छे तेवा महावीरस्वामि भगवानने वंदना करी समाधि मरण थवाना कारणभूत होवाथी मोक्षने पमाडनार अने एटला माटेज श्रेष्ठ एहवुं चउसरण नामनुं अध्ययन (पयन्नो) हुं कहीश एम महावीर भगवानना खुद शिष्य वीरभद्र मुनि महाराज प्रतिज्ञा करे छे. ॥ ९ ॥

मंगल कह्या पछी आ पयन्नामां शुं कहेवानुं ते एक गाथाए बतावे छे.

चउसरणगमण दुक्कड,–गरिहा सुकडाणुमोयणा
चेव ॥ एस गणो अणवरयं,कायव्वो कुसलहेउ त्ति।१०।

भावार्थः–अरिहंत सिद्ध साधु अने केवलीनो कहेलो धर्म, ए चार वस्तुनुं शरण करवानी रीति बताववा रूप पहेलो अधिकार १. जेने पापकार्यो आत्माने अशुद्धपरिणतिमां वर्त्तता थकां करेला होय तेनी निंदा करवा रूप बीजो अधिकार २. अने आत्माना स्वाभाविक गुणना अंशमां स्थिर थइने जे जे धर्म संबंधि कार्यो करेलां होय ते संबंधि मनमां हर्ष करवारूप त्रीजो अधिकार ३. ए रीते आ पयन्नामां त्रण अधिकार कहेवाना छे ते त्रणे अधिकार मोक्ष पमाडवामां कारण भूत छे माटे समाधिमरणथी मोक्षने इच्छनार मा-

ओसरणमवसरित्ता, चउत्तीसं अइसए निसेवि-त्ता॥ धम्मकहं च कहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१८।

भावार्थः–वैमानिकआदि चारे प्रकारना देवताओए रचेलुं समवसरण तेने शोभावीने (तेमां बेसीने) अने चोत्रीस अतिशयने सेवीने (चोत्रीस अतिशय सहित छतां) धर्म कथाने कहेनार एहवा अरिहंत भगवान् मारा अनादिकालना अज्ञानने नाश करवा माटे शरणभूत थाओ ॥ १८ ॥

एगाइ गिरा णेगे, संदेहे देहिणं समं छित्ता ॥ तिहुअणमणुसासंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१९ ॥

भावार्थ–एक वचने करीने सुर असुर मनुष्य तिर्यंचरूप प्राणीओना संदेहने एक काले छेदीने (जेम एक राजाए पोतानी त्रण स्त्रीओए अनुक्रमे जल, गायन, अने शिकार माग्यां छतां एक "सर" नथी एटला मात्र वचने करी त्रणे स्त्रीओनुं समाधान कर्युं तेम) त्रणे जगतने सम्यक्त्व, देशविरति, सर्व विरतिनुं स्वरूप बतावनारूप शिक्षा (धर्मोपदेश) ने आपता एहवा अरिहंत भगवान मने शरण हो ॥ १९ ॥

वयणामएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ॥ जिअलोअमुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ २० ॥

भावार्थः–भुख तरस पीडा आदिक दूषणोनो नाश करनार, वचनरूप अमृते करी जगतने शांत (संतोषवाला) करता तेमज ज-

ओसरणमवसरित्ता, चउतीसं अइसए निसेवि-
त्ता॥ धम्मकहं च कहंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१८॥

भावार्थः–वैमानिकआदि चार प्रकारना देवताओए रचेलुं समवसरण तेने शोभावीने (तेमां बेशीने) अने चोत्रीश अतिशयने सेवीने (चोत्रीश अतिशय सहित छतां) धर्म कथाने कहेनार एहवा अरिहंत भगवान मारा अनादिकालना अज्ञानने नाश करवा माटे शरणभूत थाओ ॥ १८ ॥

एगाइ गिरा णेगे, संदेहे देहिणं समं छित्ता ॥
तिहुअणमणुसासंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं॥१९ ॥

भावार्थ–एक वचने करीने सुर असुर मनुष्य तिर्यचरुप प्राणीओना संदेहने एक काले छेदीने (जेम एक राजाए पोतानी त्रण स्त्रीओए अनुक्रमे जल, गायन, अने शिकार माग्यां छतां एक''सर'' नथी एटला मात्र वचने करी त्रणे स्त्रीओनुं समाधान कर्युं तेम) त्रणे जगतने सम्यक्त्व, देशविरति, सर्व विरतिनुं स्वरुप बतावनारुप शिक्षा (धर्मोपदेश) ने आपता एहवा अरिहंत भगवान मने शरण हो ॥ १९ ॥

वयणामएण भुवणं, निव्वावंता गुणेसु ठावंता ॥
जिअलोअमुद्धरंता, अरिहंता हुंतु मे सरणं ॥ २० ॥

भावार्थः–भुख तरस पीडा आदिक दूषणोनो नाश करनार, वचनरुप अमृते करी जगतने शांत (संतापवान्ला) करता तेमज ज-

हवे वीजुं सिद्धनुं शरण जेवी रीते अंगीकार करे ते बतावबाने त्रिजमी गाथा कहे छे.

अरिहंतसरणमलसुद्धि,—लद्धसुविसुद्धसिद्धबहु- माणो ॥ पणयसिररइयकरकमल,—सेहरो सहरिसं भणइ ॥ २३ ॥

भावार्थः—अरिहंत भगवाननुं शरण करवामां थएला शुद्ध अध्य- वसायथी प्राप्त थएली कर्मरुप मेलनी शुद्धिए करी जेणे सिद्धोने विषे अतिविशुद्ध बहु मान प्राप्त थएलुं छे, जेणे नमेला पोताना मस्त- कमां हाथरुप कमलनो शेखर (डोडानी आकृतिरूप अंजलि) कर्यो छे एहवो हलुकर्मी प्राणी आगल केहेवाशे तेवी प्रकारे हर्ष सहित छतो सिद्धनुं शरण कहे. ॥ २३ ॥

हवे केवी रीते सिद्धना गुणोनी स्तवना करतो थको सिद्धनुं शरण करे ते छ गाथाए करी बतावे छे.

कम्मट्ठक्खयसिद्धा, साहाविअनाणदंसणसमिद्धा ॥ सव्वट्ठलद्धिसिद्धा, ते सिद्धा हुंतु मे सरणं ॥ २४ ॥

भावार्थः—आठ कर्मना क्षये करी त्रण जगतमां प्रसिद्धि पामेला तीर्थ सिद्ध आदि भेदरूपे, आवरण रहित आत्माना सहज गुणरुप ज्ञान दर्शनचारित्ररूप समृद्धिवाला, जेओए आत्मानी सिद्धि करवाने हेतुभूत ज्ञानादिक गुणोए करी आत्मिक सर्व प्रयोजनोनी प्राप्ति सिद्ध करी छे, एहवा ते सिद्धशिलामां रहेला सिद्धो भवभ्रमण करतां थती अस्थिरतार्थी थतां दुःखोथी बचाववाने माटे शरण भूत हो. ॥ २४ ॥

गमने चारित्र आदि गुणोने विषे स्थापन करता; ते भव्य प्राणीओने संसारसागरथी पार उतारवाथी तेओनो उद्धार करता एवा अरिहंत मने शरण हो. ॥ २० ॥

अब्भुअगुणवंते, नियजससससहरपहासिअदि-
अंते॥नियय मणाइअणंते,पडिवन्नो सरणमरिहंते ॥२१॥

भावार्थ:-चंद्रमाने विषे न होय एवा निर्मल अद्भुत [illegible] गुणयुक्त [illegible] [illegible] तेमने सर्व दिशाओना अंतने [illegible] [illegible] छे, [illegible], अनादि, अनंत, एवा अरिहंतने में शरणपणे अंगीकार कर्युं [illegible] । [illegible] ॥ २१ ॥

उज्झियजरमरणाणं, समत्तदुक्खत्तसत्तसरणाणं।
तिहुयणजणसुहयाणं, अरिहंताणं नमो ताणं ॥२२॥

[illegible]

(नाश कर्यो छे) व्युच्छिन्न क्रियाऽनिवृत्ति नामना शुक्लध्यानना चोथापायारुप संपूर्ण ध्यानरुप अग्निए करी जेमणे संसाररुपी बीजने बाली नांख्युं छे, गणधरादिक अगर छद्मस्थ तीर्थकरादिक योगीश्वरोए नमस्कारध्यानादिकद्वाराए आश्रय करवा योग्य मोक्षाभिलाषि भव्य प्राणिओए स्मरण करवा योग्य, एहवा सिद्धो आत्मिक गुणोने स्थिर करवा द्वारे शरण भूत हो. ॥ २७ ॥

पाविअपरमाणंदा, गुणनीस्संदा विदीन्नभवकंदाः॥
लहुईकयरविचंदा, सिद्धा सरणं खविअदंदा ॥२८॥

भावार्थः—हंमेश हर्षित होवाथी जेमणे पोताना आत्माने उत्कृष्ट आनंद पमाड्यो छे, ज्ञानादिक गुणोनुं माखणभूत सार जेमनी अंदर रहेलो छे, मोहनीयआदि कर्मरुप संसारनो कंद जेमणे मूलथी नाश करेलो छे, लोक अलोक समग्रने प्रकाश करनार केवलज्ञानना प्रकाशे करी जेमणे सूर्य चंद्रमाने अल्पप्रभाववाला करी दीधा छे, सर्वथा कषायरहित होवाथी जेमणे युद्ध आदिरुप क्लेशनो नाश कर्यो छे, एहवा सिद्धभगवान संसारसमुद्रथी तारी अक्षय पदमां पहोंचाडवाने शरण भूत हो. ॥ २८ ॥

उवलद्धपरमबंभा, दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा ॥
भुवणघरधरणखंभा, सिद्धा सरणं निरारंभा ॥२९॥

भावार्थः—केवलज्ञानरुप उत्कृष्टज्ञान जेमणे पामेलुं छे, दुःखे पामवाने लायक एहवा मोक्षपदनी प्राप्तिरुप लाभ जेमणे मेलव्यो

ाश कर्यों छे) व्युच्छिन्न क्रियाऽनिवृत्ति नामना शुक्लध्यानना ापायारुप संपूर्ण ध्यानरूप अग्निए करी जेमणे संसाररुपी बी- वाली नांख्युं छे, गणधरादिक अगर छद्मस्थ तीर्थकरादिक यो- श्वरोए नमस्कारध्यानादिकद्वारा,ए आश्रय करवा योग्य मोक्षाभि- षि भव्य प्राणिओए स्मरण करवा योग्य, एहवा सिद्धो आत्मिक ःणोने स्थिर करवा द्वारे शरण भूत हो. ॥ २७ ॥

पाविअपरमाणंदा, गुणनीस्संदा विदीन्नभवकंदाः॥
ऊहुईकयरविचंदा, सिद्धा सरणं खविअदंदा ॥२८॥

भावार्थः-हंमेश हर्षित होवाथी जेमणे पोताना आत्माने उत्कृष्ट आनंद पमाड्यो छे, ज्ञानादिक गुणोनुं माखणभूत सार जेमनी अं- दर रहेलो छे, मोहनीयआदि कर्मरुप संसारनो कंद जेमणे मूलथी नाश करेलो छे, लोक अलोक समग्रने प्रकाश करनार केवलज्ञानना प्रकाशे करी जेमणे सूर्य चंद्रमाने अल्पप्रभाववाला करी दीधा छे, सर्वथा कषायरहित होवाथी जेमणे युद्ध आदिरुप क्लेशनो नाश कर्यो छे, एहवा सिद्धभगवान संसारसमुद्रथी तारी अक्षय पदमां पहोंचाडवाने शरण भूत हो. ॥ २८ ॥

उवलद्धपरमवंभा, दुल्लहलंभा विमुक्कसंरंभा ॥
भुवणघरधरणखंभा, सिद्धा सरणं निरारंभा ॥२९॥

भावार्थः-केवलज्ञानरूप उत्कृष्टज्ञान जेमणे पामेलुं छे, दुःखे करीने पामवाने नवय एहवा मोक्षपदनी प्राप्तिरुप लाभ जेमणे मेलव्यो

भावार्थः–पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय ए रीतनो छ जीवनिकायरुप लोकनो वध, मन वचन कायाए, नहीं करनार, नहीं करावनार, तेमज नहीं अनुमोदनार होवाथी जीवलोकना बंधु, नरकतिर्यंचादिदुर्गतिरुप समुद्रना (दुर्गति मेलववाना हेतुभूत कर्मने बांधवाना कारण जे आश्रव तेनो त्याग करवाथी) पार पामनार, आमर्षोषधि प्रमुख बहु प्रकारनी लब्धि युक्त होवाथी महाअतिशयवंत, तेमज ज्ञानादिकगुणोए करी मोक्ष सुखने साधनार एहवा साधुओ मोक्षसाधनमां सहाय करवा द्वारे मने शरणभूत हो. ॥ ३१ ॥

केवलिणो परमोही, विउलमई सुअहरा जिणमयंमि ॥
आयरियउवज्झाया, ते सव्वे साहुणो सरणं ॥३२॥

भावार्थः–मत्यादिकज्ञाननी सहायरहित, घातिकर्मना क्षयथी उपजेलुं, सर्व द्रव्यगुणपर्याय विषय केवलज्ञान, जेमने छे एहवा केवली, जे ज्ञान पाम्या पछी अंतर्मुहूर्ते करी केवलज्ञान निश्चे प्राप्त थाय छे एहवुं जे परमावधिज्ञान ते ज्ञानवाला, विपुलमति नामनो मनःपर्यव ज्ञाननो जे भेद ते वाला, (विपुलमति ग्रहण करवाए करी ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानवाला पण लेवा) दशवैकालिकआदि कालिकश्रुत, उत्तराध्ययनादिक उत्कालिकश्रुत, आचारांगादि बारअंगरुप अंगप्रविष्टश्रुत अने उववाइ प्रमुख उपांगरुप अनंगप्रविष्टश्रुतने धारण करनार श्रुतधरो, तेमज जिनमतने विषे रहेला ज्ञानाचार आदि पांच आचारने [illegible]

आचार्य अने मूल बार अंगआदि सूत्रने भणावनार उपाध्याय महा राजाओ. आ सर्वे साधुओ [illegible] गणावे [illegible] महाप्रभुत हो. ॥ ३२ ॥

चउदसदसनवपुव्वी, दुवालसिक्कारसंगिणो जे अ ॥
जिणकप्पअहालंदिअ, परिहारविसुद्धिसाहू अ ॥ ३३॥

भावार्थ—चउदपूर्वी [illegible], [illegible] आचार्यादि [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३३ ॥

[illegible]

ओना वचननुं मधुरपणुं छे एहवा क्षीराश्रव लब्धिवाला साधु, साकरना सरखुं जेओना वचननुं माधुर्य छे एहवा मध्वाश्रव लब्धि-वाला साधु, गमे ते एक इंद्रियथी बधी इंद्रियना विषय जे लब्धिना वलथी ग्रहण थइ शके एवी, अथवा शरीरना अवयवोए करी चक्र-वर्तिना लश्करना पडावमां प्रत्येक प्रत्येक भिन्न शब्दादि जेना वलथी जाणी शके एहवी संभिन्नश्रोतो नामनी लब्धिवाला साधु, गुप्त कोठारमां नांखेलुं धान्य जेम बगडया विना सारी स्थितिमांज रहे तेम जे लब्धिना वलथी ग्रहण करेला सूत्र अने अर्थो आत्मामां स्थिर रही शके छे एहवी कोष्ठबुद्धि नामनी लब्धिवाला साधु, जंघाचारण लब्धि (जेनाबलथी तीर्च्छालोकमां छतां एक उत्पाते करी रुचकव-रद्वीप प्रते जइ शकाय अने आवतां पेहेला उत्पाते नंदीश्वरद्वीप आवी बीजे उत्पाते ज्यांथी गया होय ते स्थले आवी शकाय छे. उर्द्ध लो-कमां पेहेला उत्पाते पांडकवन नामना मेरुपर्वत उपर रहेला वन प्रते जइ, आवतां एक उत्पाते नंदनवने आवी बीजा उत्पाते ज्यांथी गया होय त्यां आवी शकाय छे.) अने विद्याचारणलब्धि (जेना बले तीर्च्छा जतां पेहेला उत्पाते मानुपोत्तर जइ बीजे उत्पाते नंदीश्वर द्वीप जई पछी एक उत्पाते गया होय त्यां आवी शकाय छे तथा उर्द्धजतां पेहेला उत्पाते नंदन वने जइ बीजा उत्पाते पांडकवने पहोंची त्यांथी आवतां एकज उत्पाते ज्यांथी गयेला त्यां आवी शके एवी) वाला साधु, वैक्रियलब्धिथी नाना प्रकारनां रुपो विकुर्वी तेणे आखा जंबूद्वीपने पण जे भरी आपे एहवी वैकि[illegible]यवाला

ग्रंथनुं पेहेलानुं मध्यनुं अगर अंत्यनुं एक पद सांभळी जे आखा ग्रंथने जाणी शके एवा पदानुसारिलब्धिवाळा साधु मने शरणभूत हो. ॥ ३४ ॥

हवे सर्व मुनिओने साधारण, एवा गुणवाळा साधुओनुं शरण करतोथको जे कहे ते बतावे छे.

उज्झिअवइरविरोहा, निच्च-मदोहा पसंतमुहसोहा ॥
अभिमयगुणसंदोहा, हयमोहा साहुणो सरणं ॥ ३५॥

भावार्थः—[illegible]

[illegible]

संताप विना थनारुं जे मोक्ष सुख तेना अभिलाषी, दमदंतऋषिए जेवी रीते युधिष्ठिरादिकना मनने संतोष उपजाव्यो तेवी रीते सत्पुरुषोना मनने आनंद उपजावनार, अन्य सर्व संसार संबंधी कार्य तजेलां होवाथी एक आत्माने हितकारि क्रियाओमांज जेमने रतिछे एहवा आत्मानंदो मुनिओ मने शरणभूत हो. ॥ ३६ ॥

मिल्हिअविसयकसाया,उज्झिअघरघरणिसंगसुहसाया।
अकलिअहरिसविसाया, साहू सरणं गयपमाया॥३७॥

भावार्थः-पांच इंद्रियना त्रेवीश विषयमां आसक्ति नहीं करवाथी जेमणे विषयोने दूर कर्या छे अने क्रोधादिक कषायना उदयने रोकवाथी जेमणे कषायो दूर करेला छे घर अने स्त्री संबंधथी मोही प्राणीओनी दृष्टिए थनार पुद्गल संबंधी सुख तेनो स्वाद जेमणे तज्यो छे. जेमणे इष्ट वस्तुना समागम वखते द्वेष कर्यो नथी, अने अनुपयोगादि प्रमादे करी रहित एहवा साधु मने शरणभूत हो. ३७

हिंसाइदोससुन्ना, कयकारुन्ना सयंभुरुप्पन्ना ॥
अजरामरपहखुन्ना, साहु सरणं सुकयपुन्ना ॥ ३८ ॥

भावार्थः-हिंसादि (आदि शब्दथी असत्य, चोरी, मैथुन, परिग्रह) दोषोए करीने रहित सर्व जीवोना दुःखनो नाश करवानी बुद्धिरुप कृपालुपणुं जेमणे सर्व जीवोने विषे कर्युं छे. स्वयमेव सम्यक्त्वने ज्ञान जेमने उपज्युं छे, वृद्ध अवस्था अने मरण ज्यां नथी जे मोक्ष तेनो सिद्धांतरुप मार्ग तेमां अभ्यासवाळा (प्रवचनना उत्तम

...रे नाग), आवना भवमां जेनाथी चारित्रनी प्राप्ति थइ छे ... [illegible]
...रुं अति उत्तम पुन्य जेमने मरणसंकटमनावने उपार्जन कर्युं छे ... [illegible]
...वा माटु मने शरणभूत हो. ॥ २८ ॥

...ासिंडखणतुण्डा,कलिमलमुक्का विमुक्कचोरिक्का ॥
...निरवज्जुज्जोगिका, साहुगुणरयणाभिग्गिका ॥ २९ ॥

भावार्थः-[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥

[illegible]

हेतु माटे तेओने पण साधुनुं कार्य करवाथी साधु कहेवाय. ते हेतु माटे साधुनुं उच्चारण करवाए करी ग्रहण करेला अतीतमां थयेला, वर्तमाने वर्तता अने भविष्यमां थनार एहवा ते त्रिकालवर्ति साधुओनुं मने शरण हो. ॥ ४० ॥

ए प्रकारे त्रीजुं शरण कह्युं. हवे धर्मनुं शरण करवारूप चोथुं शरण कहे छे.

पडिवन्नसाहुसरणो,सरणं काउं पुणोवि जिणधम्मं॥
पहरिसरोमंचपवंच,-कंचुअंचिअतणु भणइ ॥ ४१ ॥

भावार्थः-जेणे पूर्वे कहेला प्रकारे साधुनुं शरण अंगीकार करेलुं छे एहवो साधु साध्वी श्रावक के श्राविकारूप कोइ पण जीव फरी पण वळी जिन धर्मनुं शरण करवा माटे मनमां थएला प्रकृष्टहर्षना वलथी थयेलो जे रोमराजिना विकस्वरपणानो समूह तेरूप वस्त्तरे करी शोभायमान शरीर छे जेनुं एहवो थयो छतो आगल कहेवाशे ए प्रकारे कहे. ॥ ४१ ॥

• पवरसुकएहि पत्तं, पत्तेहिवि नवरि केहिवि न
पत्तं ॥ तं केवलिपन्नत्तं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४२ ॥

भावार्थः-अति उत्तम पुण्ये करी प्राप्त थयेलो, ब्रह्मदत्तचक्रवर्तिआदि केटलाक भाग्यशालि पुरुषोए पण नहीं पामेलो, केवलज्ञाने करी समस्त भावो जेमणे जाणेला छे, एहवा केवलि भगवाने उपदेशेलो एहवो जे श्रुत अने चारित्ररूप धर्म तेने हुं शरणरूपे अंगीकार करुं. ॥ ४२ ॥

•

हवे पर्वनुं माहात्म्य कहे छे.

पत्तेण अपत्तेण य. पत्ताणि य जेण नरसुरसुहाइं ॥
सुक्खसुहं पुण पत्तेण.नवरि धम्मो स मे सरणं ॥२३॥

भावार्थः-मनुष्य भवे [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भावार्थः–अतीत, अनागत अने वर्त्तमानरूप त्रणे कालमां अर्थ थकी द्वादशांगीनो नाश नहि होवाथी अविनश्वर, जन्मजरामरण अने सैंकडोगमे व्याधिओनुं समावनार, सर्व भावरोगोने नाश करनार होवाथी अमृतनी पेठे सर्व लोकोने अभीष्ट एहवा द्वादशांगरूप श्रुतधर्मना शरणने हुं अंगीकार करूछुं. ॥ ४५ ॥

पसमिअकामप्पमोहं, दिट्टादिट्ठेसु नकलियविरोहं ॥
शिवसुहफलय–समोहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४६ ॥

भावार्थ–विकार थकी थतो उन्माद जेणे अतिशये शमाव्यो छे, दृष्ट अने अदृष्ट (अतिप्रिय) पदार्थने विषे विपरीत मरुपणारूप विरोध जेमां माप्त थएलो नथी. मोक्षना सुखरूप फलने आपनार, अने मोक्षसुखरूप फल आपवा थकीज सफल एहवा धर्मने शरणरूपे हुं अंगीकार करूछुं. ॥ ४६ ॥

नरयगइगमणरोहं, गुणसंदोहं पवाइनिक्खोहं ॥
निहणियवम्महजोहं, धम्मं सरणं पवन्नोहं ॥ ४७ ॥

भावार्थः–नरकगतिमां जवाना हेतुभूत कर्मो क्षय करी आपवाथी नरकगतिमां थनार गमनने रोकनार क्षांति आदि (आदि शब्दथी निरहंकारपणुं, सरलपणुं, निर्लोभपणुं, तप, संयम, सत्य अल्पउपधिवालापणुं परिग्रहरहितपणुं, ब्रह्मचर्यआदि) गुणोनो समूह जेमां समायो छे, मवलवादिआए पण जेनो क्षोभ करी शकातो नथी, कामनी उत्पत्तिमां हेतुभूत संकल्पने तजवाथी जेणे कामरूप

सुभट अतिशये हण्यो छे, एवा धर्मने हुं नमस्कारे अंगीकार करूं. ॥ ४७ ॥

हवे जिनागमनां प्रमाण रूप धर्मने नमस्कार करे छे ते कहे छे.

भाणुग्गुवइसगुदर.—रयणालंकारगारवमहग्घं ॥
निहिमिव दोगच्चहरं, धम्मं जिणदेसिअं वंदे ॥४८॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

छतां आभव अगर परभवमां करेलां दुष्कर्मनी गुरु समक्ष निंदा क-रवाए करी पोताना अशुभ कर्मना क्षयने इच्छतो छतो, आगल कहे-वारो ए प्रकारे दुष्कर्मनी गर्हा करवाने माटे कहे. ॥ ४९ ॥

इहभविअ—मन्नभविअं, मिच्छत्तपवत्तणं जमहिगरणं ॥
जिणपवयणपडिकुट्ठं, दुट्ठं गरिहामि तं पावं ॥ ५० ॥

भावार्थः—आभवने विषे हिंसादि आश्रवे करी करेलुं, परभवने विषे मिथ्यात्वादि बंधहेतुए करेलुं, कुतीर्थीओ अने तेओना देवता-दिना आदरसत्कार पूजादिक मिथ्यात्व प्रवर्त्तनथी, तलावआदिक खोदाववाथी तेमज हलआदि शस्त्रो बनावी ते वेचवाथी थएलुं, अन्य पण वली जिनशास्त्रने विषे जे जे दुष्ट पाप कर्युं होय ते सर्वनी गुरु-साक्षिक निंदा करुछुं. ॥ ५० ॥

सामान्ये करीने दुष्कृतनीगर्हा करी हवे विशेषे करी तेज दुष्कृ-तगर्हा कहे छे.

मिच्छत्ततमंधेणं, अरिहंताइसु अवन्नवयणं जं ॥
अन्नाणेणं विरइअं, इन्हिं गरिहामि तं पावं ॥ ५१ ॥

भावार्थः—जे में मिथ्यात्वरूप अंधकारे करी अंधथाएलाए अछता दूषण कहेवाए करी अरिहंतादिकने विषे जे अवर्णवादनुं बोलवुं अ-ज्ञाने करी कर्युं होय, कराव्युं होय, अनुमोद्युं होय, अतीत कालमां वर्त्तमानमां अगर भविष्यमां बीजुं पण जे पाप जिनेश्वरभगवानना तेम तेमना शासनना शत्रुपणादिके करी लाग्युं होय ते पापनी हमणां

जेवुं [illegible] नेव [illegible] पवृ ते [illegible] पण तो हुं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

नुअधम्मस्स[illegible]. पावं परिवज्जियाइ जं [illegible]
अंतेनु अ पावेनु. इति गाविंगामि न पावं ॥ [illegible]

भावार्थः—[illegible]

[illegible]

तेम बीजाना दुःखनो नाश करवो ते करुणा, बीजाना सुखने विषे संतोष (अनीर्ष्याभाव) ते प्रमोद, बीजाना अनिवार्य दोषोने विषे उपेक्षा ते माध्यस्थ्य) ना विषयभूत जीव तेओने पण परितापनादि दुःख करवाए करी जे पाप कर्युं होय ते सर्व पापने हमणां विवेकवंत थयो छतो हुं निंदुछुं. ॥ ५३ ॥

दुःष्कृतगर्हारुप बीजा अधिकारनी समाप्ति बतावतो थको जे कहे ते बतावे छे,

जं मणवयकाएहिं कय,–कारिअअणुमईहिं आयरिअं॥
धम्मविरुद्धमसुद्धं, सव्वं गरिहामि तं पावं ॥ ५४ ॥

भावार्थः–रागद्वेष अने अज्ञानादिना वशपणाथीजे धर्मथी विरुद्ध आत्मानी अशुद्धि प्राप्त करनार, पाप, मन वचन अने कायाए करी करवा कराववा अनुमोदवा द्वारे कर्युं होय ते सर्व पापनी गुरु समक्ष निंदा पूर्वक आलोयण करुंछुं. ॥ ५४ ॥

दुःष्कृतनी गर्हा करवारुप बीजो अधिकार कह्यो, हवे सुकृतनी अनुमोदनारुप त्रीजो अधिकार केवी अवस्थावालो थइ करे ते दर्शाववाने माटे कहे छे.

अह सो दुक्कडगरिहा,–दलिउक्कडदुक्कडो फुडं भणइ ॥
सुकुडानुरायसमुइन्न,–पुन्नपुलयंकुरकरालो ॥ ५५ ॥

भावार्थः–हवे बीजा अधिकारमां करेली पोताना दुष्कर्मनी निंदाथी जेणे पूर्वे करेला तीव्र पापकर्मो क्षय कर्या छे अने तेथीज

दुष्कृतनी गर्हाथी सुकृतनां पहेला अनुराग करी उत्पन्न थएली ति-
व्रतोनुमोदनाए करी सहित थयो, सुकृतने आगल करतो सतो
सुकृतनी अनुमोदना करवाने माटे कहे. ॥ ५५ ॥

सुकृतनी अनुमोदना करवाने माटे जे कहे ते बे गाथाए करी
कहे छे.

अरिहंतं अरिहंतेसु, जंच सिद्धाणं च सिद्धेसु ॥
आयारं आयरिए, उवज्झायत्तं उवज्झाए ॥ ५६ ॥
साहूण साहुचरिअं, देसविरइं च सावयजणाणं ॥
अणुमन्ने सव्वेसिं, सम्मत्तं सम्मदिट्ठीणं ॥ ५७ ॥

[illegible]

रति, अने जिनेश्वर भगवाने कहेला तत्वोनुं सम्यक्प्रकारे सहन करवारुप जे सर्व सम्यक्त्ववंतनुं समकित ए सर्व गुणोनी हुं अनुमोदना करुछुं. ॥ ५६—५७ ॥

हवे अनुमोदनाने योग्य सर्व पदार्थनो संग्रह करता थका कहेछे.

अहवा सव्वंविअ वीअ,–रायवयणाणुसारि जं सुकडं॥
कालत्तएवि तिविहं, अणुमोएमो तयं सव्वं ॥ ५८ ॥

भावार्थः–अथवा सर्व जे मन वचन कायाए करी करवा करावबा अने अनुमोदवा द्वारे वीतरागना वचनने अनुसारि सुकृत अतीतमां कर्युं होय ते त्रणे कालमां पण अमे ते सवे सुकृतनी अनुमोदना करीए छीए. ॥ ५८ ॥

आ रीते सुकृतनी अनुमोदनारुप त्रीजो अधिकार पण कह्यो. हवे चार शरणादि करवाथकी जे फल थाय ते बतावे छे.

सुहपरिणामो निच्चं, चउसरणगमाइ आयरं जीवो ॥
कुसलपयडीउ बंधइ, बद्धाउ सुहाणुबंधाउ ॥ ५९ ॥

भावार्थः–निरंतर शुभ अध्यवसाय सहित छतो जे साधुआदि जीव चार शरणनो अंगीकार, दुष्कृतनी गर्हा, अने सुकृतनी अनुमोदनाने आचरे छे. ते जीव पुण्य प्रकृतिओने बांधे छे, अने पेहेला कालमां जे अशुभ अनुबंधवाली प्रकृतिओ बांधी होय ते सर्वने शुभ अनुबंधवाली करे छे. ॥ ५९ ॥

मंदणुभावा बद्धा, तिव्वणुभावाउ कुणइ ता चेव ॥
असुहाउ निरणुबंधाउ, कुणइ तीव्वाओ मंदाओ ॥६०॥

भावार्थः—ज्यां जे देवनां चंद्र स्थानां शुभ वर्णनां वह-
सिनु वांचेलां होय तेने मोक्ष स्थानां अने अशुभ जे कुंडं चं:
स्थानां संसार होय तेने विस्तृत करे छे अने जे मोक्ष स्थानां
अशुभ वर्णनां करवि देवता वांचेलां होय तेने चंद्र स्थानां को
छे. ॥ ६० ॥

[illegible]
[illegible] ॥ ६१ ॥

जो पुनं रायणं, कुणंति निणंति मंतिनिमांसि ॥
तोह निरयं सम्मं, अणंतिनिमासि पुण्णराणं ॥ ६१ ॥

[illegible]

देव, मनुष्य, तिर्यच अने नारकी गति चार अंगवाला संसारनुं छेदन (आत्यंतिक विनाश) न कर्युं अहो ! केटलुंबधुं खेदकारक ! ते माणसे चिंतामणिरत्न तुल्य पोतानो जन्म वृथा हारि दीधो. ॥६२॥

प्रस्तुत चउसरण अध्ययनी समाप्ति करता थका बतावे छे.

इअ जीव पमायमहारि,वीर भदंतमेयमज्झयणं ॥
झाएसु तिसंझमवंझ,–कारणं निव्वुइसुहाणं ॥ ६३ ॥

भावार्थः–आ पयन्नामां पूर्वे कहेला प्रकारे प्रमादरूप चउदपूर्वधरोने पण निगोदमां अनंतकाल परिभ्रमण कराववामां समर्थ होवाथी महा शत्रु, तेनो जय मेलववाने सुभट समान मोक्षपदने पमाडनार अने मोक्षना सुखोनुं अवंध्य कारणभूत एवा ए अध्ययनुं हे जीव तुं त्रिकाल ध्यान कर. ॥ ६३ ॥

॥ इति श्रेयोस्तु लेखकवाचकानां ॥

॥ आउरपच्चक्खाणपइन्नयं वीरभद्दकयं ॥

आ पयन्नानी विधि त्रण आंबिल करीने भणवानी छे.

॥ मंगलाचरणम् ॥

मुनिसुव्रतजिनराजं, नत्वा स्मृत्वा च गुरुपदद्वंद्वं ॥
आउरप्रत्याख्याने पर्यायादित्रयं वच्मि ॥ १ ॥

आ आउरपच्चक्खाण पयन्नाए कर्ता वीरभद्र मुनिमहाराज सर्व आयुष्यना सारभूत अंत्य अवस्थानुं आराधन करेला हता. भक्तपरिज्ञा अने चतुःशरणमां मंगल करेलुं होवाथी आ पयन्नो करतां नवुं मंगलाचरण करेलु नथी. ॥ १ ॥

जैनशासनमां बालबाल मरण, बाल मरण, बाल पंडित मरण, पंडित मरण अने पंडित पंडित मरण, ए प्रकारे मरण कह्यां छे, तेमांना बालपंडितमरणनुं स्वरूप कहेवा माटे ग्रन्थकार प्रथम गाथा कहे छे

देसिक्कदेसविरओ सम्मद्दिट्ठी मरिज्ज जो जीवो ॥
तं होइ बालपंडिय मरणं जिणसासणे भणियं ॥ १ ॥

भावार्थः—जे जीव, अजीव, पुण्य; पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्षरुप नव तत्वनी अथवा देव, गुरु, धर्मरुप त्रण तत्वनी अथवा स्वपर स्वरुपनी सद्दहणाए करी सम्यक्त्ववंत जीव पृथ्वी आदिक छकायनी हिंसामांथी देश जे त्रस हिंसा, तेनो एकदेश जे मारवानी बुद्धिए निरपराधी जीवनी निरपेक्षपणे हिंसा, तेथी तथा जुठुं बोलवा आदिकथी निवृत्ति पाम्यो छतो मरे ते मरण जैनशासननें विषे पूर्वे कहेलां (अभिग्रहीत मिथ्यात्विने थनारुं बाल बाल मरण, उपशममां तत्पर मिथ्यादृष्टिने थनारुं बाल मरण, अविरत सम्यग्दृष्टि तथा देशविरतिने थनारुं बाल पंडित मरण, छद्मस्थ साधुने थनारुं पंडित मरण अने केवलिने थनारुं पंडित पंडित मरण रूप) पांच मरण मांहेलुं बालपंडितमरण कहेलुं छे. ॥ १ ॥

जैनशासनमां यतिधर्म बे प्रकारनो कह्यो छे, देश थकी अने सर्व थकी तेमांना देशयतिधर्मवाळाने देशविरती कहेवामां आवे छे. ते देशविरतीनां बार व्रत छे. ते कहेवाने माटे ग्रंथकार बीजी गाथा कहे छेः—

पंच य अणुव्वयाइं, सत्तउ । सिक्खाउ देस-जइ-धम्मो ॥
सव्वेण व देसेण व, तेण जुओ होइ देसजइ ॥ २ ॥

भावार्थः—पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत ए प्रकारे जे श्रावकनां बार व्रत कह्यां छे, ते सर्व व्रतोए करी अगर एक बे आदि व्रत रूप तेना देशे करी सहित प्राणी देशविरति होय छे. अहियां

गुणव्रतो पण अभ्यास करवाने योग्य होवाथी शिक्षाव्रतपणे क-हेलां छे. ॥ २ ॥

पूर्व गाथामां कहेलां बार व्रतोमांथी प्रथमना पांच अणुव्रतोनां नाम साथे स्वरुप कहे छे.

पाणवह मुसावाए, अदत्तपरदार नियमणेहिं च ॥
अपरिमि इच्छाओ वि य, अणुव्वयाइं विरमणाइं ॥३॥

भावार्थः—जीव अने पांच इंद्रिय, त्रण बळ, श्वासोश्वास अने आउखारुप दश प्राणना वियोग करवारुप प्राणना विनाश थकी अने क्रोधादिकना वश थइ जुठुं बोलवारुप मृषावादथकी, अने वस्तुना स्वामी आदिके नहीं आपेली वस्तुना लेवारुप अदत्तादान थकी, अने परस्त्रीओथकी निवर्तवापणुं करवुं. तेमज वळी परिमाण रहित सर्व आकाश करतां अनंतगुणी जे इच्छा तेथकी पण निवर्तवापणुं करवुं, पांच अणुव्रत थाय छे. (जीव, इत्यादिक नवे शास्त्र थी होवाथी तेनो नाश थतो नथी. ते मुनवरने वर्णनरुप पण नहि करवां मानवुं एवुं पद मुक्युं छे.) ॥ ३ ॥

बार व्रत मांहेलां पांच अणुव्रत शिखावना पछी त्रण प्रथम गा-[illegible] शिक्षाव्रतने कहां हतां, तेमांना वच्चे वगने गुणव्रत [illegible] अने शिक्षाव्रतने देखाडता छतां त गाथा कहे छे

जं च दिसावेरमणं, अणत्थदंडाउ जं च वेरमणं ॥
देसावगासियं पि य, गुणव्वयाइं भवे ताइं ॥ ४ ॥

भावार्थः—जे दिशानुं परिमाण करवाए करी सर्व दिशामां थता सावद्य व्यापारोथकी निवर्त्तवुं, तेमज वली जे हास्य कुतूहलादिरूप तथा अधिकरण शस्त्र अग्नि विषादिकना आपवारूप अनर्थ दंडथकी निवर्त्तवुं, तेमज दिशा व्रतनो संक्षेप अने उपलक्षणथकी सर्व व्रतोना संक्षेप करवा रूप जे देशावकाशिक ते त्रणे, सर्व व्रतोने गुण करनार होवाथी गुणव्रतो कहेवाय छे. ॥ ४ ॥

भोगाणं परिसंखा, सामाइय अतिहिसंविभागो य ॥
पोसहविही उ सव्वो, चउरो सिक्खाओ वुत्ताओ ॥५॥

भावार्थः—एकवार जेनो भोग थाय ते अशनपान आदि भोग कहेवाय छे, उपलक्षणथी वारंवार जेनो भोग थाय ते स्त्री अलंकारादि उपभोग पण लेवो, ते भोगोपभोगनुं जे परिमाण करवुं ते तथा पांच इंद्रियना विषयो सारा अगर खोटा मल्या छतां, तेमां राग द्वेषनी परिणति नहीं करवारुप सामायिक, तथा पांच महाव्रतना धारक मुनि महाराजने पोताने अर्थे न्यायोपार्जित द्रव्यथकी थयेला अने तेमने कल्पनीक आहारनुं आपवुं ते अतिथिसंविभाग तथा आत्माना गुणोनी पुष्टि करनार जे पौषध तेनो जे सर्व विधि, ए चारे शिक्षाव्रत कहेलां छे ॥ ५ ॥

हवे केवी प्रकारे, क्यारे, पूर्वे कहेला देशविरति श्रावक बालपंडित मरणे करी मरे, ते बे गाथाए बतावे छे.

आसुक्कारे मरणे, अछिन्नाए अ जीविआसाए ॥
नाएहिं व अमुक्को, पच्छिमसंलेहणमकिच्चा ॥ ६ ॥

भावार्थः-शूलादिक भयंकर रोगे करी जलदी मरण पामे छते अथवा जीवितव्यनी वांछा नहीं तुटया छतां अथवा स्वजनोए रजा नहीं आपवाना कारणथी आउखाना अंतभागने विषे करवा योग्य उत्कृष्टथकी बार वरस अने जघन्य थकी छ मास सुधीनी शरीर अने कषायने शोषवा रूप संलेखना नहीं करीने ॥ ६ ॥

आलोइय निस्सल्लो, सघरे चेवा- रुहित्तु संथारं ॥
जइ मरइ देसविरओ, तं वुत्तं बाल पंडिअयं ॥ ७ ॥

भावार्थः-व्रतमां लागेला दूषणोनी आलोयण गीतार्थ पासे लेईने, व्रतना दूषणरूप भावशल्यथकी रहित थयो छतो, पोताना घरने विषेज दर्भादिकना संथारा उपर चढीने, जो देशविरति सहित छतो मरे तो ते बाल पंडित मरण कहेलुं छे ॥ ७ ॥

बालपंडित मरणनो विधि भक्तपरिज्ञापयन्नामां विस्तारसहित कहेलो होवाथी आगली गाथामां तेनी भलामण ग्रंथकार करे छे.

जो भत्तपरिन्नाए, उवक्कमो वित्थरेण निद्दिट्ठो ॥
सो चेव बालपंडिअ, मरणे नेओ जहाजोगं ॥ ८ ॥

भावार्थः-बाल पंडित मरण करवानो जे विधि कहेलो भक्त परिज्ञापयन्ना विषे [illegible] छे तेज विधि अहिंयां पण जाणवो. [illegible] (विस्तार थवाना भयथी) [illegible] अहिंयां [illegible] नथी ॥ ८ ॥

१ [illegible]

वेमाणिएसु कप्पो,-वगेसु निअमेण तस्स उववाओ॥
नियमा सिज्झइ उक्को,-सएण सो सत्तमंमि भवे ॥९॥

भावार्थः--बाल पंडित मरणे मरेलो जीव बार देवलोकरूप वैमानिकने विषे निश्चये करी उत्पन्न थाय छे, अने वधारामां वधारे पण सातमा भवमां निश्चये करी सिद्ध थाय छे, बाकी तो कोइक हलुकर्मी एकावतारी पण होय छे. ॥ ९ ॥

हवे बाल्पंडित मरणना अधिकारनी समाप्ति सुचवता थका पंडित मरणना अधिकारनो प्रारंभ करे छे.

इय बालपंडियं होइ, मरण मरिहंतसासणे दिट्ठं ॥
इत्तो पंडिय पंडिय,-मरणं वुच्छं समासेणं ॥ १० ॥

भावार्थः--आ पूर्वे कह्युं ते प्रकारे बाल पंडित मरण जिनेश्वर भगवानना शासनने विषे कहेलुं छे. हवे हे पंडित संक्षेपथी पंडित मरण कहीश ॥ १० ॥

हवे मुनि महाराज गीतार्थगुरु समीपे जेवी प्रकारे पंडित मरण अंगीकार करे तेवी प्रकारे ग्रंथकार गद्यपाठथी कहे छे.

इच्छामि भंते उत्तमट्ठं, पडिक्कमामि अइयं पडिक्कमामि॥
अणागयं पडिक्कमामि, पच्चुपन्नं पडिक्कमामि.
कयं पडिक्कमामि कारियं,पडिक्कमामि अणुमोइयं पडिक्कमामि ॥ मिच्छत्तं पडिक्कमामि असंजमं पडिक्कमामि

कसायं पडिक्कमामि पावपओगं पडिक्कमामि मिच्छादं-
सण—परिणामेसु वा इहलोगेसु वा परलोगेसु वा स-
च्चित्तेसु वा अचित्तेसु वा पंचसु इंद्रियत्थेसु वा अन्ना-
णंझाणे १ अणायारं० २ कुदंसणं० ३ कोहं० ४ माणं०
५ मायं० ६ लोहं० ७ रागं० ८ दोसं० ९ मोहं० १०
इच्छं० ११ मिच्छं० १२ मुच्छं० १३ शंकं० १४ कंखं० १५
गेहिं० १६ आसं० १७ तन्हं० १८ च्छुहं० १९ पंथं०
२० पंथाणं० २१ निद्दं० २२ नियाणं० २३ नेहं० २४
कामं झाणं० २५ कुलुसं० २६ कलहं० २७ जुझं० २८
निजुझं० २९ संगं० ३० संगहं० ३१ ववहारं० ३२ क-
यविक्कयं० ३३ अणत्थदंडं० ३४ आभोगं० ३५ अ-
णाभोगं० ३६ अणाइल्लं० ३७ वेरं० ३८ वियक्कं० ३९
हिंसं० ४० हासं० ४१ पहासं० ४२ पओसं० ४३ फ-
रुसं० ४४ भयं० ४५ रुवं० ४६ अप्पपसंसं० ४७ पर-
निंदं० ४८ परगरिहं० ४९ परिग्गहं० ५० परपरिवायं०
५१ परदूसणं० ५२ आरंभं० ५३ संरंभं० ५४ पावाणु-
मोयणं० ५५ अहिगरणं० ५६ असमाहिमरणं० ५७
कम्मोदयपच्चयं० ५८ इड्ढिगारवं० ५९ रसगारवं० ६०

सायागारवं० ६१. अवेरमणं ६२ अमुत्तिमरणं० ६३ पसुत्तस्स वा पडिवुद्धस्स वा जो मे कोइ देवसिओ राइओ उत्तमट्टे अइक्कमो वइक्कमो अइयारो अणायारो तस्स मिच्छामिदुक्कडं

भावार्थः–हे भगवान् हुं अनशन करवा इच्छुंछुं. सामान्यपणे जे पाप थयुं होय ते पडिक्कमुंछुं. अतित कालमां जे पाप कर्युं होय तेने निंदवा गर्हवा तरीके पडिक्कमुंछुं. अनागत पापने पाप व्यापारनुं पच्चखाण करवाए करी पडिक्कमुंछुं. वर्त्तमान पापने पाप व्यापारनो संवर करवाए करी पडिक्कमुंछुं. पोताए करेलुं जे पाप ते पडिक्कमुंछुं. वीजानी पासे करावेला पापने पडिक्कमुंछुं. बीजाओ सावद्य व्यापार करता होय तेमने सारा जाणवाए करी जे पाप थयुं होय ते पडिक्कमुंछुं. अर्थात् ते पापथी निवर्त्तुंछुं.

पूर्वे जे पापोनुं पडिक्कमणु कह्युं तेनां जे कारण मिथ्यात्वादि तेने पडिक्कमवा कहे छे. मिथ्यात्वने पडिक्कमुंछुं- अविरतिने पडिक्कमुंछुं. कपायने पडिक्कमुंछुं. पाप थवाना जेटला जेटला व्यापारो ते सर्व पडिक्कमुंछुं.

हवे आगल कहेवातां निमित्तोथकी जे कोइ सुतां अगर जागतां अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार थयो होय तेनो मिच्छामि दुक्कड दउछुं. ए प्रकारे पूर्वापर संबंध करवो.

मिथ्यादर्शनना परिणाम छतां आ लोकने विषे अथवा परलो-

करने विषे सचित्तमां अथवा अचित्तमां तेमज पांच इंद्रियोना (आठ स्पर्श, पांच रस, बे गंध, पांच वर्ण अने सचित्त अचित्त मिश्र स्व-रूप तेत्रिस उत्तर भेद जेना छे एहवा) मूल पांच विषयोमां अशा-तना मारु के जेथी व्याख्यान आदिकनो परिश्रम पडे नहीं एवं ध्यान थया छतां; क्षेत्रपाळी तरणां प्रमुख नहीं काढे तो पुत्रो दुःखी थशे एवुं चिंतवनार कोंकणना साधुनी पेठे अनाचार ध्यान थया छतां; देवपणुं पाम्या पछी बौद्धना दर्शनरूप कुदर्शननी उन्नति कर-नार सौराष्ट्र देशना श्रावकनी पेठे बौद्धादिक कुदर्शननुं ध्यान थया छतां; हित शिखामण देतां पण गुरुना उपर कोपायमान थएला दु-र्गवानुयादिकनी पेठे क्रोधने वश ध्यान थया छतां; अभिमान करी नानां भाइओनी साथे वंदना व्यवहार करवो पडे तेथी पोताना मा-ननी हानि थाय एम मानी काउस्सग्ग ध्याने रहेला बाहुबली आदि-कनी पेठे, मानने वश थइ ध्यान कर्या छतां; माया ए भाइओनी साथ उपर जेवो स्नेह छे ते तोडावे माटे कपटथी [illegible] साथे कपट भावे जेवां वचन बोलनार धनश्रीनी पेठे मायाने वश ध्यान थया छतां; [illegible] करी निशानने देखाडे भंगारा नांखी वि-[illegible] [illegible] पृछिना [illegible] [illegible] ध्यान थया छतां; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ध्यान थया छतां; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

द्दीपवाला पण पोताना दर्शनने सारु समझनार, ब्रह्मलोकथी आवीने कपिलनुं दर्शन सारुं छे, अने ते थकी देवगति मलशे एम कहेनार कपिलनो पेठे दृष्टिरागने वश थइ ध्यान थया छतां; यज्ञना बहानाए करी मातपितानो वध करनार अने अनार्य वेद करनार पिप्लाद प्रमुखनी पेठे द्वेषने वश थइ ध्यान कर्या छतां; कृष्णना मोहथकी तेना शबने छ महिना सुधी उपाडनार बलभद्रनी पेठे, दिग्मुढ बनी जइ ध्यान कर्या छतां; जे एक मासा सोनाने इच्छनार पछीथी राजा प्रसन्न थया छतां, क्रोडागम सोनइआनी वांच्छाथी पण मन नथी निवर्त्ततुं तेम जाणी संसारत्यागी कपिल राजर्षिनी पेठे मलवाने योग्य वस्तुनी इच्छावशे करी ध्यान थया छतां; विपरीत दृष्टिथकी महावीर स्वामि भगवानना वचनने पण खोटुं कहेनार जमालिआदिकनी पेठे मिथ्यात्वदृष्टिए करी ध्यान कर्या छतां; राज्यनी मुर्च्छाए करी पोताना पुत्रोने जनम्या पछी तरत राज्यने अयोग्य करवाने माटे अंगोपांग कापनार कनकध्वज राजानी पेठे मुर्च्छाने वश ध्यान थया छतां; परस्पर साधुओमां देव छे के साधु छे एहवा संशय थकी वंदनादि व्यवहारने मूकी देनार अव्यक्तवादी आषाढाचार्यना शिष्योनी पेठे संशयने आधीन थइ ध्यान कर्या छतां; कपिलना आगळ, जैनमां पण धर्म छे,अने मारा मार्गमां पण धर्म छे एम कथन करनार मरिचिनी पेठे अन्य अन्य दर्शननी वांच्छाए करीने ध्यान कर्या छतां; घणा काळ सुधी चारित्रने पालीने पछी विषय सुखनी लालसाए करी चारित्रने छोडी देनार कंडरीकनी पेठे गृद्धि धरी ध्यान कर्या छतां; बीजाओना धनमाल, स्त्री आदि वस्तुओ देखी, तेम यश

ख्याति देखी ते पामवानी वांछाने वश थइ ध्यान कर्या छतां; मं
टना साधवा रुप भाथाने साथे लइ आवेला निर्गुणशर्मा ब्राह्मण
पासेथी ते साधवाने इच्छनार मूलदेवनी पेठे, तरस लाग्या छ
साधुना समुदायनी साथे रहेला नदीना सचित्त पाणीने इच्छना
नाहाना साधुनी पेठे तरसने आधीन थइ ध्यान थया छतां; भुख
पीडा थकी राजगृहि नगरीना लोकनी साथे रहेला, अने अन्न
नहीं आप्या छतां सर्व लोकने शिलाए मारवाने इच्छनार द्र
(भिखारी) नी पेठे भुखना वश थइ ध्यान कर्या छतां; पोतान
नगरना मार्गने खोळनार वल्कलचिरीनी पेठे मार्गमां भमतां ध्या
थया छतां, महा वगडामां सनत्कुमार चक्रवर्तीने खोळता तेना मि
महेंद्रसिंहनी पेठे महा वगडामां ध्यान थया छतां; चिरकाळ-निद्रान
उदये परवश थइ पाडाना मांसने भक्षण करनार साधु आदिकनी पे
निद्राने आधिन थइ ध्यान कर्या छतां; नंदिषेणना भवमां नियाणुं कर्
करेला वसुदेव आदिकनी पेठे नियाणारुप ध्यान कर्या छतां; पुत्र
दिकना स्नेहथी सगर चक्रवर्ती आदिनी पेठे ध्यान थया छतां; का
मथी अति क्रुर राजगृहि नगरीमां रहेनार कृतानंद नामना सार्थ
आदिकनी पेठे कामने वश थइ ध्यान कर्या छतां; पोताना अन्त
[illegible] करनार [illegible] पेठे अने पु
[illegible]
[illegible] मुनिनी पेठे [illegible]
[illegible]
[illegible] ध्यान [illegible]

छतां; पोताना भाइओनो विनाश थये छते चेडा राजानी साथे युद्ध करनार कोणिक राजादिनी पेठे युद्ध माटे ध्यान कर्या छतां; परस्पर भाइओमां युद्ध करनार बाहुबलि अने भरतनी पेठे महायुद्ध करवामां ध्यान थया छतां; त्याग करेला भोगने इच्छनार रहनेमि आदिकनी पेठे विषयसुखनो संग मेलववानी इच्छाथी ध्यान थया छतां; तृप्ति विना अतिशय धनमाल आदिकना संग्रह करवानी वांछाथी ध्यान थया छतां; धनने माटे छोकरानो राज्य सभामां न्याय करावता जनार शेठनी बे स्त्रीओनी पेठे राज्य सभामां न्याय करावा माटे ध्यान थया छतां; सोनानी कोशोने अल्प मूल्ये करी ग्रहण करनार लोभनंदी आदिकनी पेठे खरीद करवा अने वेचवा माटे ध्यान थया छतां; निरर्थक द्वीपायन ऋषिने कोप करावनार शांब आदिकनी पेठे प्रयोजनरहितपणे ध्यान कर्या छतां; वडगुंदाना फलने पण ब्राह्मणना नेत्रधारी हाथे करी मसलनार ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीनी पेठे उपयोग पूर्वक ध्यान कर्या छतां; काउसग्ग ध्यानमां रह्या छतां मनेकरी युद्ध करनार प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी पेठे अनुपयोगथी ध्यान थया छतां; एक कर्षक प्रमाण तेल लेवाथी दासी थएली साधुनी वेहेननी पेठे देवायकी पीडाया छतां ध्यान करतां; सात वखत क्षत्रिय रहित पृथ्वी करनार परशुराम तथा एकवीश वखत ब्राह्मण रहित पृथ्वी करनार सुभूम चक्रवर्त्तीनी पेठे मातापितादिकना मारवायकी थएला वेरथी ध्यान कर्या छतां; नंद राजाना राज्यने ग्रहण करवानी इच्छावाला चाणाक्यनी पेठे राज्यादिक पामवाना वितर्कथी ध्यान थया छतां; निरंतर पांचसें पाडानो वध करनार कालशौक-

रिक कसाइनी पेठे हिंसामां प्रवर्त्तवानुं ध्यान कर्यां छतां; चंड रुद्रा चार्यना आगळ हांसी करनार मित्र सहित शिष्यनी पेठे हास्यगर्भ ध्यान कर्यां छतां; हे निमित्तिआ हुं तने वांदुछुं, एहवी रीते वात्सक भ पिना प्रते बोल्नार चंद्र प्रद्योननी पेठे अति हास्य करवाथी ध्यान थय छतां; ब्रह्मदत्त पोताना पुत्र चक्रवर्त्तिने मारवाने इच्छनार तेनी माता चु ल्लनिनी पेठे अतिरोषथी ध्यान कर्यां छतां; कठोर वचनो बोल्वा मां अगर बोल्तां ध्यान कर्यां छतां; पोताना जमाइ गजसुकुमाल्ना माथ उपर माटीनी पाघडी करी तेमना अंगारा भरीने गजसुकुमाल्ने मार पमाडनार कृष्णने देखी भयभ्रांत थइ मरण पामनार तेमना सासर सोमिलनी पेठे भयथकी ध्यान कर्यां छतां; दर्पणादिकमां पोतानुं रूप जोतां तेमज पाटीभामां अंगारवती आदिकना चित्रोना रूपने जोनार चंड प्रद्योत राजादिकनी पेठे पोतानुं रूप जोतां ध्यान कर्यां छतां; पोताना राज्यनी सरदार मंत्री पासे प्रशंसा करावानुं ध्यानार वचनि ब्राह्मणनी पेठे पोतानी प्रशंसा करावानुं ध्यान थयां छतां; स्कंद मुनि [illegible] निंदाने बोल्नार पार [illegible] दर्शनमां पोतानी निंदा करतां ध्यान थया छतां; [illegible] कार्तिकादिकनी [illegible] करनार [illegible] निंदानी पेठे [illegible] [illegible] निंदाना [illegible] ध्यान कर्यां छतां; [illegible]

[illegible]

अंगऋषिना उपर चढावनार रुद्रकनी पेठे पोतानुं दूषण बीजाने माथे चडाववा ध्यान कर्या छतां; अनेक प्राणिओना विनाशने करवानी इच्छावाला द्वीपायन आदिकनी पेठे अनेक प्राणीओनुं मरण करवा माटे ध्यान कर्या छतां; माताना आग्रहथी दीक्षाने पालनार विषयना तीव्र अभिलाषने करनार क्षुल्लक साधुनी पेठे विषयना तीव्र अभिलाषथी ध्यान कर्या छतां; राजाना अंतेउरमां जइ परस्त्री सेववाना अपराधथी अलंकार सहित हणेला माणसना मरणने सारु माननार नगरना लोकोनी पेठे पापकार्यना अनुमोदवाथी ध्यान थया छतां; पाप कराववाना ध्यानमां तत्पर नंदमणिआर श्रावकनी पेठे प्राणीओनी हिंसामां कारणभूत वस्तुओने बताववा माटे ध्यान कर्या छतां; स्कंदकाचार्य असमाधिए मरे एम चिंतवी क्षुल्लक साधुने पेहेलां घाणीमां पीलनार पालकनी पेठे बीजा माणसने असमाधि मरण करवा माटे ध्यान थया छतां; पहेलां शुभ ध्यान छतां पण पछी अशुभ परिणामना बलथी अशुभ ध्यान करनार कृष्ण आदिकनी पेठे कर्मना उदयना प्रबलपणाथकी ध्यान कर्या छतां; आर्यमंगु आचार्यनी पेठे मानपुजादिकरुप ऋद्धिनो अभिमान करी ध्यान कर्या छतां; तेमज सारा भोजन मल्वारुप रसगारवे करी ध्यान कर्या छतां; तेमज पुद्गलिक सुखना अभिमानथी साताग़ारवे करी ध्यान कर्या छतां; अविरति सारी, एम जाणी वारंवार चारित्रना परिणामने छोडी देनार मेतार्यमुनि आदिकनी पेठे अविरतिनुं ध्यान कर्या छतां; चित्र नामना पोताना जे साधु तेमणे वार्या छतां पण चक्रवर्तीनी ऋद्धि भोगव्या विना मोक्ष पण इच्छतो नथी एम कहेनार ब्रह्मदत्त चक्रवर्तीना

जीव संभूतिनी पेठे संसारना सुखनी इच्छासहित मरण करतां ध्यान थया छतां; सुतां अगर जागतां जे मने कोइ दिवससंबंधी तेम रात्रि-संबंधी ज्ञानादिकमां अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार लाग्यो होय तेनो मिच्छामि दुक्कडं दउंछुं. अतिक्रमादिकनुं स्वरूप नीचे आपेला रात्रिभोजनव्रतना अतिक्रमादिथकी समजवुं. जेम कोइए रात्रि-भोजननुं व्रत कर्युं होय तेने कोइ पारणा निमंत्रण करे ते वखते नि-षेध न करे तो अतिक्रम थाय. जो खावानी जग्याए जवाने डगलां भरे तो व्यतिक्रम थाय, खावानी वस्तु लेता थका अतिचार अने ते वस्तु मुखमां नाख्या छता अनाचार थाय. आ पूर्वे कहेलां ध्या-नोनुं स्वरूप, तेनां दृष्टांतो अने अतिक्रमादिनुं विशेष स्वरूप अन्य ग्रंथोथी जाणवुं. घणो विस्तार थवाना भयथी अहीआ लख्युं नथी. आ ध्यान संबंधी मिच्छामि दुक्कडं देवानो विषय [illegible] मरणनो तथा पंडित मरणनो समावेश छे. हवे देवादिकनो [illegible] [illegible] भावना करेली [illegible] [illegible] तेइः गीते [illegible] प्रत्याख्यान करे ते विधि [illegible] [illegible]नी गाथा कहे छे:

एस करेमि पणामं, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥
सेसाणं च जिणाणं, सगणहराणं च सव्वेसिं ॥ ११ ॥

[illegible]

गणधर सहित बीजा पण तीर्थंकरोने प्रणाम करुंछुं. ॥ ११ ॥

हवे नमस्काररूप मंगलाचरण करी व्रतनो उच्चार करवा कहे छे.

सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च ॥
सव्व-मदिन्नादाणं, मेहुन्न-परिग्गहं चेव ॥ १२ ॥

भावार्थः-सुक्ष्म अने बादर बन्ने प्रकारना सर्व प्राणिओना आरंभनुं पच्चखाण करुंछुं, तेवीज प्रकारे सुक्ष्म बादर सर्व मृषावादनुं पच्चखाण करुंछुं. सर्व बादर अने सुक्ष्म बन्ने कोइए नहीं आपेलाने लेवानुं पच्चखाण करुंछुं. देवता, मनुष्य, तिर्यंच संबंधी सर्व मैथुननुं त्रिविध त्रिविध पच्चखाण करुंछुं. सर्व धनधान्यादिक बाह्य नव प्रकारना परिग्रहनुं तथा मिथ्यात्वादिक चउद प्रकारना अभ्यंतर परिग्रहनुं पच्चखाण करुंछुं. चशब्दथकी बीजां पण शेष रहेलां सर्व पापस्थाननुं पच्चखाण करुंछुं ॥ १२ ॥

व्रतोनो उच्चार कर्या पछी थयेला वैरने वोसरावी, आशाओनुं आकाशथी अनंतगणापणुं होवाथी तेने पण वोसरावी समाधि अंगीकार करे छे.

सम्मं मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहिमणुपालए ॥ १३ ॥

भावार्थः-सर्व जीवोने विषे मारे मित्रपणुं छे, कोइ जीवनी साथे मारे शत्रुपणुं नथी. सर्व उपकरण, स्वजनगण अने शरीर संबंधी अभिलाषोने त्याग करी विनय, श्रुत, तप अने आचाररूप

प्रकारनी समाधिने अंगीकार करुंछुं ॥ १३ ॥

हवे आहारादि तेमज ममता वोसरावी सर्वने खमावे छे.

सव्वं चाहारविहिं, सन्नाओ गारवे कसाए अ ॥
सव्वं चेव ममत्तं, चएमि सव्वं खमावेमि ॥ १४ ॥

भावार्थः—चारे प्रकारना सर्व आहारने त्याग करुंछुं. आहारादिक चार अथवा दश संज्ञानो त्याग करुंछुं. त्रण गारव तथा चार कषायोनो त्याग करुंछुं. सर्व पदार्थनी ममतानो पण त्याग करुंछुं, अने सर्व जीवोने खमावुंछुं. ॥ १४ ॥

सर्व जीवोने खमाव्या पछी आराधना करवा गाथा कहे छे.

हुज्जा इमंमि समये, उवक्कमो जीविअस्स जइ मज्झ ॥
एअं पच्चक्खाणं, विउला आराहणा होउ ॥ १५ ॥

भावार्थः—आ अवसरने विषे जो कदी मारा आयुष्यनो विनाश थाय तो आ पूर्वे करेलुं सर्व पच्चखाण अने विस्तारवाळी प्रशंसनीय आराधना थाओ. ॥ १५ ॥

हवे आगार पच्चखाण कर्युं छे पछी मारुं शुं थशे ते कहे छे.

सव्वदुक्खप्पहीणाणं, सिद्धाणं अरहओ नमो ॥
सद्दहे जिणपन्नत्तं, पच्चक्खामि अ पावगं ॥ १६ ॥

भावार्थः—सर्व दुःखथी रहित [illegible]

तथा इंद्रोए करेली पूजाने योग्य एवा अरिहंतने नमस्कार हो. जिनेश्वर भगवाने कहेला द्रव्य गुण पर्यायरूप तत्वने सद्दहुंछुं, अने सर्व पापकार्यनुं पच्चखाण करुं छुं. ॥ १६ ॥

वली बीजुं जे कहे ते बतावे छे.

नमुथ्थु धुअपावाणं, सिद्धाणं च महेसिणं ॥
संथारं पडिवज्जामि, जहा केवलिदेसिअं ॥ १७ ॥

भावार्थः-जेमनां पाप नाश पामेलां छे एहवा सिद्धोने अने महा ऋषिओने तेमज उपलक्षणथी तीर्थंकरोने नमस्कार हो. जेवी रीते अनशन करती वखते डाभ आदिकनो संथारो केवलि भगवाने बनाव्यो छे तेम हुं ते संथाराने अंगीकार करुं छुं. ॥ १७ ॥

जं किंचिवि दुच्चरिअं, तं सव्वं वोसिरामि तिविहेणं॥
सामाइयं च तिविहं, करेमि सव्वं निरागारं ॥ १८ ॥

भावार्थः-आ जन्ममां अगर बीजा जन्ममां जे कोइ दुराचरण कर्युं होय ते सर्व मन वचन कायाए करी वोसरावुंछुं.अने ज्ञान श्रद्धा अने क्रियारुप सामायिक जे त्रण प्रकारनुं छे (सम्यक्त्वसामायिक, श्रुतसामायिक, अने सर्वविरतिसामायिक) ए सर्व आगार रहित हुं अंगीकार करुंछुं. ॥ १८ ॥

अनशन करनो छतो बीजुं पण वोसिरावे ते बताववाने गाथा कहे छे.

वज्भं अभिंभतरं उवहिं, सरीराइ सभोयणं ॥
मणसावयकायेहिं, सव्वं भावेण वोसिरे ॥ १९ ॥

भावार्थः—जे पात्रादि उपकरणरूप बाह्य उपधि अने कषाया-दिक अभ्यंतर उपधि अने भोजन सहित शरीरादिक उपधि ते सर्व मन वचन कायाये करीने, भावथी वोसराबुं छुं. ॥ १९ ॥

वळी पण अनशन अंगीकार करनार शुं वोसिरावे ते कहे छे.

सव्वं पाणारंभं, पच्चक्खामित्ति अलियवयणं च ॥
सव्व–मदिन्नादाणं, मेहुन्न परिग्गहं चेव ॥ २० ॥
सम्मं मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥
आसाओ वोसिरित्ताणं, समाहि मणुपालये ॥ २१ ॥

भावार्थः—[illegible] अतिचारना [illegible] अने [illegible] निरागार पच्चखाणनो अधि-कार होवाथी कोई वखते पुनरुक्त दोष नथी. तेमज तेनो भावार्थ [illegible] सहित [illegible] होवाथी कर्यो [illegible] नथी, [illegible] [illegible]. ॥ २०–२१ ॥ वळी वळी शुं कहे ते कहे छे.

रागं बंधं पओसं च, हरिसं दीणभावयं ॥
उस्सुगत्तं भयं सोगं, रइं अरइं च वोसिरे ॥ २२ ॥

[illegible]

कारणभूत छे तेने, मान पूजानो संभव मनमां राखी जे हर्ष थाय छे तेने, अने शत्रुआदि थकी अपमान थया छतां गरीबाइपणुं जे धारण करवुं ते, वने अति दुःख थया छतां जल्दी मरणने इच्छारूप उन्मुकपणुं, देवतादिकना उपसर्गो थया छतां जे भय अने कष्ट, वस्तुओना वियोगो छतां जे शोक थाय छे ते, अने वांछित क्षेत्रादिक विषयमां जे रति उत्पन्न थाय छे ते, तथा अनिष्ट क्षेत्रादिकमां जे मनमां अरति थाय छे ते सर्व त्याग करुं छुं. ॥ २२ ॥

वळी अनशन अंगीकार करनार संसारना कारणभूत ममतादिक वोसरावी मोक्षना कारणभूत निर्ममत्व भावमां रही वाकी जे वोसिरावे ते कहे छे.

ममत्तं परिवज्जामि, निम्ममत्तं उवट्टिओ ॥
आलंबणं च मे आया, अवसेसं च वोसिरे ॥२३॥

भावार्थः–आ मारुं, आ मारुं, आ प्रकारनो जे ममत्वभाव तेने "कांइपण मारुं नहि, कांइ पण मारुं नहि" आ प्रकारना निर्ममपणाने आश्रीने रह्यो छतो वर्जुं छुं.

आ संसारमां मने दुर्गतिना दुःखथी अने संसारना परिभ्रमणथी मुकाववाने माटे मारो आत्माज आलंबनभूत (टेकारूप) छे. बाकी जे सर्व धन कुटुंब अने शरीरादिक ते सर्वनो त्याग करुं छुं॥२३॥

हवे कया कया कार्यमां आ आत्माने आलंबनभूत करवो ते कहे छे.

आया हु महंनाणे, आया मे दंसणे चरित्ते अ ॥
आया पच्चक्खाणे, आया मे संजमे जोगे ॥ २४ ॥

भावार्थः-आत्माज मने ज्ञानगुण मेळववामां आलंबन थाओ, जे माटे आत्मानी सहायथी तेमां रहेलां ज्ञानादिक प्रगट थाय छे माटे ते आलंबन छे, आत्माज मने सम्यक्त्वने विषे आलंबन थाओ, आत्मा चारित्रने विषे पण आलंबन थाओ, पच्चक्खाण करवामां पण आलंबनभूत आत्माज थाओ, अने संजमव्यापारमां पण मने आत्माज आलंबन थाओ. ॥ २४ ॥

हवे ममत्वभाव रहित थयो छतो एकत्वभावना भावे ते कहे छे.

एगो वयइ जीवो, एगो चेवुववज्जइ ॥
एगस्स चेव मरणं, एगो सिज्झइ नीरओ ॥ २५ ॥

भावार्थः-अन्य अन्य गतिमां पण आ जीव एकलोज जाय छे. अने मनुष्यत्वने पण एकलोज उत्पन्न थाय छे. मरण पण एकलानेज थाय छे. अने कर्मरूप रज रहित थयो छतो एकलोज सिद्धि वरे छे. ॥ २५ ॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दंसण-संजुओ ॥
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥२६॥

भावार्थः-ज्ञान दर्शन सहित शाश्वत आत्मा ते एकज मारो छे [illegible]
[illegible]

क्षणवार जेनो संबंध रहे तेवा छे. ॥ २६ ॥

आ जगत्‌ने विषे पुद्गलनो संबंध सर्व दुःखदायी छे ते देखाडे छे.

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुःख– परंपरा ॥
तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ २७ ॥

भावार्थः–आ संसारमां जीवो जे दुःखनी श्रेणी पाम्या छे तेनुं पुद्गलिक पदार्थनो संबंधज मूल कारण छे. ते माटे सर्व पुद्गलिक पदार्थ संयोगने मन वचन कायाए करी त्रिविधे त्याग करुंछुं. ॥२७॥

हवे जे प्रमाद पेहेलां थया होय ते पडिकमवा माटे कहे छे.

मूलगुणे उत्तरगुणे, जे मे नाराहिया पयत्तेणं ॥
तमहं सव्वं निंदे, पडिक्कमे आगमिस्साणं ॥ २८ ॥

भावार्थः–जे में पांच महाव्रतादिक मूलगुणो अने आहारनी शुद्धि आदि उत्तरगुणो प्रयत्ने करी आराध्या न होय ते सर्व निंदु छुं. तेमज आगामिकाल संबंधी मूल गुण अने उत्तरगुणनी विराधनानुं प्रतिक्रमण करुं छुं. ॥ २८ ॥

बीजा पण दूषणोनुं प्रतिक्रमण करतो छतो कहे छे.

सत्त भए अट्ठ मए, सन्ना चत्तारि गारवे तिन्नि ॥
आसयण तित्तीसं, रागं दोसं च गरिहामि ॥ २९ ॥
असंजम–मन्नाणं, मिछत्तं सव्व–मेव य ममत्तं ॥
जीवेसु अजीवेसु अ, तं निंदे तं च गरिहामि॥३०॥

भावार्थः—दुष्कालादिकमां केवी रीते आजीविका थशे एवो जे भय ते आजीविकाभय. मनुष्यने मनुष्यथी भय ते आ लोक भय, तथा मनुष्यने देवतादि थकी भय ते परलोक भय, धन माल जे पोतानी पासे होय ते रखे कोइ चोर प्रमुख लइ न जाय एवो जे भय ते आदान भय, मुकाममां एकला बेठा छताज जे निमित्त विना ज भय थाय छे, ते अकस्मात् भय, तीव्र रोगादिक थये हुं मरी जइश, आ प्रकारनो जे मरण भय, तेमज कोइक प्रकारे मने लोको जाणशे तो अपकीर्ति करशे आवो जे भय ते अपयश भय, ए प्रकारे सात भयः मारी जाति उत्तम छे आ प्रकारनो जे अभिमान ते प्रथम जातिमद, मारुं कुल उत्तम छे आ प्रकारनो अभिमान ते कुलमद, मारा बलमां हुं बराबर बलवान छुं आ प्रकारे जे बलनो अभिमान ते बलमद, मारुं रूप घणुं सुंदर छे आ प्रकारनो जे अभिमान ते रूपमद, धनधान्यादिक जे लाभ ते मने घणो थयो छे आ प्रकारनो जे मद ते लाभमद, मारी बुद्धि घणी सारी छे आ प्रकारनो अभिमान ते बुद्धिमद, सर्व जनोने हुं प्रिय लागुं छुं आ प्रकारनो जे मद ते वाल्लभ्यकमद, तथा मने श्रुत ज्ञान घणुं छे आ प्रकारनो जे मद ते श्रुतमद अने आठमो [illegible], आ प्रकारना आठ मद; [illegible] दंड, [illegible], [illegible], अने [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

भावार्थः-सर्व बारे प्रकारनी अविरति, सर्व अज्ञान सर्व पांच प्रकारनुं मिथ्यात्व अने सचित पदार्थमां तथा अचित पदार्थमां जे जे ममत्व ए पेहेलां कहेला सर्वनी आत्मशाखे निंदा करुं छुं तेमज गुरु साखे निंद्या करवारुप गर्हा करुं छुं. ॥ ३०॥

हवे निंदवा योग्य अने गर्हवा योग्यनो संग्रह करी बतावे छे.

निंदामि निंदणिज्जं,गरिहामि अ जंच मे गरहणिज्जं॥
आलोएमि अ सव्वं, अभ्भितरं बाहिरं उवहिं ॥ ३१ ॥

भावार्थः-आत्मशाखे निंदा करवा योग्य जे जे दुराचरण कर्युं होय ते गर्हुंछुं सर्व निंदवा योग्य अने गर्हवा योग्य गुरुना समीपे आलोवुंछुं. मनमा दुष्ट ध्यान करवारूप आभ्यंतर माया अने बाह्य-थकी प्राणनो विनाश करवा आदिमां माया ते पण गुरुना समीपे आलोवुंछुं. ॥ ३१ ॥

हवे पोतार्थी थयेलां दूषण गुरना आगल केवी रीते आलो-ववा ते बतावे छे.

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जंच उज्जुअं भणइ ॥
तं तह आलोइज्जा, मायामोसं पमुत्तूणं ॥ ३२ ॥

भावार्थः-जेम बालक पोताना मावापना आगल वात करतो छतो कार्य अकार्य जे करी आव्यो होय ते सर्व कहे छे; परंतु आ कहेवा योग्य छे, आ कहेवा योग्य नथी, एम विचारतो नर्थी तेम जे आत्महितार्थी होय ते पण कहेवा योग्य न कहेवा योग्यनो विभाग

न पाडतां जे थोडुं अगर घणुं पाप जेवी रीते सेव्युं होय तेवी रीते युक्ति सहित जे जुठुं बोलवारूप माया मृषावाद ते छोडीने कहे; परंतु आवुं मारुं उत्तम कुल प्रसिद्ध छे हुं पण गुणी तरीके प्रसिद्ध छुं अने आवुं करेलुं पाप केम प्रगट करुं एम विचार करी तेनुं पाप गुरुना आगल आलोअण लेतां गोपवे नहीं. ॥ ३२ ॥

कपट रहितपणे आलोअणने आपनारना गुणो बतावे छे.

नाणंमि दंसणंमि अ, तवे चरित्ते अ चउसुवि अकंपो॥
धीरो आगम—कुसलो, अ—परिस्सावी रहस्साणं॥३३॥

भावार्थः—जे मति श्रुत अवधि मनःपर्यव अने केवल रूप पांच प्रकारना ज्ञानमां तेमज औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिकरूप [illegible], रोचक अने दीपकरूप त्रण प्रकारना सम्यक्त्वमां तेम छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो अभ्यंतर एवा बार प्रकारना तपमां तेमज पांच महाव्रतनुं पालवुं, पांच इंद्रियोनुं दमन, चार कषायनो जय अने त्रण दंडनो त्याग रूप सत्तर प्रकारना संयममां ए चारेमां [illegible] न थाय [illegible] होय, बुद्धिवंत होय, [illegible] होय, [illegible] होय, [illegible] ने [illegible] होय, अने जे आलोयणनो [illegible] [illegible] ॥ ३३ ॥

[illegible]

रागेण दोसेण व जं, भे अक्यजुआ पमाएणं ॥
जो मे किंचिवि भणिओ,तमहं तिविहेण खामेमि॥३४॥

भावार्थः-अति स्नेहना वश थइ तेम शिक्षा आपती वखते कोपना वशथी, करेला उपगारना न जाणवारुप अकृतज्ञताए करीने अथवा तो प्रमादे करीने जे तमारुं अनीष्ट चितव्युं होय अगर कर्युं होय तेमज बीजाने पण जे कंइ रागादिक कारणथकी कह्युं होय ते मन वचन कायाए करी त्रिविधे खमावुंछुं. ॥ ३४ ॥

हवे अनशन करनार मरणनुं स्वरुप चितवे ते बतावे छे.

तिविहं भणंति मरणं, बालाणं बालपंडियाणं च ॥
तइयं पंडियमरणं, जं केवलिणो अणुमरंति ॥ ३५ ॥

भावार्थः-तीर्थंकर महाराजाओ जैन शासनमां त्रण प्रकारनुं मरण कहे छे. बालको (सर्वथा अविरत मिथ्यात्व) ने जे मरण थाय ते एक बाल मरण, (अविरति रहेवाथी) बाल अने (मिथ्यात्व तथा स्थूल अविरति छोडवाथी) पंडित, जे श्रावक ते बालपंडित, तेने जे मरण थाय छे ते बीजुं बालपंडित मरण, अने केवलिओ जे मरणे करी मरे छे ते त्रीजुं पंडित मरण. एवी रीते त्रण प्रकारनुं मरण समजी पंडित मरणे मरवानो उद्यम करवानी खास जरुर छे. ॥ ३५ ॥

आगल कहेला पांच प्रकारना मरणोमांना बाल बालमरण अने पंडित पंडितमरणनो समावेश बालमरण अने पंडितमरणने विशे होवाथी अहियां त्रण प्रकारनां मरण कहेलां छे.

भावार्थः-१. देवनी दुर्गति कइ समझवी ? २. अबोधि ते शुं? ३. शा हेतुए करी वारंवार संसारमां मरवुं पडे ? ४. कया कारणे करी अनंत काल सुधी संसारमां जीव रखडे ? ॥ ३८ ॥

हवे पेहेला प्रश्ननो उत्तर कहे छे.

कंदप्पदेव किव्विस,-अभिओगा आसुरी अ संमोहा ॥
ता देवदुग्गईओ, मरणं मिविराहिए हुंति ॥ ३९ ॥

भावार्थः-संजम पालतां थकां जे हास्य करवाना स्वभाववाला होय छे तेमने जे देवतानी गति मले छे ते कंदर्प (मश्करा सरखा) देवनी दुर्गति कहेवाय छे १. संजम पालतां केवलि, श्रुत, संघ, चारित्र, धर्म आदिनी आशातना करनारने जे देवतानी गति मले छे ते क्रिल्बिषिक (ढेड सरखा) देवनी दुर्गति कहेवाय छे २. संजम पालतां उच्चाटन आदि मंत्रोने करनारनी जे देवगति थाय छे ते अभियोगिक (चाकर सरखा) देवनी गति कहेवाय छे ३. संजम पालतां कोप करनारानी जे देवगति थाय छे, तेने आसुरी (दास सरखा) देवतानी गति कहेवाय छे ४. संजम पालतां उन्मार्गनी देशना देवा प्रमुखे करी जे देवगति थाय छे ते संमोहा नामनी देव दुर्गति कहेवाय छे ५. आ उपर बतावेली पांच देवता संबंधी दुर्गतिओ मरणना विराधनारने पण थाय छे. ॥ ३९ ॥

हवे अबोधि शुं ? आ प्रकारनो जे बीजो प्रश्न तेनो उत्तर कहेछे.

मिच्छा-दंसणरत्ता, सनियाणा किन्हलेसमोगाढा ॥

इह जे मरंति जीवा, तेसिं दुलहा भवे बोही ॥४०॥

भावार्थः-जे जीवो आ संसारमां मिथ्या दर्शनमां रक्त थइ, तेमज नियाणुं करी, तेमज कृष्णलेश्याना अध्यवसायमां वर्तता थका मरे छे, तेओने बीजा भवोमां बोधिबीज (सम्यक्त्व) दुर्लभ थाय छे. ॥ ४० ॥

हवे मनुष्य सुलभ बोधिपणुं केवा प्रकारे पामे छे ते कहे छे

सम्मदंसणरत्ता, अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ॥
इह जे मरंति जीवा, तेसिं सुलहा भवे बोही ॥ ४१ ॥

भावार्थः-जे प्रकारे जिनेश्वर भगवाने नव तत्त्वनुं स्वरूप कह्युं छे ते प्रकारे श्रद्धान करवा रूप सम्यग्दर्शनमां रक्त थयेला तेमज नियाणा रहित तेमज शुक्ललेश्याना अध्यवसायमां वर्तता जे जीवो आ संसारमां मरे छे तेमने बोधिबीज (सम्यक्त्व) सुलभ थाय छे. ॥ ४१ ॥

[illegible]

[illegible], ते होंति परित्त-संसारी ॥ ४२ ॥

[illegible]

अनुभूत छतां तीव्र मोहराजानी विडंबनामां वर्तता छता, तेमज दस्त-कर्मादिक एकवीस शास्त्रमां कहेला संबल दोषे करी सहित तेमज दुष्ट आचारने धारण करता छता चित्तना अस्वस्थपणाए करी मरण पामे छे, ते अनंत संसारी थाय छे. ॥ ४२ ॥

हवे अनंत संसारीना प्रतिपक्षभूत थोडा संसारवाला केवी रीते थाय ते बतावे छे.

जिणवयणे अणुरत्ता, गुरुवयणं जे करंति भावेणं ॥
असबल असंकिलिट्ठा, ते हुंति परित्तसंसारी ॥४३॥

भावार्थः—उत्सर्ग अपवाद मार्गरूप जिन वचनने विषे अनुराग करता छता, गुरुनुं वचन जेओ अति आदर लावी करे छे अने शबलना (मेला चरित्रना) एकवीश दोषे करी रहित तेमज खराबपरिणामे रहित होय छे ते थोडा काल संसारमां रहेनारा होय छे. ॥ ४३ ॥

हवे बीजो प्रश्न के संसारमां वारंवार शा थकी मरवुं पडे? तेनो उत्तर अढी गाथाए करी कहे छे.

बालमरणाणि बहुसो,बहुआणि अकामगाणि मरणाणि ॥
मरिहंति ते वराया, जे जिणवयणं न याणंति ॥ ४४ ॥
सत्थग्गहणं विसभ,—क्खणं च जलणं च जलप्पवेसोअ ॥
अणायारभंडसेवी, जंमणमरणाणुबंधीणि ॥ ४५ ॥

उड्ढमहेतिरियंमिवि, मयाणि जीवेण बालमरणाणि ॥
दंसणनाणसहगओ, पंडियमरणं अणुमरिस्सं ॥४६॥

भावार्थः—जे जीवो जिनेश्वर भगवाननुं वचन रुडी रीते जाणता नथी ते [illegible] घणां बालमरणो अने घणां वगर इच्छा-दिकने मरणो करशे. ॥ ४४ ॥

ते बालमरणो कयां ते बतावे छे.

तीर्थना स्थानोमां जइ संसारनां सुख पामवा माटे अज्ञानता-थी जे कांइ करी मरवुं, जेमज निराधार [illegible] उपर चडी संसा-रना पदार्थनी वांछाए अथवा रोगादिकना भय थी मरवुं. जेम अग्निमां पुरुषादिक सुखनी इच्छाए करी सुरवेशमां [illegible] [illegible] अथवा पाणी पुरुष [illegible] करी [illegible] [illegible] मरवुं. जेम तीर्थना स्थानोमां जइ देवतानी [illegible] [illegible] [illegible] माटे पुरो मरवुं अथवा तो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करी ते मरवुं.

[illegible]

थम कहुं छे तेवा पंडित मरणे करी मरीश. ॥ ४६ ॥

हवे गुरु अनशन करनारने बालमरणे मरवाथी संसारमां भोगवबां पडतां दुःखोथकी भय बतावता छता पंडितमरणे मरवानो उपदेश करे छे.

उव्वेयणयं जाई,–मरणं नरएसु वेअणाओ अ ॥
एआणि संभरंतो, पंडियमरणं मरसु इन्हिं ॥ ४७ ॥

भावार्थः–बालमरण करीने जे जे उद्वेग करनारां जन्ममरण पाम्यो ते तथा नरकने विषे जे जे अतिशय दुःख करनार वेदनाओ भोगवी, ते सर्व संभालतो थको हमणां सावधान थइ पंडितमरणे मर के जेथी उद्वेगकारी जन्ममरण अने नरक वेदनाओ न थाय. ॥४७॥

आवो उपदेश सांभलतां छतां कदाचित् दुःख उत्पन्न थाय तो ते अवसरे जे मुनि महाराजा चिंतवे ते बतावे छे.

जइ उपज्जइ दुःक्खं, तो दट्ठव्वो सहावओ नवरं ॥
किं किं मए न पत्तं, संसारं संसरंतेणं ॥ ४८ ॥

भावार्थः–जो दुःख उत्पन्न थाय तो मुनि महाराजाए रागद्वेषनी परिणतिनी मंदतारुप आत्मस्वभावमां रही जोया करवुं अने आवो विशेष विचार पण करवो के आ संसारमां भ्रमण करतां थकां में शुं शुं दुःख नथी भोगव्युं. प्रथम आवी रीतनां परवशपणे दुःखो अनंती वखत भोगव्यां, पण आत्मानुं कल्याण थयुं नहीं आ वखत स्ववशपणे ते भोगवी आत्मानुं कल्याण थतां छतां मनमां शा माटे खेद करे छे. ॥ ४८ ॥

आहारनिमित्तेणं, मह्रा गह्नंति सत्तमीं पुढवीं ॥
सचित्तो आहारो, न खमो मणसावि पथ्थेउं ॥५१॥

भावार्थः—मोटा मच्छनी पांपणमां रहेला पंचेंद्रिय जातिना तंदुलीया मच्छो हुं मोहोटो मच्छ होउ तो आ बधां मांछलांमांथी एकेने मुखथकी नीकलवा दउं नहीं, एहवीं रीते आहारनी आसक्तियी हेसा चिंतवतो छतो सातमि नरके जाय छे. आवुं समझी विचक्षणोए सचित्त आहारनी मनथकी पण प्रार्थना करवी योग्य नथी. ॥ ५१ ॥

हवे गुरुना उपदेशथकी विषयना विपाको जेमणे जाण्या छे एहवा मुनि महाराज जे चिंतवे ते बतावे छे.

पुव्विंकयपरिकम्मो, अनिआणो ऊहिऊण मइबुद्धिं ॥
पह्रा मलिअकसाओ, सज्रो मरणं पडिह्रामि ॥५२॥

भावार्थः—जघन्यथी छ महिनानी मध्यमथी एक वरसनी अने उत्कृष्टथी बार वरसनी संलेखनानो अभ्यास जेमणे कर्यो छे अने नियाणाए करी रहित एहवो थयो छतो तेमज वर्त्तमान पदार्थमां थती मति अने आगामिकालमां पदार्थने जाणनार बुद्धि ते थकी कषाय प्रमुखनुं स्वरूप शुद्ध रीतियी विचारीने पछी पोताना आत्मामां रहेला कषायो जेणे नाश कर्या छे एहवो छतो जलदी अनशन अंगीकार करुंछुं. ॥ ५२ ॥

हवे जे अवसर प्राप्त थया वगर अथवा अभ्यास कर्या विनाज

अनशन एकदम अंगीकार करे तेनी जे अवस्था थाय ते बतावे छे.

अकंडे चिरभाविय, ते पुरिसा मरणदेसकालंमि ॥
पुव्व-कय-कम्मपरिभा,-वणाइ पछा परिवडंति॥५३॥

भावार्थः-आउखानो अंत आव्या वगर अकालेज आउखानो अंत आव्या छतां पण लांबा काल सुधी संलेखनानो अभ्यास कर्या विना अनशनने करनार ते पुरुषो मरणनो अवसर आवे छते पूर्वे करेला अशुभ कर्मना उदयना प्रभावे करी नियाणुं करी करी [illegible] [illegible] मिथ्यात्व पामे छे अने दुर्गतिमां जाय छे. ॥ ५३ ॥

आवी रीते अंत्य अवस्था सुधरवी मुश्केल छे माटे विशेषे करी गुरु शिष्यने उपदेश करे ते कहे छे.

तम्हा चंदगविज्झं, सकारणं उज्जुएण पुरिसेण ॥
जीवो अविराहिअगुणो, कायव्वो मुक्खमग्गंमि ॥५४॥

भावार्थ:-[illegible]

[illegible]

व्यापारनी चिंतवनाए रहित छतो अने आत्माने हितकारी जे चिंतवना तेना व्यापारे सहित छतो तेमज सावधान मन सहित छतो पोताना शरीरनो त्याग करे तेम करवुं. ॥ ५५ ॥

आवी रीते विधि सहित शरीरनो त्याग करनार वली जे चिंतवे ते कहे छे.

हंतूण रागदोसं, भित्तूण य अट्ठकम्मसंघायं ॥
जम्मणमरणरहट्टं, भित्तूण भवा विमुच्चिहिसि ॥५६॥

भावार्थः–हे जीव! रागद्वेषने हणीने, तेमज आठ कर्मना समूहनो क्षय करी, तेमज जन्म मरणरुप जे अरहट्ट (घडीओनुं यंत्र) तेने छेदीने, संसारनो त्याग करी, मुक्ति पद पामीश. ॥ ५६ ॥

अनशन करनार पुर्वे कहेला उपदेशने जेवी रीते आदरपूर्वक अंगीकार करे ते बतावे छे.

एवं सव्वुवएसं, जिणदिट्ठं सद्दहामि तिविहेणं ॥
तसथावर–खेमकरं, पारं निव्वाणमग्गस्स ॥ ५७ ॥

भावार्थः–आ पयन्नामां प्रथम आ प्रकारे कहेलो जिनेश्वर भगवाने बतावेलो अने त्रस तथा थावर जीवोना कल्याणने करनार तेमज मोक्षने पमाडनार एवो सर्व उपदेश मन, वचन, कायाए करी सद्दहुं छुं. ॥ ५७ ॥

गुरुए मरण सुधारवाने माटे जीव ज्ञानादि गुण सहित करवो एम कयुं हतुं ते ज्ञानादिक श्रुतनी विचारणा करवाथी थाय. तेमां मरणना अवसरमां केटलुं श्रुत चिंतववुं ते कहे छे.

नहि तंमि देसकाले, सक्को बारसविहो सुअक्खंधो ॥
सव्वो अणुचिंतेउं, धणियंपि समत्थचित्तेणं ॥ ५८ ॥

भावार्थः—मरणना अवसरे अतिशय चित्तनी समर्थताना भा... र्थोए पण बार अंग रूप जे सर्व श्रुतज्ञान ते चिंतवी शकातुं नथी. सर्व श्रुतज्ञान चिंतवी न शकाय तो शुं करवुं ते बतावे छे.

एगंमिवि जंमि पए, संवेगं वीअरायमग्गंमि ॥
गच्छइ नरो अभिक्खं, तं मरणं तेण मरिअव्वं ॥५९॥

भावार्थः—वीतरागना मार्गमां जे एकपद पढने पण मनुष्य [illegible] संवेग वैराग्य पामे तेवा पदना स्मरण करवा सहित जे मरवुं ते [illegible] मरण. तेवा उत्तम मरणे करी समाधि सहित मरवुं. ॥ ५९ ॥

बार अंगरूप सर्व श्रुतना चिंतवन थई शकतो नथी; परंतु [illegible] ए श्लोकनुं स्मरण करीने मरण पामे शुं थाय ते कहे छे.

ता एगंपि सिलोगं, जो पुरिसो मरणदेसकालंमि ॥
आराहणोवउत्तो, चिंतंतो आराहगो होइ ॥ ६० ॥

[illegible]

[illegible]

भावार्थः-आराधनाना उपयोगवाला उक्त मुनिमहाराजा रुडी रीते समाधि सहित मरण करी वधारामां वधारे त्रण भवे करी सिद्ध थाय छे. ॥ ६१ ॥

अनशन जेमणे कर्यु छे एहवा मुनिमहाराजा शुं चितवता थका सर्व वस्तु वोसरावे ते कहे छे.

समणु त्तिअहंपढमं, वीअं सव्वत्थ संजओमि त्ति ॥
सव्वं च वोसिरामि, एअं भणियं समासेणं ॥ ६२ ॥

भावार्थः-प्रथम तो हुं महाव्रतवालो छुं अने बीजु सर्व पदार्थोने विषे रागद्वेषनी परिणतिने रोकवारुप संयमवालो छुं. आ हेतु माटे मारे पुद्गलपदार्थना ममत्वभावे करीने शुं ? तेथी सर्व शरीर-पर्यंत पुद्गलिकपदार्थोने वोसरावुं छुं. आ जैनशासननुं रहस्य संक्षेपे कह्युं ॥ ६२ ॥

हवे मरणना अवसरमां जेवी भावना करवी जोइए ते वतावे छे.

लद्धं अलद्धपुव्वं, जिणवयणं सुभासिअं अमयभूअं॥
गहिओ सुगइमग्गो, नाहं मरणस्स वीहेमि ॥ ६३ ॥

भावार्थः-जिनेश्वर भगवानना आगममां वतावेलुं अमृत सरखु अने पूर्वे नहीं पामेलुं एहवुं आत्मतत्व हुं पाम्यो अने मोक्ष गतिनो ज्ञानदर्शन चारित्ररुप मार्ग ते पण ग्रहण कर्यो तो हवे हुं मरण थकी वीहतो नथी. ॥ ६३ ॥

तेमज वली विशेषे चितववा योग्य भावना वतावे छे.

धीरेणवि मरियव्वं, काउरिसेणवि अवस्स मरियव्वं ॥
दुन्हं पि हु मरियव्वे, वरं खु धीरत्तणे मरिउं ॥६४॥

भावार्थः—धीर पुरुषे पण मरवुं पडे छे अने कायर पुरुषे पण मरवुं पडे छे. बन्नेने अवश्ये मरवुं तो पडेज छे; परंतु धीरपणे मरतां फरी वधारे वखत मरण करवुं पडतुं नथी, अने कायरपणे मरतां घणीवार अनंती वखत जन्ममरण करवां पडे छे, ए रीते धीरपणाथी मरवामां अति लाभ अने कायरपणे मरवामां अति दुःख समजी, निश्चे करी ते धीरपणा सहित मरवुं तेज उत्तम छे. ज्ञानी पुरुषे करेलां जे जे धर्मनां कार्यो ते पण धीरपणा सहित करवांज सफल थाय छे. ॥ ६४ ॥

हवे रुडी रीते व्रत पाळवा पण पोताना अंगीकार करेलां शील व्रतोने लगार मात्र पण दूषण लगाडवुं जोइए नहीं ते कहे छे.

सीलेणवि मरियव्वं, निस्सीलेणवि अवस्स मरियव्वं ॥
दुन्हं पि हु मरियव्वे, वरं खु सीलत्तणे मरिउं ॥६५॥

[illegible]

आम स्वरूपनी रमणतामां स्थिर थए छते समाधि मरण कहेवाना द्वारे करी चार गाथाए गुरुमहाराज उपदेश आपता छता कहे छे.

नाणस्स दंसणस्स य, सम्मत्तस्स य चरित्तजुत्तस्स ॥
जो काहि उवओगं, संसारा सो विमुंचिहिसि ॥ ६६॥

भावार्थः-जन्मारा सुधी जे ज्ञान वधार्युं होय तेमां, तथा सामान्य ज्ञानरूप जे दर्शन जन्मारा सुधी अभ्यास करी मेलव्युं होय तेमां, तथा सम्यक्त्वमां, तथा पांच समिति, त्रण गुप्तिरूप व्यवहार चारित्र, अने निजगुण स्थिरतारूप नैश्चयिक चारित्रमां, जे जीव मरण अवसरे सावधानपणुं राखे छे अर्थात् उपर कहेला गुणो जे प्राप्त थएला होय तेने लगारमात्र पण हानि पामवा देता नथी. ते प्राणी जलदी संसारना दुःखोथी मुकाशे. ॥ ६६ ॥

चिरउसिअ बंभयारी, पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं ॥
अणुपुव्वीइ विसुद्धो, गच्छइ सिद्धिं धुअकिलेसो॥६७॥

भावार्थ-लांबा काल सुधी ब्रह्मचर्यनुं सेवन जेणे कर्युं छे एहवो प्राणी ब्रह्मचर्य सेवीने खपावेलां कर्मथी बाकी रहेलां घातिकर्मने क्षय करी अनुक्रमे अति विशुद्धिवालो थयो छतो भवोपग्राही कर्मथी थता क्लेश ते पण जेणे नाश पमाडया छे एहवो थइ सिद्धिगतिमां जाय छे ॥ ६७ ॥

निक्कसायस्स दंतस्स, सूरस्स ववसाइणो ॥
संसारपरिभीअस्स, पच्चक्खाणं सुहंभवे ॥ ६८ ॥

भावार्थः-जे कषाय रहित होय, तेमज पांच इंद्रिय अने छठा मनना दमनने करनार होय, तेमज आत्माना वीर्यना प्रगटपणाए करी शूरवीर होय, तेमज आत्महितना करनार कार्योमां उद्यवंत होय, प्रमादी न होय. अने संसारमां थतां जे पाप सहित कार्यो तथा संसारमां थतुं जे भ्रमण ते थकी भयभ्रांत होय तेवा आत्माना उपयोगवाळा पुरुषनुं पच्चख्खाण शुद्ध होय ॥ ६८ ॥

एअं पच्चक्खाणं, जो काही मरणदेसकालंमि ॥
धीरो अमूढसन्नो सो गच्छइ उत्तमं ठाणं ॥ ६९ ॥

भावार्थः-आ कहेलां विस्तार सहित कहेला पच्चख्खाणने जे मरणना अवसरमां धीरजवाळो पुरुष थई तेमज [illegible] सहित ज्ञानवान् थई करशे ते, उत्तम स्थानक जे मोक्ष ते पामशे. ॥ ६९ ॥

हवे [illegible] संबंधमां [illegible] आ [illegible] कहे छे.

धीरो जरमरणविऊ, धीरो (वीरो पाठांतरं) विन्नाणनाणसंपन्नो ॥
लोगस्सुज्जोअगरो, दिसउ खयं सव्वदुक्खाणं ॥ ७० ॥

[illegible]

तमां पोतानुं नाम पण सूचव्युं) तेमज केवलज्ञानरुप विज्ञान अने केवलदर्शनरुप ज्ञान ए बन्नेए करी सहित पांच कल्याणकमां द्रव्य प्रकाशे करी लोकमां उद्योतना करनार अथवा केवलज्ञाने करी धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय ए प्रकारे पंचास्तिकायरुपलोकने बतावनार एहवा जिनेश्वर भगवान् संसारिक सर्व दुःखनो क्षय तमोने आपो. ॥७०॥

॥ इति श्रीमद्वीरभद्राचार्यकृतातुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकं समाप्तम् ॥

अथ श्री वार्षीक वारे मासना पर्वोनो प्रारंभ.

प्रथम दीवाली पर्व.

आ पर्वनो आसो वदी अमावास्याथी आरंभ थाय छे. आ पर्व केवी रीतेउत्पन्नथयुं.अने ते पर्वमां लोकीक,तथा लोकोत्तर सुख मेळववा माटे शुं शुं करवुं जोइए तेनी टुंकी हकीकत आ नीचे मुकवामां आवेली छे,परमपूज्य (चरम)श्री चोवीसमां तीर्थंकर श्रीमान महावीर स्वामीनुं अमावास्यानी रात्रीए नीर्वाण पद एटले(मोक्ष गमन)थयेलुं छे अने तेज रात्रे गुरुमहाराजश्री गौतमस्वामीने केवलज्ञान प्राप्त थयेलुं छे विगेरे कारणोथी आ महान् पर्व प्रवर्तेलुं छे. तेनी घणी हकीकत दीवाली कल्प आदि बीजा ग्रंथांतरोथी जाणी लेवी. अहीं तो मात्र ते पर्वमां शुं शुं विधान करवुं ते ते कार्यो करवाथी शुं शुं फल प्राप्त थाय छे विगेरे टुंकामां जणाववामां आवशे. तेमां प्रथम दरेक जैन बंधुओ विशेषे करीने वेपारी वर्गवाला होवाथी नामाठामा माटे वही पुजन एटले चोपडानुं पूजन करे छे. वास्तविक रीते तो ज्ञान पूजनज करे छे परंतु मिथ्या दर्शनीयोना संसर्गथी अने जैन

विधि नहीं जाणवाथी ब्राह्मणो पासे मिथ्यात्वविधियी सरस्वति पूजन करावे छे. परंतु तेम करवुं जोइए नहीं पण जैन विधि प्रमाणे ज शारदा (सरस्वति) पूजन करवुं जोइए तेटला माटे आ विधि प्रथम मुकवामां आवी छे.

शुभ मुहूर्ते (सारा चोघडीए) प्रथम चोपडो शुद्ध बाजोठ उपर पूर्व अगर उत्तर दिशा तरफ स्थापवो, पछी घीनो दीपक तथा धूप राखवो, पूजा करनारे पोताना जमणा हाथे नाडाछडी बांधवी, अने पछी मनोहर लेखण लई नीचे लख्या मुजब नवीन चोपडामां लखवुं.

श्री सरस्वत्यै नमः, श्री गुरुभ्यो नमः, श्री गणपतये नमः श्री गौतमस्वामीनी लब्धि होजो, श्री केसरीयाजीनो भंडार भरपूर होजो; श्री भरतचक्रवर्तीनी रिद्धि होजो, श्री बाहुबलीनुं बल होजो, श्री अभयकुमारनी बुद्धि होजो, श्री कयवन्नाशेठनुं सौभाग्य होजो, श्री शालिभद्रनी संपत्ति होजो. आटलुं लख्या पछी नवी साल, महीनो, दीवस वगेरेथी पूर्ण करवुं.

आटलुं कर्या बाद तेनी नीचे, नीचे मुजब चढता ना गुणे 'श्री' नी रेखा माथाडे करवी.

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

अने चोपडो सांकडो होय तो सात के पांच 'श्री' करवी-
ार पछी तेनी नीचे स्वस्तिक (साथीओ) कुंकुमथी करवो अने
स्तिक उपर अखंड नागरवेलनुं पान मूकवुं अने ते पान उपर
पारी, एलची, लवींग अने रुपानाणुं मुकवुं, पछी चोपडाने फरतां
लधारा दइने वासक्षेप, अक्षत अने पुष्पनी कुसुमांजली हाथमां लइ
ीचेनो श्लोक बोली चोपडा उपर ते कुसुमांजली क्षेपवी.

मंगलं भगवान् वीरो । मंगलं गौतमः प्रभुः ।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या । जैन धर्मोऽस्तु मंगलम् ।

अथ श्री मंत्रस्तवनप्रारंभः ॥

स्वःश्रीयं श्रिमदर्हतः । सिद्धाः सिद्धिपुरीपदं ॥
आचार्याः पंचधाचारं । वाचका वाचनां वराम् ॥ १ ॥
साधवः सिद्धिसाहाय्यं । वितन्वन्तु विवेकिनां ॥
मंगलानां च सर्वेषामाद्यं भवति मंगलम् ॥ २ ॥
अर्हमित्यक्षरं माया-बीजं च प्रणवाक्षरं ॥
एवं नानास्वरुपं च ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः ॥ ३ ॥
हृत्पद्मषोडशदल-स्थापितं षोडशाक्षरं ॥
परमेष्ठिस्तुतेर्बीजं । ध्यायेदक्षरदं मुदा ॥ ४ ॥
मंत्राणामादिमं मंत्रं । मंत्रं विघ्नौघनिग्रहे ॥
ये स्मरंति सदैवैनं । ते भवंति जिनप्रभाः ॥ ५ ॥

त्यार पछी नीचे लखेल मंत्र बोलता जवुं अने दरेक द्रव्यथी
शारदापूजन करतां जवुं.

मंत्र. ॐ ह्रिँ श्री भगवत्यै केवलज्ञानस्वरूपायै लोकालोकप्रका-
शिकायै सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा-इति जलपूजा.

एवी रीते मंत्र बोलता जवुं अने जलं समर्पयामिने बदले जे

पादप्रसादात्तव रूपसंपत् लेखाभिरामोदितमानवेशः ॥
अवेश्वरः मुक्तिभिरंव चित्रोल्लेखाभिरामोदितमानवेशः ॥ ९ ॥
सितांशुकांते नयनाभिरामां मूर्त्ति समाराध्य भवेन् मनुष्यः ॥
सितांशुकांते नयनाभिरामांधकारसूर्य क्षितिपावतंसः ॥ १० ॥
येन स्थितं त्वामनु सर्वतीर्थ्यैः सभाजितामानतमस्तकेन ॥
दुर्वादिनां निर्दलितं नरेंद्र-सभाजितामानतमस्तकेन ॥ ११ ॥
सर्वज्ञचक्रवरतामरसांकलीना मार्लीन्नती प्रयणमंथरया दृशैव ॥
सर्वज्ञचक्रवरतामरसांकलीना प्रीणातु विश्रुतयशाः श्रुतदेवता नः॥१२॥
कृतस्तुतिनिविडभक्तिजडपृक्तगुंफगिरामितिगिरामधिदेवता सा ॥
नालोऽनुकंप्य इति रोपयतु प्रसादस्मेरां दृशं मयि जिनप्रभसूरिवर्ग्ये १३

त्यारपछी आरात्रिक (आरती) उतारवी. अने पछी नीचे प्रमाणे गौतमाष्टकबोली दान देवुं.

श्रीइंद्रभूतिं वसुभूतिपुत्रं । पृथ्वीभवं गौतमगोत्ररत्नं ॥
स्तुवंति देवासुरमानवेंद्राः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ १ ॥
श्री वर्द्धमानात् त्रिपदीमवाप्य । मुहूर्त्तमात्रेण कृतानि येन ॥
अंगानि पूर्वाणि चतुर्दशापि । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ २ ॥
श्रीवीरनाथेन पुरा प्रणीतं । मंत्रं महानंदसुखाय यस्य ॥
ध्यायंत्यमी सूरिवराः समग्राः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥३॥
यस्याभिधानं मुनयोऽपि सर्वे । गृह्णन्ति भिक्षाभ्रमणस्य काले ॥
मिष्टान्नपानांबरपूर्णकामाः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ४ ॥
अष्टापदाद्रौ गगने स्वशक्त्या । ययौ जिनानां पदवंदनाय ॥
निशम्य तीर्थातिशयं सुरेभ्यः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥५॥
त्रिपंचसंख्याशततापसानां । तपःकृशानामपुनर्भवाय ॥
अक्षीणलब्ध्या परमान्नदाता । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ६॥
सदक्षिणं भोजनमेव देयं । साधर्मिकं संघसपर्ययेति ॥

कं.वं. वद १४ अने अमावास्यानो छट्ठनो तप करीने त्रीजे प्रभाते
गणवुं तथा दिवालीना देव वांदवा.

दिवालीनुं गणुं.

१ श्री महावीर स्वामि सर्वज्ञाय नमः
२ श्री महावीरस्वामि पारंगताय नमः
३ श्री गौतम स्वामि सर्वज्ञाय नमः
ए प्रमाणे पदनी नवकारवाली वीश वीश गणवी.

श्री दीवाली देववंदन विधि प्रारंभ

श्री महावीर स्वामी देववंदन विधि.

प्रथम स्थापना स्थापी, इरियावहि पडिक्कमि-आ चैत्यवंदन करवुं.

अथ प्रथम चैत्यवंदन.

[illegible]

पछी नमुत्थुणं कही पाधरा अथवा जयवीयराय कहेवा.
पछी खमा० देई आ चैत्यवंदन करवुं.

अथ द्वितीय चैत्यवंदन.

देव मलिया देव मलिया, करे उत्सव रंग, मेरइयां हाथे ग्रही. द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रने, ठाम ठाम एह ओच्छव प्रसिद्धो. लख कोडी छठ फळ करी, कल्याण करो एह. कवि नयविमल कहे इस्युं, धन धन दहाडो तेह.

पछी नमुथ्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नमोर्हत् कही आ थोय कहेवी—

अथ चार थोयो प्रारभ्यते.

मनोहर मूर्ति महावीरतणी, जीणे सोल पहोर देशना पभणी; नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणि, कहि शिव पाम्या त्रिभुवनधणी. १

पछी लोगस्स० सव्वलोए० अरिहंत चेइआणं०अन्नत्थ० कही० एक नवकारनो काउसग्ग करी नीचे प्रमाणे थोय कहेवी.

शिव पहोत्या रुषभ चउदश भक्ते, बावीस लह्या शिव मास थिते; छठे शिव पाम्या वीर वली, कार्तिक वदी अमावास्या निरमली २ पछी पुख्खरवरदी० सुअस्सभग०अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० पारीने थोय कहेवी.

आगामि भावी भाव कह्या, दीवाली कल्पे जेह लह्या; पुन्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवि तहत्ति करीने सद्द्यां ३ पछी सि–

कैवल्यवर्त्म प्रदर्शी मुनीनां । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ७ ॥
शिवं गते भर्तरि वीरनाथे । युगप्रधानत्वमिहैव मत्वा ॥
पट्टाभिषेको विदधे सुरेंद्रैः । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ८ ॥
त्रैलोक्यबीजं परमेष्ठिबीजं । सज्ज्ञानबीजं जिनराजबीजं ॥
यन्नाम चोक्तं विदधाति सिद्धिं । स गौतमो यच्छतु वांछितं मे ॥ ९ ॥
श्री गौतमस्याष्टकमादरेण । प्रबोधकाले मुनिपुंगवा ये ॥
पठंति ते सूरिपदं सदानंदं लभंते सुतरां क्रमेण ॥ १० ॥

॥ इति श्री गौतमाष्टकं संपूर्णम् ॥

०अथवा नीचे प्रमाणे कहेवुं;—

अथ दीवाळी पूजन.

अंगुठे अमृत वसे, लब्धि तणो भंडार;
ते गुरु गौतम समरीए, वंछित फल दातार. १
[illegible]
[illegible] २
[illegible]
[illegible] ३
[illegible]
[illegible] ४
[illegible]
[illegible] ५
[illegible]
[illegible] ६
[illegible]
[illegible] ७

आ दीवाली नामनुं उत्तम पर्व. आसो वद अमावास्याने ८ चरम् तीर्थंकर श्री वीर भगवान् (१६) पहोरनी देशना देता — प्रधानक नामनुं भलुं अध्यन प्ररुपतां पांचमी मोक्ष गतिने पाम्या ज्यारे श्री वीररुपी ज्ञाननो भाव दीवो दूर थयो त्यारे देवोए दीवा-ओनी (द्रव्य दीपकनी) श्रेणी करी अने तेवी रीते चारे वरणना लोकोए पण दीवा कर्या ते कारणथी दीवाली पर्व प्रगट थयुं. तेज रात्रीमां गुरु गौतम स्वामीने प्रभु उपर अत्यंत राग हतो ते दूर थइ जवाथी केवलज्ञान उत्पन्न थयुं तेनो पडवाने दीवसे मोहोत्सव कर-वाथी अने इन्द्रे पण गुरु गौतम स्वामीने श्री वीर भगवानने पदे स्थाप्यां श्री गौतम स्वामी भट्टारकने इन्द्रे जुहार्या ते उपरथी चारे वर्णमां जुहार करवानुं प्रवर्त्युं. अने पडवाने दीवसे आनंद मानवा लाग्या बीजने दीवसे नंदीवर्धनने शोक टालवा माटे नंदी वर्धननी व्हेने भाइने जमवा नोतर्या तेथी सर्व जगतमां भावड बीज (भाइबीज) नामनुं पर्व प्रवर्तयुं आ प्रमाणे संक्षेपथी तेनुं वर्णन छे. ए पर्व सर्वने आनंददायी थाय छे पण धर्म करवाथीज सुख थाय छे. जोके सा-मान्य माणसो खावा पीवा ओढवा फरवामां ते उत्तम पर्व व्यतीत करे छे वली केटलाक बालकोनी गम्मत खातर दारुखानुं विगेरेमां नाहकना हजारो रुपीओनो खर्च करी पुन्यने बदले पाप बांधी ले छे ते उत्तम पुरुषोने करवा योग्य नथी परंतु ते दिवसोमां तो आ महान् भाग्यशालीओए धर्माराधन करी उत्तम केवलज्ञान अने नीर्वाण एटले(मोक्ष पद) प्राप्त कर्युं तेमने पगे चाली आपणे पण धर्माराधान करवुं तेज श्रेष्ट छे तो ते केवी रीते. तेनो विधि नीचे प्रमाणे

द्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी, पारीने नमोर्हत्० कही आ थोय बोलवी.

सवि देव मली उद्योत करे, परभाते गौतम ध्यान धरे; ज्ञान विमल सदा गुण विस्तरे, जिन शासनमां जयकार करे. ४ इति.

पछी बेसीने नमुत्थुणं कही उभा थइ अरिहंत चेइआणं अन्नत्थ एक नवकारनो काउ० करी, पारीने नमोर्हत् कही आ थोय बोलवी.

अथ चार थोयो प्रारभ्यते.

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव; सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव, करुणारस कंदो, वंदो आणंद आणी; त्रिशला सुत सुंदर, गुणमणी केरो खाणी. १ पछी लोगस्स सव्वलोए० अरिहंत चेइआणं० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउ० करी पारी आ बीजी थोय कहेवी.

जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे, पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे; ते च्यवन जनम व्रत, नाण अने निर्वाण, सवि जिनवर केरा, [illegible]

[illegible]

[illegible]

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ०करी—पारी नमोऽर्हत् कही आथोय बोलवी.

मत्तंगसिद्धाइ, देवी जिन पद सेवी; दुःख दुरित उपद्रव, जेपराले नितमेवी; शासन सुखदायी; आइ सुणो अरदास. श्री ज्ञान विमल गुण, पुरो वंछित आश. ४ इति.

पछी वेसीने नमुत्थुणं, जावंतिचेइ० खमा० जावंतकेवि० नमोऽर्हत्० कही स्तवन कहेवुं तेआ—

अथ महावीर जिन स्तवनं.

" आज सखी संखेसरो " ए देशी.

श्री महावीर मनोहरु, प्रणमुशिरनामी; कंतजशोदा नारीनो, जिन शिवगति पामी. १ भगिनी जास सुदंसणा, नंदीवर्धनभाइ; हरि लंछन हेजालुओ, सहुकोने सुखदायी. २ सिद्धार्थ भूपतितणो, सुत सुंदर सोहे; नंदन त्रिशला देविनो, त्रिभुवन मन मोहे. ३. एक शत दश अध्ययन जे, प्रभु आप प्रकाशे; पुण्य पाप फल केरडां, सुणे भविक उल्लासे. ४. उत्तराध्ययन छत्रीश जे, कहे अर्थ उदार; सोल पहोर दीये देशना, करे भवि उपकार ५. सर्वार्थसिद्ध मुहूर्त्तमां, पाछली जे रयणी; योगनिरोध करे तिहां, शिवनी नीसरणी. ६. उत्तराफाल्गुनी चंद्रमा, जोगे शुभ आवे; अजरामर पद पामीया, जय जय रव थावे. ७. चोसठ सुर नर आवीया, जिन अंग पखाली; कल्याणक विधि साचवी, प्रगटी दीवाली. ८. लाख कोडी

पछी नमुत्थणं कही पाधरा अर्धा जयवीराय कहेवा पछी खमा० देइ आ चैत्यवंदन करवुं.

अथ द्वितीय चैत्यवंदन.

इंद्रभूति पहिला भणुं, गौतम जसनाम; गोवर गामे उपन्या, विप्राना धाम; पंच सया परिवारशुं, लेइ संयम भार; वरस पचाश ग्रहे वश्या व्रत वर्षज त्रीश; बार वरस केवल वर्याए, बाणुं वरस सवि आय ? नय कहे गौतम नामथी, नित्य नित्य नव निधि थाय.

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउ० करी पारी नमोऽर्हत्० कही आ थोय कहेवी.

अथ चार थोयो प्रारभ्यते.

इंद्रभूति अनुपम गुण भर्या, जे गौतम गोत्रे अलंकर्या, पंचशत छात्रशुं परिवर्या, वीर चरण लही भवजल तर्या[1].

पछी लोगस्स० सव्वलोए० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पारी नीचे प्रमाणे थोय कहेवी—

चउ अठ दस दोय जिनने स्तवे, दक्षिण पश्चिम उत्तर पूरवे, संभव आदि अष्टापद गिरिये वली, जे गौतम वंदे ललो लली. २

पछी पुक्खरवरदी० सुअस्स भग० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउ० करी पारीने आ थोय कहेवी.

त्रिपदि पामीने जेणे करी, द्वादशांगी शुकल गुणे भरी; दीये दीक्षा ते लहे केवल सिरि, ते गौतमने रहुं अनुसरी. ३

संप्यग्दृशां विघ्नहरा भवेतु, मातंगयक्षा सुरनायकानाम्; दीपालिकापर्वणि सुप्रसन्ना श्रीज्ञान सूरिवरदायकाम्. ४ इति.

पछी वेसीने नमुत्थुणं० जावंतिचेइ० खमा० जावंतकेवि० नमोऽर्हत् कही ये स्तवनो कहेवां ते आः—

अथ गौतम स्तवनं.

" तुंगीया गिरि शिखर सोहे " ए देशी.

वीर मधुरी वाणी भाखे, जलधि जल गंभीररे; इंद्रभूति चित्त भ्रांति रजकण, हरण प्रवर समीररे. वीर० १ पंचभूत थकीज प्रगटे चेतना विज्ञानरे तेहमां लयलीन थाये न परभव संज्ञान रे वीर० २ वेद पदनो. अर्थ एहवो करे मिथ्या रुपरे; विज्ञान घन पद वेद केरां, तेहनुं एक स्वरुप रे; वीर० ३ चेतन विज्ञान घन छे, ज्ञानदर्शन उपयोग रे; पंचभूतिक ज्ञानमयने, होय वस्तु संयोग रे वीर ४ जिहां जेहवी वस्तु देखिये, होय तेहवुं ज्ञान रे; प्रथम ज्ञान विपर्ययथी, होय उत्तर ज्ञान रे वीर० ५ एह अर्थ समर्थ जाणी, प्रथम पद विपरीत रे; इणिपरे भ्रांति निरा करीने, थया शिष्य विनीत रे वीर० ६ दीपालिका प्रभात केवल, लह्युं ते गौतम स्वामि रे; अनुक्रमे शिव सुख लह्या तेहने, नय करे परणाम रे. वीर० ७०

इति प्रथम स्तवनं.

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन. ॥

॥ मान्दागोवीनी तव्यो नमें संसारे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम प्रमुख गणधारी ॥ १ ॥ सनेही जिनजी जगतारी रे ॥ अंतरंग रिपुने वारी रे, तप केवलाधि नारी रे, प्रभु केवल नाण उल्लासे ॥ स० ॥ २ ॥ कलिकाले वाद वधारे, ए जिनमार्ग न प्रचारे, तेणे हरिखंत प्रभु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सहि सुरनर थेइ थेइ कारे, जन्मकल्याणनी परे स्वारे, नवा नृपना भाग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रभु देशना अमृत धारा रे, जिनधर्म विषे रथकारा रे, जेणे तारया मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल आल्यो रे, वरया स्वातिये शिव वरमाल्यो रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलच्छ निवारी रे, शुभ सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर प्रभु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ अथ श्री वीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन. ॥

॥ मारग देशक मोक्षनोरे, केवल ज्ञाननिधान ॥ भाव दयासागर प्रभुरे, पर उपगारी प्रधानोरे, ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ ॥ संघ सकल आधारोरे, हवे इण भरतमां ॥ कोण करशे उपगारोरे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहुणुं सैन्य ज्युंरे, वीर विहुणारे जीव ॥ साधे कोण आधारथीरे, परमानंद अभंगोरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात

न्यूरे, अरहो परेहो अयदाय ॥ वीर विहुणा जीवडारे, व्याकुल थायरे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदकर्तारनोरे, केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजेरे, ते विण केम रहेवायो र० ॥ ५ ॥ निर्यामक भव समुद्रनोरे, भवअटवि सत्थ ते परमेश्वर विण मलेरे, केम वाधे उल्हासरे ॥ वीर०॥६॥ क्यां पण श्रुत तणोरे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आ- छे रे, अहो जिनमुद्रा सार रे, ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण काले जीवनेरे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो भविजनारे, जिन मा सुखकंदरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारज मुनिरे, सहुने परे सिद्धि ॥ भव भव आगम संगथीरे, देवचंद्र पद लीधरे ॥ ० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ दीवालीनुं स्तवन. ॥

॥ प्रभु कंठे ठवि फुलनी माला ॥ ए देशी ॥

॥ रमती गमती हमुने सहेली, बेहु मली लीजीयें एक तालीरे सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासें पुरण मासें, पोष दशम निशि रहीयालीरे ॥ स० ॥ १ ॥ पशु पंखी वसीआं वनवासें, ते पण सुखीयां समकालीरे ॥ स० ॥ एणी रात्रें घेर घेर ओच्छव होसे, सुखीयां जगतमां नर नारीरे ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगें, जन्म्या प्रभुजी जयकारीरे ॥ स० ॥ साते न-

संतिन कोट ॥ चदिपज माने ऋद्धिसागर, तो तुंटे गौतमना
॥ ७ ॥ गौतमनामथी नार्थिक टळे, उत्तम नारी संगत मळे
गौतमनामे निर्मलज्ञान, गौतम नामे वाधेवान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अ
भागे गहु, गुरुगौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावन्य समय करजे
गौतम तूटे संपत्ति कोट ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री गौतम प्रभातिस्तवनं प्रारंभः ॥

॥ राग प्रभाती ॥

मातपृथ्वीसुतप्रातउठीनमो, गणधरगौतमनामगेलें ॥ प्रहसमे
शु जेह ध्यातांसदा, चढतीकलाहोयवंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुभ
नंदन विश्वजनवंदनदुरितनिकंदननामजेहनुं ॥ अभेदबुद्धे करी भ
जनजेभजे, पूर्णपोहोंचेमही भाग्यतेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरम
जेहचिंतामणि सुरतरु, कामितपूरणकामधेनु ॥ एहज गौतमतणुं ध्य
हृदये धरो, जेहथकीअधिकनहींमाहात्म्यकेहेनुं ॥ मा० ॥ ३ ॥ ज्ञ
चलतेजनेसकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धिपामे ॥ अखंडप
प्रताप होयअवनिमां, सुरनरजेहने शीश नामे ॥ मा० ॥ ४ ॥ प्र
आदेंधरी मायाबीजकरी, स्वमुखे गौतमनामध्याये ॥ कोडिमनकाम
सकलवेगेंफले, विघनवेरीसवेदूर जाये ॥ मा० ॥ ५ ॥ दुष्टदूरें
स्वजनमेलोमले, आधिउपाधि ने व्याधिनासे ॥ भुतनांप्रेतनां जो
भांजे बली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्ट

पदें आपलब्धेजइ, पन्नरशेंत्रणने दिखदीधी ॥ अठमपारणेतापस कारणें, क्षीरलब्धेकरी अखुटकीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पचासलगें गृहवासेंवस्या, वरसत्रली त्रीशकरी वीरसेवा ॥ बारबरसांलगें केवल भोगव्युं, भक्तिजेहनी करे नित्यदेवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियलगौतम गोत्रमहिमानिधि, गुणनिधि रुद्धिर्नेसिद्धि दाई ॥ उदयजस नामथी अधिकलीलालहे, सुजस सौभाग्यदोलतसवाइ ॥ मा० ॥ ९ ॥ इति गौतमप्रभातिस्तवनं ॥

॥ अथ दीवाळीनुं स्तवन. ॥

॥ मारे दीवाळी रे थइ आज, प्रभु मुख जोवाने ॥ सरयां सरयां रे सेवकनां काज, भव दुःख खोवाने ॥ ए आंकणी ॥ महावीर स्वामी मुक्तें पोहोता ने, गौतम केवळ ज्ञानरे ॥ धन्य अमावस्या धन्य दीवाळी मारे, वीर प्रभु निवारण ॥ जिन मुख० ॥ १ ॥ चारित्र पाळ्यां निरमळांने. टाळ्यां ते विषय कषायरे ॥ एवा मुनि ने वांदीयें तो, उतारे भव पार ॥ जिन मुख० ॥ २ ॥ बाकुळ वोहोरया वीरजी ने, तारी चंदन बाळा रे ॥ केवळ लइ प्रभु मुक्तें पोहोता, पाम्या भवनो पार ॥ जिन मुख० ॥ ३ ॥ एवा मुनिने वांदीएं जे, पंच ज्ञानने धरतांरे ॥ समवसरण दइ देशनारे, प्रभु, तार्यां नर ने नार ॥ जिन मुख० ॥ ४ ॥ चोवीशमां जिनेसरु ने, मुक्ति तणा दातारुरे ॥ करजोडी कवियण एम भणेरे, प्रभु, भवनो फेरो टाळ ॥ जिन मुख० ॥ ५ ॥

नमें थयां प्रसवतां, पारणे पण सुखकारीरे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमीं आठे दिगकुमरीं; अधोलोकनी वसनारीरे ॥ स० ॥ सूती घर ईशाने करतीं; योजन एक अशुचि टालींरे ॥ स० ॥ ४ ॥ ऊर्ध्व लोकनी आठ ज कुमरी; वरसावे जल कुसुमालींरे ॥स०॥ पूरव रुचक आठ दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशालींरे ॥ स० ॥५॥ अड पश्चिमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढालींरे ॥ स० ॥ विदिशीनी चउ दीपक धरती, रुचक द्वीपनी चउ बालींरे ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ केलतणा घर त्रण करीने, मर्दन स्नान अलंकारीरे ॥स०॥ रक्षा पोटली बांधी बेहूने, मंदिर मेहेल्यां शणगारीरे ॥स० ॥ ७ ॥ प्रभु मुख कमले अमरी भमरी, रास रमंती लटकालींरे ॥ स० ॥ प्रभु माता तुं जगतनी माता, जग दीपकनी धरनारीरे स० ॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो; उत्तम जीवने उपगारीरे ॥ स० ॥ छप्पन दिग् कुमरी गुण गाती, श्री शुभवीर वचन शालींरे॥सखि० ॥ ९ ॥ इति ॥

श्री ज्ञान पंचमीनो तप.

" ज्ञानना " आराधन माटे एटले आत्मानो ज्ञानगुण जे अनादि कालथी ज्ञानावर्णीय कर्मना संयोगे अवरायेलो छे तेने प्रगट करवा माटे अने ज्ञानवरणीय कर्मनो क्षय (क्षयोपशम) करवा माटे " ज्ञान पंचमी " नो तप अति उत्कृष्ट साधनभूत छे. ज्ञानना आराधन माटे शास्त्रकारे बीज, पांचम ने अग्यारश ए त्रण तिथिओ वखाणी छे. परंतु तेमां मुख्यता पांचमनी छे. प्राये प्रवृत्ति पण पंचमी तप करवानी विशेष छे. आ तप कोइपण वर्षना कार्त्तिक मासनी शुक्ल

ाथी शरु करवामां आवे छे आ पंचमी "सौभाग्य पंचमी"ना ाथी ओळखाय छे. ज्ञान मेळववाना उत्सुक श्रावक श्राविकाओ ा साधु साध्वीओ आ तप विशेष करे छे. आ तप पांच वर्ष ने र मास पर्यंत करवानो छे. ते एकासणाथी, आयंबीलथी अथवा ासथी करवामां आवे छे. शारीरीक शक्तिवाळा तो प्राये उपवा- थीज करे छे. चार मास उपवास न करी शके ते पण कार्त्तिक शुदि ि मे तो अवश्य उपवास करे छे. अने ते दिवसे बनतां सुधी चार ा आठ पहोरनो पोषध पण करे छे. ए तपना आराधन माटे संपूर्ण वेधि करवाना इच्छके नीचे प्रमाणे विधि दरेक मासनी शुक्ल चमीए करवो.

तप करवानो विधि.

१ एकासणुं, आयंबील के उपवास यथाशक्ति करवो
२ बंने टंक प्रतिक्रमण करवुं.
३ त्रण काळ आठ स्तुति ने पांच शक्रस्तवादिवडे देव वांदवा.[1]
४ बे टंक पडिलेहण करवी.[2]
५ त्रण काळ जिनपूजा करवी. तेमां प्रातःकाळे वासक्षेपादिवडे, मध्यान्हे अष्ट प्रकारी अने सायंकाळे धूप दिपादिवडे करवी.
६ बे हजार जाप करवो. अर्थात् "नमो नाणस्स" ए पदनी वीश नवकारवाळी एकाग्र चित्ते गणवी.

१-२ देववंदनने पडिलेहणनी विधि प्रसिद्ध होवाथी बताप- वामां आवेल नथी.

७ बने तो पौषध करवो अथवा दिवसनो घणो भाग ज्ञान ध्यानादिमां व्यतित करवो.

८ ज्ञान अने ज्ञानीनी यथाशक्ति भक्ति करवी.

९ ज्ञाननो अभ्यास करवो अने तेनी आशातना टाळवी.

१० मधु पासे अथवा ज्ञान पासे पांच दीवटनो दीवो करवो. पांच स्वस्तिक करवां, यथाशक्ति फळ नैवेद्यादि पदार्थो पांच पांच चडाववा.

११ पांच अथवा एकावन लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो.

ज्ञान पंचमीने दिवसे तो घणां वानां सविशेष करवां, अर्थात् जिनेश्वरनी आंगी पूजादिवडे विशेष भक्ति करवी, फळ नैवेद्यादि विशेष चडाववां, ज्ञान पंचमीना देव वांदवा, तदंतर्गत एकावन खमासमण देवां, ५१ लोगस्सनो काउसग्ग करवो, बनता सुधी पौषध अवश्य करवो; आखो दिवस ज्ञान ध्यानमांज व्यतित करवो.ज्ञानना बहुमान माटे योग्य स्थळे सुशोभित चंदरवा पुंठीआ विगेरे बंधावी ज्ञान पधराववुं अने अनेक भव्य जीवो दर्शन निमित्ते आवे तेवो आकर्षक देखाव करी ज्ञाननी भक्ति जयणापूर्वक करवी.ज्ञान समीपे गानतान करवुं–कराववुं, ज्ञाननी पूजा भणाववी. इत्यादि करीने अनेक उत्तम जीवो ज्ञानना आराधनमां तत्पर थाय तेम करवुं.

श्री यशोविजयोपाध्यायादि विरचित नवपदनी पूजामांथी

॥ सम्यग् ज्ञानपद पूजा.

॥ काव्यं, इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स, नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥

॥ भुजंग प्रयात वृत्तम् ॥

होये जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावर्ण नासे विचित्रावबोधे ॥
तेणे जाणीए वस्तु षड्द्रव्य भावा, न हुये वितस्था (वाद) नीजेच्छा स्वभावा ॥ १ ॥
होये पंच मत्यादि सुज्ञान भेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥
वळी ज्ञेय हेय उपादेय रूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ उलालानी देशी ॥

भव्य ! नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ॥
परजाय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ १ ॥

॥ उलालो ॥

जे मुख्य परिणति, सकल ज्ञायक, बोधभाव विलच्छना ॥
मति आदि पंच, प्रकार निर्मल, सिद्धसाधन लच्छना

स्याद्वाद संगी, तत्त्वरंगी, प्रथम भेदाभेदता ॥
सविकल्प ने, अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

ढाळ.

॥ श्रीपालना रासनी देशी ॥

भक्षाभक्ष न जे विण लहिये, पेय अपेय विचार ॥
कृत्य अकृत्य न जे विण लहिये.ज्ञान ते सकल आधाररे॥भ०॥सि०३१॥
प्रथम ज्ञान ने पछे अहिंसा,श्री सिद्धांते भाख्युं ॥
ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो,ज्ञानीए शिवसुख चाख्युंरे॥भ०॥सि०३२॥
सकल क्रियानुं मूल जे श्रद्धा. तेहनुं मूल जे कहिये ॥
तेह ज्ञान नित नित वंदीजे,ते विण कहो किम रहियेरे॥भ०॥सि०३३॥
पंच ज्ञानमांहि जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥
दीपकपरे त्रिभुवन उपगारी,वळी जिम रवि शशी मेहरे ॥भ० सि०३४॥
लोक उरध अध तिर्यग ज्योतिष, वैमानिक ने सिद्ध ॥
लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, तेह ज्ञाने मुज शुद्धिरे ॥भ०॥सि०३५॥

॥ ढाळ ॥

ज्ञानावरणी जे कर्म छे, क्षयउपशम तस थायरे ॥
तो होये एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥

॥ इति सप्तम सम्यग्ज्ञानपद पूजा समाप्ता ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीदेववंदन प्रारंभ ॥

॥ तत्र प्रथम विधि ॥

प्रथम बाजोठ उपर ठवणी ने तेनी उपर रुमाल ढांकी ते उपर पांच पुस्तक मूकीने वासक्षेपथी ज्ञाननी पूजा करीए, वली पांच दीवेटनो दीवो करीए, ते जयणापूर्वक पुस्तकनी जमणी पासे स्थापीए अने धूपधाणुं डाबे पासे मुकीए, पुस्तक आगल पांच अथवा एकावन साथीया करी उपर श्रीफल तथा सोपारी मूकीए. यथाशक्ति ज्ञाननी द्रव्यपूजा करीए. पछी देव वांदीए अने सामायिक तथा पोसह मध्ये वासपूजाए पुस्तक पूजीने देव वांदीए, अथवा देहरा मध्ये बाजोठ त्रण उपराउपर मांडी ते उपर पांच जिनमूर्त्ति स्थापीए. तथा महा उत्सवथी स्नात्र भणावीए. प्रभु आगल जमणी तरफ पुस्तक मांडयुं होय तेनी पण वास प्रमुखे पूजा करीए. तथा उजमणुं मांडयुं होय तो तिहां पण यथाशक्ति जिनबिंब आगल लघु स्नात्र भणावीने अथवा सत्तर भेदी पूजा भणावीने पछी श्री सौभाग्य पंचमीना देव वांदीए.

प्रथम प्रतिमाजीनी जोगवाइ न होय तो स्थापनाचार्य समीपे अथवा नवकार पंचिंदियवडे स्थापना स्थापीने इरियावही पडिक्कमी, चार नवकारनो अथवा एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् मतिज्ञान आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? एम कही, योगमुद्राए बेसी चैत्यवंदन करीए ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन ॥

॥ रसीयानी देशी ॥

प्रणमो पंचमी दिवसे ज्ञानने, गाजो जगमांहे जेह ॥ सुज्ञानी ॥
शुभ उपयोगे क्षणमां निर्जरे, मिथ्या संचित खेह ॥सु०॥प्रण०१॥
संतपदादिक नव द्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश ॥सु०॥
नय व्यवहारे आवरण क्षय करी, अज्ञानी ज्ञांन उल्लास ॥सु०॥प्रण०२॥
ज्ञानी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने सत्य ॥ सु० ॥
अंतर मुहूर्त रहे उपयोगथी,ए सर्व प्राणीने नित्य ॥सु०॥प्रण०३॥
लब्धि अंतर मुहूर्त्त लघुपणे, छाशठ सागर जिठ ॥ सु० ॥
अधीको नरभव बहुविध जीवने, अंतर कदिये न दीठ॥सु०॥प्रण०४॥
संमतिसमये एक बे पामता, होय अथवा नवि होय ॥ सु० ॥
क्षेत्र पल्योपम भाग असंख्यमां, प्रदेश माने बहु जोय॥सु०॥प्रण०५॥
मतिज्ञान पाम्या जीव असंख्य छे, कया पडिवाइ अनंत ॥सु०॥
सर्व आशातन वरजो ज्ञानी, विजय लक्ष्मी लहो संत॥सु०॥प्रण०६॥

॥ इति श्री मतिज्ञान स्तवन ॥

पछी जयवीयराय संपूर्ण कही, खमासमण दइ, इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् श्रीमतिज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० अने अन्नथ्थ उससीएणं० कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कही थुइ कहेवी. ते आ प्रमाणेः—

॥ अथ खमासमणना दुहा ॥

समकित श्रद्धावंतने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश ॥
प्रणमुं पदकज तेहना, भाव धरी उल्लास. ७. ॥ खमा० ॥ १ ॥
ए दुहो गुण गुण दीठ कहेवो.
नहीं वर्णादिक योजना, अर्थावग्रह होय ॥
नोइंद्रिय पंच इंद्रिये, वस्तु ग्रहण कांइ जोय. ८. ॥ खम० ॥ २ ॥
अन्वय व्यतिरेके करी, अंतर मुहूर्त प्रमाण ॥
पंचेंद्रिय मनथी होये, इहां विचारणा ज्ञान. ९. ॥ खम० ॥ ३ ॥
वर्णादिक निश्चय वसे, सुर नर एहिज वस्त ॥
पंचेंद्रिय मनथी होये, भेद अपाय प्रशस्त. १०. ॥ खम० ॥ ४ ॥
निर्णीत वस्तु स्थिर ग्रहे, कालांतर पण साच ॥
पंचेंद्रिय मनथी होये, धारणा अर्थ उवाच. ११. ॥खम० ॥ ५ ॥
निश्चय वस्तु ग्रहे छते, संतत ध्यान प्रकाम ॥
अपायथी अधिके गुणे, अविच्युति धारणा ठाम. १२॥खम०॥६॥
अविच्युति स्मृति तणुं, कारज कारण जेह ॥
संख्य असंख्य कालज सुधी, वासना धारणा तेह. १३ ॥खम॥७॥
पुर्वोत्तर दर्शन द्वय, वस्तु अप्राप्त एकत्व ॥
असंख्य काले ए तेह छे, जातिस्मरण तत्त्व. १४ ॥ खम० ॥८॥
वाजित्र नाद लही ग्रहे, ए तो दुंदुभि नाद ॥
अवग्रहादिक जाणे बहु, भेद ए मति आल्हाद.१५ ॥खम० ॥९॥
देश सामान्ये वस्तु छे, ग्रहे तदपि सामान्य ॥

शब्द ए नव नव जातिनो, ए अबहु मति मान १६॥सम०॥१०॥
एकज तुरियना नादथी, मधुर तरुणादिक जाति ॥
जाणे बहुविध धर्मनुं, क्षय उपशमनी भाति. १७ ॥ सम० ॥११॥
मधुरतादिक धर्मनां, ग्रहतो अल्प सुविचार ॥
अबहुविध मति भेदनो, कीधो अर्थ विस्तार. १८ ॥ सम०॥१२॥
शीघ्रमेव जाणे सदा, नवि होये बहु विलंब ॥
क्षिप्र भेद ए ज्ञाननो, जाणो मति अविलंब. १९॥ सम० ॥ १३ ॥
बहु विचार करी जाणीए; ए अक्षिप्रह भेद ॥
क्षयोपशम विचित्रता, कहे महाज्ञानी संवेद. २० ॥ सम० ॥१४॥
अनुमाने करी को ग्रहे, ध्वजथी जिनवर चैत्य ॥
पूर्व प्रबंध संभालीने, निश्रित भेद संकेत, २१ ॥ सम० ॥ १५ ॥
बाहिर चिन्ह ग्रहे नहीं, जाणे वस्तु विवेक ॥
अनिश्रित भेद ए धारीए, आभिनिबोधिक टेक. २२॥सम०॥१६॥
निःसंदेह निश्चयपणे, जाणे वस्तु अधिकार ॥
निश्चित अर्थ ए चिंतवो, मतिज्ञान प्रकार. २३ ॥ सम० ॥ १७ ॥
एम होये वा अन्यथा, एम संदेहे जुत्त ॥
धरे अनिश्चित भावथी, वस्तु ग्रहण उपयुत्त. २४ ॥ सम० ॥ १८ ॥
बहु प्रमुख भेदे ग्रह्युं, जिम एकदा तिम नित्य ॥
बुद्धि थाये जेहने, ए ध्रुव भेदनुं चित्त. २५ ॥ सम० ॥ १९
बहु प्रमुख रुपे कदा, कदा अबह्वादिक रुप ॥
ए रीते जाणे तदा, भेद अध्रुव स्वरुप. २६ ॥ सम० ॥ २०

अवग्रहादिक चउ भेदमां, जाणवा योग्य ते ज्ञेय ॥
ते चउ भेदे भाखीयो, द्रव्यादिकथी गणेय. २७ ॥
जाणे आदेशे करी, केटला पर्याय विसिष्ट ॥
धर्मादिक सवि द्रव्यने, सामान्य विशेष गरिष्ट. २८॥ सम० ॥२१॥
सामान्यादेशे करी, लोकालोक स्वरुप ॥
क्षेत्रथी जाणे सर्वने, तत्व प्रतीत अनुरुप. २९ ॥ सम० ॥ २२ ॥
अतीत अनागत वर्तना, अद्धा समय विशेष ॥
आदेशे जाणे सहु, वितथ नहीं लवलेश. ३० ॥ सम० ॥ २३ ॥
भावथी सविहुं भावनो, जाणे भाग अनंत ॥
उदयिकादिक भाव जे, पंच सामान्ये लहंत. ३१ ॥ सम० ॥२४॥
अश्रुतनिश्रीत जाणिये. मतिना चार प्रकार ॥
शीघ्र समय रोहापरे, अकल औत्पातिकी सार ३२ ॥ सम०॥२५॥
विनय करंतां गुरुतणो, पामे मति विस्तार ॥
ते विनयिकी मति कही, सघला गुण सिरदार. ३३॥ सम०॥२६॥
करतां कार्य अभ्यासथी, उपजे मति सुविचार ॥
ते बुद्धि कही कार्मिकी, नंदीसूत्र मोझार. ३४ ॥ सम० ॥ २७ ॥
जे वयना परिपाकथी, लहे बुद्धि भरपूर ॥
कमलवने महा हंसने, पारिणामिकी ऐ सनूर. ३५ ॥
अठवीश चत्रीश दुग चउ, त्रणशे चालीश जेह ॥
दर्शनथी मति भेद ते, विजयलक्ष्मी गुण गेह. ३६ ॥सम०॥ २८ ॥

२७ मा ने ३५ मा दुहा वखते खमासमण न देवां.

श्री मतिज्ञानना अठावीशनि भेद संपूर्ण

खमासमण दईने इच्छा० श्री श्रुतज्ञान आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते नीचे प्रमाणे-

॥ अथ श्री द्वितीय श्री श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ दोहा ॥

श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमो, स्वपर प्रकाशक जेह ।
जाणे देखे ज्ञानथी, श्रुतथी टाले संदेह ॥
अनभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ।
तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥
वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ।
चौदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥
मांहोमांहे पूरवधरा, अक्षर लाभे सरिखा ।
छट्ठाण वडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥
तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ।
समकित श्रुतना जाणीए, सर्व पदारथ साचा ॥
द्रव्य गुण पर्याये करीए, जाणे एक प्रदेश ।
जाणे ते सवि वस्तुने, नंदीसूत्र उपदेश ॥ २ ॥
चोवीश जिनना जाणीए, चौद पुरवधर साध ।
नव शत तेत्रीश सहस छे, अट्ठाणुं निरुपाध ॥
परमत एकांतवादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ।
ते समकितवंते ग्रह्या, अर्थ यथार्थज थाय ॥
अरिहंत श्रुतकेवली कहे ए, ज्ञानाचार चरित्त ।

पंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥ ३ ॥
इति चैत्यवंदन ॥ नमुथ्थुं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही.
। कहीए ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन. ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥

श्री श्रुत चोद भेदे करी, वरणवे श्री जिनराज रे ॥
उपधानादि आचारथी,सेवियें श्रुत महाराज रे ॥
श्रुत शुं दिल मान्यो ॥ दिल मान्योरे; मन मान्यो,
प्रभु आगम सुखकार रे ॥ श्रुत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
एकादि अक्षर संयोगथी, असंयोगी अनंत रे ॥
स्वपर पर्याये एकाक्षरो, गुण पर्याय अनंत रे श्रुत० ॥ २ ॥
अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो छे नित्य रे ॥
ते तो अवराए नहीं, जीव सूक्ष्मनुं ए चित्त रे ॥ श्रुत० ॥ ३॥
इच्छे सांभलवा फरी पूछे, निसुणे ग्रहे विचारंत रे ॥
निश्चय धारणा तिम करे, धीगुण आठ ए गणंत रे॥श्रुत०॥४॥
वादी चौवीश जिनतणा, एक लाख छवीश हजार रे ॥
वर्से सयल सभामांहे, प्रवचन महिमा अपार रे ॥ श्रुत० ॥५॥
भणे भणावे सिद्धांतने, लखे लखावे जेह रे ॥
तस अवतार वखाणीए,विजय लक्ष्मी गुण गेह रे ॥श्रुत०॥६॥

॥ इति स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण दइ इच्छाकारेण

॥ अथ पीठिका ॥

पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाणी ॥
पुजो बहु विध रागथी, चरण कमळ चित्त आणी. ३॥१॥खमा०
॥ ए दोहो गुण गुण दीठ कहेवो ॥
कर पल्लव चेष्टादिके, लखे अंतर्गत वाच ॥
एह अनक्षर श्रुततणो, अर्थ प्रकाशक साच. ४ ॥ पव० ॥ २ ॥
संज्ञा जे दीहकालिकी, तेणे सन्निया जाण ॥
मन इंद्रियथी उपन्युं, संज्ञी श्रुत अहिठाण. ५ ॥ पव० ॥ ३ ॥
मन रहित इंद्रियथकी, निपन्युं जेहने ज्ञान ॥
क्षय उपशम आवरणथी, श्रुत असंज्ञी वखाण. ६ ॥ पव० ॥ ४ ॥
जे दर्शन दर्शन विना; दर्शन ते मतिपक्ष ॥
दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्ष.
ललित त्रिभंगी भंगभर, नैगमादि नय भूर ॥
शुद्ध शुद्धतर वचनथी, समकित श्रुत वडनूर. ८ ॥ पव० ॥ ५ ॥
भंग जाल नर बाल मति, रचे विविध आयास ॥
तिहां दर्शन दर्शनतणो, नहीं निदर्शन भास. ९ ॥
सद् असद् वहेंचण विना, ग्रहे एकांते पक्ष ॥
ज्ञान फल पामे नहीं, ए मिथ्या श्रुत लक्ष. १० ॥ पव० ॥ ६ ॥
भरतादिक दश क्षेत्रमां, आदि सहित श्रुत धार ॥
निज निज गणधर विरचियो, पामी प्रभु आधार. ११ ॥पव०॥७ ॥
दुप्पसह सूरीश्वर सुधी, वर्तशे श्रुत आचार ॥

एक जीवने आश्री, सादि सांत सुविचार. १२ ॥ पव० ॥ ८ ॥
श्रुत अनादि द्रव्यनयथकी; शाश्वत भाव छे एह ॥
महाविदेहमां ते सदा, आगम रयण अछेह. १३ ॥ पव० ॥ ९ ॥
अनेक जीवने आश्री, श्रुत छे अनादि अनंत ॥
द्रव्यादिक चउ भेदना, सादि अनादि विरतंत. १४॥ पव०॥१०॥
सरिखा पाठ छे सूत्रमां, ते श्रुत गमिक सिद्धांत ॥
प्राये दृष्टिवादमां, शोभित गुण अनेकांत. १५ ॥ पव० ॥ ११ ॥
सरिखा आलावा नहि, ते कालिक श्रुतवंत ॥
अगमिक श्रुत ए पूजीए, त्रिकरण योग हसंत. १६ ॥ पव०॥१२॥
अढार हजार पदे करी, आचारांग वखाण ॥
ते आगल दुगुणा पदे, अंगप्रविष्ट सुजाण. १७ ॥ पव० ॥१३॥
बार उपांगह जेह छे, अंगबाहिर श्रुत तेह ॥
अनंगप्रविष्ट वखाणीए, श्रुत लक्ष्मीसूरि गेह. १८ ॥ पव० ॥१४॥

सातमा ने नवमा दुहा वखते खमासमण न देवां.

॥ इति श्रुत ज्ञान समाप्तं ॥

॥ अथ तृतीय श्री अवधि ज्ञान चैत्यवंदन ॥

खमासमण दइ, इच्छा० अवधिज्ञान आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते नीचे प्रमाणे:—

अवधिज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आत्मप्रत्यक्ष ।
क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥

देव निरय भव पावतां, होय तेहने अवश्य ।
श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभंग वश्य ॥
नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम संयोग ।
काउस्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघटयो ते उपयोग ॥ १ ॥
जघन्यथी जाणे जुए, रूपी द्रव्य अनंता ।
उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्त्ति वस्तु मुणता ॥
क्षेत्रथी लघु अंगुलतणो, भाग असंखित देखे ।
तेहमां पुद्गल खंध जे, तेहने जाणे पेखे ॥
लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंड असंख्य उक्किट्ठ ।
भाग असंख्य आवलितणो, अद्धा लघुपणे दीठ ॥ २ ॥
उत्सर्पिणी अवसर्पिणीए, अतीत अनागत अद्धा ।
अतिशय संख्यातिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥
एक एक द्रव्यमां चार भाव, जघन्यथी ते निरखे ।
असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥
चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ।
विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥ ३ ॥

॥ इति चैत्यवंदन समाप्त. ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं, ते कहे छे.

हरि पाठक संशय संहरु, वीर महिमा ज्ञान गुणागरु ।
ते माटे प्रभुजी विश्वंभरु, विजयांकित लक्ष्मी सुहंकरु ॥ १ ॥
॥ इति स्तुति. ॥

पछी खमासमण दइ उभा रही अवधिज्ञानना गुण वर्णववाने अर्थे दुहा कहेवा ते कहे छे.

॥ दुहा ॥

असंख्य भेद अवधितणा, षट् तेहमां सामान्य ॥
क्षेत्र पनक लघुथी गुरु, लोक असंख्य प्रमाण ॥ १ ॥
लोचनपरे साथे रहे, ते अनुगामिक धाम ॥
छासठ सागर अधिक छे, एक जीव आश्री ठाम ॥ २ ॥
उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार ॥
वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहे सो वार. ३. ॥ १ ॥ ख० ॥
श्रीजो दुहो सर्व खमासमणे कहेवो. ॥
जेह क्षेत्रे ओहि उपन्युं, तिहां रह्यो वस्तु देखंत ॥
थीर दीपकनी उपमा, अननुगामी लहंत. ४. ॥उप०॥२॥ख०
अंगुल असंख्येय भागथी, वधतुं लोक असंख्य ॥
लोकावधि परमावधि, वर्धमान गुण कंख्य. ५,॥उप०॥३॥ख०॥
योग्य सामग्री अभावथी, हीयमान परिणाम ॥
अध अध पुरव योगथी, एहवो मननो काम. ६.॥उप०॥४॥ख०॥
संख्य असंख्य जोजन सुधी, उत्कृष्टो लोकांत ॥
देखी प्रतिपाती होवे, पुद्गल द्रव्य एकांत. ७॥उप०॥५॥

एक प्रदेश अलोकनो, पेले जे अवधि नाण ॥
अपडिवाइ अनुक्रमे, आपे केवल नाण. ८.॥ ॥उप०॥६०॥
॥ इति अवधि ज्ञान संपूर्ण. ॥



खमासमण दइ इच्छा० मनपर्यव ज्ञान आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते आ प्रमाणे—

॥ अथ चतुर्थ श्री मनःपर्यवज्ञान चैत्यवंदन ॥

श्रीमनपर्यव ज्ञान छे, गुण प्रत्ययी ए जाणो ।
अप्रमादी ऋद्धिवंतने, होय संयम गुणठाणो ॥
कोइक चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ।
मनना भाव जाणे सही, साकार उपयोग ठामे ॥
चिंतवता मनोद्रव्यना, जाणे खंध अनंता ।
आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि मुणंता ॥ १ ॥
संज्ञि पंचेंद्रिय प्राणीए, तनु योगे करी ग्रहीया ।
मनयोगे करी मनपणे, परिणमे ते द्रव्य मुणिया ॥
तिरछुं माणस क्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ।
तिर्छा लोकना मध्यथी, सहस जोयण अधोलोके ॥
उरध जाणे ज्योतिषी लगे, पलियनो भाग असंख्य ।
कालथी भाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ २ ॥
भावथी चिंतित द्रव्यना, असंख्य पर्याय जाणे ।

ऋजुमतिथी विपुलमति, अधिका भाव वखाणे ॥
मनना पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे सांचुं ।
वितथपणुं पामे नहीं, ते ज्ञाने चित्त राच्युं ॥
अमूर्त भाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री भगवंत ।
चरण कमल नमुं तेहनां, विजय लक्ष्मी गुणवंत ॥ ३ ॥

॥ इति चैत्यवंदन ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहीए ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन ॥

॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥

जीरे मारे श्री जिनवर भगवान,
अरिहंत निज निज ज्ञानथी ॥ ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ संयम समय जाणंत,
तव लोकांतिक मानथी ॥ जीरेजी ॥ १ ॥
जी० ॥ तीर्थ वर्तावो नाथ,
इम कही प्रणमे ते सुरा ॥ जीरेजी ॥
जी० षट् अतिशयवंत दान,
लेइने हरखे सुर नरा ॥ जीरेजी ॥ २ ॥
जी० ॥ इण विध सवि अरिहंत,
सर्व विरति जब उचरे ॥ जीरेजी ॥
जी० ॥ मनःपर्यव तव नाण

छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहां लगे, योगासन तपधारीजी ॥
चोथुं मनपर्यव तत्र पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ।
ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजय लक्ष्मी सुखकारी जी ॥ १ ॥

॥ इति स्तुति ॥

पछी खमासमण दइ उभा रही मनःपर्यवज्ञानना गुण स्तववा अर्थे दुहा कहेवा ते आ प्रमाणे—

मनःपर्यव दुग भेदथी, संयम गुण लही शुद्ध ॥
भाव मनोगत संज्ञिना, जाणे प्रगट विशुद्ध ॥ १ ॥
घट ए पुरुषे घारीयो, इम सामान्य ग्रहंत ॥
माये विशेष विमुख लहे, ऋजुमति मनह मुणंत ॥ २ ॥
ए गुण जेहने उपन्यो, सर्व विरति गुणठाण ॥
प्रणमुं हितथी तेहना, चरणकमल चित्त आणखमा०॥३॥१ख०॥
नगर जाति कंचनतणो, धार्यो घट एह रूप ॥
इम विशेष मन जाणतो, विपुलमति अनुरूप.४॥ए गुण०॥२॥ख.॥

॥ इति मनःपर्यव ज्ञान संपूर्ण ॥

खमासमण दइ इच्छा० केवलज्ञान आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ?

इच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते आ प्रमाणेः—

श्रीजिन चउनाणी थइ, शुक्ल ध्यान अभ्यासे ।
अतिशय अतिशय आत्मरूप, क्षण क्षण प्रकासे ॥
निद्रा स्वप्न जागरदशा, ते सवि दूरे होवे ।

चोथी उजामर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥
क्षपक श्रेणि आरोहियाए, अपूर्व शक्ति संयोगे ।
लही गुणठाणुं बारमुं, तुर्य कषाय वियोगे. ॥ १ ॥
नाण दंसण आवरण मोह, अंतराय घन घाति ।
कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाति ॥
होय धर्म सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ।
प्रथम विशेषपणे ग्रहे, बीजे सामान्य संयोग ॥
सादि अनंत भागे करी, दर्शन ज्ञान अनंत ।
गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत. ॥ २ ॥
मूल पयडीमां एक बंध, सत्ता उदये चार ।
उत्तर पयडीनो एक बंध, उदय रहे बायाल ॥
सत्ता पंचाशीतणी, कर्म जेहवा रज्जु छार ।
मन वच काया योग जास. अविचल अविकार ॥
सयोगी केवलीतणी ए, पामी दशाए विचरे ।
अक्षय केवलज्ञानना, विजय लक्ष्मी गुण उचरे ॥ ३ ॥

॥इति श्री केवल ज्ञ न चैत्यवंदन ॥

पछी नमुथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत् ॥ कही स्तवन कहेवुं ते आ प्रमाणे—

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

श्रीजिनवरने प्रगट थयुं रे, क्षायिक भावे ज्ञान ॥

दोष अढार अभावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाणरे ॥
भविया ! वंदो केवल ज्ञान ॥ १ ॥
पंचमी दिन गुण खाण रे ॥ भविया वंदो० ॥ ए आंकणी ॥
अनामीना नामनो रे, किश्यो विशेष कहेवाय ॥
ए तो मध्यमा वैखरी रे, वचन उल्लेख ठराय रे ॥भ०॥ वंदो०॥२॥
ध्यान टाणे प्रभु तुं होय रे, अलख अगोचर रूप ॥
परा पश्यंती पामीने रे, कांइ प्रमाणे मुनिभूपरे ॥भ०॥ वंदो० ॥३॥
छती पर्याय जे ज्ञानना रे, ते तो नवि बदलाय ॥
ज्ञेयनी नवनवी वर्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे ॥ भ०॥वंदो०॥४॥
बीजा ज्ञानतणी प्रभा रे, एहमां सर्व समाय ॥
रविप्रभाथी अधिक नहीं रे, नक्षत्र गण समुदाय रे ॥भ०॥वंदो०॥५॥
गुण अनंता ज्ञानना रे, जाणे धन्य नर तेह ॥
विजय लक्ष्मी सूरि ते लहे रे, ज्ञान महोदय गेह रे॥भ०॥वंदो०॥६॥

इति केवलज्ञान स्तवन ॥

पछी जयवीयराय कही खमासमण दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री केवलज्ञान आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणव० ॥ अन्नथ्थ० ॥ एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हद० कही थोय कहेवी ते आ प्रमाणे—

॥ अथ थोय ॥

॥ प्रह ऊठी वंदू ॥ ए देशी ॥

छत्र त्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ।

अथ श्री पद्म विजयजी विरचित

कार्तीक सुद १४ चौमासी देववंदन प्रारंभः



बार मासनी अंदर त्रण चौमासी आवे छे कार्तिक सुद १४ फागण सुद १४ अषाड सुद १४ तथा छ अठ्ठाइओ आवे छे. तेमां त्रण चोमासानी त्रण अठ्ठाइ ते एक कार्तिक सुद ७ थी १५ बीजी फागण सुद ७ थी १५ त्रीजी अशाड सुद ७ थी १५ चोथी पर्युषण पर्वनी अठ्ठाइ श्रावण वद १२ थी भादरवा सुद ४–पांचमी चैत्र सुद ७ थी १५ छठी आसो सुद ७ थी १५ चैत्री तथा आसोनी बे अठ्ठाइओ तो शाश्वती छे एम छ अठ्ठाइ कही छे ते दिवसोमां सचित्तनो त्याग वनस्पतिनो त्याग. ब्रह्मचर्य अमारि पडह. तप. जीन पूजा गुरुवंदन व्याख्यानश्रवण सामायक. पोषध अतिथि संविभागादिक नियमो विगेरे धर्म करणी अवश्यक विशेषे करीने करवी जोइये अषाड चोमासुं बेठुं के साधु आदिकनो विहार बंध थइ एक ठेकाणे स्थीत रहेवामां आवे छे अने ते कार्तीक सुद १४ पूर्ण थया पछी विहार करवानी छुटी थाय छे तथा तेनो काळ आ प्रमाणे छे.

पाणीनो काळ चार पहोरनो थाय छे. सुखडीनो काळ एक मासनो कामळीनो काळ चार घडीनो पछी पात्रा उपरना चार जोइए तेम चौमासामां साधुओए जे जे वस्तु पाट पाटला विगेरे गृहस्थो पासेथी लीधेलुं होय ते पाछुं सोंपी देवामां आवे छे विगेरे

अथ श्री पद्म विजयजी विरचित

कार्तीक सुद १४ चौमासी देववंदन प्रारंभः



बार मासनी अंदर त्रण चौमासी आवे छे कार्तिक सुद १४ फागण सुद १४ अषाड सुद १४ तथा छ अठाइओ आवे छे. तेमां त्रण चोमासानी त्रण अट्ठाइ ते एक कार्तिक सुद ७ थी १५ बीजी फागण सुद ७ थी १५ त्रीजी अशाड सुद ७ थी १५ चोथी पर्युषण पर्वनी अट्ठाइ श्रावण वद १२ थी भादरवा सुद ४–पांचमी चैत्र सुद ७ थी १५ छठी आसो सुद ७ थी १५ चैत्री तथा आसोनी बे अट्ठाइओ तो शाश्वती छे एम छ अट्ठाइ कही छे ते दिवसोमां सचित्तनो त्याग वनस्पतिनो त्याग. ब्रह्मचर्य अमारि पडह. तप. जीन पूजा गुरुवंदन व्याख्यानश्रवण सामायक. पोषध अतिथि संविभागादिक नियमो विगेरे धर्म करणी अवश्यक विशेषे करीने करवी जोइये अषाड चोमासुं बेठुं के साधु आदिकनो विहार बंध थइ एक ठेकाणे स्थीत रहेवामां आवे छे अने ते कार्तीक सुद १४ पूर्ण थया पछी विहार करवानी छुटी थाय छे तथा तेनो काळ आ प्रमाणे छे.

पाणीनो काळ चार पहोरनो थाय छे. सुखडीनो काळ एक मासनो कामळीनो काळ चार घडीनो पल्ला पात्रा उपरना चार जोइए तेम चौमासामां साधुओए जे जे वस्तु पाट पाटला विगेरे गृहस्थो पासेथी लीधेलुं होय ते पाछुं सोंपी देवामां आवे छे विगेरे

हवे तेमां प्रथम कार्तिक सुद १४ उपवासादिक तप करी पोषधादिक अंगीकार करीने चौमासी देव वांदवां जोइए ते नीचे प्रमाणे.

प्रथम विधिनो प्रकार आ रीते–प्रथम इरियावहियं पडिक्कमी, खमा० दइने इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करु ? इच्छं, कहीने चैत्यवंदन बोलवुं ते आ नीचे लखीये छीए.

॥ तत्र प्रथम आदिजिन चैत्यवंदन ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंडन, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोटि सेवित॥ न० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहनिश ॥ न० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधित, कोडि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ न० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंत ए गिरिवरं ॥ मुगति रमणि वर्या रंगे ॥ न० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोक मांहे विमल गिरिवर तोपरं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ न० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइए ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योतिने पाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परम पद स्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥

(पछी ' नमुत्थुणं ' कही (जावंति विगेरे कहेवुं नहि) अर्धा ' जयवीयराय ' कही खमा० दइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ?

ऋषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कही आ चैत्यवंदन कहेवुं.

॥ अथ श्री ऋषभ जिन नमस्कार (चैत्यवंदन)

आदि देव अलवेसरु, विनीतानो राय ॥ नाभिराय कुल मंडणो, मरुदेवा माय ॥ १ ॥ पांचशे धनुषनी देहडी, प्रभु परम दयाल ॥ चोराशी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ॥ २ ॥ वृषभ लंछन जिन वृषधरुए, उत्तम गुण मणि खाण ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, लहीए अविचल ठाण ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं, अरिहंतचेइआणं, अन्नत्थ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, नमोर्हत्० कही थोय कहेवी ते आ—

॥ अथ चार थोयो प्रारभ्यते ॥

आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया ॥ मरुदेवी माया, धोरी लंछनपाया ॥ जगत थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया ॥ केवल सिरिराया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥–पछी लोगस्स, सव्व लोए, अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० पछी थोय कहेवी ते आ–सविजिन–सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी ॥ दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी ॥ नमीये नर नारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ पछी पुक्खर वरदी० सुअस्स भग० अन्नत्थ० एक नवकार काउ० पारीने थोय कहेवी—

समो सरणे बेठा, लागे जे जिनजी मीठा ॥ करे गणप पइठा,

इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरिष्ठा गुंथतां टाले रिष्ठा ॥ भविजन होय हि (जि)ट्ठा, देखी पुण्ये गरिष्ठा ॥ ३ ॥

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च०अन्नत्थ० एक नवकारकाउ० करी, पारीने नमोर्हत्० कही आ थोय बोलवी—

सुर समकित वंता, जेह रुद्धे महंता ॥ जेह सज्जन संता, टालीये मुज चिंता ॥ जिनवर सेवंता विघ्न वारो दुरंता ॥ जिन उत्तम थुणंता, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥ पछी बेसीने नमुत्थुणं, जावंतिचेइ० खमा० जावंतकेवि० नमोर्हत्० कही स्तवन कहेवुं ते आ—

॥ अथ स्तवनं प्रारभ्यते ॥

॥ सोनाते केरुं म्हारुं बेडलुं मारुजी, वाव्य खोदाव ॥ ए देशी ॥

प्रथम जिणेसर प्रणमीये, जास सुगंधीरे काय ॥ कल्पवृक्ष परे तास, इंद्राणी नयन जे, भृंग परे लपटाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे, जगमां तुम शुं रे वाद ॥ २ ॥ विगर धोइ तुज निरमली, काया कंचन वान ॥ नहिं प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने जे धरे ताहरुं ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मन थकी तेमां चित्र न कोइ॥ रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जनमथी, दुध सहोदर होय॥४॥ श्वासोश्वास कमल समो. तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार निहार, चरम चक्षु धणी एहवा तुज अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिशय मूलथी, ओगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार, चोत्रीश

एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥ ६ ॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एह समय, प्रभु पाळजो, जिम थाउं अखय अभंग ॥ ७ ॥ इति ॥

पछी अर्धा (आ भवमखंडा सुधी) जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री अजितनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कहीने आ बोलवुं—

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

अजितनाथ प्रभु अवतर्या, विनितानो स्वामी ॥ जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिव गामी ॥ १ ॥ बहोतेर लाख पूरव तणुं, पाल्यु जिणे आय ॥ गजलंछन लंछन नहि, प्रणमे सुरराय ॥ साडा चारशे धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह ॥ पाद पद्म तस प्रणमीये, जिम लहीये शिव गेह ॥ १ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० कही एक नवकारनो काउ० करी पारी नमोर्हत्० कही थोय कहेवी-ते आ—

विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो, शीतलताए चंदो, धीरताए गिरिंदो ॥ मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरींदो, लहो परमाणंदो, सेवना सुख कंदो ॥ १ ॥

पछी उभा उभा अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री संभवनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं.

संवर सुत साचो, जास स्यादवाद वाचो, थयो हीरो जाचो, मोहने देइ तमाचो, प्रभु गुण गण माचो, एहने ध्याने राचो, जिन पद सुख साचो, भव्य प्राणी निकाचो ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने ज अर्धा जयवीयराय० कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री सुमतिनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ कहेवुं—

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन. ॥

सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसला जस नयरी ॥ मेघराय मंगला तणो, नंदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रौंच लंछन जिन राजियो, त्रणशे धनुपनी देह ॥ चालीश लाख पूरव तणुं, आयु अति गुण गेह॥२॥ सुमति गुणे करी जे भर्यो ए, तर्यो संसार अगाध ॥ तस पद पद्म सेवा थकी, लहो सुख अव्याबाध ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० पारी नमोर्हत० कही थोय कहेवी ते आ—

सुमति सुमति दाइ, मंगला जास माइ ॥ मेरुने, राइ, ओर एहने तुलाइ ॥ क्षय कीधा घाइ, केवलज्ञान पाइ, ॥नहिं ऊणिम कांइ, सेवियें ए सदाई ॥ १ ॥ इति.

पछी उभा रहीने ज अर्धा जयवीयराय कहेवा. खमा० इच्छा० श्री पद्मप्रभ जिन आराधनार्थं चैत्य० करुं ? इच्छं, कही चैत्यवंदन कहेवुं ते आ—

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

कोसंबीपुर राजियो, धर नरपति ताय ॥ पद्म प्रभ प्रभुतामयी, सुसिमा जस माय ॥ त्रीश लाख पूरव तणुं, जिन आयु पाली ॥ धनुष अढीसें देहडी, सवि कर्मने टाली ॥ २ ॥ पद्म लंछन परमेश्वरुए, जिन पद पद्मनी सेव ॥ पद्मविजय कहे कीजिए, भविजन सहु नितमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी पारी नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

अढीशे धनुष काया, त्यक्त मद मोह माया, सुसिमा जस माया, शुकल जे ध्यान ध्याया ॥ केवल वर पाया, चामरादि धराया, सेवे सुर राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा उभा–जयवीयराय अर्धा कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री सुपासजिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? ईच्छं कही चैत्यवंदन कहेवुं ते आ—

॥ अथ श्री सुपासजिन चैत्यवंदन ॥

श्री सुपास जिणंद पास, टाल्यो भव फेरो ॥ पृथिवी मात उरे जयो, ते नाथ हमेरो ॥ १ ॥ प्रतिष्ठित सुत सुंदरु, वाणारसी राय ॥ वीश लाख पूरव तणुं, प्रभुजीनुं आय ॥ २ ॥ धनुष बसो जिन देहडी, स्वस्तिक लंछन सार ॥ पद पद्मे जस राजतो, तार तार भव तार ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० एक नवकार काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

सुपास जिन वाणी, सांभळे जेह प्राणी, हृदये पहचाणी, ते तर्या भव्य प्राणी ॥ पांत्रीश गुण खाणी, सूत्रमां जे गुंथाणी, षट्-द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं घाणी ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने ज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री चद्रप्रभ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन बोलवुं—

॥ अथ श्री चंद्रप्रभ चैत्यवंदन ॥

लक्ष्मणा माता जनमीयो, महसेन जस ताय ॥ उडुपति लंछन दीपतो, चंद्रपुरीनो राय ॥ १ ॥ दश लख पूरव आउखु, दोढशो धनुषनी देह ॥ सुर नरपति सेवा करे, धरता अतिसे स्नेह ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ जिन आठमा ए, उत्तम पद दातार ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीये, मुज प्रभु पार उतार ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नव० काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

सेवे सुर वृंदा, जास चरणारविंदा, अट्ठम जिन चंदा, चंद वर्णे सोहंदा ॥ महसेन नृप नंदा, कापता दुःख दंदा ॥ लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने ज अर्धा जयवीयराय० कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री सुविधिनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ कहेवुं—

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

सुविधिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात ॥ मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रुडी मात ॥ १ ॥ आयु बे लाख पूरव तणुं, शत धनुपनी काय ॥ काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभु पाय ॥२॥ उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधि जिन नाम ॥ नमतां तस पद पद्मने, लहीये शाश्वत धाम ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नव० काउ० पारी नमोऽर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

नरदेवो भाव देवो, जेहनी सारे सेवो, जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो, जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो, सुविधि जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा उभाज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री शीतलनाथ आराधनार्थं चैत्य० करुं इच्छं कही आ कहेवुं.

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

नंदा दृढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ ॥ राजा भद्दिलपुर तणो, चलवे शिवसाथ ॥ १ ॥ लाख पूरवनुं आउखुं, नेवु धनुष प्रमाण ॥ काया माया टालीने, लह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्री वत्स लंछन सुंदरु ए, पद पद्मे रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकी, लहीये लील विलास ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंतचेइ० अन्नत्थ एक नवकारनो काउ० पारी नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी.

शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी, प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी ॥ जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी, भवि शिवसुख कामी, प्रणमीये शीश नामी ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने ज जयवीयराय० अर्धा कहेवा.

खमा० इच्छा श्री श्रेयांसनाथ आराधनार्थ चैत्य० करु ? इच्छं कही आ चैत्यवंदन करवुं.

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

श्री श्रेयांस अग्यारमां, विष्णु नृप ताय ॥ विष्णु माता जेहनी, एंशी धनुपनी काय ॥ १ ॥ वरस चोराशी लाखनुं, पाल्युं जेणे आय ॥ खड्गी लंछन पद कजे, सिंहपुरीनो राय ॥ २ ॥ राज्य तजी दीक्षा वरीए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंतचेइ० अन्नत्थ० नव० काउ० करी-पारी नमोर्हत० कही आ थोय कहेवी.

विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात, प्रभुना अवदात, तीन भुवने विख्यात ॥ सुरपति संघात, जास निकटे आयात; करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष सात ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने ज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री वासुपूज्य जिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, एम कही आ चैत्य वंदन कहेवुं.

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवंदन. ॥

वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम ॥ वसुपूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष लंछन जिन बारमा, सित्तेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोत्तेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तसमुख पद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० काउ० १ नवकारनो करी पारी नमोर्हत्० कही नीचे मुजब थोय कहेवी.

विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी ॥ धर्मना दातारी, काम क्रोधादि वारी ॥ तार्या नर नारी, दुःख दोहग हारी ॥ वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्यवारी ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीनेज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा०इच्छा० श्रीविमलनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं इच्छं० कही आ कहेवुं.

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन. ॥

कंपिलपुर विमल प्रभु, स्यामा मात मल्हार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभे, ऊगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ लाख वरसां तणुं, आयु सुखदाय ॥ २ ॥ विमल विमल पोते थया ए, सेवक विमल करेह ॥ तुजपद पद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० १ नवकारनो काउ० नमोऽर्हत् कही आ थोय कहेवी.

विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो ॥ श्यामा मल्हारो, विश्व कीर्त्ति विकारो ॥ योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो ॥ गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री अनंतनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही नीचे मुजब कहेवुं.

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन. ॥

अनंत अनंत गुण आगरु, अयोध्या वासी ॥ सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा माता जनमीयो, त्रीस लाख उदार ॥ वरस आवखुं पालीयुं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंछन सींचाणा तणुं ए, काया धनुष पचास ॥ जिनपद पद्म नम्या थकी, लहिये सहज विलास ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कही १ नवकारनो काउ० करी पारी नमोऽर्हत् कहीने आ थोय कहेवी.

अनंत अनंतनाणी, जास महिमा गवाणी ॥ सुरनर तिरि प्राणी, सांभळे जास वाणी ॥ एक वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी तर्या ते गुण खाणी, पामीया सिद्धि राणी ॥ १ ॥ इति ॥ पछी उभा रही अर्धा जयवीयराय कहेवा०

खमा० इच्छा० श्री धर्मनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं.

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन. ॥

भानु नंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली माता ॥ वज्रा लंछन वज्र नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनु पीस्तालीस ॥ रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश ॥२॥ धर्म मारग जिनवर कहीए, उत्तम जन आधार ॥ तेणे तुज पाद पद्म तणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० नमोऽर्हत् कही नीचेनी थोय कहेवी.

धरम धरम धोरी, कर्मना पास तोरी ॥ केवल श्री जोरी, जेह चोरे न चोरी ॥ दर्शनी मदछोरी, जाय भागा सटोरी ॥ नमे सुरनर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी ॥ १ ॥ इति ॥

पछी अर्धा जयवीयराय० उभा रहीनेज कहेवा.

खमा० ईच्छा० श्री शांतिनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन करवुं.

॥ अथ श्री शांतिजिन चैत्यवंदन. ॥

शांति जिनेसर सोलमा, अचिरा सुत वंदो ॥ विश्वसेन कुल नभ मणि, भविजन सुख कंदो ॥ १ ॥ मृग लंछन जिन आवखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हथिणा उर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण ॥ २ ॥ चालीश धनुषनी देहडीए, सम चउरस संठाण ॥ वदन पद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० १ नवकारनो काउ० करी, पारी० नमोऽर्हत्० करी थोय कहेवी ते आ—

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

वंदो जिन शांति,जास सोवन कांति ॥ टाले भव भांति, मोह मिथ्यात्व शांति ॥ द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति, धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥ १ ॥ पछी लोगस्स (मकट) सव्वलोए० अन्नत्थ० १ नव० काउ० कहीने नीचेनी थोय कहेवी.

दोय जिनवर नीला, दोय धोला सुशीला, दोय रक्त रंगीला, काढता कर्म कीला ॥ न करे कोइ हीला,दोय श्याम सलीला, सोल स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २ ॥

पछी पुख्खरवरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करीने आ थोय कहेवी—

जिनवरनी वाणी, मोहवल्ली कृपाणी, सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी ॥ अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी ॥ प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशाणी ॥ ३ ॥

पछी सिद्धाणं बुद्धाणं०वेयावच्च० अन्नत्थ० १ नव० काउ० री पारी नमोऽर्हत्० कही आ थोय कहेवी.—

वाघेसरी देवी, हर्ष हियडे धरेवी, जिनवर पय सेवी, सार द्धा वरेवी ॥ जे नित्य समरेवी, दुःख तेहनां हरेवी, पद्म विजय हेवी, भव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

खमा० पछी नमुत्थुणं० जावंति चेइ० जावंत केवि० नमोर्हत्० हो नीचेनुं स्तवन कहेवुं—

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवन ॥

॥ गरवो कोणेने कोराव्यो के नंदजीना लाल रे ॥

॥ ए देशी ॥

सोलमा शांति जिनेसर देवके, अचिराना नंदरे ॥ जेहनी सारे सुरपति सेवके ॥ अ० ॥ तिरि नर सुर सहु समुदायके ॥ अ० ॥ एक योजन मांहे समाय के ॥ अ० ॥ १ ॥ तेहने प्रभुजीनी वाणीके ॥ अ० ॥ परिणमे समजे भवि प्राणीके ॥ अ० ॥ सहु जीवना संशय भांजेके ॥ अ० ॥ प्रभु मेघध्वनि एम गाजेके ॥ अ० ॥ २ ॥ जेहने जोयण सवासो माने के ॥ अ० ॥ जे पूर्वना रोग तेणे थानके ॥ अ० ॥ सविनाश थाये नवा नावे के ॥अ०॥ षट मास प्रभु परभावे के ॥ अ० ॥ ३ ॥ जिहां जिनजी विचरे रंग के ॥ अ० ॥ नवि मुषक शलभ पतंग के ॥ अ० ॥ नवि कोइने वयर विरोध के ॥ अति वृष्टि अना वृष्टि रोध के ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिन परचक्रनो भय नासे के ॥ अ० ॥ वली मरकी नावे पासे के ॥ अ० ॥ प्रभु विचरे तिहां न दुकाल के ॥ अ० ॥ जाये उप-द्रव तत्काल के ॥ अ० ॥ ५ ॥ जस मस्तक पूंठे राजे के ॥ लाख रस [illegible]मंडल रविपरे छाजे के ॥ अ० ॥ कर्म क्षयथी अति-शय [illegible] अ० ॥ [illegible] ॥ अ० ॥ मानुं योग्य साम्राज्य परिवार के ॥ [illegible] अगीयार के ॥ अ० ॥ ६ ॥ कय देखुं भाव ए भावे के ॥ अ० ॥ एम हीर धर्मी [illegible] भावे के ॥ अ० ॥ श्री जिन उत्तम परभावे के ॥ अ० ॥ पद्म

पद्म विजय वनी आवे के ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ पछी अर्धा जय-वीयराय० कहेवा—

खमा० इच्छा० श्री कुंथुनाथ आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कहीने आ कहेवुं.

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्य वंदन प्रारंभ ॥

कुंथुनाथ कामित दीये, गजपुरनो राय ॥ सिरि माता उरे अवतर्यो, शूर नरपति ताय ॥ १ ॥ काया पांत्रीश धनुपनी, लंछन जस छाग ॥ केवल ज्ञानादिक गुणा, प्रणमो धरी राग ॥ २ ॥ सहस पंचाणुं वरसनुं ए, पाली उत्तम आय ॥ पद्म विजय कहे पणमीये, भावे श्री जिनराय ॥ ३ ॥ पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० नमोर्हत्० करीने आ थोय कहेवी—

कुंथुजिन नाथ, जे करे छे सनाथ, तारे भव पाथ, जे ग्रही भव्य हाथ ॥ एहनो तजे साथ, बावले दीये बाथ ॥ तरे सुर नर साथ, जे सुणे एक गाथ ॥

पछी उभा रहीनेज अर्धा जयवीयराय० कहेवा—

खमा० इच्छा० श्री अरनाथ आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ बोलवुं—

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन. ॥

नागपुरे अर जिनवरु, सुदर्शन नृप नंद ॥ देवी माता जनमीयो भवि जन सुख कंद ॥१॥ लंछन नंद्यावर्तनं काया ...

आण जिननी न क्रमीये ॥ भवमां नवि भमीये, सर्व परभाव वमीये ॥ निज गुणनां रमीये, कर्म मल सर्व धमीये ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीनेज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री मुनिसुव्रतजीन आराधनार्थे चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कहीने नीचे मुजब कहेवुं.

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन ॥ पद्मा माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन ॥ १ ॥ राजगृही नगरी धणी, वीश धनुप शरीर ॥ कर्म निकाचित रेणु व्रज, उद्दाम समीर ॥ २ ॥ त्रीश हजार वरस तणुं ए, पाली आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति

पछी नमुत्थुणं अरिहंतचेइ० अन्नत्थ एक नवकारनो काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी.

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे ॥ सवि संपत्ति पामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे ॥ सवि कर्म विरामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने जयवीयराय अर्धा कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री नमिनाथ जिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कहीने आ कहेवुं—

॥ सहस चोराशी वरसनुं, आय जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज जिनवरु ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पद पद्म आलंबतां, लहीए पद निरवाण ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कही एक नवकारनो काउ० करी, पारी नमोर्हत्० कही थोय कहेवी ते आ—

अर जिनवर राया, जेहनी देवी माया, सुदर्शन नृप ताया, जास सुवर्ण काया ॥ नंद्यावर्त पाया, देशना शुद्ध दाया, समवसरण विरचाया, इंद्र इंद्राणी गाया ॥ इति ॥

पछी ऊभा ऊभाज अर्धा जयवीयराय० कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री मल्लिनाथ आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ कहेवुं—

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

मल्लिनाथ ओगणीसमा, जस मिथिला नयरी ॥ प्रभावती जस मावडी, टाले कर्म वयरी ॥ १ ॥ तात श्री कुंभ नरेसरु, धनुष पचवीसनी काय ॥ लंछन कलश मंगलकरु, निरम निरमाय ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ पद्मविजय कहे तेहने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

मल्लिजिन नमीये, पूरवलां पाप गमीये, इंद्रिय गण दमीये,

आण जिननी न क्रमीये ॥ भवमां नवि भमीये, सर्व परभाव चमीये ॥ निज गुणमां रमीये, कर्म मल सर्व धमीये ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीनेज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री मुनिसुव्रतजीन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कहीने नीचे मुजब कहेवुं.

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

मुनिसुव्रत जिन वीशमा, कच्छपनुं लंछन ॥ पद्मा माता जेहनी, सुमित्र नृप नंदन ॥ १ ॥ राजगृही नगरी धणी, वीश धनुप शरीर ॥ कर्म निकाचित रेणु व्रज, उद्दाम समीर ॥ २ ॥ त्रीश हजार वरस तणुं ए, पाली आयु उदार ॥ पद्मविजय कहे शिव लह्या, शाश्वत सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति

पछी नमुत्थुणं अरिहंतचेइ० अन्नत्थ एक नवकारनो काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी.

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे ॥ सवि संपत्ति पामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे ॥ सवि कर्म विरामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीने जयवीयराय अर्धा कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री नमिनाथ जिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं कहीने आ कहेवुं—

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

मिथिला नयरी राजीयो, वप्रा सुत साचो ॥ विजयराय सुत, छोडीने, अवरां मत माचो ॥ १ ॥ नील कमल लंछन भलुं, पन्नर धनुषनी देह ॥ नमि जिनवरनुं सोहतुं, गुण गण मणि गेह ॥ २ ॥ दश हजार वरस तणुं ए, पाल्युं परगट आय ॥ पद्मविजय कहे पुण्यथी, नमिये ते जिनराय ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नव० काउ० नमोर्हत्० कही आ थोय कहेवी—

नमिये नमि नेह, पुण्य थाये ज्युं देह ॥ अघ समुदय जेह, ते रहे नाही रेह ॥ लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह ॥ लहे शिवपुर-गेह, कर्मनो आणी छेह ॥ १ ॥ इति ॥

पछी उभा रहीनेज अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री नेमीनाथ आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं—

नेमिनाथ बावीसमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्र विजय पृथिवी-पति, जे प्रभुना ताय ॥ १ ॥ दश धनुषनी देहडी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंछन धर स्वामीजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सौरीपुर नयरी भली ए, ब्रह्मचारी भगवान ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ०एक नवकारनो काउ० करी पारी, नमोर्हत्० कही नीचे मुजब थोय कहेवी.

राजुल वर नारी, रुपथी रति हारी ॥ तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी ॥ पशुआं उगारी, हूआ चारित्रधारी केवलश्री सारी, पामीया घाती वारी ॥ १ ॥

पछी प्रकट लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ एकनव० काउ० करी, नीचे मुजब थोय कहेवी.

त्रण ज्ञान संयुत्ता, मातनी कूखे हूंता ॥ जनमे पुरहूंता, आवी सेवा करंता ॥ अनुक्रमे व्रत करंता, पंच समिति धरंता ॥ महियल विचरंता केवलश्री वरंता ॥ २ ॥ पछी पुख्खरवरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० पारी नीचेनी थोय कहेवी.

सवि सुर वर आवे, भावना चित्त लावे ॥ त्रिगडुं सोहावे, देव छंदो बनावे ॥ सिंहासनठावे, स्वामिना गुण गावे ॥ तिहां जिनवर आवे, तत्व वाणी सुणावे ॥ ३॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० १ नव० काउ० पारी नमोर्हत्० कही थोय कहेवी ते आ.

शासन सुरी सारी, अंबिका नाम धारी ॥ जे समकिति नर नारी, पाप संताप वारी ॥ प्रभु सेवा कारी, जाप जपीये सवारी, संघ दुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी ॥ ४ ॥इति ॥

पछी नमुत्थुणं० जावंति० जावंतकेवि० नमोर्हत० कही आ स्तवन कहेवुं.

॥ अथ श्री नेमिजिन स्तवन ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा, जयवंताजी ॥ ए देशी ॥

निरखो नेमि जिणंदने, अरिहंताजी ॥ राजी मति कर्यो त्याग,

भगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो ॥ अ० ॥ अनुक्रमे थया वीतराग ॥ भ० ॥ १ ॥ चामर चक्र सिंहासन ॥ अ० ॥ पादपीठ संयुक्त ॥ भ० ॥ छत्र चाले आकाशमां ॥ अ० ॥ देवदुंदुभि वर उत्त ॥ भ० ॥ सहस जोयण ध्वज सोहतो ॥ अ० ॥ प्रभु आगल चालंत ॥ भ० ॥ कनक कमल नव उपरे ॥ अ० ॥ विचरे पाय ठवंत ॥ भ० ॥ ३ ॥ चार मुखे दीये देशना ॥ अ० ॥ त्रण गढ झाकझमाल ॥ भ० ॥ केश रोम श्मश्रु नखा ॥ अ० ॥ वाधे नहीं कोइ काल ॥ भ० ॥ ४ ॥ कांटा पण उंधा होय ॥ अ० ॥ पंचविषय अनुकुल ॥ भ० ॥ षट्ऋतु समकाले फले ॥ अ० ॥ वायु नहीं प्रतिकूल ॥ भ० ॥ ५ ॥ पाणी सुगंध सुर कुसुमनी ॥ अ० ॥ वृष्टि होय सुरसाल ॥ भ० ॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥ अ० ॥ वृक्ष नमे असराल ॥ भ० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पद पद्मनी ॥ अ० ॥ सेव करे सुर कोडी ॥ भ० ॥ ६ ॥ चार निकायना जघन्यथी ॥ अ० ॥ चैत्य वृक्ष तेम जोडी ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

पछी अर्धा जयवीयराय कहेवा ॥

खमा० इच्छा० श्री पार्श्वजिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं? इच्छं कही आ कहेवुं—

॥ अथ पार्श्वजिन चैत्यवंदन प्रारंभ ॥

आश पूरे प्रभु पासनी, त्रोडे भव पास ॥ वामा माता जनमीया, अहि लंछन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन सुत सुखकरु, नव हाथनी काया ॥ काशी देश वणारसी, पुण्ये प्रभु आया ॥ २ ॥ एकसो

वरसनुं आवखुए, पाली पास कुमार ॥ पद्म कहे मुकते गया, नमतां सुख निरधार ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंतचेइ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी-पारी नमोर्हत्० कही थोय आ कहेवी—

॥ अथ चार थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ श्रीपास जिनंदा, मुख पूनमचंदा ॥ पदयुग अरविंदा, सेवे-चोसठ इंदा ॥ लंछन नागिंदा जास पाये सोहंदा ॥ सेवे गुणी छंदा, जेहथी सुख कंदा ॥ १ ॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करीने आ थोय कहेवी,

जनमथी वर चार, कर्म नासे इग्यार ॥ ओगणीश निरधार, देव कीया उदार ॥ सवि चोत्रीश धार, पुण्यना ए प्रकार ॥ नमिये नर नार, जेम संसार पार ॥ २ ॥ पछी पुख्खर वरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ १ नव० काउ० करी, पारी, आ थोय बोलवी.

एकादश अंगा, तेम बारे उवंगा ॥ पद् छेद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा ॥ दस पइन्न सुसंगा, सांभलो थइ एकंगा ॥ अनुयोग बहु भंगा, नंदी सूत्र प्रसंगा ॥ ३ ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० एक नव० काउ० करी पारी, नमोर्हत् कहीने थोय बोलवी ते आ—

पासे यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो ॥ अडतालीश जासो, सहस परिवार खासो ॥ महुए प्रभु दासो, मागता मोक्षवासो ॥ कहे पद्म निकासो, विघ्नना वृंद पासो ॥ ४ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० जावंति० खमा० जावंतकेवि० नमोर्हत्० कही स्तवन कहेवुं ते आ—

॥ अथ पार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ माहरा पासजी रे लो ॥

॥ ए देशी ॥

जिनजी त्रेवीशमो जिन पास, आश मुज [illegible] रे लो ॥ माहरा नाथजी रे लो ॥ जि० ॥ [illegible] चुके रेलो ॥ मा० ॥ ॥ जि० ॥ [illegible] नया रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] गया रे लो ॥ मा० ॥ ॥ १ ॥ जि० ॥ [illegible] फरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] स्वरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] रे लो ॥ मा० ॥ २ ॥ जि० ॥ [illegible] निये रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] टाये रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ [illegible] लो ॥ मा० जि० ॥ [illegible]

॥ मा० ॥ जि० ॥ देव दुंदभिनो नाद, गंभीर गाजे घणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पतिपणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ए ठकूराइ तुज के, बीजे नवि घटे रे लो ॥ मा० ॥ जि०॥ रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ जि० ॥ पुजक निंदक दोय के, ताहरे समपणे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ कमठ धरण पति उपरे, समचित्त गणे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ पण उत्तम तुज पाद, पद्म सेवा करे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ तेह स्वभावे भव्य के, भव सायर तरे रे लो ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

पछी अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री वर्धमान स्वामि आराधनार्थ चैत्यवंदन करूं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं-

॥ अथ श्री वर्धमान स्वामि चैत्यवंदन ॥

सिद्धारथ सुत वंदिये त्रिशलानो जायो ॥ खत्रि कुळमां अवतरयो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोत्तेर वरसनुं आयखुं, वीर जिनेश्वर राया॥२॥ खिमा विजय जिन रायना ए, उत्तम गुण अवदात ॥ सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी, पारी, नमोऽर्हत्० कही नीचे मुजब थोय कहेवी.

॥ अथ थोय जोडो प्रारम्यते ॥

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा ॥ लंछन मृगेंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सुर नर वर इंदा, नित्य सेवा करंदा ॥ टाले भव फंदा, सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥

पछी मकट लोगस्स० सव्वालोए० अन्नत्थ० कही १ नव० काउ० करीने आ-थोय कहेवी—

अड जिनवर माता, मोक्षमां सुख शाता ॥ अड जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे अख्याता ॥ अड जिनप जनेता, नाक माहेंद्र याता, सवि जिनवर नेता, शाश्वता सुख देता ॥ २ ॥

पछी पुक्खर वरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी थोय आ कहेवी—

मल्ली नेमी पास, आदि अट्टम खास ॥ करी एक उपवास, वासु पूज्य सुवास ॥ शेष छट्ठ सुविलास, केवलज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकास, जेम अज्ञान नाश ॥ ३ ॥

पछी सिद्धाणं० बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० कही १ नव० काउ० करी, पारी, नमोर्हत्० कही आ-थोय बोलवी—

जिनवर जगदीश, जास मोटी जगीश, नहि रागने रीस, नामीये नाम शीश ॥ मातंग सुर ईश, सेवतो निशदीश, गुरु उत्तम अधीश, पद्म भाखे सुशीश ॥ ४ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० जावंति चेइ० खमा० जावंत केवि० नमोर्हत्० कही ने आ-स्तवन कहेवुं—

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

गेवर सागरी पाल, उभी दोय नागरी मारा लाल ॥

॥ ए देशी ॥

शासन नायक शिवसुख, दायक जिनपति ॥ मारा लाल ॥ पायक जास सुरासुर, चरणे नरपति ॥ मा० ॥ सायक कंदर्प केरां, जेणे नवि चित्त धरयां ॥ मा० ॥ दायक पातक वृंद, चरण अंगी कर्यां ॥ मा० ॥ १ ॥ खायक भावे केवल, ज्ञान दर्शन धरे ॥मा०॥ ज्ञायकलोका लोकना, भाव शुं विस्तरे ॥ मा० ॥ घायक घाति कर्म, मर्मनी आपदा ॥ मा० ॥ लायक अतिशय प्राति, हार्यनी संपदा ॥ मा० ॥ २ ॥ कारक षटक थयां तुज, आतम तत्त्वमां ॥ मा० ॥ धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां ॥ मा० ॥ नारक नर तिरि देव, भ्रमणथी हूं थयो ॥ मा० ॥ कारक जेह विभाव, तेणें विपरित भयो ॥मा०॥ ३ ॥ तारक तुं भवि जीवने, समरथमें लह्यो ॥ मा० ॥ ठारक करुणा रसथी, क्रोधानल दह्यो ॥मा० ॥ वारक जेह उपाधि, अनादिनी सहचरी ॥ मा० ॥ कारक निज गुण रुद्धि सेवकने बराबरी ॥मा०॥४॥ जाणी उत्तम आश, धरी मनमां घणी ॥ मा० ॥ खाणी गुणनी तुज पद, पद्मनी चाकरी ॥ मा० ॥ आणी हैयडे हेज, करुं निज पद करी ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति श्री महावीर जिन स्तवनं.

पछी जयवीयराय पुरा कहेवा ॥

खमा० इच्छा० श्री शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं—

॥ अथ शाश्वता अशाश्वता प्रभु चैत्यवंदन. ॥

कोडी सातने लाख बहोतेर वखाणुं, भुवनपति चैत्य संख्या प्रमाणुं ॥ एशी सो जिन बिंब एक चैत्य ठामे, नमो सासय जिनवरा मोक्ष कामे ॥ १ ॥ कोडी तेरशेने नव्याशी वखाणे, साठ लाख उपर सवि बिंब जाणे ॥ असंख्यात व्यंतर तणा नग्र नामे ॥ न० ॥ २ ॥ असंख्यात विहारचैत्य तेम ज्योतिषीये, बिंब एकशत ऐंशी भाख्यां रुपिये ॥ नमे ते महासिद्धि नव निद्धि पामे ॥ न० ॥ ३ ॥ वली बार देव लोकमां चैत्य सार, ग्रैवेक नव मांहि देहरां उदार ॥ तिम अनुत्तरे देखी मम पहो भामे ॥ न० ॥ ४ ॥ चोराशी लाख तेम सत्ताणुं सहस्सा, उपर तेवीश चैत्य शोभाये सरसा ॥ हवे बिंब संख्या कहुं तेह धामे ॥ न० ॥ ५ ॥ सो कोडीने बावन कोडी जाणो, चोराणुं लख सहस चौंआल आणो ॥ सय सातने साठ उपरे सकामे ॥ न० ॥ ६ ॥ मेरु गजदंतां गजदंत सार, जदक चित्र विचित्र कांचन वखार ॥ इक्षुकारने वर्षधर नाम ठामे ॥ न० ॥७॥ वली दीर्घ वैताढ्यने डा जेह, मेरु आदि इसे दिना गज छे तेह ॥ कुंड द्रह नदी ठर मधुर चैत्य प्रामे ॥ न० ॥ ८ ॥ मानुषोत्तर नगरे तेह चैत्य, नंदिसर रुचक कुंडल छे पवित्र ॥ तिहां शोभतां चैत्य नमिये सुठामे ॥ न० ॥ ९ ॥ ऋषु ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वळि वर्धमाना जिनो नाम धेन ॥ ए

शाश्वता बिंब सविचार नामे ॥ न० ॥ १० ॥ सवि कोडि सय पनर वायाल धार, अठावन लख सहस छत्रीश सार, अेसी जोइश वण विना सिद्धि धामे ॥ न० ॥ ११ ॥ अशाश्वत जिनवर नमो प्रेम आणी, केम भांखिये तेह जाणी अजाणी ॥ वहु तीर्थने ठामे वहु गाम गामे ॥ न० ॥ १२ ॥ एम जिन प्रणमी जे, मोह नृपने दमीजे, भव भव न भमीजे, पाप सर्वे गमी जे, ॥ परभाव वमीजे, जो प्रभु अठमीजे, पद्मविजय नमी जे, आतम तत्वे रमीजे ॥ न० ॥ १३ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन नमस्कारः ॥ अहीं नमु-थ्थुणं अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कहीने एक लोगस्सनो काउस्सग, " चंदेसु निम्मलयरा " सुधी कहेवो पछी एक जणे काउस्सग्गपारी नमोर्हत् कहीने चार थोय साथेज कहेवी ते आ.

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

रुषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दुःख वारेजी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारेजी ॥ भरतादिक क्षेत्रे मलि होवे, चार नाम चित्त धारो जी ॥ तेणे चारे ए शाश्वत जिन-वर, नमिये नित्य सवारेजी ॥ १ ॥ उर्ध्व अधो तिर्छे लोके थइ, कोडि पन्नरसे जाणोजी ॥ उपर कोडी बेंतालीश प्रणमो अड वन लख मन आणोजी ॥ छत्रीश सहस असी ते उपरे, बिंब तणो परि-माणोजी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषिमां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवती सूत्रे भांखीजी ॥

॥ १ ॥ कोडी सहस भव पातक तुटे, शेत्रुंज साहामा डग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अट्ठम तपश्या, करी चढीये गिरिवरिये ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभवि नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥ वि० ॥ ५ ॥ भुंइ संथारोने नारी तणो संग, दुर थकी परहरीये ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारीने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीये, पाप पडल विखरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ महोटुं, प्रवहण जेम भर दरीये ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे भव तरीये ॥ वि० ॥ १० ॥ इति

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

॥ महारा वालाजी ॥

॥ ऐ देशी ॥

तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंतरे, प्रीतमजी ॥ आठ भवोनी प्रीतडी त्रोडीतंत ॥ माहारा प्रीतमजी ॥ नवमे भव पण नेह न आणो मुजरे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुझ ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तीर्यंचनो एमरे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ षट् जीवना रखवालमां शिरदार रे ॥ प्रीस ॥ तो केम विलवती स्वामी मुको नारी ॥ मा० ॥ २ ॥ शिववधु केरुं एहवुं रुप रे ॥ प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गो, दीर्वाधरा मत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दन कारक वली रे लो, व-
स्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ आ० ॥ ५ ॥ कोरणी घोरणी तिहां
शरीरे लो, दीठे बने ते वात ॥ सु० ॥ पण नवि जाय मुखे कही
रेलो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ व० ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रणे वरसे
नीपन्यो रेलो, ते मासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ वार कोडी त्रेपन लक्खने
रेलो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ व० ॥ आ० ॥ ७ ॥ देराणी जेठा-
णीना गोखडा रेलो, देखतां हरख ते आय ॥ सु० ॥ लाख अढार
खरचीया रेलो, धन्य धन्य एहनी माय ॥ व० ॥ आ० ॥ ८ ॥
मूल नायक नेमीश्वरु रेलो, जन्म थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज
सत्ता रमणी थया रेलो, गुण अनंत आधार ॥ व० ॥ आ० ॥९॥
चारशेने अडसठ भला रेलो, जिनवर विंब विशाल ॥ सु० ॥ आज
भले में भेटीयो रेलो, पाप गयां पायाल ॥ व० ॥ आ० ॥ १० ॥
रुषभ धातुमयी देहरे लो, एकशो पिस्तालीश विंब ॥ सु० ॥ चौ-
मुख चैत्य जुहारीये रे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ व० ॥ आ० ॥
११ ॥ वांदु काउस्सग्गीया तेहमां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥
सु० ॥ अचलगढ बहु जिनवरा रे लो, वंदुं तेहना पाय ॥ व० ॥
आ० ॥ १२ ॥ धातु मयी परमेश्वरा रे लो, अदभूत जास स्वरूप
॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंदतां रे लो, थाये निजगुण भूप ॥
व० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अढारशे ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज
दिन ॥ सु० ॥ पालणपुरना संघ शुं रे लो, प्रणमी थयो धन धन्न
॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरु रे लो, यात्रा

लो, दीर्वाधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दन कारक वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ आ० ॥ ५ ॥ कोरणी धोरणी तिहां करीरे लो, दीठे बने तें वात ॥ सु० ॥ पण नवि जाय मुखे कही रेलो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ व० ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रणे वरसे नीपन्यो रेलो, ते प्रासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ बार कोडी त्रेपन लक्षने रेलो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ व० ॥ आ० ॥ ७ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा रेलो, देखतां हरख तें आय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीया रेलो, धन्य धन्य एहनी माय ॥ व० ॥ आ० ॥ ८ ॥ मूल नायक नेमीश्वरु रेलो, जन्म थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज सत्ता रमणी थया रेलो, गुण अनंत आधार ॥ व० ॥ आ० ॥९॥ चारशेने अडसठ भला रेलो, जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज भले में भेटीयो रेलो, पाप गयां पायाल ॥ व० ॥ आ० ॥ १० ॥ रुषभ धातुमयी देहरे लो, एकशो पिस्तालीश बिंब ॥ सु० ॥ चौमुख चैत्य जुहारीये रे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ व० ॥ आ० ॥ ११ ॥ वांदु काउस्सग्गीया तेहमां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढ बहु जिनवरा रे लो, वंदुं तेहना पाय ॥ व० ॥ आ० ॥ १२ ॥ धातु मयी परमेश्वरा रे लो, अदभूत जास स्वरुप ॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंदतां रे लो, थाये निजगुण भूप ॥ व० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अढारशे ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज दिन ॥ सु० ॥ पालणपुरना संघ शुं रे लो, प्रणमी थयो धन धन ॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरु रे लो,

थई [illegible] ॥ मु० [illegible] था, तेह कर्म पु हुंग ॥ [illegible] नव तत्त्वनो [illegible] पामी ॥ मो, [illegible] करशो तेह ॥ मु० [illegible] जिन सर्वे तेह ॥ ५ [illegible]

॥ अथ श्री अष्टापद स्तवन ॥ ८

अष्टापद अरिहंतजी, मारा [illegible] ॥ नमीए नेहशुं ॥ मा० ॥ [illegible] रंगिया जिणंद [illegible] ॥ नमीए० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ चउमुख चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर [illegible] जिन ॥ मा० ॥ स्थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ २ ॥ वर्ण प्रमाणे विराजता ॥ मा० ॥ लंछनने अलंकार ॥ न० ॥ सम नासाए शोभता ॥ मा० चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक करतां विशाल ॥ न० त्रुटि तान तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी सज्जावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवि त्रोडयुं ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अद्भुत भावशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंतामणि तिहां कर्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महीमा मोटको ॥ मा० ॥ तेणे भव पामे जे सिद्ध ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वत रुद्धि

। न० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे खाण ॥ न० ॥ वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोडी कल्याण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखर स्तवन ॥

॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥

॥ ए देशी ॥

समेत शिखर जिन वंदिये, मोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे भव तणो, तीरथ कहिये तेह रे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्म प्रभु शिव सुख वरया, त्रणशे अड अणगार रे ॥ समेत० ॥ २ ॥ पांचशे मुनि परिवार शुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणिंद रे ॥ समेत० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीधा रे ॥ सात सहसशुं चौदमा, निज कारय वर कीधा रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेशुं शांतिनाथ रे, कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीस मुनियुत पासजी, वरिया शिवसुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशे, उपरे ओगण पचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वासरे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सिध्या अणसण

[illegible]

[illegible]

॥ अथ [illegible] श्री [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] इच्छाकारेण [illegible]

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ दोहा. ॥

श्री शंखेश्वर ईश्वरं, प्रणमी त्रिकरण याग ॥ देव नमन च मानीये, करशुं विधि संयोग ॥ १ ॥ ऋषभ जिन संभव नम अभिनंदन जिनचंद ॥ सुमति पद्मप्रभ मानवा, स्वामी सुपास जिणंद ॥२॥ चंद्रप्रभ सुविधि जिना, श्री शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वर वंश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली मुनि स्वाम ॥ नमि नेमीसर पास जिन, वर्द्धमान गुणधाम ॥ ४ ॥ वर्तमान जिन वंदतां ए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण सुगता तणे वीर रचे वर माल ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ अहिं नमुत्थुणं कहे

र्थो जयवीयराय कहीये. पछी खमासमण देई इच्छा कारेण संदि-
सह भगवन् रुषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? एम कही
चैत्यवंदन कहीये ते लखीये छीए. ॥

॥ अथ रुषभजिन चैत्यवंदन ॥

सर्वारथसिद्धे थकी,चविया आदि जिणंद ॥प्रथम राय वनिता
वसे, मानव गण सुख कंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन
एक हजार ॥ मौनाती ते केवली, वड हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्त-
राषाढा जनम छे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दश सहस परिवारशुं,
वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति ॥

अहीं नमुत्थुणं कही पछी अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं
वंदणवत्तिआए कही नवकारनो काउस्सग पारी थोय कहीये ते
लखीये छीये.

॥ अथ थोय प्रारंभ ॥

त्याशीलाख पूरव घरवास, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ ज-
नम थकी पण देवतरु फल, क्षीरोदधि जल भोक्ता जी ॥ मइ सुअ
उहि नाण संयुत्त, नयण वयण कज चंदा जी॥ चार सहसशुं दीक्षा
लिसा, स्वामी रुषभ जिणंदा जी ॥ १ ॥ अहीं लोगस्स० ॥ कही
एक नवकारनो काउस्सग्ग करीये ॥ पछी मनपर्यव तव नाण उप-

नो, [illegible] दीपिक, करे
[illegible] महानंदे निव
[illegible] प्रमाण
[illegible] कां
[illegible] सिद्धानंद
जी ॥ [illegible] इदायानी ॥
नाग [illegible] गनिनी
आगम पूर्ना, [illegible] सिद्धाणं बु-
द्धाणं कहीं [illegible] तसु चहि
सरी देवी, [illegible] करंनि,
शासन शोभ वधारे जी ॥ [illegible] जिन नाम
निवारे जी ॥ श्री शुभ [illegible] प्रभु [illegible] मनवारे
जी ॥ ४ ॥ इति थोय ॥ अर्हो नमुत्थुण० ॥ [illegible] ॥ जा
वंत केवि० ॥ नमोऽर्हत् सिद्धा० कहीये ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होय अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

ज्ञानरयण रयणायरु रे, स्वामी ऋषभ जिणंद ॥ [illegible]
हा प्रभु रे, लोक लोकोत्तर [illegible]नंद रे ॥ भविया ॥ [illegible] भावे भजो
भगवंत ॥ महिमा अतुल अनंत रे ॥ भवियां भावे ॥ ए आंकणी ॥
[illegible] तिम आरक सागरु रे, कोडाकोडी अढार ॥ [illegible]

वरसनुं आवखुए, पाली पास कुमार ॥ पद्म कहे मुकते गया, नमतां सुख निरधार ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंतचेइ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी-पारी नमोर्हत्० कही थोय आ कहेवी—

॥ अथ चार थोयो प्रारभ्यते ॥

॥ श्रीपास जिनंदा, मुख पूनमचंदा ॥ पदयुग अरविंदा, सेवे-चोसठ इंदा ॥ लंछन नागिंदा जास पाये सोहंदा ॥ सेवे गुणी वृंदा, जेहथी सुख कंदा ॥ १ ॥

पछी लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० १. नव० काउ० करीने आ थोय कहेवी,

जनमथी वर चार, कर्म नासे इग्यार ॥ ओगणीश निरधार, देव कीया उदार ॥ सवि चोत्रीश धार, पुण्यना ए मकार ॥ न-मिये नर नार, जेम संसार पार ॥ २ ॥ पछी पुख्खर वरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ १ नव० काउ० करी, पारी, आ थोय बोलवी.

एकादश अंगा, तेम बारे उवंगा ॥ पद् छेद् सुचंगा, मूल चारे सुरंगा ॥ दस पइन्न सुसंगा, सांभलो थइ एकंगा ॥ अनुयोग बहु भंगा, नंदी सूत्र प्रसंगा ॥ ३ ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच० अन्नत्थ० एक नव० काउ० करी पारी, नमोर्हत् कहीने थोय बो-लवी ते आ—

॥ मा० ॥ जि० ॥ देव दुंदभिनो नाद, गंभीर गाजे घणो रे लो
॥ मा० ॥ जि० ॥ त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवन पतिपणो रे लो
॥ मा० ॥ जि० ॥ ए ठकूराइ तुज के, बीजे नवि घटे रे लो
॥ मा० ॥ जि०॥ रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो ॥मा०॥
॥ ४ ॥ जि० ॥ पुजक निंदक दोय के, ताहरे समपणे रे लो
॥ मा० ॥ जि० ॥ कमठ धरण पति उपरे, समचित्त गणे रे लो
॥ मा० ॥ जि० ॥ पण उत्तम तुज पाद, पद्म सेवा करे रे लो
॥ मा० ॥ जि० ॥ तेह स्वभावे भव्य के, भव सायर तरे रे लो
॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥

पछी अर्धा जयवीयराय कहेवा.

खमा० इच्छा० श्री वर्धमान स्वामि आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं–

॥ अथ श्री वर्धमान स्वामि चैत्यवंदन ॥

सिद्धारथ सुत वंदिये त्रिशलानो जायो ॥ खत्रि कुळमां अवतरयो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥ मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहोंतेर वरसनुं आवखुं, वीर जिनेश्वर राया॥२॥ खिमा विजय जिन रायना ए, उत्तम गुण अवदात ॥ सात बोलथी वर्णव्यो, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥

पछी नमुत्थुणं० अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० एक नवकारनो काउ० करी, पारी, नमोर्हत्० कही नीचे स्तुति कहेवी.

॥ अथ थोय जोडो प्रारम्यते ॥

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा ॥ लंछन मृगेंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सुर नर वर इंदा, नित्य सेवा करंदा ॥ टाले भव फंदा, सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥

पछी सकट लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कही १ नव० काउ० करीने आ-थोय कहेवी—

अड जिनवर माता, मोक्षमां सुख शाता ॥ अड जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे अख्याता ॥ अड जिनप जनेता, नाक माहेंद्र याता, सवि जिनवर नेता, शाश्वतां सुख देता ॥ २ ॥

पछी पुख्खर वरदी० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० करी थोय आ कहेवी—

मल्ली नेमी पास, आदि अठम खास ॥ करी एक उपवास, वासु पूज्य सुवास ॥ शेष छठ सुविलास, केवलज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकास, जेम अज्ञान नाश ॥ ३ ॥

पछी सिद्धाणं० बुद्धाणं० वेयावच्च० अन्नत्थ० कही १ नव० काउ० करी, पारी, नमोर्हत्० कही आ-थोय बोलवी—

जिनवर जगदीश, जास महोटी जगीश, नहि रागने रीश, नामीये तास शीश ॥ मातंग सुर इश, सेवतो राति दीस, गुरु उत्तम अधीश, पद्म भाखे सुशीश ॥ ४ ॥ इति ॥

पछी नमुत्थुणं० जावंति चेइ० खमा० जावंत केवि० नमोर्हत्० कही ने आ-स्तवन कहेवुं—

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

गेवर सागरी पाल, उभी दोय नागरी म.रा लाल ॥

॥ ए देशी ॥

शासन नायक शिवसुख, दायक जिनपति ॥ मारा लाल ॥ ायक जास सुरासुर, चरणे नरपति ॥ मा० ॥ सायक कंदर्प केरां, ोणे नवि चित्त धर्यां ॥ मा० ॥ दायक पातक वृंद, चरण अंगी र्यां ॥ मा० ॥ १ ॥ खायक भावे केवल, ज्ञान दर्शन धरे ॥मा०॥ ायकलोका लोकना, भाव शुं विस्तरे ॥ मा० ॥ घायक घाति र्म, मर्मनी आपदा ॥ मा० ॥ लायक अतिशय प्राति, हार्यनी संपदा ॥ मा० ॥ २ ॥ कारक षटक थयां तुज, आतम तत्त्वमां ॥ मा० ॥ धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां ॥ मा० ॥ नारक नर तिरि देव, भ्रमणथी हूं थयो ॥ मा० ॥ कारक जेह विभाव, तेणे विपरित भयो ॥मा०॥ ३ ॥ तारक तुं भवि जीवने, समरथमें लह्यो ॥ मा० ॥ ठारक करुणा रसथी, क्रोधानल दह्यो ॥मा० ॥ वारक जेह उपाधि, अनादिनी सहचरी ॥ मा० ॥ कारक निज गुण रुद्धि सेवकने बराबरी ॥मा०॥४॥ जाणी उत्तम आश, धरी मनमां घणी ॥ मा० ॥ खाणी गुणनी तुज पद, पद्मनी चाकरी ॥ मा० ॥ आणी हैंयडे हेज, करुं निज पद करी ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति श्री महावीर जिन स्तवनं.

पछी जयवीयराय पुरा कहेवा ॥

खमा० इच्छा० श्री शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ? इच्छं, कही आ चैत्यवंदन कहेवुं—

॥ अथ शाश्वता अशाश्वता प्रभु चैत्यवंदन. ॥

कोडी सातने लाख वहोंतेर वखाणुं, भुवनपति चैत्य संख्या प्रमाणुं ॥ एशी सो जिन बिंब एक चैत्य ठामे, नमो सासय जिनवरा मोक्ष कामे ॥ १ ॥ कोडी तेरशेने नव्याशी वखाणे, साठ लाख उपर सवि बिंब जाणे ॥ असंख्यात व्यंतर तणा नग्र नामे ॥ न० ॥ २ ॥ असंख्यात तिहांचैत्य तेम ज्योतिर्षाये, बिंब एकशत अेंशी भाख्यां रुपिये ॥ नमे ते महासिद्धि नव निद्धि पामे ॥ न० ॥ ३ ॥ वली बार देव लोकमां चैत्य सार, ग्रैवेक नव मांहि देहरां उदार ॥ तिम अनुत्तरे देखी मम पडो भामे ॥ न० ॥ ४ ॥ चोराशी लाख तेम सत्ताणुं सहस्सा, उपर तेत्रीश चैत्य शोभाये सरसा ॥ हवे बिंब संख्या कहुं तेह धामे ॥ न० ॥ ५ ॥ सो कोडीने बावन कोडी जाणो, चोराणुं लख सहस चोंआल आणो ॥ सय सातने साठ उपरे प्रकामे ॥ न० ॥ ६ ॥ मेरु राजधानी गजदंत सार, जमक चित्र विचित्र कांचन वखार ॥ इखुकारने वर्षधर नाम ठामे ॥ न० ॥७॥ वली दीर्घ वैताढयने द्रन जेह, जंबु आदि द्रक्षे दिशा गज छे तेह ॥ कुंड महा नदी द्रह प्रमुख चैत्य ग्रामे ॥ न० ॥ ८ ॥ मानुषोत्तर नगवरे जेह चैत्य, नंदिसर रुचक कुंडल छे पवित्त ॥ तिर्छा लोकमां चैत्य नमिये सुठामे ॥ न० ॥ ९ ॥ प्रभु रुषभ चंद्रानन वारिषेण, वलि वर्द्धमाना भिधे चार श्रेण ॥ एह

शाश्वता बिंब सविचार नामे ॥ न० ॥ १० ॥ सवि कोडि सय पनर बायाल धार, अठावन लख सहस छत्रीश सार, अेंसी जोइश वण विना सिद्धि धामे ॥ न० ॥ ११ ॥ अशाश्वत जिनवर नमो प्रेम आणी, केम भांखिये तेह जाणी अजाणी ॥ बहु तीर्थने ठामे बहु गाम गामे ॥ न० ॥ १२ ॥ एम जिन प्रणमी जे, मोह नृपने दमीजे, भव भव न भमीजे, पाप सर्वे गमी जे, ॥ परभाव वमीजे, जो प्रभु अठमीजे, पद्मविजय नमी जे, आत्म तत्त्वे रमीजे ॥ न० ॥ १३ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिन नमस्कारः ॥ अहीं नमुथ्थुणं अरिहंत चेइ० अन्नत्थ० कहीने एक लोगस्सनो काउस्सग्ग, " चंदेसु निम्मलयरा " सुधी कहेवो पछी एक जणे काउस्सग्गपारी नमोर्हत् कहीने चार थोय साथेज कहेवी ते आ.

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

रुषभ चंद्रानन वंदन कीजे, वारिषेण दुःख वारेजी ॥ वर्द्धमान जिनवर वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारेजी ॥ भरतादिक क्षेत्रे मलि होवे, चार नाम चित्त धारो जी ॥ तेणे चारे ए शाश्वत जिनवर, नमिये नित्य सवारेजी ॥ १ ॥ उर्ध्व अधो तिर्छे लोके थइ, कोडि पन्नरसे जाणोजी ॥ उपर कोडी बेंतालीश प्रणमो अड वन लख मन आणोजी ॥ छत्रीस सहस असी ते उपरे, बिंब तणो परिमाणोजी ॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषिमां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी ॥ २ ॥ रायपसेणी जीवाभिगमे, भगवती सूत्रे भांखीजी ॥

जंबूद्वीप पन्नत्ति ठाणांगे, विवरीने घणुं दाखीजी ॥ वर्त्तीय अष्टा-भ्वती ज्ञाता कल्पमां व्यवहार प्रमुखे आखीजी ॥ ते जिन प्रतिमां लोपे पापी, जिहां वहु सूत्र छे साखीजी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजार्थी आराधक, ईशान इंद्र कहायाजी ॥ तेम सुग्याभ प्रमुख वहु सुर-वर, देवी तणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइ महोत्सव, करे अति हर्ष भराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसे, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥ इति ॥

अहींयां लगतीज महोटी शांति एक जणे कहेवी अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभळे, पछी सर्व जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोग्गस्स पूर्ण कहे. पछी वेसीने सर्व जण तेर नवकार गणे; त्यार पछी—

" श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंडरीक गणध-राय नमो नमः " ॥

ए पाठ तेर वखत सर्व जनोये कहेवो. पछी पांच तीर्थना पांच स्तवन कहेवां. ते लखीये छीए.

॥ अथ श्री शंत्रुजय स्तवन ॥

॥ जशो मावडी. ॥

॥ ए देशी ॥

जात्रा नवाणुं करीये विमलगिरि ॥ जा० ॥ ए आंकणी ॥
- परव नवाणुं वार शेत्रुंजागिरि, रुषभ जिणंद समोसरीये ॥ वि०

॥ १ ॥ कोडी सहस भव पातक तुटे, शेत्रुंज साहामा डग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छठ दोय अट्टम तपश्या, करी चढीये गिरिवरिये ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंडरीक पद जपीये हरखे, अध्य वसाय शुभ धरीये ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अभवि नजरे न देखे, हिंसक पण उद्धरीये ॥ वि० ॥ ५ ॥ भुंइ संथारोने नारी तणो संग, दुर थकी परहरीये ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित्त परिहारीने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणां दोय विधिशुं करीये, पाप पडल विखरीये ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ महोटुं, प्रवहण जेम भर दरीये ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंता, पद्म कहे भव तरीये ॥ वि० ॥ १० ॥ इति

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

॥ महारा वालाजी ॥

॥ ए देशी ॥

तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंतरे, प्रीतमजी ॥ आठ भवोनी प्रीतडी ओर्डातंत ॥ माहारा प्रीतमजी ॥ नवमे भव पण नेह न आणो मुजरे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आवबुं तुझ ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तीर्यचनो एमरे ॥ प्री० ॥ मूको अबला रोती प्रभुजी केम ॥ मा० ॥ षट् जीवना रखवालमां शिरदार रे ॥ प्रीस ॥ तो केम विलवती स्वामी मुको नारी ॥ मा० ॥ २ ॥ शिववधु केरुं एहवुं रूप रे ॥ प्री० ॥ मुज मूकीने चित्तमां धरी जिन

मृग ॥ पा० ॥ जिनजी दिये मनमावनमा व्रतभार रे ॥ श्री० ॥
घाती करम खपावीने [illegible] ॥ पा० ॥ ३ ॥ केवल रुद्धि अनंत
प्रकट कीयरे ॥ श्री० ॥ [illegible] पद प्रतिष्ठा [illegible] ॥ पा० ॥
जे प्रभुजीए कीधुं करवुं तेह ॥ श्री० ॥ [illegible] व्रतधर थइ प्रभु
पासे जेह ॥ पा० ॥ ४ ॥ प्रभु [illegible] निज शोकयनुं जोता रुप
रे ॥ श्री० ॥ [illegible] थइ [illegible] पा० ॥ शिव वधु
वरीया जिनराज [illegible] ॥ श्री० ॥ [illegible] प्रभु गाव्यो अ-
विचल प्रेम ॥ पा० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ३ ॥

॥ [illegible] ॥

लो, दीर्वाधरा प्रत्येक ॥ सु० ॥ तेम मर्दन कारक वली रे लो, वस्तुपाल ए विवेक ॥ व० ॥ आ० ॥ ५ ॥ कोरणी धोरणी तिहां करीरे लो, दीठे बने ते वात ॥ सु० ॥ पण नवि जांय मुखे कही रेलो, सुर गुरु सम विख्यात ॥ व० ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रणे वरसे नीपन्यो रेलो, ते प्रासाद उत्तंग ॥ सु० ॥ बार कोडी त्रेपन लक्षने रेलो, खरच्या द्रव्य उछरंग ॥ व० ॥ आ० ॥ ७ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा रेलो, देखतां हरख ते आय ॥ सु० ॥ लाख अढार खरचीया रेलो, धन्य धन्य एहनी माय ॥ व० ॥ आ० ॥ ८ ॥ मूल नायक नेमीश्वरु रेलो, जन्म थकी ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ निज सत्ता रमणी थया रेलो, गुण अनंत आधार ॥ व० ॥ आ० ॥९॥ चारशेने अडसठ भला रेलो, जिनवर बिंब विशाल ॥ सु० ॥ आज भले में भेटीयो रेलो, पाप गयां पायाल ॥ व० ॥ आ० ॥ १० ॥ रुषभ धातुमयी देहरे लो, एकशो पिस्तालीश बिंब ॥ सु० ॥ चौमुख चैत्य जुहारीये रे लो, मरुधरमां जेम अंब ॥ व० ॥ आ० ॥ ११ ॥ वांदु काउस्सग्गीया तेहमां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढ बहु जिनवरा रे लो, वंदुं तेहना पाय ॥ व० ॥ आ० ॥ १२ ॥ धातु मयी परमेश्वरा रे लो, अद्भूत जास स्वरुप ॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंदतां रे लो, थाये निजगुण भूप ॥ व० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अढारशे ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज दिन ॥ सु० ॥ पालणपुरना संघ शुं रे लो, प्रणमी थयो धन धन्न ॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरु रे लो, यात्रा

करी अदभूत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांभरे लो, सेव करे सुर हूंत ॥ व० ॥ आ० ॥ १५ ॥ एम जाणी आबु तणी रे लो, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्म विजय कहे तेह ॥ व० ॥ आ० ॥ १६ ॥

॥ अथ श्री अष्टापद स्तवन ॥ ४

अष्टापद अरिहंतजी, मारा वालाजी रे ॥ आदीश्वर अवधार ॥ नमीये नेहशुं ॥ मा० ॥ दश हजार मुणिदशुं ॥ मा० ॥ वरिया शिववधु सार ॥ नमीये० ॥ १ ॥ भरत भूप भावे करयो ॥ मा० ॥ चऊमुख चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जिहां ॥ मा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे विराजता ॥ मा० ॥ लंछनने अलंकार ॥ न० ॥ शम नासाये शोभता ॥ मा० चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक करतां विचाल ॥ न० तूटि तांत तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी वजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवि ओडयुं ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अदभूत भावशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंतामणि तिहां कह्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महीमा मोटको ॥ मा० ॥ तेणे भव पामे जे सिद्ध ॥ न० ॥ जे निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाश्वत रुद्धि

॥ न० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरे स्वमुखे वरणव्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोडी कल्याण ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखर स्तवन ॥

॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥

॥ ए देशी ॥

समेत शिखर जिन वंदिये, मोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे भव तणो, तीरथ कहिये तेह रे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्म प्रभु शिव सुख वरया, त्रणशे अड अणगार रे ॥ समेत० ॥ २ ॥ पांचशे मुनि परिवार शुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणिंद रे ॥ समेत० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीधा रे ॥ सात सहसशुं चौदमा, निज कारय वर कीधा रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेशुं शांतिनाथ रे, कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीस मुनियुत पासजी, वरिया शिवसुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सतावीश सहस त्रणशे, उपरे ओगण पचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वासरे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सिध्या अणसण

लेइ रे ॥ पदम विजय कहे प्रणमीये, पास सामळनुं चेइ रे ॥ स० ॥
॥ ८ ॥ इति ॥

॥ इति श्री चोमासी देववंदन (विधियुक्त) समाप्त. ॥

॥ अथ पंडित श्री वीरविजयजी विरचित ॥

॥ चोमासी देववंदनविधिः प्रारंभः ॥

एनो विधि आवी रीते छे के, प्रथम इरियावहि पडिक्कमी पछी खमासमण देई इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! चैत्यवंदन करुं ? एम कही चैत्यवंदन कहीये, ते लखीये छीये.

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ दोहा. ॥

श्री शंखेश्वर इश्वरं, प्रणमी त्रिकरण योग ॥ देव नमन चउमासीये, करशुं विधि संयोग ॥ १ ॥ ऋषभा जिन संभव तथा, अभिनंदन जिनचंद ॥सुमति पद्मप्रभ सातमा, स्वामी सुपास जिणंद ॥२॥ चंद्रप्रभ सुविधि जिना, श्री शीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वर वंश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रत स्वाम ॥ नमि नेमीसर पास जिन, वर्द्धमान गुणधाम ॥ ४ ॥ वर्तमान जिन वंदतां ए, वंदो देव त्रिकाळ॥ प्रभु शुभ गुण गुणता थकी, वीर रचे वर माळ ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ अहिं नमुत्थुणं कही

अर्धा जयवीयराय कहीये. पछी खमासमण देई इच्छा कारेण संदिसह भगवन् रुषभजिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं? एम कही चैत्यवंदन कहीये ते लखीये छीए. ॥

॥ अथ रुषभजिन चैत्यवंदन ॥

सर्वारथसिद्धे थकी,चविया आदि जिणंद ॥ प्रथम राय वनिता वसे, मानव गण सुख कंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौनाती ते केवली, वड हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तरापाढा जनम छे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दश सहस परिवारशुं, वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति ॥

अहीं नमुत्थुणं कही पछी अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए कही नवकारनो काउस्सग पारी थोय कहीये ते लखीये छीये.

॥ अथ थोय प्रारंभ ॥

त्याशीलाख पूरव घरवास, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थकी पण देवतरु फल, क्षीरोदधि जल भोक्ता जी ॥ मइ सुअ उहि नाण संयुत्त, नयण वयण कज चंदा जी॥ चार सहसशुं दीक्षा शिक्षा, स्वामी रुषभ जिणंदा जी ॥ १ ॥ अहीं लोगस्स० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीये ॥ पछी मनपर्यव तव नाण उप-

न्युं, संयत लिंग सहावा जी ॥ अढिय द्वीपमां सन्नी पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत भावा जी ॥ द्रव्य अनंता सूक्ष्म तीर्च्छा, अढारशे खित्त ठाया जी ॥ पलिये असंखम भाग त्रिकाल्कि, द्रव्य असंख्य परजाया जी ॥ २ ॥ अहीं पुरकरवरदी० कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीये ॥ रुषभ जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया जी ॥ अनभिलप्प अभिलप्प अनंता, भाग अनंत उचरायाजी ॥ तास अनंतमे भागे धारी, भाग अनंते सूत्र जी ॥ गणधर रचियां आगम पूजी, करीये जनम पवित्र जी ॥ ३ ॥ अहीं सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीये ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, समकित शुद्ध सोहावे जी ॥ आदि देवनी सेव करंति, शासन शोभ चढावे जी ॥ श्रद्धा संयुत जे व्रतधारी, विघन तास निवारे जी ॥ श्री शुभ वीरविजय प्रभु भगते, समरे नित्य सवारे जी ॥ ४ ॥ इति थोय ॥ अहीं नमुत्थुणं० ॥ जावंति चेइ० ॥ जावंत केवि० ॥ नमोऽर्हत् सिद्धा० कहीये ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कपूर होय अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

ज्ञानरयण रयणायरु रे, स्वामी रुषभ जिणंद॥ उपगारी अरिहा प्रभु रे, लोक लोकोत्तर नंद रे ॥ भवियां ॥ १ ॥ भावे भजो भगवंत ॥ महिमा अतुल अनंत रे ॥ भवियां भावे ॥ ए आंकणी ॥ तिग तिग आगर सागरु रे, कोडाकोडी अढार ॥ युगला धर्म

घवतरु पासे पामीया ए, खायिक दुग ऊपयोग ॥२॥ मुनि तेत्रीशे शिव वरया, वीर अखय सुख भोग ॥ ३॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी ॥

पास जिणंदा वामा नंदा, जब गरभे फली ॥ सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणि प्रिये ॥ नेमी राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये ॥ १ ॥ वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति ॥ पासने मल्लि त्रय शत साथे, बीजा सहसे व्रती ॥ षट् शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जग धणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुझने घणी ॥ २ ॥ जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी ॥ द्राख विहासे गइ वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ साकर सेंती तरणां लेती, मुखे पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती ॥ ३ ॥ गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तक फणावली ॥ चार ते बांही कच्छप वाही, काया जस शामली ॥ चऊकर प्रौढा नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ जिणंदराय हे ॥ ए देशी ॥

आज शंखेश्वर जिन भेटीए, भेटंतां भव दुःख नासे ॥ साहेब मोरा रे ॥ जयो अश्वसेन कुल चंद्रमा, माता वामा सुत पास ॥ सा० ॥ आ० ॥ १ ॥ भक्तिवत्सल जन भयहरु, हसतां हणीया षट् हास्य ॥ सा० ॥ दानादिक पांचने दूहव्या, फरी नावे पासनी पास ॥ सा० ॥ आ० २ ॥ करी कामने कारमी कमकमी, मिथ्यात्वने न दीऊं मान ॥ सा० ॥ अविरतिने रति नहि एक घडी, अगुणी अलगुं अज्ञान ॥ सा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ निंदक निद्राने नासवी, मृत रागने रोग अपार ॥सा०॥ एक धक्के द्वेषने ढोलीयो, एम नाठा दोष अढार ॥ सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वली मत्सर मोह ममत गयो, अरिहा निरिहा निरदोष ॥ सा० ॥ धरणेंद्र कमठ सुर बिहुं परे, तुस मात्र नही तोस रोष ॥ सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥अचरिज सुणजो एक तेणे समे, शत्रुने समकित दाय ॥ सा० ॥ चंदन पारस गुण अति गणा, अक्षर थोडे न कहाय ॥ सा० ॥ आ० ६ ॥ जागरणे दिशा उपर चढया, उजागरणे वीतराग ॥ सा० ॥ आलंबन धरतां प्रभुतणुं, प्रभुता सेवक सौभाग्य ॥ सा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ उपादान कारण कारज सधे, असाधारण कारण नित्य ॥ सा० ॥ जो अपेक्षा कारण भवि लहे, फलदा कारण निमित्त ॥ ॥ सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ प्रभु ज्ञायक लायकना धणी, दायक नायक गंभीर ॥ सा० ॥ निज सेवक जाणी निवाजीये, तुम चरणे

नमे शुभ वीर ॥ सा० ॥ आ० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री वर्धमान जिन चैत्यवंदन ॥

ऊर्द्धलोक दशमा थकी, कुंडपुरे मंडाण ॥ वृषभ योनि चउवीशमा, वर्द्धमान जिन भाण ॥ १ ॥ उत्तराफाल्गुनी उपन्या, मानव गण सुखदाय ॥ कन्याराशि छद्मस्थमां, वार वरस वही जाय ॥ २ ॥ शाल विशाल तरु तले ए, केवलनिधि प्रगटाय ॥ वीर विरुद धरवा भणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥

वीर जगत्पति जन्मज थ.वे, नंदन निश्चित शिखर रहावे, आठ कुमारी गावे ॥ अड गजदंता हेठे वसावे, रुचकगिरिथी छत्रीस जावे, द्वीप रुचक चउ भावे ॥ छप्पन्न दिगकुमरी हुलरावे, सूती करम करी निज घर पावे, शक्र सुघोषा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, भवन व्यंतर शंख पडहे मिलावे, सुरगिरि जन्म मल्हावे ॥ १ ॥ रुषभ तेर शशि सात कहीजे, शांतिनाथ भव बार सुणीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे ॥ नव नेमीश्वर नमन करीजे, पास प्रभुना दश समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे ॥ अजितादिक जिन शेष रहीजे, त्रण्य त्रण्य भव सघले लहीजे, भव समकितथी गणीजे ॥

जिन नामकर्म निकाचित कीजे, त्रीजे भव तप खंती धरीजे, जिनपद उदये सीझे ॥ २ ॥ आचारांग आदे अंग अग्यार, उववाइ आदे उपांग ते बार, दश पयन्ना सार ॥ छ छेदसूत्र विचित्र प्रकार, उपगारी मुलसूत्र ते चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ ए पीस्तालीश आगम सार, सुणतां लहीये तत्व उदार, वस्तु स्वभाव विचार ॥ विषय भुजंगिनी विष अपहार, ए समो मंत्र न को संसार, वीर शासन जयकार ॥ ३ ॥ नकुल बीजोरु होय कर झाली, मातंग सुर शाम कंती तेजाली, वाहन गज सूंढाली ॥ सिंह उपर बेठी रढीयाली, सिद्धायिका देवी लटकाली, हरितामा चार भुजाली ॥ पुस्तक अभया जिमणे आली, मातुलिंगने वीणा रसाली, वाम भुजा नहीं खाली ॥ शुभ गुरु गुण ध्यान वधाली, अनुभव नेहशुं देती ताली, वीर वचन टंकशाली ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥

(राग बंगाल.)

त्रिशलानंदन चंदन शीत, दरशन अनुभव कीजीये नित्य ॥ स्वामी सेवीए ॥ तुम दरशनथी अलगा जेह, क्रियाथी पण विशाचने छेह ॥ स्वामी सेवीये ॥ १ ॥ हुं पण भमीयो आ संसार, दर्शन दीठा विण निरधार ॥ स्वा० ॥ अब तुम दरशन दीठुं मन, निज घरमां रही वरशुं धन्न ॥ स्वा० ॥ २ ॥ दर्शनथी जाणे नव भाव, ते आणंद तो जगत न माय ॥ स्वा० ॥ भव भ्रमणादिक

दूरे जाय, भव थिति चिंतन अल्प ठराय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ तस लक्षण प्रगट गर्भमांहि, वैशालिक प्रभु तुठो उच्छाहीं ॥ स्वा० ॥ अमृत लेश लहे एकवार, रोग नहीं फरी अंग मोझार ॥ स्वा० ॥ ॥ ४ ॥ दर्शन फरशन होवे तास, संवेदन दर्शननो नाश ॥ स्वा० ॥ पण जो जाय पलट्टुं पास, तो मह महके वास बरास ॥ स्वा० ॥ ॥ ५ ॥ देव कुदेवनी सेवा करंत, न लह्युं दर्शन श्री भगवंत ॥ स्वा० ॥ एक चित्त नहीं एकनी आश, पग पग ते दुनियाना दास ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ वेश खाट परे क्षीण केइ घाट, तस मुख दर्शन दूरे दाट ॥ स्वा० ॥ लोक कहे धिग चित्त उचाट, घर घर भटके ते वारे वाट ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तिणविध भटक्यो काल अनंत, मलिया कलिया नहिं अरिहंत ॥ स्वा० ॥ ते दिन दर्शन तो प्रतिपक्ष, हवे दर्शन फलशे प्रत्यक्ष ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ प्रीति भक्तिये चोलनो रंग, गुण दर्शने गयो रंग पतंग ॥ स्वा० ॥ अणमलवे हुवे मन उत्कंठ, मलवे दुःख करे विरहे उलंठ ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ अनुभव दर्शने विहुं दुःख नास, राति दिवस रहो इहडा पास ॥ स्वा० ॥ क्षय उपशम गुण खायक दाय, गर्भवती प्रिया पुत्र जणाय ॥ स्वा० ॥ १० ॥ रंग महोलमां उत्सव थाय, मोह कुटुंब ते रोतुं जाय ॥ स्वा० ॥ श्री शुभ विजय सुणो जगदीश, वीर कहे पछे देजो आशीष ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ इ०

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ राग फाग ॥ थोवा गझवय ॥ ए देशी ॥

सासय पडिमा सुंदर, जिनवर कहेशुं तेह ॥ चारण मुनि वंदी, भगवइ मांहे जेह ॥ ऊर्ध्वलोक चुलसी लख, सहस सत्तं ग्रेवीश ॥ सातकोडि लख बिहुंतेर, भवणे चैत्य गणीश ॥ १ ॥ जोइ वणेसु असंखा, कुंडल रुचके चार ॥ नंदीसर वर बावन, साठे चउ बार ॥ ति दुवारां शेष जिनवर, द्वार द्वार दीठ ॥ मुखमंडप रंगमंडप, सखरो मणिमय पीठ ॥ २ ॥ वर थुभे, चिहुं दिशि पडिमा चार ॥ तदनंतर मणिपीठ, रते सुखकार ॥ वृक्ष अशोक धरमध्वज, वाव पुष्करिणी भवन भवन प्रति पडिमा, अष्टोत्तर शत मांही ॥ ३ ॥ मोटी, पडिमा लघु सात हाथ ॥ मणिपीठे देवछंदे, सिंहासन नाथ ॥ छत्र धरे एक चामर, धारी पडिमा दोय ॥ नाग वली जरका, कुंड धरा दोय दोय ॥ ४ ॥ जोइस व्यंतर निवासी भवण निकाय ॥ उपपाती अभिषेका, अलंकार व्यवसाय सभा सुधर्मा पंचमी. मंडप पटके जुत्त ॥ प्रत्यक दुवारां. जिन जिन अद्भुत ॥ ५ ॥ जोइसादिक मांहि, थुभ प्रत्येके बार ॥ पडिमा नति, करीये नित्य सवार ॥ थूभ सभाद्यु गणना, पडिमा माट ॥ चैइअ बिंब मिलतां, भवणे असि मो पाठ ॥ शत पंचाश बहुंतेर, योजन कहीये जेह ॥ लांबा पहोला उंचा, अनुक्रमे मविएतेह ॥ स्वर्ग नंदीश्वर कुंडल, रुचके भवन प्रमा

स कुल गिरि दश कुरु, मेरुवरे असिआण ॥५॥ अयसी वखारे
ानधर, गजदंताये बीश ॥ मणुज्ज नगे इखुकारे, चार चार सुज-
ाश ॥ पूर्व विहित परिमाणथी, अर्द्ध ममाणे जाण ॥ तेहथी अर्द्ध
माणे नागादि परिमाण ॥ ८ ॥ तेथी व्यंतर अरधा, चालीश दि-
ाज सार ॥ अयसी द्रहे कंचनगिरि, देहरां एक हजार ॥ सित्तेर
हानइ दीर्घ, वैताढये एकसो सित्तेर ॥ त्रणशे अयसी कुंडे, जिन
ाचने नहि फेर ॥९॥ बीश जमग पंच चूला, जिनघर पडिमा घेर ॥
ंबु पमुह दश तरुए, अगियारसे सित्तर ॥ दृत वैताढये बीश कोश,
ीह अर्द्ध विस्तार ॥ घणुसय चउदस चालीश, उंचपणे अवधार
॥ १० ॥ नंदीश्वर विदिशे सक्की, शाण पिया आठ आठ ॥ तस
नयरे त्रीछे सवि, त्रीस सय गुण आठ ॥ त्रिभुवन मांहे देहरां स-
गवन लख अड कोडि ॥ दोयसे ब्यासी हवे सुणो, बिंब नमुं कर
जोडी ॥ ११ ॥ तेरशे नव्याशी कोडी, साठ लाख असुराइ जाण
॥ तिग लख सहस एकाणुं, त्रणशे बीश तीच्छें प्रमाण ॥ एकसो
बावन कोडि, चोराणुं लाख समेत ॥ सहस चुंआलीस सग सय,
साठ विमानीक चैत्य ॥ १२॥ पन्नरशे दुचत्त कोडि, अडवन्न लाख
सु होय ॥ छत्रीश सहसने अयसी, त्रिभुवन बिंब कहाय ॥ चउ-
मासी दिन चिंतिए, चतुर चतुर भिध चित्त ॥ जो होत विद्या लब्धि
तो, वीरविजय नमे नित्त ॥ १३ ॥ इति ॥

पछी बेठा थका जयवीयराय पूरा कहिये, खमासमण देइ
इच्छाकारेण फहो शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थं काउस्सग्ग

य त्रिसंध्यं, जिनाः संस्तुवंति चतुर्मासि पत्रे ॥ भवेत्तीर्थयात्रा
तिष्ठतेभ्यो ॥ न० ॥ ११ ॥ इति शाश्वत सुरुय विभोःस्तवनं,
चित्तं सुगुणैः प्रवरं ॥ परिरंजित दक्ष सभा निकरं, कुरुतां शुभ
र सुखं सखरं ॥ १२ ॥ इति ॥ पछी जंकिंचि कही नमुत्थुणं
ही, अरिहंत चइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग करी
य कहेवी ॥

॥ अथ थोय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ नंदीसर वर ॥ ए देशी ॥

नमोऽर्हत्० ॥ रूपभानन चंद्रानन जाणो, वारिषेण शाश्वत
र्द्धमानो ॥ पूरव पश्चिम उत्तर ठाणो, दक्षिण पडिमा भाग प्रमाणो
॥ १ ॥ लोगस्स कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करवो. उर्ध्वलोके
जिनबिंब घणेरां, भवनपतिमां घर घर देहेरां ॥ व्यंतर ज्योतिषी
वीच्छे अनेरां, चारे शाश्वत नाम भलेरां ॥ २ ॥ पुरकर० ॥ नो०॥
भरतादिक जे क्षेत्र सुहावे, कालत्रिके जे अरिहा आवे ॥ चार नाम
र निश्चय थावे, अंग उवंगे बात जणावे ॥ ३ ॥ सिद्धाणं० ॥ का-
उ० ॥ नो० ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्० ॥ पंच कल्याणके हर्ष अधुरे, नं-
दीश्वर द्वीपे जइ पुरे ॥ हर्ष महोत्सव करत अठाइ, देव देवी शुभ
वीरे वधाइ ॥४॥ पछी बेसी नमुत्थुणं कही जावंति० कहेवी ॥ न-
मोऽर्हत्० ॥ कहेवुं ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ राग फाग ॥ थोवा गङ्गय ॥ ए देशी ॥

सासय पडिमा सुंदर, जिनघर कहेशुं तेह ॥ चारण मुनिव वंदी, भगवइ मांहे जेह ॥ ऊर्ध्वलोक चुलसी लख, सहस सत्ता त्रेवीश ॥ सातकोडि लख बिहुत्तेर, भवणे चैत्य गणीश ॥ १ ॥ जोइ वणेसु असंखा, कुंडल रुचके चार ॥ नंदीसर वर बावन, साठे चउ बार ॥ ति दुवारां शेष जिनघर, द्वार द्वार तिह दीठ ॥ मुखमंडप रंगमंडप, सखरो मणिमय पीठ ॥ २ ॥ तस उप वर थुभे, चिहुं दिशि पडिमा चार ॥ तदनंतर मणिपीठ, युगल व रते सुखकार ॥ वृक्ष अशोक धरमध्वज, वाव पुष्करिणी ज्यांही ॥ भवन भवन प्रति पडिमा, अष्टोत्तर शत मांही ॥ ३ ॥ पंचसयां ध मोटी, पडिमा लघु सात हाथ ॥ मणिपीठे देवछंदे, सिंहासन वे नाथ ॥ छत्र धरे एक चामर, धारी पडिमा दोय ॥ नागा भूअ वली जरका, कुंड धरा दोय दोय ॥ ४ ॥ जोइस व्यंतर कल्प, निवासी भवण निकाय ॥ उपपाती अभिषेका, लंकार व्यवसाय ॥ सभा सुधर्मा पंचमी, मंडप पडके जुत्त ॥ प्रत्येक दुवारा, जिनघर जिन अदभूत ॥ ५ ॥ जोइसादिक मांहि, थुभ प्रत्येके चार ॥ प्रत्येके प्रतिमा नति, करीये नित्य सवार ॥ थुभ सभामुं गणना, सासय पडिमा माह ॥ नेउअ विव मिलनां, भवणे अति सो पाह ॥ ६ ॥ शत पंचास बहुत्तेर, योजन करीये जेह ॥ लांबा पहोला उंचा, अ- नुक्रमे मविएतेर ॥ स्वर्ग नंदीश्वर कुंडल, रुचके भवन प्रमाण ॥

तीस कुल गिरि दश कुरु, मेरुवरे असिआण ॥५॥ अयसी वखारे जिनधर, गजदंताये वीश ॥ मणुज्ज नगे इखुकारे, चार चार सुजगीश ॥ पूर्व विहित परिमाणथी, अर्द्ध प्रमाणे जाण ॥ तेहथी अर्द्ध प्रमाणे नागादि परिमाण ॥ ८ ॥ तेथी व्यंतर अरधा, चालीश दिग्गज सार ॥ अयसी द्रहे कंचनगिरि, देहरां एक हजार ॥ सित्तेर महानइ दीर्घ, वैताढ्ये एकसो सित्तेर ॥ त्रणशे अयसी कुंडे, जिन वचने नहि फेर ॥९॥ वीश जमग पंच चूला, जिनघर पडिमा घेर ॥ जंबु पमुह दश तरुए. अगियारसे सित्तर ॥ वृत वैताढ्ये वीश कोश, दीह अर्द्ध विस्तार ॥ धणुसय चउदश चालीश, उंचपणे अवधार ॥ १० ॥ नंदीश्वर विदिशे सक्री, शाण पिया आठ आठ ॥ तस नयरे त्रीछे सवि, त्रीस सय गुण आठ ॥ त्रिभुवन मांहे देहरां सगवन लख अड कोडि ॥ दोयसे ब्यासी हवे सुणो, बिंब नमुं कर जोडी ॥ ११ ॥ तेरशे नव्याशी कोडी, साठ लाख असुराइ जाण ॥ तिग लख सहस एकाणुं, त्रणशे वीश तीर्च्छे प्रमाण ॥ एकसो बावन कोडि, चोराणुं लाख समेत ॥ सहस चुंआलीस सग सय, साठ विमानीक चैत्य ॥ १२॥ पन्नरशे दुचत कोडि, अडवन्न लाख सु होय ॥ छत्रीश सहसने अयसी, त्रिभुवन बिंब कहाय ॥ चउमासी दिन चिंतिए, चतुर चतुर भिध चित्त ॥ जो होत विद्या लब्धि तो, वीरविजय नमे नित्त ॥ १३ ॥ इति ॥

पछी बेठा थका जयवीयराय पूरा कहिये, खमासमण देइ इच्छाकारेण कही शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थे काउस्सग्ग

करुं ? इच्छं । करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ उससिएणं कही काउस्सग्ग पूर्ण चार लोगस्सनो करी मोटी शांति सांभलीने पारीने एक लोगस्स प्रगट कही, पछी तेर वार नवकार गणीए. श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र, अष्टापद आदीश्वर, पुंडरीक गणधर भगवानने, नमो जिणाणं ए पाठ तेर वखत कहीये.

पछी बेसीने जुदां जुदां पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहीये ते लखीये छीये.

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥

विमलाचल विमला पाणी, शीतल तरु छाया ठाणी ॥ रसवेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ १ ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो, चउद क्षेत्रमां तीर्थ न एवो ॥ स० ॥ पट्री पाली उल्लसीए, छट्ठ अट्ठमे काया कसीए ॥ मोह मल्लनी सामा धसीए, विमलाचल वेगे वसीए ॥ स० ॥ २ ॥ अन्य स्थानक कर्म जे करीए, ते हिमगिरि हेठे हरीए, पालव प्रदक्षिणा फरीए, भवजलधि हेलां तरीए ॥ स० ॥ ३ ॥ शिरमंदिर चढवा काजे, सोपाननी पंक्ति विराजे ॥ चढतां समकितनी छाजे, दुर भविया ते लाजे ॥ स० ॥ ४ ॥ पांडव प्रमुख केइ संता, आदीश्वर ध्यान धरंता, परमातम भाव भजंता, सिद्धाचल सिद्ध अनंता ॥ स० ॥ ५ ॥ षट्मासी ध्यान धरावे, शुक राजन राज्यने पावे ॥

वहिरंतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥ स० ॥ ६ ॥ मणिधान
भजो गिरि जाचो, तीर्थंकर नाम निकाचो ॥ मोहरायने लागे तमा-
चो, शुभ वीर विमलगिरि साचो ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं तीर्थ स्तवन ॥

॥ जात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि ॥ ए देशी ॥

सहसावन जइ वसिए, चालोने सखी सहसावन जइ वसीए ॥ घरनो धंधो कबुअ न पूरो, जो करोए अहो निसिए ॥ पीयरमां सुख घडीय न दीठुं, भय कारण चउ दिशिय ॥ चा० ॥ १ ॥ नाक विहूणा सयल कुटुंबी, लज्जा किमपि न पसिए ॥ चा० ॥ भेलां जमीए ने नजर न दीसे, रहेवुं घोर तमसीए ॥ चा० ॥ २ ॥ पीयर पाछल छल करी महेल्युं, सासरीए सुख वसी ए ॥ चा० ॥ सासुडी ते घर घर भटके, लोकने चटके डसीए ॥ चा० ॥ ३ ॥ कहेतां सासु आवे हांसु, भुशीए मुख लेइ मशीए ॥ चा० ॥ कंत अमारो वाली भोलो, जाणे न असि मसि कसीए ॥ चा० ॥ ४ ॥ जूठा बोली कलहण शीला, घर घर शुनी ज्युं भसीए ॥ चा० ॥ ए दुःख देखी हइडुं मूझे, दुर्जनथी दूर खसीए ॥ चा० ॥ ५ ॥ रैवतगिरिनुं ध्यान न धरीयुं, काल गयो हसम शीए ॥ चा० ॥ श्री गिरनारे त्रण्य कल्याणक, नेमि नमन उल्लसीए ॥ चा० ॥ ६ ॥ शिव वरशे चोवीश जिनेश्वर, अनागत चउवीशीए ॥ चा० ॥ कैलाश उजयंत रैवत कहीए, शरण गिरिने फरसीए ॥ चा० ॥ ७ ॥ गिर-

नार नंदभद्र ए नामे, आरे आरे छत्रविशिए ॥ चा० ॥ देखी मही तल महिमा महोटो, प्रभु गुण ज्ञान वगसिये ॥ चा० ॥ ८ ॥ अनुभव रंग वधे तेम पूजो, केशर घसी उरशीए ॥ चा० ॥ भावस्तव पुन केवल प्रगटे, श्री शुभ वीर विलसीए ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुगिरि स्तवन ॥

॥ चित्त चेतो रे ॥ ए देशी ॥

आदि जिणेसर पूजता दुःख मेटो रे ॥ आबु गढ दृढ चित्त ॥ भविक जइ भेटो रे ॥ देखत दे देहरां नमो ॥ दुः० ॥ चार परिमित नित्य ॥ भ० ॥ १ ॥ वीशगज वली पदमावती ॥ दुः० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ भ० ॥ शंख दीये अबीसुरी ॥ दुः० ॥ पंच कोश वहे वाण ॥ भ० ॥ २ ॥ चार पातशाह जीतीने ॥ दुः० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ भ० ॥ द्रव्य भरी रमनो कीयो ॥ दुः० ॥ ऋषभदेव प्रासाद ॥ भ० ॥ ३ ॥ विहुंतर श्रीयका आठशे ॥ दुः० ॥ चिर प्रमाण कहाय ॥ भ० ॥ एकशे कारीगरे ॥ दुः० ॥ वरस त्रिके ते थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचीया ॥ दुः० ॥ लाख त्रेपन बारकोडी ॥ भ० ॥ सहस दश अढारशीए ॥ दुः० ॥ प्रतिष्ठा करी मनकोडी ॥ भ० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखला ॥ ॥ दुः० ॥ लाख अढार प्रमाण ॥ भ० ॥ वस्तुपाल तेजपालना ॥ ॥ दुः० ॥ ए शोभ कोतरा जाण ॥ भ० ॥ ६ ॥ मूल नायक नेमी सर ॥ दुः० ॥ चारशे अडसठ चिर ॥ भ० ॥ ऋषभ धातुमय देहरे ॥ दुः० ॥ एकशो पिस्तालीश चिर ॥ भ० ॥ ७ ॥ चउमुख

चैत्य जुहारी ए ॥ दुः० ॥ काउस्सगीया गुणवंत ॥ भ० ॥ वाणु मित्त तेहमां कहुं ॥ दुः० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ भ० ॥ ८ ॥ अचलगडे प्रभुजी घणा ॥ दुः० ॥ जात्रा करो हुंशीयार ॥ भ० ॥ कोडि तपे फल जे लहे ॥ दुः० ॥ ते प्रभु भक्ति विचार ॥ भ० ॥ ९ ॥ सालंबन निरालंबने ॥ दुः० ॥ प्रभु ध्याने भवपार ॥ भ० ॥ मंगल लीला पामीये ॥ दुः० ॥ विरविजय जयकार ॥भ० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टापद स्तवन ॥

॥ कुंवर गंभारो नजरे ॥ ए देशी ॥

चउ अठ दश दोय वंदीये जी, वर्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरे जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ भरत भरतपति जिन मुखे जी, उच्चरीयां व्रत वार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणे जी, चोवीश प्रभुनो विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्यो जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण भरावीया जी, विंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणे जी, पच्छीमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदे दश उत्तरे जी, पूरवे रुषभ वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ रुषभ अजित पूरवे रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आतम शक्ते करे जातरा जी, ते भव मुक्ति वरे इणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंभो श्री सिद्धाचल जी, हुआ असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिने पण इण गिरे जी, झगमग

चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगे जी, देव प्रतिमा गुण दाख रे ॥ सिंहनिषद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेवहिंडनी साख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिनमुख में सुण्यो जी, इण विधे पाठ पढाय रे॥ श्री शुभ वीर वचन रस जी, गायो रुषभ शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथश्री समेत शिखर स्तवन ॥

॥ भमरा भूधर शें नाव्यो ॥ ए देशी ॥

नाम सुणत शीतल श्रवणा, जस दर्शन शीतल नयनां ॥ स्तवन करत शीतल वयणां रे ॥ १ ॥ समेतशिखर भेटण अलजो, मुज मन बहु भवि सांभलजो रे ॥ अनुभव मित्र सहित मलजो रे ॥ स० २ ॥ जंबूद्वीप दाहिण भरते, पूरव देशे अनुसरते, समेत शिखर तीरथ वरते रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जस दर्शन घन कर्म दहे, दिनकर ताप गगन वहे, शशी वर्षा पत्र विनाश लहे रे ॥स०॥४॥ अजितादिक दश शिव वरीया, विमलादिक नव भव तरिया, पार्श्वनाथ एम वीश मलीया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मुक्ति वर्या प्रभु इण ठामे, वीशे टुंके अभिरामे, वीश जिनेश्वरने नामे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उत्तर दिश ऐरवते मांहि, श्री सुप्रतिष्ठ गिरि उछांहि, सुचंद्रादिक वीश त्यांहि रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इम दश क्षेत्रे वीश लह्या, एक एक गिरिवर सिद्ध थया, तीर्थोद्गार्ये पयन्ने कह्या रे स० ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी तेहथी लहीए, भवजल पार ने निरवहिए, सद्दहन तीरथ तस

कहीये रे ॥ स० श ९ ॥ कल्याणक एक जिहां थाय, ते पण तीरथ कहेवाय, वीश जिनेश्वर शिव जाय रे ॥ स० ॥ १० ॥ तेणे ए गिरिवर अभिराम, मुनिवर कोडि शिव ठाम, शिव वहू खेलण आराम रे ॥ स० ॥११॥ मुनिवर सूत्र अरथ धारी, विचरे गगनलब्धि प्यारी, देखी तीरथ पयचारी रे ॥ स० ॥१२॥ समेतशिखर सुप्रतिष्ट तणी, ठवणा पूजन दुःख हरणी, घेर बेठां शिव नीसरणी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ दर्शने जस दर्शन वरीए, लही शुभ सुख दुःखडां हरीए, वीरविजय शिवमंदिरीये रे ॥ स० ॥ १४ ॥

इति श्रीमत्संविग्न सुज्ञ माज्ञ तज्ज्ञ तंत्रज्ञ तपो गणेस्थित पंडित श्री १०५ श्री क्षमाविजय गणि शिष्य यशोविजयगणि शिष्य पंडित श्री शुभविजय गणि शिष्येण विरचिताब्द (१५६५) आषाढ शुक्ल प्रतिपदि घस्रे त्रिक चातुर्मासिक देववंदनविधिः परिपूर्णतां प्राप्तः ॥

कार्तीक चौमासी चोदशनो विषय संपूर्ण थतां एटलुं विशेष जाणवुं के अषाड चोमासामां वरसादादि कारणे त्रसादिक जीवोनी घणी उत्पत्ती थवाथी भाजीपालो तेमज मेवो तथा फलादिक वगेरे जेमां भागवाथी एक बे दीवसमां लीलफुग सेवालादि थइ जाय तेवा फलो आदि अभक्ष्य थइ जवाथी ते वापरवानी बंधी होय छे ने कार्तिक शुद १४ पछी वापरवामां आवे छे. एटले भाजीपाली मेवो विगेरे वापरवानी छुट समजवी. परंतु बरावर तपास करी जयणा सहित वापरवा लक्ष राखवुं.

-कार्तिक सुद १५ नो महिमा अने श्री सिद्धाचळ-जीनी तीर्थयात्रानुं वर्णनन्. ॥

शत्रुंजय तिर्थनो महिमा अने प्रभाव.

सदा प्राय: शाश्वत् तरण तारण पूज्य पवित्र तिर्थ शत्रुंजयना सिद्धाचळ, विमळाचळ आदि उत्तम २१ नाम छे तथा उत्कृष्ट १०८ नाम छे. के जेमना उपर अनंता जीव मोक्ष पाम्या ने पामशे. तर्या, तरे छे अने तरशे. तेवा सर्वोत्कृष्ट तिर्थनो विद्यमान काळे मोटा वार्षिक चार मेळाओथी महिमा विस्तारने पाम्यो छे. ने दरेक मेळा वखते हजारो यात्राळु तिर्थस्पर्श करे छे ने लाभ मेळवे छे.

मेळो १ लो-कार्त्तकी पुनमनो ते दिवसे द्राविडने वारिखिल्ल मुनिओ दश क्रोडथी मुक्ति पदने पाम्या, जेनी देहेरी तळेटीमां छे.

मेळो-२ जो-फागण शुद ८—प्रथम तिर्थंकर रिषभदेव एक पूर्वमां पूर्व नवाणुं वार आ दिवसे आव्या ने रायण पाडे थया. फागण शुद १३-कृष्ण वासुदेवना शांब ने प्रद्युम्न पुत्रो साडीआठ क्रोड साथे 'भाडवा शिखरे' मुक्ति वर्या. ने महिमानो मेळो आदपर सिद्धवडमां भराय छे.

मेळो ३ जो-चैत्री पुनमनो—प्रथम तिर्थंकरना पौत्र पुन्डरिक गणधर पांच क्रोड मुनि साथे मोक्ष गया. तथा काळथी पुंडरगिरी नाम पण प्रसिद्धमां छे. पुंडरिकजीने देहरे ने हिराम मार्ग आंगीओनो न्हाव छे.

मेळो ४ थो—अषाडी चौदशनो—वर्षाऋतुमां एक ठेकाणे रहेवानुं शास्त्र फरमान होवाथी चार महीना दर्शननो लाभ न पामी शकाय तेथी वरसनो छेल्लो मेळो अने चातुर्मास रहेवा आवनाराओनो समुह थवाथि मेळो जयवंत वर्ते छे.

वळी आ तिर्थ उपर—आसो शुद १५ ना रोज पांच पांडवो वीस क्रोड मुनि साथे, नमि अने विनमि विद्याधरो बे क्रोड मुनि साथे, नारदजी एकाणु लाख राम भरत त्रण क्रोड साथे, विगेरे असंख्याता प्रसिद्ध माणसो मुक्ति वर्या छे. तेमज गइ चोवीसीना अजितसेन आदि तिर्थंकर मोक्षे गया छे. अने वर्त्तमान त्रेवीस तिर्थंकरो (नेमनाथ सिवाय) ए यात्रा करी छे ने अजितनाथ तथा शांतिनाथ भगवाने चोमासुं कर्युं छे. सर्व मयुरादि प्राणीओने तार्या छे. तेमज प्राणीओनी भव्यपणानी खात्रीनो तेमनुं दर्शन मोटो गुण धरावे छे. विगेरे अनंता गुणथी पालीताणा शहेरनी तळेटीना उपर मुकुटपणे महिमावंत जयवंत वर्त्ते छे.

भगवाने, इंद्रमहाराजने शत्रुंजय महात्म्यनुं कीधेलुं फळ.

हे इंद्र ! फक्त शत्रुंजयनुं नाम सांभळवाथी जे पुण्य थाय, तेनाथी क्रोडगणुं पुण्य तेमनी समीप गयाथी थाय छे अने अनंतगणुं पुण्य नजरे नजर जोयाथी थाय छे. हवे आ तिर्थने जोतां या न जोतां पण जे माणसो त्यां जना रुनी भक्ति या सन्मानमां तत्पर

रहे, तेओ मोक्षपर्यंत महा सुखने मेळवे छे.

आ तीर्थना महात्म्यादिकना संबंधमां जेटली हकीकत लखीए तेटली लखी शकाय तेम छे. अनेक शास्त्रोमां तेनुं वर्णन आवे छे. श्री शत्रुंजय महात्म्यमां भरत चक्रीना उद्धारनी हकीकत बहुज विस्तारथी आपवामां आवी छे; तेनी अंदर भरतचक्रीए करेली गिरिराजनी, श्री ऋषभदेवजीनी अने नेमिनाथ भगवंतनी स्तुतिओ खास वांचवा लायक छे. संस्कृतना अभ्यासीओए तो ते कंठे करवा लायक छे.

आ तीर्थे शुभ भावथी यात्रा करनार प्राणीना अनेक प्रकारनां पूर्वे करेलां पापो नाश पामी जाय छे. दान, शील, तप ने भाव ए चारे प्रकारना धर्मनुं अहीं बहु सहेलाइथी आराधन थइ शके छे. ते आ प्रमाणे–अत्युत्तम तीर्थ होवाथी मुनिवर्गनुं आगमन ज्याज फरे छे, तेथी तेमने दान आपवानो जोगवाइ सहेजे मळी आवे छे. उत्तम श्रावको पण अनेक आवता होवाथी बंने प्रकारनुं सुपात्रदान अहीं दइ शकाय छे, ब्रह्मचर्य सहेजे पळे छे, यथाशक्ति तपस्या पण थइ शके छे अने शुभ भावनी वृद्धिने माटे तो आ तीर्थ खरा आलंबन–साधनभूत छे. माटे ज्यारे ज्यारे सांसारिक व्यवसायमांथी अवकाश मळे त्यारे त्यारे अथवा तो अवकाश मेळवीने पण अवश्य आ तीर्थनी यात्रानो परम लाभ मेळववो.

हवे कार्तिकी पुनमने दिवसे घणा मनुष्य तीर्थयात्राथी शत्रुंजय

पोताना शहेर अगर गाममां कोइ मुकरर करेली जग्याओए तीर्थाधिराजनो पटबांधीने पण जात्रा करीने दिवसनो विधि साचवे छे ते विधि नीचे प्रमाणे उपवासादिक यथाशक्ति तप करी मन. वचन. कायादिनी शुद्धिसहित ज्यां पटआदिक बांध्या होय ते स्थले जइ पटादिक देखता प्रथम मस्तके नमस्कार करी पछी त्रण प्रदक्षिणा दइ प्रभु सन्मुख उभा रही त्रण खमासणा दइ चैत्यवंदन स्तवनादि करवा ते लखीए छीये.

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं. सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं. ॥ १ ॥ विमल गिरिवर श्रृंग मंडण, प्रवर गुणगण भुधरं; सुर असुर किन्नर कोडि सेवित. नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय जिन गुण मनहरं. निर्ज्जरावलि नमे अहोनिश. नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरिक गणपति सिद्धि साधि, कोडिपण मुनि मनहरं; श्री विमल गिरिवर श्रृंग सिद्धा. नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडिनंतए गिरिवरं; मुक्ति रमणी वर्या रंगे. नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोकमांही, विमल गिरिवरतो परं; नहि अधीक तीरथ तीर्थपति कहे. नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखर मंडण, दुःख विहंडण ध्याइये; निज शुद्ध सत्ता साधनार्थ, परम ज्योतिनीपाइयें.

जिनमोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थितजयकरं; गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्म विजय सुहितकरं. ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय चैत्यवंदन ॥

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे; भाव धरीने जे चडे, तेने भवपार उतारे; अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तिर्थनो राय; पूर्व नवाणुं ऋषभदेव, ज्यां ठविया प्रभु पाय. ॥ २ ॥ सूरज कुंड सुहामणो, कवडजक्ष अभिराम; नाभिराया कुल मंडणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥

॥ श्री आदिजिन चैत्यवंदन ॥

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो ॥ आदीश्वर जिनरायनो, जिहां महिमा जाचो ॥ १ ॥ इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिव वास ॥ एहगिरि सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥ २ ॥ दुर्गत नवि दूरे हरे ए, बहु भव संचित तेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह ॥ ३ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

सकल सुहंकर सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल सुखिये; सुरनर नरपति [illegible] सेवत, नित करे ते मुणीए ॥ १ ॥ सकल तीरथ अवतार [illegible], बहु गुण भंडार; दुर्गति [illegible] टल, पाम्या भवपार ॥२॥

चैत्री पुनमने दिनेए, कर्म मर्म करी दूर, ते तीरथ आराहीए, दान सुयश भरपुर ॥ ३ ॥

॥ श्री सिद्धाचळ चैत्यवंदन ॥

ए तिरथ उपर अनंत, तीर्थंकर आव्या; वली अनंता आवशे, समता रस भाव्या ॥१॥ आ चोवीसी मांही एक, नेमीश्वर पाखें ॥ जिन त्रेवीश समोसर्या, एम आगम भाखे ॥ २ ॥ गणधर मुनिवर केवली, समोसर्या गुणवंत ॥ प्रेमे ते गिरि प्रणमतां, हरखें दान हसंत ॥ ३ ॥

॥ श्री सिद्धाचळ चैत्यवंदन ॥

ए तीरथना उपरें, थया उद्धार असंख्य, तिम प्रतिमा जीनरायनी, थइ तास न संख्य ॥ १ ॥ अजित शांति जिनराज इथ्थ, रह्या चौमासी ॥ ए तीरथ मुनि अनंत, हुवा शिवपुर वासी ॥२॥ चैत्री पुनमने दिने ए, महिमा जास महान ॥ ए तीरथ सेवन थकी, दान वधे बहुमान ॥ ३ ॥

॥ श्री सिद्धाचळ चैत्यवंदन ॥

अष्टापद आदि अनेक, जग तीरथ मोटां ॥ तेहथी अधिकुं सिद्धक्षेत्र, एह वचन न खोटां ॥ १ ॥ जे माटे ए तीर्थसार, सासच रति रुप ॥ जेह अनादि अनंत शुद्ध, इम कहे जिन भूप ॥ २ ॥

कलिकाले पण जेहनो ए, महिमा प्रबल पडूर ॥ श्री विजयराज सूरिंदथी, दान वधे बहुनूर ॥ ३ ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यारे, धन्य भाग्य हमारां, विमलाचल गिरि भेट्यारे, धन्य भाग्य हमारां, ए गिरिवरनो महिमा महोटो, कहेतां नावे पार ॥ रायण रुख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणुं वार ॥ ध० ॥ १ ॥ मूल नायक श्रीआदि जिनेसर, चउमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट द्रव्यशुं पूजो भावें, समकित मूल आधाररे ॥ध०॥२॥ भाव भगतिशुं प्रभु गुण गावे, अपणा जनम सुधारे ॥ यात्रा करी भविजन शुभ भावें, नरयतिर्यंच गतिवारेरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ दूर देशांतरथी हुं आव्यो, श्रवणे सुणी गुण तोरा। पतित उद्धारण बिरुद तुमारुं, ए तीरथ जग साररे ॥ ध० ॥ ४ ॥ संवत अढार त्र्यासी ए मास आषाढे, वदि आठम भोमवारा ॥ प्रभुजीके चरण प्रतापसे संघमें, खेमा रतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

म्हारुं मन मोह्युंरे श्री सिद्धाचलेरे, देखीने हरखित थाय ॥ विधिशुं कीजेरे यात्रा एहनीरे, भव भवनां दुःख जाय ॥म्हा० ॥१॥ पांचमे आरेरे पावन कारणेरे, ए समुं तीरथ न कोय ॥ मोटो महिमा रे जगमां एहनोरे, आ भरते इहां जोय ॥ म्हा० ॥ २ ॥ एह

गीरी आव्या रे, जिनवर गणधरारे, सीधा साधु अनंत ॥ कठिन करम पण इण गिरि फरसतां रे, होये कर्मनी शांत ॥ मा० ॥३ ॥ जैन धरम ते साचो जाणीयेरे, मानव तीर्थ ए थंभ ॥ सुरनर किन्नर नृप विद्याधरारे, करता नाटारंभ ॥ मा० ॥ ४ ॥ धन धन दहाडो रे,धन धन ए घडीरे, धरीये हृदय मजार ॥ ज्ञान विमल प्रभु एहना गुण घणारे, कहेतां नावेरे पार ॥ मा० ॥ ५ ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

आंखडीयेरे में आज शेत्रुंजो दीठोरे, सवा लाख टकानो दहाडोरे, लागे मुने मीठोरे ॥ ए आंकणी ॥ सफल थयोरे महारा मन नो उछाहो, वाहाला मारा भवनो सांसो भाग्योरे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रभुजीने लाग्योरे ॥ शेत्रुंजो दीठोरे ॥१॥ मानव भवनो लाहो लीजें ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजेरे ॥ सोना रूपाना फुलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दीजेरे ॥ शेत्रुं० ॥२ ॥ दुधडे पखालीने केशरे घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीसर पुज्यारे ॥ श्री सिद्धाचल नयणे जोतां, पाप मेवासी धज्यारे ॥ शेत्रुं० ॥ ३ ॥ श्रीमुख सोधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जीणंद इम बोलेरे ॥ त्रण भुवनमां तीरथ महोटुं, नहि कोइ शेत्रुंजा तोलेरे ॥ शेत्रुं०॥४॥ इंद्र सरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहेरे ॥ कायानीं तो कासल्ल काढी, सुरज कुंडमां नाहेरे ॥ शेत्रुं ॥ ५ ॥ कांकरे कांकरे श्री सिद्ध क्षेत्रे ॥ वा० ॥ साधु अनंता सीधारे ॥ ते माटे

ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनंता कीधारे ॥ शेत्रुं० ॥६॥ नाभिरायं सुत नयणे जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठारे॥ उदय रतन कां आज म्हारे पोते, श्री आदिश्वर तूठारे शेत्रुं० ॥ सवा०७ ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

चालो सखी सिद्धाचल जइए, चालो सखी विमलाचल जइये,
के गिरिवर देखी सुख लइए, के पालिताणे जइ रहियें॥चालो०॥१
के ए गिरियात्रा यें जे आवे, के भव त्रीजे सिद्धि आवे,
के अजरामर पदवी पावे ॥ चालो० ॥ २ ॥
के यात्रा नवाणुं करीए, के नवकार लाख सवा गणियें
के भवसागर सेहेजें तरियें ॥ चालो० ॥ ३ ॥
के छठ अठम काया कसिये, के मोहराजा सामे धसिये
के वेगे शिवपुरमां वसिये ॥ चालो० ॥ ४ ॥
के सर्व तीरथनो ए राजा, के सूरज कुंडमां न्हाजा
के रोगीया नर होय ते साजा ॥ चालो० ॥ ५ ॥
के केसर चंदन घसी घोली, के कस्तुरी बरास भेली,
के पूजो सर्व पर्श होली ॥ चालो० ॥ ६ ॥
के पूर्वने भावना भावो, के केवल ज्ञान सुगल पावो,
के तो होवे शिवपुरमां जावो ॥ चालो० ॥ ७ ॥
के [illegible] रत्ने, के महा वदि चंदकांते दिवसे,
के [illegible] ॥ चालो० ॥ ८ ॥

के एह उत्तम पदनी सेवा, के देजो मुने देवाधिदेवा
के शिवरूपी लखमीने सुख मेवा ॥ चालो० ॥ ९ ॥

श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

विमलाचल विमला प्राणी, शीतल तरु छाया ठराणी; रस वेधक कंचन खाणी, कहे इंद्र सुणो इंद्राणी ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो, चौद क्षेत्रमां तीरथ न एहवो ॥ सनेही संत ए गिरि सेवो ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी॥छरीपाळीने उल्लसीयें,छठ अठम काया कसीयें, मोहमल्लने सामा धसीये, विमलाचल वेहेलां वसियें ॥ सनेही ॥ २॥ अन्य थानक कर्म जे करीयें, ते हेमगिरि हेठा हरीयें, बे पोले प्रदक्षिणा फरीयें, भव जलधि हेला तरीयें ॥ सनेही० ॥ ३ ॥ शिवमंदिर साधवा काजे, सोपाननी पंक्ति बिराजे, चढतां दृढ समकित छाजे, दुर्भव्य अभव्य ते लाजे ॥ सनेही० ॥४॥ पांडव प्रमुहा केइ संता, आदीसर ध्यान धरंता, परमातम भावें भजंता, सिद्धाचळ सीधा अनंता ॥ सनेही० ॥५॥ षटमासी ध्यान धरावे, शुकराजा राज्य ते पावे, देहांतर शत्रु हरावे, शत्रुंजय नाम धरावे ॥ सनेही० ॥ ६ ॥ प्रणिधान धरो ए गिरि साचो, तीर्थंकर नाम निकाचो, मोहरायने लागे तमाचो, शुभ वीर विमलगिरि साचो॥सनेही०॥७॥

श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

वीरजी आयारे विमलाचलके मेदान, सुरपति आयारे, सम-

वसरण मंडाण ॥ ए आंकणी ॥ देशना देवे वीरजी स्वाम, शत्रुंजय महिमा वरणवे ताम ॥ भाखे आठ उपर सो नाम, तेहमां भाख्युंरे, पुंडरगिरि अभिधान ॥ सोहम इंदोरे, तव पूछे बहु मान ॥ किम थयुं स्वामीरे, भांखो तास निदान ॥ वीर० ॥ १ ॥ प्रभुजी भाखे सांभल इंद्र, प्रथम जे हुआ, रिषभजीणंद, तेहना पुत्र ते भरत नरिंद, भरतना हुआरे रुषभसेन पुंडरिक ॥ रुषभजी पासेरे, देशना सुणी ते उत्तंग ॥ दीक्षा लीधीरे, त्रिपदी ज्ञान अधिक ॥ वीर० ॥ २ ॥ गणधर पदवी पाम्या जाम, द्वादश अंगी गुंथी अभिराम ॥ विचर्या महियलमां गुणधाम, अनुक्रमे आव्यारे श्री सिद्धाचल सार ॥ मुनिवर कोडिरे, पांच तणे परिवार ॥ अनशन कीधुरे, निज आतमने उदगार ॥ वीर० ॥ ३ ॥ तेणे ए प्रगट पुंडर गिरि नाम, सांभल सोहम देवलोक स्वाम, एहनो महिमा अनिहि उदाम, इण दिन कीजेरे, नर जप पूजाने दाम ॥ व्रत वली पोसोरे, जेह वर निदान ॥ फल तस पामेरे, पंच कोडी गुणमान ॥ वीर० ॥ ४ ॥ चैत्री पुनम दिवसे जेह, पाम्या केवल ज्ञान अछेह ॥ निरगुण वरिया अमल अदेह ॥ पूर्णा नंदीरे, अगुरु लघु आगार ॥ मन अविनाशीरे, निज गुण भोगी अवार ॥ निज गुण करतारे, पर द्रव्य नहीं चाह ॥ वीर० ॥ ५ ॥ मन्के भव्य जीव जे होय, पंच भवे, मुक्ति लहे सोय ॥ एहमां संशय छे. नहीं कोय, व्यवहार ने वीरे, [illegible] ॥ [illegible] संगीरे, भव मुक्ते [illegible] ॥ [illegible] गुण [illegible], [illegible] ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीर [illegible] पूजा [illegible] ॥ तेहमां [illegible]

कांइ रेप, इणी परे भांखेरे, जीनवर उत्तम वाण॥ सांभली बुझयारे, केइक भविक सुजाण ॥ इणिपरें गायारे, पद्मविजय सुममाण ॥ ॥ वीर० ॥ ७ ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनुं स्तवन ॥

सिद्धाचळ शिखरे दीवोरे, आदीश्वर अलवेलो छे. जाणे दर्शन अमृत पीवोरे आदीश्वर अलवेलो छे. शिव सोम जशानी लहारोरे. आ. सि० ॥ १ ॥ करे शिव सुंदरीनुं आणुंरे. आ. नारदजी लाख एकाणुंरे. आ. वसुदेवनी नारी प्रसिद्धिरे. आ. पांत्रीस हजारे ते सिद्धिरे, आ. सि० ॥ २ ॥ लाख बावन एक कोडीरे, आ. पंचावन सहसने जोडीरे. आ. सातसें सीत्योतेर साधुरे. आ. प्रभु शांति चोमासु कीधुंरे. आ. सि० ।.३॥ तव ए वरिया शिवनारीरे. आ. चौद सहस मुनिदमि तारीरे; आ. प्रद्युम्न प्रीया अचंभीरे, आ. चौंआलीससें वैदरभीरे. आ. सि० ॥ ४ ॥ थावचा पुत्र हजारेरे. आ. शुक्र परिवाजक धाररे. आ. शेलग पण सत्य विख्यातेरे. आ. शुभद्र मुनि सत सातेरे. आ. सि० ॥ ५ ॥ भव तरीया तिणे भव तारणरे. आ. गजचंद्र महोदय कारणरे. आ. सुरकांत अचळ अभिनंदोरे. आ. सुमति श्रेष्ट भय फंदोरे. आ. सि० ॥ ६ ॥ इहां मोक्ष गया केइ कोडीरे. आ. अमने पण आशा मोटीरे. आ. श्रद्धा संवेग भरीयोरे. आ. में मोटो दरियो तरीयोरे. आ० सि० ॥ ७ ॥ भद्रा वीण कोण इहां आवेरे. आ. लघु जन्मां किम ते नावेरे.

आ. तिणे ठाय हवे प्रभु झाल्यो रे. आ. शुभवीरने हेडे व्हालो रे आ. सि० ॥ ८ ॥

॥ अथ शत्रुंजय तीर्थनी थोयो ॥

(१)

पुंडरिक मंडन पाय प्रणमीजे, आदीश्वर जिनचंदाजी. नेमि विना त्रेवीश तीर्थंकर, गिरि चढिआ आनंदाजी; आगम मांहि पुंडरिक महिमा, भाख्युं ज्ञान जिणंदाजी, चैत्री पुनम दिन देवी चो· सरी सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी.

(२)

विमलाचल मंडन, जिनवर आदि जिणंद, निर्मळ केवल ज्ञान दिणंद; जे पूर्व नवाणुं, आव्या धरी आणंद, शत्रुंजय गिरिवर, समोसर्या सुखकंद.

(३)

श्री सिद्धाचल मंडन, ऋषभ जिणंद दयाळ; मरुदेवा नंदन वंदन करुं त्रण काळ, ए तीरथ जाणी, पूर्व नवाणुं वार, आदीश्वर आव्या, जाणी लाभ अपार.

॥ अथ श्री सिद्धगिरि स्तुतिना दुहा (१०८)॥

श्री आदीश्वर अजर अमर, अव्याबाध अहर्निश,
परमातम परमेसर, प्रणमुं परम मुनीश, १

जय जय जगतपति ज्ञान भान, भासित लोकालोक,
शुद्ध स्वरूप समाधिमय, नमित सुरासुर थोक २
श्री सिद्धाचल मंडणो नाभि नरेसर नंद.
मिथ्यामति मत भंजणो, भवि कुमुदाकरचंद. ३
पुरव नवाणुं जस सिरे, समवसर्या जगनाथ;
ते सिद्धाचल प्रणमीए, भक्तें जोडी हाथ. ४
अनंत जीवइण गिरिवरें, पाम्या भवनो पार;
ते सिद्धाचळ प्रणमीये, लहिए मंगल माल ५
जस शिर मुकुट मनोहरु, मरुदेवीनो नंद;
ते सिद्धाचल प्रणमीए, रूद्धि सदा सुख वृंद. ६
महीमा जेहनो दाखवा, सुरगुरु पण मति मंद;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, प्रगटे सहजानंद. ७
सत्ता धर्म समारवा, कारण जेह पडूर;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, नासे अघ सवि दूर. ८
कर्म काट सवि टाळवा, जेहनुं ध्यान हुताश;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पामीजे सुखवास. ९
परमानंद दशा लहे, जस ध्याने मुनिराय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पातक दूर पलाय. १०
श्रद्धा भापण रमणता, रत्नत्रयीनुं हेतु;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, भव मकराकर सेतु. ११
महापापी पण निस्तर्या. जेहनुं ध्यान सुहाय.
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए. सुरनर जस गुण गाय. १२

पुंडरिक गणधर प्रमुख, सिद्धा साधु अनेक;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, आणी हृदय विवेक. १३
चंद्र शेखर स्वसा पति, जेहने संग सिद्ध,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जे पामी निज ऋध्य. १४
जलचर खेचर तिरिय सेवे, पाम्या आतम भाव;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, भवजल तारण नाव. १५
संघयात्रा जेणे करी; कीधा जेणे उद्धार;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, छेदीजे गति चार. १६
पुष्टि शुद्ध संवेग रस, जेहने ध्याने थाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, मिथ्या मती सर्व जाय. १७
सुरतरु सुरमणि सुरगवि, सुरघट सम जस ध्याय:
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, प्रगटे शुद्ध स्वभाव. १८
सुरलोके सुर सुंदरी, मली मली थोके थोक;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, गावे जेना श्लोक. १९
योगीश्वर जस दर्शने, ध्यान समाधि लीन;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, हुवा अनुभव रस लीन. २०
भानु प्रगटे पूर्व दिशे, जिम वर्द्धिता नित्य,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, महिमा देखत चित्त. २१
सुर असुर नर किन्नरा, रहे छे जेहने पास;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पामे मंगल विलास. २२
चक्रवर्ती जेहनो, दर्शिता हरि सेव;

ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, कुमति कदाग्रह मेट. २३
कुमति कौशिक जेहने, देखी झांखा थाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सवि तस महिमा गाय. २४
सूरज कुंडना नीरथी, आधि व्याधि पलाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जस महिमा न कहाय. २५
सुंदर टुंक सोहामणो, मेरुसम प्रासाद;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, दुर टले विखवाद. २६
द्रव्य भाव वैरी तणी, जिहां आवे होय शांति;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जाये भवनी भ्रांति. २७
जग हितकारी जिनवरा, आव्या एणे ठाम;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जस महिमा उद्दाम. २८
नदी शत्रुंजी स्नानथी, मिथ्या मल धोवाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सविजनने सुखदाय. २९
आठ कर्म जे सिद्धगिरे, न टीये तिव्र विपाक;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जिहां नवी आवे काक. ३०
सिद्ध शिला तपनीयमय, रत्न स्फाटिक खाण,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पाम्या केवल नाण. ३१
सोवन रुपा रत्ननी, ओषधि जात अनेक;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, न रहे पातक एक. ३२
संयम धारी संयमे, पावन होय जिण क्षेत्र;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, देवा निर्मळ नेत्र. ३३
श्रावक जिहां शुभ द्रव्यथी, ओच्छव पुजा स्नात्र;

ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पोषे पात्र सुपात्र. ३४
स्वामिवत्सल पुण्य जिहां, अनंत गुण कहेवाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सोवन फूल वधाय. ३५
सुंदर जात्रा जेहनी, देखी हरखे चित;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, त्रिभुवन मांहे विदित. ३६
पालीताणुं पुर भलुं, सरोवर सुंदरपाल;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जाए सकळ जंजाळ. ३७
मन मोहन पागे चढे, पग पग कर्म खपाय;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, गुण गुणि भाव लखाय. ३८
जेणे गिरि रूख सोहामणां, कुंडे निर्मळ नीर;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, उतारे भव तीर ३९
मुक्ति मंदिर सोपान सम, सुंदर गिरिवरपाज;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, लहिए शिवपुर राज. ४०
कर्म कोटि अघ विकट भट, देखी धूजे अंग,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए दिन दिन चढते रंग. ४१
गौरी गिरिवर उपर, गावे जिनगुण गान;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए; सुणे आगम गान. ४२
[illegible] नग, [illegible] नाम.
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुरवरमां मघवा यथा, ग्रह गणमां जिमचंद;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये; तिम सवि तीरथ इंद. ४५
दीठे दुर्गति वारणो, समर्यो सारे काज;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, सवि तीर्थ सिरताज. ४६
पुंडरिक पंच कोडीसुं, पाम्या केवल नाण;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, कर्म तणी होइ हाण ४७
मुनिवर कोडि दस साहत, द्रविड अने वारिखेण;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, चढिया शिव निश्रेण. ४८
नमि विनमि विद्याधरा, दोय कोडि मुनि साथ;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, पाम्या शिवपुर आथ. ४९
रुषभ वंसी नरपति घणा, इणे गिरि पोता मोक्ष;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, टाल्या घातिक दोष. ५०
राम भरत बिहु बांधवा, त्रण कोडि मुनी युत;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, इणे गिरि शिव संपत्त. ५१
नारद मुनिवर निर्मळो, साधु एकाणुं लाख;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, प्रवचन प्रगट ए भाख, ५२
सांब प्रद्युम्न ऋषि कह्या, साढी आठे कोडि;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, पूर्व कर्म विछोडी. ५३
थावच्चा सुत सहससुं, अणसण रंगे कीध,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, वेगे शीवपद लीध. ५४
शुक परमाचारज वळी, एक सहस अणगार;

सुमति सुधारस वरसते, कर्म दावानल संत;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, उपसम तस उल्लसंत. ६६
श्रुत धर नितु नितु उपदीशे, तत्त्या तत्त्व विचार,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, ग्रहे गुणयुत श्रोतार. ६७
प्रिय मेलक गुण गण तणुं, कीर्ति कमला सिंधु.
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, कलिकाले जगबंधु. ६८
श्री शांति तारण तरण, जेहनी भक्ति विशाल,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, दिन दिन मंगल माल ६९
श्वेत ध्वजा जस लहकती, भाखे भविने एम,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, भ्रमण करो छो केम. ७०
साधक सिद्ध दिशा भणी, आराधे एक चित,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, साधन परम पवित्त. ७१
संघपति थइ एहनी जे करे भावे यात्र;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, तस होय निर्मळ गात्र. ७२
शुद्धातम गुण रमणता, प्रगटे जेहने संग;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, जेहनो जस अभंग. ७३
रायण वृक्ष सोहामणो, जिहां जीनेश्वर पाय,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सेवे सुरनर राय. ७४
पगलां पूजी रुपभनां, उपशम जेहने चंग;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, समता पावन अंग. ७५
विद्याधरज मले बहु, विचरे गिरिवर श्रृंग;

ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, चढते नवरस रंग. ७६
मालती मोगर केतकी, परिमल मोहे भृंग;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पूजो भवि एकंग. ७७
अजित जीनेश्वर जिहां रह्या, चोमासुं गुण गेह;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, आणी अविहड नेह. ७८
शांति जिनेसर सोळमा, सोळ कसाय करी अंत,
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, चतुर मास रहंत. ७९
नेमि विना जिनवर सर्वे, आव्या जेणे ठाम;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, शुद्ध करे परिणाम. ८०
नमि नेम जीन अंतरे, अजीत शांति स्तव कीध;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, नंदिषेण प्रसिद्ध. ८१
गणधर मुनि उवज्झाय तिम, लाभ लह्या केइ लाख;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, ज्ञान अमृत रस चाख. ८२
नित्य घंटा टंकारवे, रणजणे झल्लरीनाद;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, दुंदुभी मादलनाद. ८३
[illegible] प्रथम उद्धार;
ते [illegible] मुक्ति मार. ८[illegible]
[illegible] सारनवर [illegible];
ते [illegible] गुण [illegible]. ८[illegible]
[illegible]
ते [illegible]. ८[illegible]

द्रव्य भाव वैरी तणो, जेहथी थाये अंत;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, शत्रुंजय समरंत. ८७
पुंडरिक गणधर हुआ, प्रथम सिद्ध इणे ठाम;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पुंडरिक गिरि नाम. ८८
कांकरे कांकरे इणे गिरि, सिद्ध हुआ सुपवित्त;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सिद्धक्षेत्र समचित. ८९
मल द्रव्य भाव विशेषथी, जेहथी जाए दुर;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, विमलाचल सुख पूर. ९०
सुरवरा वहु जे गिरी, निवसे निर्मळ ठाम;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, सुरगिरि नाम प्रमाण. ९१
परवत सहु मांहे वडो, महागिरि तेणे कहंत;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, दर्शन लहे पुण्यवंत. ९२
पुण्य अनर्गल जेहथी, थाये पाप विनाश;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, नाम भलुं पुण्य रास. ९३
लक्ष्मी देवी जे भण्यो, कुंडे कमल निवास;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पद्म नाम सुवास. ९४
सवि गिरिमां सुरपति समो, पातक पंक विलात;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पर्वत इंद्र विख्यात. ९५
त्रिभुवनमां तीरथ सवे, तेमां महोटो एह;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, महा तीर्थ जस रेह. ९६
आदि अंत नहीं जेहनी, कोई काळे न विलाय.

ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, शाश्वत गिरि कहेवाय. ९७

भद्र भला जे गिरिवरे, आव्या होय अपार;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, नाम सुभद्र संभार. ९८

विर्य वधे शुभ साधुने, पामी तीरथ भक्ति;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीये, नामे जे दृढ शक्ति. ९९

शिव गति साधे जे गिरे, ते माटे अभिधान;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, मुक्ति निलय गुण खाण; १००
चंद्र सूरज समकित धरी, सेव करे शुभ चित्त;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पुष्पदंत विदित्त. १०१
भींति न रहे भवजल थकी, जे गिरि लहे निवास;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, महा पद्म सुविलास. १०२
भुमि धरि जे गिरिवरे, उदधि न लोपे लीह;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, पृथ्वी पीठ अनीह. १०३
मंगल सवि मंडलातणुं, पीठ एह अभिराम;
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, भद्र पीठ जस नाम. १०४
मूल जस पातालमें, [illegible]
ते तीर्थेश्वर प्रणमीए, [illegible] विचार. १०५
[illegible] गुण केट,
[illegible] १०६
[illegible]
[illegible] १०७

इत्यादिक एकविस भलां, निरुपम नाम उदार;
जे समर्यां पातक हरे, आतम शक्ति अनुहार. १०८

कळस.

इम तीर्थ नायक स्तवन लायक, संथुण्यो श्री सिद्धगिरि;
अठोत्तर सय गाह स्तवने, प्रेम भक्ते मन धरी.
श्री कल्याण सागर सुरि शिष्ये, शुभ जगीशे सुख करी;
पुण्य महोदय सकळ मंगळ, वेलि सुजशे जय सिरि. ॥१०९॥

श्री सिद्धाचलना २१ नामना २९ दुहा

१ सिद्धाचल समरो सदा, सोरठ देश मझार;
मणुअ जनम पामी करी, वंदो वार हझार. १
अंग वसन मन भूमिका, पुजोपगरण सार;
न्याय द्रव्य विधि शुद्धता, शुद्धि सात प्रकार. २
कार्तिक शुदि पुनम दिने, दश कोटी परिवार;
द्राविड वारिखिल्लजी, सिद्ध थया निरधार. ३
तिणे कारण कार्तिके दिने, संघ सकल परिवार;
आदिजिन सनमुख रही, खमासमण बहुवार. ४
एकवीस नामे वरणव्युं, तिहां पहेलुं अभिधान;
शत्रुंजय शुकरायथी, जनक वचन बहु मान. ५
अहिंआ "सिद्धाचल समरो सदा" ए दुहो प्रत्येक खमासमण दीठ कहेवो;

द्रव्य लिंगी कणक्षेत्रसम, मुनिवर छीप समान. १६
श्रावक मेघ समा कह्या, करता पुण्यनुं काम;
पुण्यनी रासि वधे घणी, तेणे पुण्यरासि नाम. १७ सि०

८ संयमधर मुनिवर घणा, तप तपता एक ध्यान;
कर्म वियोगे पामीआ, केवल लक्ष्मी निधान. १८
लाख एकाणुं शिव वर्या, नारदशुं अणगार;
नाम नमो तेणे आठमुं, श्रीपदगिरि निरधार. १९ सि०

९ श्री सीमंधर स्वामीए, ए गिरि महिमा विलास;
इंद्रनी आगे वर्णव्यो, तेणे ए इंद्र प्रकाश. २० सि०

१० दश कोटी अणुव्रत धरा, भक्ते जमाडे सार;
जैन तीर्थ यात्रा करी, लाभ तणो नहि पार. २१
तेह थकी सिद्धाचले, एक मुनिने दान;
देतां लाभ घणो हुवे, महातीर्थ अभिधान. २२ सि०

११ माये ए गिरि शाश्वतो, रहेशे काल अनंत;
शत्रुंजय महातम सुणी, नमो शाश्वत गिरि संत. २३ सि०

१२ गौ नारी बाळक मुनि, चउहत्या करनार,
यात्रा करतां कार्तिकी, न रहे पाप लगार. २४
जे परदारा लंपटी, चोरीना करनार;
देव द्रव्य गुरु द्रव्यना, जे वळी चोरणहार. २५
चैत्री कार्तिक पूनमे, करे यात्रा इणे ठाम;
तप तपतां पातिक गले, तिणे दृढ शक्ति नाम. २६ सि०

जे वंछे ते संपजे, शीव्र रमणी संयोग. ३६
वीमलाचल परमेष्टीनुं, ध्यान धरे खट मास;
तेज अपुरव वीस्तरे, पुगे सघळी आश. ३७
त्रीजे भव सिद्धि लहे, ए पण प्रायीक वाच;
उत्कृष्टा परीणामथी, अंतर मूहुर्त साच. ३८
सर्व काम दायक नमो, नाम करी ओलखाण;
श्री शुभवीर वीजय प्रभु, नमतां क्रोड कल्याण. ३९ सि०

अथ श्री मौन एकादशीनुं महात्म्य.

आ पर्व मागशर सुद ११ ने दीवसे आवे छे. बावीसमां तीर्थकर श्री नेमनाथ भगवानने श्री कृष्णजीए पुछयुं के वर्षना ३६० दिवसमां एवो कयो उत्तम दिवस छे के जे दिवसमां अल्प व्रत तप प्रमुख करे थके पण बहु फल आपनारो थाय ते वखते भगवाने मागशर सुद ११ नो दिवस अल्प व्रतादिक करे थके पण बहु पुन्य थाय तेम जणावेलुं छे.अने ते कृष्ण वासुदेव आदि घणा भव्य जीवोए ते पर्वने आराधी आत्मकल्याण करेलुं छे वळी सुव्रत शेठ पण ते पर्वने आराधि मोक्षे पहोंचेला छे ते दीवसे वर्तमान चोवीसीमांथी आ भरतक्षेत्रमां अढारमा अरनाथजीए दीक्षा लीधी छे एकवीसमा तीर्थकर श्री नमिनाथजीने केवलज्ञान उपन्युं छे. तथा ओगणीशमा श्री मल्लिनाथजीनो ए दिवसे जन्म थयो छे, वळी

दीक्षा पण एज दीवसे लीधी छे, तथा केवलज्ञान पण एज दीवसे उपन्युं छे एम पांच कल्याणक थया छे एवीज रीते पांच भरत अने पांच ऐरावतना मली वर्तमानना ५० कल्याण समजवां तेवीज रीते अतीत अने अनागतना पचास पचास गणतां तेजतीथीए १५० कल्याणक थया छे जेथी ते पर्व महत् पुन्यवालुं थाय छे.ते दीवसे भवीजीवोए उपवास करी पौषध व्रत अंगीकार करवुं अने सावद्य येपारनो त्याग करी मौन धारण करवुं. १५० कल्याणकनुं गणनुं गणवुं. देव वांदवा विगेरे शुभ ध्यानमां अने ज्ञानादिक अभ्यासमां दीवस व्यतीत करवो तेनी कथा विगेरेनुं माहात्म्य घणुंज छे ते अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवुं.



श्री मौन एकादशीनुं गणणुं.

१ जंबुद्वीप भरते अतीत चोवीशी

४ श्री महायशः सर्वज्ञाय नमः
६ श्री सर्वानुभूति अर्हते नमः
६ श्री सर्वानुभूतिनाथाय नमः
६ श्री सर्वानुभूति सर्वज्ञाय नमः
७ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

२ जंबुद्वीपे भरते वर्त्तमान चोवीशी

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः॥
१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः
१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री अरनाथ नाथाय नमः

३ जंबुद्वीपे भरते अनागत चोवीशी

४ श्री स्वयंप्रभ सर्वज्ञाय नमः
६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः
६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः
६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः
७ श्री ऊदयनाथ नाथाय नमः

४ धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः
६ श्री शुभंकरनाथ अर्हते नमः
६ श्री शुभंकरनाथ नाथाय नमः
६ श्री शुभंकरनाथ सर्वज्ञाय नमः
७ श्री सप्तनाथ नाथाय नमः

५ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्त्तमान

२१ श्री ब्रह्मेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री गुणनाथ अर्हते नमः
१९ श्री गुणनाथ नाथाय नमः
१९ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री गांगिकनाथ नाथाय नमः

६ धातकीखंडे पूर्वभरते अनागत

४ श्री सांप्रत सर्वज्ञाय नमः
६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः
६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः
६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः
७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नमः

७ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते अतीत

४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नमः
६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः
६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नमः
६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः
७ श्री कलाशत नाथाय नमः

८ पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते वर्तमान

[illegible] श्री [illegible] सर्वज्ञाय नमः

[illegible] श्री [illegible]नाथ अर्हते नमः

[illegible] श्री [illegible]नाथ नाथाय नमः

[illegible] श्री [illegible] सर्वज्ञाय नमः

[illegible] नाथाय नमः

[illegible]

१७ श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नमः

१८ श्री मलयसिंह नाथाय नमः

१० धातकीखंडेपश्चिमभरते अनागत

[illegible] श्री जिन[illegible] सर्वज्ञाय नमः ॥

[illegible] श्री [illegible]नाथ अर्हते नमः ॥

[illegible] श्री [illegible]नाथ नाथाय नमः ।

[illegible] श्री [illegible]नाथ सर्वज्ञाय नमः ।

[illegible] नाथाय नमः ।

[illegible] भरते [illegible]

[illegible] नमः

[illegible] नमः

[illegible]

४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नमः
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः॥
७ श्री ऋषभचंद्र नाथाय नमः ॥

जंबुद्वीपे ऐरवते अतीत चोवीशी

श्री दयांत सर्वज्ञाय नमः ॥
श्री अभिनंदननाथ अर्हते नमः॥
श्री अभिनंदननाथ नाथाय नमः
श्री अभिनंदननाथ सर्वज्ञायनमः
श्री रत्नेशनाथ नाथाय नमः ॥

जंबुद्वीपे ऐरवते वर्तमान चो०

१ श्री श्यामकोष्ट सर्वज्ञाय नमः
९ श्री मरुदेवनाथ अर्हते नम ॥
९ श्री मरुदेवनाथ नाथाय नमः
९ श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नमः॥
८ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः॥

जंबुद्वीपे ऐरवते अनागत चो०

श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
श्री व्रतधरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नमः॥
६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नमः
७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नमः ॥

१९ धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अतीत

४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नमः
६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथायनमः॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञाय नमः
७ श्री नरसिंहनाथ नाथाय नमः

२० धातकीखंडे पूर्वऐरवते वर्त्तमान

२१ श्री खेमंत सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री संतोषितनाथ अर्हते नमः
१९ श्री संतोषितनाथ नाथाय नमः
१९ श्री संतोषितनाथ सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री कामनाथ नाथाय नमः॥

२१ धातकीखंडे पूर्व ऐरवते अनागत

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह अर्हते नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री दिलादित्य नाथाय नमः॥

२२ पुष्करार्द्ध पूर्व अरवते अतीत चो

४ श्री अष्टाहिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ नाथाय नमः॥
६ श्री वणिक्नाथ सर्वज्ञाय नमः॥
७ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

२३ पुष्करार्द्ध पूर्व अरवतेवर्तमानचो

२१ श्री तमोकंद सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः
१९ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः
१९ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री क्षेमंतनाथ नाथाय नमः

२४ पुष्करार्द्ध पूर्व अरवते अनागत [illegible]

४ श्री निर्वाणिक सर्वज्ञाय नमः
६ श्री रविराज अर्हते नमः
६ श्री रविराज नाथाय नमः
६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः
७ श्री [illegible] नाथाय नमः

२५ धातकीखंडे पश्चिम अरवतेअतीत

४ श्री पुरुरवा सर्वज्ञाय नमः
६ श्री अवबोध अर्हते नमः
६ श्री अवबोध नाथाय नमः
६ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः
७ श्री विक्रमेंद्र नाथाय नमः

२६ धातकीखंडेपश्चिम अरवते

२१ श्री सुशांति सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री हरदेव अर्हते नमः
१९ श्री हरदेव नाथाय नमः
१९ श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री नंदिकेश नाथाय नम

२७ धातकीखंडे पश्चिम अ० अन

४ श्री महामृगेंद्र सर्वज्ञाय नमः
६ श्री अशोचित अर्हते नमः
६ श्री अशोचित नाथाय नम
६ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नम
७ श्री धर्मेंद्रनाथ नाथाय नम

२८ पुष्करार्द्धपश्चिम [illegible]

२१ श्री अभ्यंद सर्वज्ञाय नमः	१९ श्री धर्मचंद्र सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री कुटिलक अर्हते नमः	१८ श्री विवेकनाथ नाथाय नमः
१९ श्री कुटिलक नाथाय नमः	३० पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐं०अना.
१९ श्री कुटिलक सर्वज्ञाय नमः	४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः
१८ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः	६ श्री विशोमनाथ अर्हते नमः
२९ पुष्करवरद्वीपेपश्चिमऐं०वर्त०चो	६ श्री विशोमनाथ नाथाय नमः
२१ श्री नंदिकेश सर्वज्ञाय नमः	६ श्री विशोमनाथ सर्वज्ञाय नमः
१९ श्री धर्मचंद्र अर्हते नमः	७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नमः
१९ श्री धर्मचंद्र नाथाय नमः	

॥ अथ पंडित श्री रुपविजयजी कृत मौन एकादशीना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

नगर गजपुर, पुरंदर, पुर, शोभया अति जित्वरं ॥ गज वाजि रथ वर, कोटि कलित, इंदिरा भृत, मंदिरं ॥ नरनाथ यत्रीश, सहस, सेवित, चरणपंकज, सुखकरं ॥ सुर असुर व्यंतर, नाथ पूजित, नमो श्री अर, जिनवरं ॥ १ ॥ अप्सरा सम, रुप अद्भुत, कला योवन, गुण भरी ॥ एक लाख बाणु, सहस उपर, सोहिए, अंतेउरी ॥ चोराशी लख गज, वाजी स्यंदन,

कोटि छन्नुं, भटवरं ॥ गुरु अ० ॥ २ ॥ सग पणिंदी, सगएगिंदी, चउद रयणशुं, शोभितं ॥ नव निधाना–धिपति नाकी, भक्तिभाव, भूर्नितं ॥ कोटि छन्न, ग्राम नायक, सकल शत्रु, विजितं ॥ गुरु अ० ॥ ३ ॥ सहस अष्टा–दश सुरेन्द्रन, लक्षितं, कनकच्छवि । चिन्ह नंदा, वर्त शोभित, स्वप्रभा, निर्जित रवि ॥ चक्रि संपद, मुक्त भार्गा, अष्टादशमा जिनवरं । गुरु अ० ॥४॥ लोकांतिकामर, बोधित जिन, [illegible] मर्गसिर एकादशी, शुक्ल [illegible] पद पद्म सेवन, शुक्ल [illegible] गुरु अ० [illegible] नमुत्थुणं० जयवीयराय [illegible]

॥ अथ चैत्यवंदन लिख्यते ॥

[illegible]

जेहनी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भोग करमनो क्षय करी, जिन दीक्षा लीधी ॥ मनपर्यव नाणी थया, करी योगनी सिद्धि ॥ १ ॥ मागशिर शुदि एकादशी, अर दीक्षा लीधी ॥ मल्लि जनम व्रत केवली, नमी केवल रुद्धि ॥ दश क्षेत्रे त्रण कालनां, पंच पंच कल्याण ॥ तिणे ए तिथि आराधतां, लहीए शिवपुर ठाण ॥ २ ॥ अंग इग्यार आराधवां, वलि बार उपांग॥ मूलसूत्र चारे भलां. पट छेद सुचंग॥ दश पयन्ना दीपता, नंदी अनुयोगद्वार ॥ आगम एह आराधतां, लहो भव जल पार ॥ ३ जिनपद सेवा नित्य करे, समकित शुचिकारी ॥ जक्षेश जक्ष सोहामणो, देवी धारणी सारी ॥ प्रभु पद पद्मनी सेवना, करे जे नरनारी ॥ चिदानंद निज रुपने, लहे ते निरधारी ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ पछी नमुत्थुं० अरिहंत चेइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पछी थोय कहेवी, ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अर जिन ध्यावो, पुण्यना थोक पावो ॥ सवि दुरित गमावो, चित्त प्रभु ध्यान लावो ॥ मद मदन विरावो. भावना शुद्ध भावो ॥ जिनवर गुण गावो, जिम लहो मोक्ष ठावो ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, क्षय करी मोह भारी ॥ केवल शुचि धारी, मान माया निवारी ॥ थया जग उपगारी, क्रोध योद्धा पहारी ॥ शुचि गुण गणधारी, जे वर्या सिद्धि नारी ॥ २ ॥ नवतत्त्व वखाणी, सप्तभंगी प्रमाणी ॥ सग नयथी पिलाणी, चार अनुयोग खाणी॥

जिनवरनी वाणी, जे सुणे भव्य प्राणी ॥ तिणे करी अघहाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ समकिति नर नारी, तेहनी भक्ति कारी ॥ धारणी सूरि सारी, विघ्नना थोक हारी ॥ प्रभु आणा कारी, लब्धि लीला विहारी ॥ संघ दुरित निवारी, होज्यो आणंद कारी ॥४॥ इति स्तुति ॥ पछी नमुत्थुणं कही, जावंति चेइआइ कही पछी जावंत केविसाहू कही पछी स्तवन कहेवुं ते लखीए छीए.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमलना गीतनी देशी ॥

जगपति श्री अर जिन जगदीश, हस्तिनागपुर राजीयो ॥ जगपतिराय सुदर्शन नंद, महिमा महि माहे गाजीयो ॥ १ ॥ जगपति कंचन वरन शरीर, कांचित पुरण सुरतरु ॥ जगपति [illegible] नंदावर्त, [illegible] सुरत मंगल कर ॥ २ ॥ जगपति [illegible] भाव उदार, [illegible] भरता ॥ जगपति सहस चोराशी मुणिंद, [illegible] धरता ॥ ३ ॥ जगपति [illegible] सुंदर वान, [illegible] जो रहो ॥ जगपति [illegible] निरमल थई [illegible] जगपति [illegible] मौन एकादशी ॥ जगपति [illegible] ॥ जगपति [illegible] ॥ जगपति [illegible] ॥ जगपति [illegible]

वृष्टि करे सुर घणा ॥ ७ ॥ जगपति धन्य वेला घडी तेह, धन्य ते सुरनर खेचरा ॥ जगपति जेणे कल्याणक दीठ, धन्य जनम ते भव तरया ॥ ८ ॥ जगपति प्रभुपद पद्मनी सेव, त्रिकरण शुद्धे जे करे॥ जगपति करीय करमनो अंत, शुद्धरूप निज ते वरे ॥ ९ ॥ इति श्री अरजिन स्तवनम् ॥ पछी जयवीयराय अर्द्धा कहीने चैत्यवंदन कहेवुं, ते लखीये छीये.

॥ अथ चैत्यवंदन. ॥

अवधिज्ञाने आभोगिने, निज दीक्षा काल ॥ दान संवच्छरी जिन दीये, मनोवांछित ततकाल ॥ १ ॥ धन कण कंचन कामिनी, राज ऋद्धि भंडार ॥ छंडी संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एकादशी ए, संयम लीये महाराज ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनम् ॥ पछी नमुत्थुणं कहीने, जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥ इति प्रथम देववंदन जोडो कह्यो ॥ १ ॥ एज रीते बीजा चार जोडांनो विधि जाणवो ॥ हवे बीजो जोडो कहेवो, त्यां प्रथम त्रण चैत्यवंदन कहे छे.

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते. ॥

जय जय मल्लि जिणंद चंद, गुण कंद अमंद ॥ नमे सुरासुर चंद, तिम भूपति वृंद ॥ १ ॥ कुसुमगेह शय्या कुसुम, कुसुमाभरण

सोहाय ॥ जननी कुखे जब जिन हुता, मल्लि नाम तिणे ठाय ॥ २ ॥ कुंभ नरेश्वर कुलतिलो ए, मल्लिनाथ जिनराज ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ प्रथम चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन लिख्यते. ॥

नील वरण दुःख हरण, शरण शरणागत वत्सल ॥ निरुपम रूप निधान, सुजस गंगाजल निरमल ॥१॥ सुगुण सुरासुर कोडि, दोडि नित्य सेवा सारे ॥ भक्ति जुक्ति नित्यमेव, करी निज जन्म सुधारे ॥ २ ॥ बाल्यपणे जिनराजने ए, मत्रि मनी कुमारी ॥ जिन मुख पद्म निहालीने, बहु आणंद पावे ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन लिख्यते. ॥

पुरुषोत्तम परमातमा, परम ज्योति परधान ॥ परमानंद स्वरूप, नगमा नहीं उपमान ॥ १ ॥ मरकत रत्न समान वान, सत्रु घाति विराजे ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदनम् ।

॥ हवे थोय जोडा बे कहे छे. ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोडो. ॥

सुण सुणरे साहेली, ऊठी सहुथी पहेली ॥ करी स्नान वहेली, जिम वधे पुण्य वेली ॥ तजी मोहनी पल्ली, खंड करी कामवल्ली ॥ करी भक्ति सुभल्ली, पूजि जिनदेव मल्ली ॥ १ ॥ सवि जिव सुखकारी, मोह निद्रा निवारी ॥ भविजन निस्तारी, वाणी स्याद्वाद धारी ॥ निर्मल गुण धारी, धौत मिथ्यात गारी ॥ नमिए नर नारी, पाप संताप छारी ॥ २ ॥ मृगशिर अजुआली, सर्व तिथिमां रसाली ॥ एकादशी पाली, पापनी श्रेणि गाली ॥ आगममां रसाली, तिथि कही ते संभाली ॥ शिववधु लटकाली, परणशे देइ ताली ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, भक्ति हियडे धरेवी ॥ जिन भक्ति करेवी, तेहनां दुःख हरेवी ॥ मन महिर करेवी, लच्छी लीला वरेवी ॥ कवि रुप कहेवी, देजो सुख नित्य मेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो बीजो जोडो. ॥

मिथुलापुरी जाणी, स्वर्ग नगरी समाणी ॥ कुंभ नृप गुणखाणी. तेजथी वज्रपाणी ॥ प्रभावती राणी, देवनारी समाणी ॥ तस कुल्ख वखाणी, जन्म्या जिहां मल्लि नाणी ॥ १ ॥ दिशिकुमरी आवे, जन्म करणी ठरावे ॥ जिननां गुण गावे, भावना चित्त भावे ॥ जन्मोत्सव दावे, इंद्र सुर शैल ठावे ॥ हरि जिन गृह आवे, लेइ मेरु जावे ॥ २ ॥ अच्युत. सुर राजा, स्नात्र करे भक्ति



रे; सुरवधु होडा होडि ॥ जगत तिलक भाले धरी रे, करती मोहा मोहि स० ॥ ६ ॥ महा० ॥ तत्र सुरपति सुरगिरि शिरे रे, नमन करे करजोडि ॥ तीर्थोदक कुंभा भरी रे, साठ लाख एक कोडि ॥ स० ॥ ७ ॥ महा० ॥ जिन जननी पासे ठवी रे, वरसी रयणनी राशि ॥ सुरपति नंदीश्वर गया रे, धरतां मन उल्लास ॥स०॥ ॥ ८ ॥ महा० ॥ सुरपति नरपतिए करयो रे, जन्म उच्छव अति चंग ॥ मल्लि जिणंद पद पद्मशुं रे, रूप विजय धरे रंग ॥ स० ॥ ॥ ९ ॥ महा० ॥ इति द्वितीय जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ तृतीय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन,

अद्भूत रूप सुगंधि सुवास, नहीं रोग विकार ॥ मेल नही जस देह रेह, परस्वेद लगार ॥ १ ॥ सागर वर गंभीर धीर, सुरगिरि सम जेह ॥ औषधिपति सम सौम्य कांति, वर गुण गण गेह ॥२॥ सहस अष्टोत्तर लक्षणे ए, लक्षित जिनवर देह ॥ तस पद पद्म नम्या थकी, न रहे पापनी रेह ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥



॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

मल्लिनाथ शिव साथ, आठ वर अक्षयदायी ॥ छाजे त्रिभुवन मांहि, अधिक प्रभुनी ठकुराइ ॥ १ ॥ अनुत्तर सुरथी अनंत गुण,

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

मल्लि जिन नामे, संपदा कोडि पामे ॥ दुरगति दुःख वामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ संयम अभिरामे, जे यथाख्यात नामे ॥ करी कर्म विरामे, जइ वसे, सिद्धि धामे ॥ १ ॥ पंच भरह मझार, पंच अैरवत्त सार ॥ त्रिहुं काल विचार, नेवु जिननां उदार ॥ कल्याण वार, जाप जपिये श्री कार ॥ जिम करी भव पार, जइ वरो सिद्धि नार ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, सूत्रमांहे गुथाणी ॥ षट द्रव्य वखाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ सगभंगी प्रमाणी, सप्त नयथी ठराणी ॥ सांभले दिल आणी, ते वरे सिद्धिराणी ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, मल्लि जिन पाय सेवी ॥ प्रभुगुण समरेवी, भक्ति हियडे धरेवी ॥ संघ दुरित हरेवी, पाप संताव खेवी ॥ रुप विजय कहेवी, लच्छी लीला वरेवी ॥ ४ ॥ इति.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सखी आवी देव दीवाली रे ॥ ए देशी ॥

पंचम सूरलोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे, करे विनति गुणनी राशी ॥ १ ॥ मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे ॥ भवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ तुमे करुणारस भंडार रे, पाम्या छो भवजल पार रे, सेवकनो करो उद्धार॥ मल्लि० ॥ २ ॥ भवि० प्रभु दान सवंत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख कापे रे, भव्यत्व पणे तस छापे ॥ म० ॥ ३ ॥ भवि० सुर-

पति सघला मल्लि आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे, प्रभु चरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ भवि० ॥ तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे, सुरपति भगते नवरावे ॥ मल्लि ॥ ५ ॥ भवि० ॥ वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूलमाला हृदयपुर धारे रे, दुःखडां इंद्राणी उवारे ॥ म० ॥ ६ ॥ भवि० मल्या सूर नर कोडा कोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे, करे भक्ति युक्ति मद मोडी ॥ म० ॥ ७ ॥ भवि० मृगशिर शुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे, वरया संयम वधू लटकाली रे ॥ म० ॥ ८ ॥ भवि० ॥ दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे, कहे रूपविजय ससनेह ॥ म० ॥ ९ ॥ भवि० ॥ इति मल्लिजिन स्तवनम् ॥ इति त्रीजो जोडो ॥

॥ अथ चोथो जोडो प्रारंभ. ॥

॥ त्यां प्रथम श्री चैत्यवंदन कहे छे ॥

[illegible] मिथिलापुरी, [illegible] नरपति [illegible] ॥ [illegible] [illegible], [illegible] गुणखाण ॥ १ ॥ [illegible] प्रभुनो देहडो, [illegible] मनोहार ॥ [illegible] [illegible], [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] एकादशी ए, [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

[illegible]

जी चढी, घातिकर्म खपावे ॥ १ ॥ दीक्षा दिन शुभ भावथी, उपन्युं केवल नाण ॥ समवसरण सुर वर रचे, चउविह संघ मंडाण ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तसपद् पद्म नम्या थकी, चिद्रुपे चित्त ठाय ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन. ॥

जय निर्जित मदमल्ल, शल्यत्रय वर्जित स्वामी ॥ जय निर्जित कंदर्प दर्प, निज आतमरामी ॥ १ ॥ दुर्जय घातिकर्म मर्म, भंजन वडवीर ॥ निर्मल गुण संभार सार, सागर वर गंभीर ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन धरु ए, मल्लि जिणंद मुणिंद ॥ वदन पद्म तस देखतां, लहे चिद्रूप अमंद ॥ ३ ॥ इति तृतीयचैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा वे लिख्यते ॥

नमो मल्लि जिणंदा, जास नमे देव वृंदा ॥ तिम चोसठ इंदा, सेवे पादारविंदा ॥ दुरगति दुःख दंदा, नामथी सुख कंदा ॥ प्रभु सुजस सुरिंदा. गाय भक्ते नरिंदा ॥ १ ॥ नव्रति जिनराया, शुक्ल ध्याने सुहाया ॥ सोहं पद पाया, त्यक्त मद मोह माया ॥ सुर नर गुण गाया, केवलश्री सुहाया ॥ ते सवि जिन राया, आपजो मोक्ष माया ॥ २ ॥ केवल वर नाणे, विश्वना भाव जाणे ॥ बार परपद ठाणे, धर्म जिनजि वखाणे ॥ गणधर तिणे ठाणे, त्रिपदीए अर्थ

मेश्वर पूरण पद भोक्ता, गुणराशी शिव वासी ॥ जिनजी ध्यावो जी ॥१॥ मल्लि जिणंद मुणिंद, गुण गण गावो जी॥ ए आंकणी॥ मगशीर शुदि एकादशी दिवसे, उपर्युं केवलनाण जी ॥ लोकालोक प्रकाशक भासक प्रगट्यो अभिनव भाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मल्लि० ॥ मत्यादिक चउ नाणनुं भासन, एहमां सफल समाय जी ॥ ग्रह उडु तारा चंद प्रभा जिम. तरणी तेजमां जाय॥ जिन० ॥ ३ ॥ म० ॥ ज्ञेयभात्र सवि ज्ञाने जाणे, जे सामान्य विशेष जी ॥ आप स्वभावे रमण करे प्रभु, तजी पुद्गल संक्लेश ॥ जिन० ॥ ४ ॥ म० ॥ चालीश सहस महामुनि जेहना, रत्नत्रयि आधार जी ॥ सहस पंचावन साहुणी जाणो, गुणमणि रयण भंडार ॥ जि० ॥ ५ ॥ म० ॥ शत सम न्युन सहस पंचावन, वरस केवल गुण धरता जी ॥ विचरे वसुधा उपर जिनजी, बहु उपगारने करता ॥ जि० ॥ ६ ॥ म० ॥ केवल नाण कल्याणक जीननुं, जे भवियण नित्य गावे जी ॥ जिन उत्तम पद पद्म प्रभावे, शुद्ध रुप ते पावे ॥ जि० ॥ ७ ॥ म० ॥ इति चोथो देववंदन जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ पांचमो जोडो लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम चैत्यवंदन ॥

सकल सुरासुर इंद वृंदा, भावे करजोडी ॥ सेवे पदपंकज सदा, जघन्य थकी एक कोडी ॥ १ ॥ जास ध्यान एक तान, करे जे सुरनर भावे ॥ संकट कष्ट दुरे टले, शुचि संपद पावे ॥ २ ॥

सर्व समिदिन पूरवाए, सुरतरु सम सोहाय ॥ तस पद पद्म [illegible] यकी, निश्चय शिव सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

नमो नमो श्रीनेमि जिनवरु, जगनाथ नगीनो ॥ पद युग देवे जेहना, पुजे पति शचिनो ॥ १ ॥ सिंहासन आसन कर्यो, [illegible] भासन जिनराज ॥ मधुर ध्वनि दीये देशना, भवि जनने हित काज ॥ २ ॥ गुण पांत्रीश अलंकर्या ए, प्रभू मुख वचनी वाणी ॥ ते नमि जिननी सांभली, शुद्ध रूप लहे प्राणी ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

[illegible] मंडप [illegible], मंदिर गुण [illegible] ॥ [illegible] गुरुने [illegible], [illegible] मनहरं ॥ [illegible] भाव [illegible] ॥ [illegible] श्री नमिनाथ [illegible] गुणकरं ॥ १ ॥ [illegible] त्रिभुवन [illegible] ॥ [illegible] नामांकित, [illegible] नर पुत्र, [illegible] भाव [illegible], ज्ञान [illegible] केवल [illegible] ॥ [illegible] गुण [illegible] त्रिभुवन [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

धरा मुनि, सहस विंशति गुणनीला ॥ सहस एकतालीश साहुणी, सोलसे केवली भला ॥ जिनराज उत्तम पद्मनी परे, रुपविजय सुहा-करं ॥ प्रण० ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदनम् ॥



॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

श्री नमिजिन नमिये, पाप संताप गमीये ॥ निज तत्त्वमां रमीये, सर्व अज्ञान वमीए ॥ सवि विघ्नने दमीये, वर्जिए पंच समीये ॥ नवि भव वन भमीये, नाथ आणा न क्रमीये ॥ १ ॥ दशे खेत्रना इश, तीर्थपति जेह त्रीश ॥ त्रिहुं काल गणीश, नेवु जिनवर नमीश ॥ अर्हत पद त्रीश, साठ दीक्षा जपीश ॥ केवली जगदीश, साठ संख्या गणीश ॥ २ ॥ सग नय युत वाणी, द्रव्य छके गवाणी ॥ सग भंगी ठराणी, नंद तत्त्वे वखाणी ॥ जे सुणे भवि प्राणी, शुद्ध श्रद्धान आणी ॥ ते वरे शिवराणी, शाश्वतानंद खाणी ॥ ३ ॥ देवी गंधारी, शुद्ध सम्यक्त्व धारी ॥ प्रभु सेवा कारी, संघ चउविह संभारी ॥ करे सेवना सारी, विघ्न दूरे विदारी ॥ रुप विजय नेप्यारी, नित्यदेवी गंधारी ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

नमि जिन जयकारी, सेविये भक्ति धारी ॥ मिथ्यात्व निवारी, धारीए आण सारी ॥ पर भाव विसारी, सेविये सुखकारी ॥ जिम लहो शिव नारी, कर्म मल दूरे डारी ॥ १ ॥ वर केवलनाणी,

शी, ध्यान शुकल धरी ॥ ल० ॥ घातिकरम करी अंत के, केवल श्री वरी ॥ ल० ॥ जग निस्तारण कारण, तीरथ थापीयो ॥ ल०॥ आतम सत्ता धर्म, भव्यने आपीयो ॥ ल० ॥ ४ ॥ अमवेला किम आज, विलंब करी रह्या ॥ ल० ॥ जाणो छो महाराज, सेवक चरणां ग्रह्यां ॥ ल० ॥ मनमान्या विना माहरुं, नवि छोडुं कदा ॥ ल० ॥ साचो सेवक तेह जे, सेव करे सदा ॥ ल० ॥ ५ ॥ बमा मान सुजात, कहावो श्युं घणुं ॥ ल० ॥ आपो चिदानंद दान, जनम सफलो गणुं ॥ ल० ॥ जिन उत्तम पद पद्म, विजय पद दीजीए ॥ल०॥ रूपविजय कहे साहिब, मुजरो लीजीए ॥ ल० ॥ ६ ॥ इति श्री नमिनाथ जिन स्तवन पछी नमुत्थुणं कही जयवीयराय संपूर्ण कहेवा॥ इति पंडित श्री रूपविजयजी कृत मौन-एकादशीना देववंदन समाप्तं ॥

॥ अथ उपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनुं स्तवम प्रारंभः॥

ढाळ पहेली.

॥ छठी भावना मन धरो, ए देशी ॥

धुर प्रणमुं जिन महरसी ॥ समरुं सरसति उल्लसी ॥ घसमसि ॥ सुजमति जिन गुण गायवाए ॥ १ ॥ हरि पूछे जिन ऊपदिशि ॥ परव ते मौन एकादशी ॥ मनवसि ॥ अहनिसि ते भविलोकने ए ॥ २ ॥ तरीआने भवजल तरसि ॥ एह परव पोषध फरसि ॥ म-

नहरसि ॥ अवसर जे आराहसिए ॥ ३ ॥ ऊजमणे ते धारसि ॥ वस्तु इग्यार इग्यारसि ॥ वारसि ॥ ते दुरगतिनां वारणांए ॥४॥ ए दिन अनिहि सुखमणो ॥ दोढसो कल्याणक तणो ॥ मन गणो ॥ गणणुं करतां सुख होवे ए ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

पाटे पाटे ग्रन्थ चोवीसि ॥ द्वीप क्षेत्र जिन नामें ॥ पाटे पाटे ज्ञान कल्याणक ॥ धारो शुभ परिणामे ॥ १ ॥ जिनराज [illegible] ॥ मोक्ष मारगना दाता ॥ ए आंकणी ॥ सर्वज्ञाय नमो इम [illegible] ॥ नमो अरिहंत ए बीजे ॥ त्रीजे नमो नाथाय ते चोथे ॥ सर्वज्ञाय पद पांचमे [illegible] ॥ जिन. ॥ २ ॥ पांचमे नमो नाथाय [illegible] पाटे पाटे ज्ञान [illegible] ॥ ग्रन्थ नाम तीरथंकर [illegible] ॥ [illegible] ॥ जिन ॥ ३ ॥ ग्रन्थ चोवीसी पद पद [illegible] ॥ [illegible] जिन [illegible] ॥ [illegible] ॥ ते जिन [illegible] ॥ जिन. ॥ ४ ॥ [illegible] जिन नामे ॥ [illegible] जिन [illegible] ॥ [illegible] जिन [illegible] ॥ [illegible] जिन [illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ ओगणीसमा मल्लि प्रधान मेरे लाल ॥ जिन० ॥ २ ॥ श्री अ-रनाथ अढारमा ॥ हवे भावि चोवीसी भाव मेरे लाल ॥ श्री स्व-यंप्रभ चोथा नमुं ॥ छट्ठा देवश्रुत मन ल्याव मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ३ ॥ उदय नाथ जिन सातमा ॥ तेहने नामे .मंगल माल मेरे लाल ॥ ओच्छव रंग वधामणां ॥ वळी लहीयें प्रेम रसाल मेरे लाल ॥ जिन० ॥ ४ ॥ अलिअ विघन दुरें टले ॥ दुरिजन चित्युं नवी थाय मेरे लाल ॥ महीमा महोटाइ वधे ॥ वली जगमां सुजस गवाय मेरे लाल ॥ जिन ॥ ५ ॥

ढाल चोथी.

पुरव भरतें ते धातकी खंडेरे ॥ अतीत चोवीसी गुण अखंडेरे चोथा श्री अकलंक सोभागीरे ॥ छट्ठा देव सुभंकर त्यागीरे ॥१॥ सप्तनाथ सप्तम जिन रायारे ॥ सुरपति प्रणमे तेहना पायारे ॥ व-र्तमान चोवीसी जाणोरे ॥ एकवीसमा ब्रह्मेन्द्र वखाणोरे ॥ २ ॥ ओगणीसमा गुणनाथ समरीयेंरे ॥ अढारमा गांगीक मन धरीयेंरे ॥ कहुं अनागत हवे चोवीसीरे ॥ धातकी खंडे हैयडे हिंसीरे ॥ ३ ॥ श्री सांमन चोथा सुखदायीरे ॥ छट्ठा श्री मुनिनाथ अमायीरे ॥ श्री विशिष्ट सप्तम सुखकारारे ॥ तेतो लागे मुज मन प्यारारे ॥४॥ श्री जिन समरण जेहवुं मींठुंरे ॥ एहवुं अमृत जगमां .न दीठुंरे ॥ सुजस महोदय श्री जिन नामेरे ॥ विजय लहीजे ठामो ठामेरे ॥६॥

ढाल पांचमी.

पुख्खर अर्धे पुरव हुआ ॥ जिन वंदीएरे ॥ भरत अतीत चो-

थीसी के ॥ पापनिकंदीएरे ॥ चोथा सहदु सुहंकरू ॥ जिन० ॥ छट्ठा व्यक्त जगदीस के ॥ पाप नि० ॥ १ ॥ श्री कल्याण गुण भर्या ॥ जिन० ॥ इवे चोवीसी वर्तमान के ॥ पाप नि० ॥ कल्याणक ए दिन हुवा ॥ जिन० ॥ ओळखीयें तेहना अभिधान के ॥ पाप नि० ॥ २ ॥ अरण्यवास एकवीसमा ॥ जिन० ॥ ओगणीसम श्रीयोग के ॥ पाप नि० ॥ श्री अयोग ते अढारमा ॥ जिन० ॥ लिये शिवरमणी संयोग के ॥ पाप नि० ॥ ३ ॥ चोवीसी अनगत भरि ॥ जिन० ॥ बिहा चोथा परम जिनेसर के ॥ पाप नि० ॥ गुणवन्तो छट्ठा नमुं ॥ जिन० ॥ सातमा श्री निःकेश के ॥ पाप नि० ॥ ४ ॥ [illegible] परमेश्वर ॥ जिन० ॥ एहनुं नाम ते दवस निशान के ॥ पाप नि० ॥ [illegible] ते आसरो ॥ जिन० ॥ तेहनां [illegible] मन [illegible] के ॥ पाप नि० ॥ ५ ॥

[illegible]

[illegible]

मल तणीं ॥ सुर नर सारे सेव ॥ जिन० ॥ ४ ॥ ध्यावे मल्वुं हवा प्रभु तणो ॥ आलस मांहेरे गंग ॥ जनम सफल करी मानु हयी ॥ सुजस विलास सुरंग ॥जिन० ॥५॥

ढाल सातमी.

पुख्खर पच्छिम भरतमां ॥ धारो अतीत चोवीसीरे ॥ चोथा स्लेंद्र जिनेसरू ॥ प्रणमुं हियडले हिसीरे ॥ १ ॥ एहवा साहिब नवी वीसरे ॥ क्षिण क्षिण समरीयें हेजेरे ॥ प्रभु गुण अनुभव योगथी ॥ शोभीयें आतम तेजेरे ॥ एहवा साहीब नवी वीसरे ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ छट्ठा चारित्र निधि सातमा ॥ प्रशमराजित गुण धामरे ॥ हवे वर्तमान चोवीसीयें ॥ समरीजें जिन नामरे ॥ एहवा० ॥ ३ ॥ स्वामी सरज्ञ जयंकरु ॥ एकवीसमा गुण गेहरे ॥ श्री विपरीत ओगणीसमा ॥ अविहड धरम सनेहरे ॥ एहवा० ॥ ४ ॥ नाथप्रसाद अढारमा ॥ हवे अनागत चोवीसीरे ॥ चोथा श्री अघटित जिन वंदीयें ॥ धर्मसंतति जिणे पीसीरे ॥ एहवा० ॥५॥ श्री भ्रमणेंद्र छट्ठा नमुं ॥ रिषभचंद्राभिध वंदुरे ॥ सातमा जगजश जयकरु ॥ जिन गुण गातां आनंदुरे ॥ एहवा० ॥ ६ ॥

ढाल आठमी.

जंबुद्वीप ऐरावतेंजी ॥ अतित चोवीसी ऊदार ॥ श्री दयांत चोथा नमुंजी ॥ जग जनना आधार ॥ १ ॥ मनमोहन जिनजी ॥ मनथी नहीं मुझ दूर ॥ ए आंकणी ॥ अभिनंदन छट्ठा नमुंजी ॥ सातमा श्री रतनेश ॥ वर्तमान चोवीसीयेंजी ॥ हवे जिन नाम ग-

अष्टादीक चोथा वंदी ॥ भव वन भ्रमणा निवारुंरे ॥ १ ॥ भविका ॥एहवा जिनवर ध्यावो॥गुणवंतना गुण गावोरे॥ भविका ॥एहवा० ॥ए आंकणी ॥ वणिक नाम छठ्ठा जिन नमीये॥ शुद्ध धर्म व्यवहारि ॥ ऊदयनाथ सातमा संभारो ॥ त्रण्यभुवन ऊपगारीरे ॥भविका०॥ एहवा०॥२॥ वर्तमान चोवीसी वंदु ॥एकवीसमा तमोकंद॥ सायकाक्ष ओगणीसमा समरो ॥ जन मन नयणानंदरे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥३॥ श्रीक्षेमंत अढारमा वंदो ॥ भावी चोवीसी भावो ॥ श्री निरवाण चोथा जिनवर ॥ हृदयकमलमां लावोरे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ४ ॥ छठ्ठा रवीराज सातमा ॥ प्रथम नाथ प्रणमीजे ॥ चिदानंदघन सुजस महोदय ॥ लीला लच्छि लहींजे रे ॥ भविका ॥ एहवा० ॥ ५ ॥

ढाल अगीआरमी.

करपट फुलीरे लुळणां ॥ ए देशी ॥ पश्चिम ऐरावर्ते भलो ॥ धातकी खंडे अतित के ॥ चोवीसीरे पूरुरवा ॥ चोथा जिन सुप्रतित के ॥ १ ॥ जिनवर नाम सोहामणुं ॥ घडीय न मेल्युं जाय के ॥ रात दिवस मुझ सांभरे ॥ संभारे सुख थाय के ॥ जिन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ श्रीं अवबोध छठ्ठा नमुं ॥ सातमा श्री विक्रमेंद्र के ॥ चोवीसी वर्तमानना ॥ हवे संभारुं जिनेंद्र के ॥ जिन० ॥ ३ ॥ एकवीसमा श्री सुशांतजी ॥ ओगणीसमा हरनामके ॥ श्री नंदीकेस अढारमा ॥ होजो तास प्रणाम के ॥ जिन ॥ ४ ॥ भावि चोवीसी संभारीये ॥ चोथा श्री महामृगेंद्र के ॥ छठ्ठा असोपित

काज आचरसेजी ॥सुकृत सदोदय सुजस महोदय ॥ लीला ते आ-दरसेजी ॥ ५ ॥

कलश.

ए वार ढाल रसाल वारह, भावना तरु मंजरी ॥ वर वार अंग विवेक पल्लव, वार व्रत सोभा करी ॥ इम वार तप विध सार साधन ॥ ध्यान जिन गुण अनुसरी ॥ नयविजय बुध चरण सेवक ॥ जसविजय जयश्री लही ॥ १ ॥

॥इति श्री महोपाध्याय श्री यशोविजयजी कृत मौन एकादशीना गणणानुं वार ढालनुं स्तवन संपूर्ण ॥

पोषदशम श्रीपार्श्वनाथ महाराजनां जन्म कल्याणकनो महिमा.

आ पर्व मागशर वद १० ने दिवसे आवे छे परमपूज्य त्रेवीसमा तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथ महाराजानो जन्म दिवस छे. तेथी ते श्रीपार्श्वजिन जन्मकल्याणक छे अने ते इहलोक सबंधी परलोक सबंधी परम सुखनुं आपनारुं छे. यावत् शाश्वत मोक्ष सुखनुं आपनारुं आ परमपवित्र पर्व छे तेने आराधीने अनेक जीवोए देवगतीना अने मोक्ष गतीना सुखो मेळवेला छे. तेनो विस्तार कथा संग्रह तथा अन्य ग्रंथोथी जाणी लेवो ते पर्व आराधन करवानो विधि नीचे प्रमाणे छे. प्रथम तो सायंकाले अने प्रातः काले बे वखत



पंडित श्री वीरविजयजी कृत.

श्री पंचकल्याणकनी पूजा.

आ पूजामां उत्कृष्ट फळ, नैवेद (पकवान्न) विगेरे दरेक वस्तुना आठ आठ नंग लाववां, आठ स्नात्रीया उभा राखवा, आठ कळश पंचामृतना भरवा, आठ दीपक करवा, अने कुसुम (फुल), अक्षत (चोखा), प्रमुख वस्तुओ जोइए. कदापि ते प्रमाणे जोग ना बने तेम होय तो एकेकी वस्तुथी पण पूजा भणावी शकाय.

॥ विधि ॥

१. प्रथम स्नात्र भणाववुं पछी स्नात्रीया रकेबीमां कुसुम (फुल) लेइ उभा रहे, अने पूजा भणावनाराए पहेली पूजा भणावी मंत्र कहे एटले स्नात्रीआ कुसुम (फुल) प्रभुजीने चडावे.

२. बीजी पूजामां लविंग, एलची, सोपारी, नाळियेर, बदाम, द्राख, बीजोरां, दाडिम, नारंगी, आंबा, केळां, प्रमुख सरस सुगंधित रमणीय फळ रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां धरी, पूजानो पाट कही छेल्लो मंत्र भणीने प्रभु आगळ फळ धरे.

३. त्रीजी पूजामां उज्ज्वल अखंड अक्षत (चोखा) रकेबीमां नांखी, रकेबी हाथमां धरी पूजानो पाठ कही, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजी आगळ स्वस्तिक तथा तंदुलना त्रण पुंज (ढगला) करे.

४. चोथी पूजामां निर्मळ जळे भरेला कळश रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लेइ प्रभु आगळ उभा रहे पछी पूजानो पाठ भणीने छेल्लो मंत्र कही जलपूजा करे.

५. पछी पखाळ करी अंगलुहणाथी लुहीने केशरनी कचोळी (वाटकी) रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लइ पांचमी पूजानो पाठ भणी छेल्लो मंत्र कही चंदनपूजा करे.

६. छट्ठी पूजामां धूपधाणुं रकेबीमां राखी हाथमां लइ पूजानो पाठ करी, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुनी डाबी बाजु धूप उखेवे.

७. सातमी पूजामां मोतीयुक्त प्रभुजनो पाठ (दीवेट) करी, निर्मळ सुगंधित घृतथी कोडियां भरी दीपक करी रकेबीमां राखी, रकेबी हाथमां लइ पूजानो पाठ करी, छेल्लो मंत्र भणी, प्रभुजीनी जमणी बाजुए दीपक राखीए.

८. आठमी पूजामां मोदक, मिश्री, पतासां, खाजां प्रमुख अनेक प्रकारनां पक्वान्न रकेबीमां भरी हाथमां धरी पूजानो पाठ करी, छेल्लो मंत्र भणी प्रभु आगळ नैवेद्य धरे.

पछी पूजानो कळश करी, स्वामीभाईनी भक्ति करवी अने [illegible] करी, दीवाना [illegible] करी [illegible]

॥ अथ च्यवनकल्याणके प्रथम पुष्पपूजा ॥

दूहा

[illegible]

सर्पिणि त्रेवीशमा, पार्श्वनाथ जयवंत ॥ तस गणधर पद पामीने, थाशो शिववधू कंत ॥ ३ ॥ दामोदर जिनमुख सुणी, निज आतम उद्धार ॥ तदा आषाढी श्रावके, मूर्त्ति भरावी सार ॥ ४ ॥ सुविहित आचारज कने, अंजनशलाका कीध ॥ पंचकल्याण उत्सवे, मानुं वचनज लीध ॥ ५ ॥ सिद्धस्वरुप रमण भणी, नौतम पडिमा जेह ॥ थापी पंचकल्याणके, पूजे धन्य नर तेह ॥ ६ ॥ कल्याणक उत्सव करी, पूरण हर्ष निमित्त ।। नंदीसर जइ देवता, पूजे शाश्वत चैत्य ॥ ७ ॥ कल्याणक पूजन सहित, रचना रचशुं तेम ॥ दुर्जन विषधर डोलशे, सज्जन मनशुं प्रेम ॥ ८ ॥ कुसुम फळ अक्षत तणी, जल चंदन मनोहार ॥ धुप दीप नैवेद्यशुं, पूजा अष्ट प्रकार ॥९॥

॥ ढाळ ॥

प्रथम पूरव दिशे–ए देशी.

प्रथम एक पीठिका, झगमग दीपीका, थापी प्रभु पास उपरे ए ॥ रजत, रकेबीओ, विविध कुसुमे भरी, हाथ नर नारी धरी उच्चरे ए ॥ १ ॥ कनकबाहु भवे, बंध जिननामनो, करिय दशमे देवलोकवासी ॥ सकल सुरथी घणी, तेज कांन्ति भणी, वीस सागर सुख ते विलासी ॥ २ ॥ क्षेत्र दश जिनवरा, कल्याणक पांचसें, उत्सव करत सुर साथशुं ए ॥ थइय अग्रेसरी, साशय जिनतणी, रचत पूजा निज हाथशुं ए ॥३॥ योगशास्त्रे मता, मास षट थाकता, देवने दुःख बहु जातिनुं ए ॥ ते नवि निपजे, देव जिन जीवने, जोवतां ठाण उपपातनुं ए ॥ ४ ॥ सुगतिपुर मारगे,

शीतल छांहडी, तीर्थनी भूमि गंगाजले ए॥ चैत्य अभिषेकता, गुरु तनु सींचता, भावे बहुला भवि भव तरे ए ॥ ५ ॥ वारण ने अश्वी, दोय वचमां वसी, काशी वाराणसी नयरीये ए ॥ अश्वसेन भूपति, वामा राणी सती, जनपति रति अनुसारिये ए ॥ ६ ॥ चार गति चोपडा, च्यवनना चूरता, गिर गया तास भव नरक जाते ॥ बालपणे गुरु मिला, जननी मुख जोवतां, श्री शुभवीर आनंद पाते ॥ ७ ॥

॥ काव्यम ॥ उपजातिवृत्तम ॥

॥ भोगी यदालोकनतोऽपि योगी, बभूव पाताल पदे निलीनः ॥ कल्याणकारी दुरितापहारी, दशावतारी प्रददातु पार्श्वः ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय, परमेश्वराय, जन्मजरामृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेन्द्राय, [illegible] यजामहे स्वाहा ॥

॥ इति च्यवनकल्याणके [illegible] पूजा [illegible] ॥

— • —

॥ अथ जन्मकल्याणके द्वितीय [illegible]पूजा ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

सुपन चतुर्दश मोटकां, देखे माता ताम ॥
रयणीसमे निज मंदिरे, सुख–शय्या विश्राम ॥२॥

॥ ढाळ ॥

(मिथ्यात्व वामीने कोदया समकित पामी रे.—ए देशी.)

रुडो मास वसंत फळी वनराजी रे, रायण ने सहकार वाला ॥ केतकी जाय ने मालतीरे, भ्रमर करे झंकार वाला ॥ कोयल मदभर टहुकती रे, बेठी आंबाडाळ वाला ॥ हंसयुगल जळ झीलतां रे, विमळ सरोवर पाळ वाला ॥ मंद पवननी लहेरमां रे, माता सुपन निहाळ वाला ॥ ए आंकणी ॥ दीठो प्रथम गज उज्वलो रे. बीजे वृषभ गुणवंत वाला ॥ त्रीजे सिंहज केसरी रे, चोथे श्रीदेवी महंत वाला ॥ माळ युगल फुल पांचमे रे, छट्ठे रोहिणी कंत वाला ॥ उगतो सूरज सातमे रे, आठमे ध्वज लहकंत वाला ॥ रुडो मास० ॥ १ ॥ नवमे कळश रुपातणो रे, दशमे पद्मसर जाण वाला ॥ अगयारमे रत्नाकरु रे, बारमे देवविमान वाला ॥ गंज रत्ननो तेरमे रे, चउदमे वन्हि वखाण वाला ॥ उतरतां आकाशथी रे, पेसतां वदन प्रमाण वाला ॥ रुडो० ॥ २ ॥ माता सुपन लही जागीयांरे, अवधि जुवे सुरराज वाला ॥ शक्रस्तव करी वंदीया रे, जननी उदर जिनराज वाला ॥ एणे समे इंद्र ते आवीयारे, मा आगळ धरी लाज वाला ॥ पुण्यवती तुमे पामीयुं रे, त्रण भुवननुं राज्य वाला ॥ रुडो० ॥ ॥ ३ ॥ चौद सुपनना अर्थ कही रे, इंद्र गया निज ठाम वाला ॥ चउसठ इंद्र मळी गया रे, नंदिसर जिन धाम वाला ॥ च्यवनक-

ल्याणक उत्सवे रे, श्रीफलपूजा ठाम वाल्हा ॥ श्रीशुभवीर तेणे समेरे,
जगत जीव विश्राम वाल्हा ॥ रुडो० ॥ ४ ॥

॥ काο ॥ भोगी यदाο ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ फलानि य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति च्यवनकल्याणके द्वितीय फलपूजा संपूर्ण ॥२॥

॥ अथ जन्म कल्याणके तृतीय अक्षतपुजा ॥

॥ दोहा ॥

गविउरथे नृप मेदिरा, गुणसागर जिन गेह ॥
पउर गुणरूप गाभर्गी, वर्गाव तिमर्गा गेह ॥ १ ॥
दस मासनुं उतना, शेवांगना प्रणिंग ॥
नामाउर मर हेमगो, दिन दिन वृद्धि लहंत ॥ २ ॥
दोहला पूरे मूरति, मणिमां हंस गमेत ॥
जिन पूजे [illegible] ॥ ३ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उत्सवसे, सुखियां जगतमें नरनारी ॥ सखि० ॥ उत्तम ग्रह विशा
खायोगे, जनम्या प्रभुजी जयकारी ॥ सखि० साते नरके थय
अजुवाळां, थावरने पण सुखकारी ॥ सखि० ॥ ३ ॥ मात नमी
आठे दिककुमरी, अधोलोकनी वसनारी ॥ सखि० ॥ सूतिघ
ईशाने करती, योजन एक अशुचि टाळी ॥ सखि० ॥ ४ ॥ उर्ध्व
लोकनी आठ कुमारी, वरसावे जळ कुसुमाळी ॥ सखि० ॥ पूर्वरुचक
अड दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशाळी ॥ सखि० ॥ ५ ॥ अ
पच्छिमनी पंखा धरती, उत्तर अट्ठ चामर धारी ॥ सखि० ॥ वि
दिशिनी चउ दीप धरंती, रुचकद्वीपनी चउ बाळी ॥ सखि० ॥६
केळतणां घर त्रण्य करीने, मर्दन स्नान अलंकारी ॥ सखि० ॥ रक्ष
पोटली बांधी बिहुने, मंदिर मेल्यां शणगारी ॥ सखि० ॥ ७ ॥ प्रभु
मुखकमळे अमरी भमरि, रास रमंती लटकाळी ॥ सखि० ॥ प्रभु
माता तुं जगतनी माता, जगदीपकनी धरनारी ॥ सखि० ॥ ८ ॥
माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपकारि ॥ सखि० ॥
छप्पन दिक कुमरि गुण गाती, श्री शुभ वीर वचनशाळी ॥सखि०॥९

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ अक्षतान् य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति जन्मकल्याणके तृतीय अक्षतपूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ जन्मकल्याणके चतुर्थ जळपूजा ॥

॥ दोहा ॥

चलितासन सोहमपति, रचीं वैमान विशाळ ॥
प्रभु जन्मोत्सव कारणे, आवंता तत्काळ ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥

(राग [illegible] देशी.)

हवे सुर घुंटारा वजावे, देव देवी सर्व मिलावे ॥ हवे पालक सुर अभियान, तेने पालक नामे विमान ॥ १ ॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोता, भवभवनां पातिक धोता ॥ चाले सुर निज निज टोले, [illegible] ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ सिंहासन बेठा [illegible], [illegible] ॥ [illegible] ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ [illegible]

गीत वाजित्रना बहु ठाठ, आलेखे मंगळ आठ ॥प्रभु०॥९॥ इत्यादिक उत्सव करता, जइ माता पासे धरता ॥ कुंडलयुग वस्त्र ओशीके, दडो गेडी रतनमयी मुके ॥प्रभु०॥१०॥ कोडि बत्रीश रत्न रुपैया, वरसावी इंद्र उच्चरीया ॥ जिनमाताशुं जे धरे खेद, तस मस्तक थाशे छेद ॥ ॥प्रभु०॥११॥ अंगुठे अमृत वाही, नंदीसर करे अट्ठाइ॥ देइ राजा पुत्र वधाइ, घर घर तोरण विरचाइ ॥ प्रभु० ॥ १२ ॥ दश दिन ओच्छव मंडावे, बारमे दिन नात जिमावे ॥ नाम थापे पार्श्वकुमार, शुभवीरविजय जयकार ॥ प्रभु० ॥ १३ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥

॥ अथ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ जलं० य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति जन्मकल्याणके चतुर्थ जलपूजा संपूर्ण ॥

॥ अथ जन्मकल्याणके पंचम चंदनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

अमृतपाने उछर्या, रमता पास कुमार ॥
अहिलंछन नव कर तनुं, वरते अतिशय चार ॥१॥
यौवनवय प्रभु पामता, मात पितादिक जेह ॥
परणावे नृपपुत्रिका, प्रभावती गुणगेह ॥ २ ॥

योगी संसार घृत छोरके, [illegible]
लेइ धर्म अवाजा ॥१३॥ [illegible]
जीवदया नहि जानते, [illegible]
दारिद्रये, भूल चूक इलाग ॥ [illegible]
माला ॥ १५ ॥ मार्ड् [illegible]
निकाला एकिला, [illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
रसे, धरणेंद्र बनाया ॥ नागकुमार [illegible]
राणी साथ वसंतमें, वनखंडमें [illegible] ॥ [illegible]
जाकर बैठे ॥ १८ ॥ [illegible]
शामण जिन जोवते, वैराग भीना ॥ १९ ॥ [illegible]
बोले कर जोरी ॥ अवसर संजम [illegible]
निज घर आये नाथजी, दिया [illegible] ॥ [illegible]
सपजायके, दान वरसी देवे ॥ २१ ॥ [illegible]
दारिद्रकु चूरे ॥ श्री [illegible] पूरे ॥ [illegible]
॥ काव्यं ॥ [illegible] ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

॥ ऊँ ह्रीँ श्रीँ परम० ॥ [illegible] ॥ स्वाहा ॥

॥ इति जन्मकल्याणके पंचम [illegible] संपूर्ण ॥ ५ ॥

॥ अथ दीक्षाकल्याणके षष्ठ [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

वरसीदानने अवसरे, [illegible] ॥

चंदन घसी घनसारशुं, निज घर चैत्य विशाल ॥
पूजोपकरण मेळवी, पूजे जगत्दयाळ ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥

(बाळपणे योगी हुआ, माई भिक्षा दोने.—ए देशी.)

सोना रुपाके सोगठे, सांयां खेलत पानी ॥ इंद्राणी
[illegible], हरि होन है रानी ॥ १ ॥ एक दिन गंगाके विचे, [illegible]
[illegible] ॥ नारी चकोर अपसरा, करीत कवन विशेष ॥
[illegible] हरि [illegible], [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] मंदिर [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] मंदिर [illegible],
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible], सुनो मोहन [illegible] ॥ [illegible] चंदन [illegible]
[illegible]

[illegible]

वरघोडेथी उतर्या रे, काशीनयरनी बहार ॥ आश्रमपद उद्यानमां रे, तरु अशोक रसाळ ॥ नमो० ॥ १० ॥ अट्ठम तप भूषण तजीरे, उच्चरे महाव्रत चार ॥ पोष बहुल एकादशीरे, त्रण्य सयां परिवार ॥ नमो० ॥ ११ ॥ मनःपर्यव तव उपनुंरे, खंध धरे जगदीश ॥ देवदुष्य इंद्रे दियुं रे, रहेसे वरस चउतीस ॥ नमो० ॥ १२ ॥ काउस्सग्गमुद्राए रह्यारे, सुर नंदीश्वर जात ॥ मात पिता वंदी वळ्यां रे, श्री शुभवीर प्रभात ॥ नमो० ॥ १३ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीं श्री परम० ॥ धुप य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति दिक्षाकल्याणके षष्ठ धूपपूजा संपूर्ण ॥६॥

॥ अथ केवलज्ञानकल्याणके सप्तम दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सारथघर घरे पारणुं, प्रथम प्रभुए कीध ॥
पंचदिव्य प्रगटावीने, तास मुक्तिसुख दीध ॥ १ ॥
जगदीपक प्रगटावता, तप तपता रही राण ॥
तेणे दीपकनी पूजना, करता केवलनाण ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥

(महावीर प्रभु घेर आये.—ए देशी.)

वरघोडेथी उतर्या रे, काशीनयरनी बहार ॥ आश्रमपद उद्यानमां रे, वृक्ष अशोक रसाळ ॥ नमो० ॥ १० ॥ अट्ठम तप भुषण तजीरे, उच्चरे महाव्रत चार ॥ पोष बहुल एकादशीरे, त्रण्य सयां परिवार ॥ नमो० ॥ ११ ॥ मनःपर्यव तव उपनुंरे, खंध धरे जगदीश ॥ देवदुष्य इंद्रे दियुं रे, रहेसे वरस चउतीस ॥ नमो० ॥ १२ ॥ काउस्सग्गमुद्राए रह्यारे, सुर नंदीश्वर जात ॥ मात पिता वंदी वळ्यां रे, श्री शुभवीर प्रभात ॥ नमो० ॥ १३ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीँ श्री परम० ॥ धुप य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति दिक्षाकल्याणके षष्ठ धूपपूजा संपूर्ण ॥६॥

॥ अथ केवलज्ञानकल्याणके सत्तम दीपकपूजा ॥

॥ दोहा ॥

सारथघन घरे पारणुं, प्रथम प्रभुए कीध ॥
पंचदिव्य प्रगटावीने, तास मुक्तिसुख दीध ॥ १ ॥
जगदीपक प्रगटाववा, तप तपता रही राण ॥
तेणे दीपकनी पूजना, करता केवलनाण ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥

(महावीर प्रभु घेर आवे.—ए देशी.)

प्रभु पारसनाथ सिधाव्यां, कादंबरी आव्यां ।

नामे [illegible] [illegible], [illegible] निर्मळ [illegible] रे ॥ मनमोहन [illegible]
[illegible] रे ॥ मन० ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] वनहाथी तिहां [illegible] ॥
[illegible] रे ॥ मन० ॥ २ ॥
[illegible] देवनी पारे ॥ [illegible]
[illegible] मन० ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible]

वंदे, जिनवाणी गुणी आणंदे ॥ ससरो सागु बहु साथे, दीसा
ते प्रभु हाथे रे ॥ मन० ॥ १२ ॥ संघ साथे गणीपद धरता,
ज्ञान महोत्सव करता ॥ स्वामी देवछंदे सोहाये, शुभवीर वचन
गावे रे ॥ मन० ॥ १३ ॥

॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ ६ ॥

॥ अथ मंत्रः ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम० दीपं य० ॥ स्वाहा ॥

॥ इति केवलज्ञानकल्याणके सप्तम दीपकपूजा संपूर्ण ।.७॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणके अष्टम नैवेद्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

शुभआदे दश गणधरा, साधु सोळ हजार ॥
अडतीस सहस ते साधवी, चार महाव्रत धार ॥१॥
एक लख चउसठ सहस छे, श्रावकनो परिवार ॥
सगविस सहस ते श्राविका, तिग लख ऊपर धार ॥२॥
देशविरतिधर ए सहु, पूजे जिन त्रण्य काळ ॥
प्रभु पडिमा आगळ धरे, नित्य नैवेद्यनो थाळ ॥३॥

॥ ढाळ ॥

(एक समे सामलियाजी, वृन्दावनमां—ए देशी.)

रंगरसीया रंगरस बन्यो ॥ मनमोहनजी ॥ कोइ आगळ नवि

दव ॥ मनडुं० ॥ १० ॥ नंदीसर उत्सव करे ॥ मन० ॥ कल्याणक मोक्षानंद ॥ ॥ मनडुं०॥ वर्ष अढीसें आंतरुं ॥ मन० ॥ शुभ वीर ने पासजिणंद ॥ मनडुं० ॥ ११ ॥

अथ गीतं ॥

(घरे आवो ढोला.—ए देशी.)

उत्सव रंग वधामणां, प्रभु पासने नामे ॥ कल्याणक उत्सव कियो, चढते परिणामे ॥ उत्सव० ॥ १ ॥ शत वर्षायु जीवीने, अक्षय सुख स्वामी ॥ तुम पद सेवा भक्तिमां नवि राखुं खामी ॥ उत्सव० ॥ २ ॥ साची भक्ते साहेबा, रिझो एक वेळा ॥ श्री शुभविर हुवे सदा, मनवांछित मेळा ॥ उत्सव० ॥ ३ ॥

॥ अथ कळश ॥

गायोगायो रे, शंखेश्वर साहेब गायो ॥यादवलोकनी जरा निवारि,जिनजी जगत् गवायो॥पंचकल्याणक उत्सव करतां, अमघर रंग वधायो रे ॥ शंखेश्वर ॥ १ ॥ तपागच्छ श्री सिंहसूरिना, सत्यविजय बुध ठायो॥ कपुरविजय गुरु खिमाविजय तस, जशविजयो मुनिरायो रे ॥ शंखे० ॥२॥ तास शिष्य संवेगी गीतारथ, शांत सुधारस नाह्यो॥ श्री शुभविजय सुगुरु सुपसाये, जयकमळा जग पायो रे ॥ शंखे० ॥ ३ ॥ राजनगरमां रही चोमासुं, कुमति कुतर्थ हठायो ॥ विजयदेवेंद्र सुरिश्वर राज्ये, ए अधिकार बनायो रे ॥ शंखे० ॥४॥ अढारसें नेव्याशी अक्षयत्रीज, अक्षत पुण्य उपायो ॥ पंडित वीरविजय पद्मावती,

वांछित दाय सुहायो रे० शंखेश्वर० ॥ ५ ॥
॥ काव्यं ॥ भोगी यदा० ॥ १ ॥

॥ अथ मंत्र ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम० ॥ नैवेद्यं य० ॥ स्वा
॥ इति निर्वाणकल्याणके अष्टम नैवेद्यपूजा सम



॥ इति पंडित श्री वीरविजयजीकृत ॥
॥ पंचकल्याणक पूजा समाप्त ॥



मेर तेरस.

आ व्रत मारवाडी. महा वद १३ परंतु गुजर
१३ ने दिवसे आवे छे आ दिवसे प्रथम तीर्थंकर श्र
मीनुं नीर्वाण एटले मोक्ष कल्याणक थयेलुं छे जे
अति उत्तम गणाय छे. अने शियाळानी रुतुमां दी
ळो होय छे ते आ दीवसथी मेर जेटलो वधतोज
आ व्रत करवाथी पण पुन्य लक्ष्मी बाह्य द्रव्यादिक
ज्ञानादिक आत्मानी स्वाभाविक लक्ष्मी पण वधतीज
विधि नीचे प्रमाणे ज्यारे पोस वद १३ नो दि
घउ विहारो उपवास करो, रत्नना पांच मेरु करा

चार न्हाना मेरु करवा तेनी आगल वली चार दिशायें चार नंदावर्त करवा दीवो धुप प्रमुख घणा प्रकारनी पूजा करवी. एवी रीते तेर महिना पर्यंत अथवा तेर वर्ष पर्यंत करवुं अने श्रीऋषभदेव स्वामीनुं पारंगताय नमः एवुं बे हजार गणणुं गणवुं एटले नोकारवालीगणवी ा रीते महीने महीने करे तो सर्व कर्मनो क्षय आ भव तथा पर- ने विषे सुख संपदा पामे तेरसने दीवसे पोसह व्रत करी पार- ने दिवसे गुरुने पडी लाभी अतिथि संवीभागकरी पारणुं करे ा व्रत अनंत वीर्यराजाना पुत्र पिंगलकुमार के जे पूर्व कर्मना उद- थी पांगलो हतो ते गुरु महाराजाना कहेवाथी आ व्रत १३ म- ाना विधि सहित आदरवाथी सर्व अंग संपूर्ण थया पांगलापणुं टीने उत्तम शरीरनी कान्ति प्राप्त थइ ते हकीकत कथा संग्रह ादिथी जाणी लेवी.

रोहिणी–तप.

आ तप रोहिणी नक्षत्र आवे छते कराय छे मुनिमहाराजाने अशुद्ध आहारादिक आपवाथी रोहिणीए. घणा दुःखो पूर्वभवोमां अनुभव्या हता. छेवटे जैन धर्म पामी धर्मनुं उत्तम रीते आराधन करी. घणा वैभव सहित राजानी राणी तरीके रोहिणी प्रसिद्ध थयेली छे तेने रोहिणी नक्षत्रने दीवसे तपनुं आराधन करेलुं होवा- थी तेनाज नामथी आ तपनुं नाम पण रोहिणी तप पडेलुं छे

करी पोसह पडीलेहणादि विधि करी चौमासी देववंदन करवुं ते कार्तकी चौदशना देववंदन वांदवा विगेरेनो अधिकार छे त्यांथी देवश्री पद्मविजयजी अगर वीरविजयजी महाराजना आपेला छे त्यांथी करी लेवा अने काळनो फेरफार जेमके सुखडी विगेरेनो काळ एक महीनानो हतो ते २० दीवसनो जाणवो पाणीनो काळ त्रण पहोरनो हतो ते चार पहोरनो जाणवो कामलीनो काळ चार घडीनो हतो ते बे घडीनो जाणवो भाजीपालो वगेरे अभक्ष्य थाय माटे खजुरादि पदार्थोनो त्याग समजवो.



फागण सुद १५ ए होलीकानुं पर्व मीथ्यात्वी लोकोनुं छे ते पर्व आराधन करवाथी महापाप बंधाय छे. जेथी दरेक जैनी भाइ व्हेनोए सम्यक् प्रकारे समजी ते पर्वनो सर्वथा त्याग करवो अने धर्म ध्यानमां प्रवर्तवुं पण ए भांड चेष्टामां भाग लेवो नहीं ए संबंधी विशेष जाणवानी इच्छा वालाए होलीकानी कथा कथा संग्रहनी चोपडी विगेरे अन्य ग्रंथो छे त्यांथी जाणी लेवुं.



फागणवद ८ आ तीथीए प्रथम तीर्थंकर श्री रुषभदेवजीना जन्म कल्याणकनी तथा दीक्षा कल्याणकनी तिथि होवाथी तेमज वर्षीतपनी शरुआत पण आ दिवसथीज करवामां आवती होवाथी ते दिवस पर्व आराधननो गणाय छे.

स्थापन करवामां उजमाळ अने स्वाध्याय ध्यानमां लीन मनवाळा श्री उपाध्याय महाराजनुं सम्यग् ध्यान धरो.

सर्व कर्मभूमियोमां विचरता अनेक गुण गणे करी संयुक्त, त्रण गुप्तिए गुप्त, ए निष्परिग्रहि एवा निष्कषायी मुनिमहाराजनुं पंचमपदे ध्यान करो.

छट्टे पदे सर्वज्ञ प्रणीत आगममां कहेला जीवादिक तत्त्वार्थने विशे श्रद्धान लक्षण दर्शनरुपी रत्नदीपकने निरंतर मनमंदिरमां स्थापो.

सातमे पदे जीवाजीवादिक पदार्थ समूहना यथार्थ अवबोधरुप ज्ञानने सर्व गुणोना मूळ कारणभूत जाणीने विनय बहु मान वडे भणो.

आठमे पदे अशुभ क्रियाओना त्यागरुप अने शुभ क्रियाओमां आदररुप उत्तम गुणयुक्त चारित्रने यथार्थ पाळो.

नवमे पदे आकरां कर्मरुपी अंधकारने हरी लेवा सूर्य समान द्वादशविध तपनुं कषाय ताप रहित रुडी रीते सेवन करो.

आ प्रमाणे उपर बतावेला नवे पदो जीनेश्वर प्रभुए कहेला धर्ममां सारभूत छे, अने आराधन करनार भव्य जनोने कल्याण-कारी छे तेथी ते यथाविध आराधवा योग्य छे.

ए नव पदोवडे निष्पन्न एवा श्री सिद्धचक्रने उपयोग युक्त आराधनार प्राणी श्री श्रीपाळकुमारनी पेरे सुख-समाधि पामे छे.

५ स्वर्णसिंहासनप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
६ भामंडलप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
७ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
८ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
९ ज्ञानातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१० पूजातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
११ वचनातिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥
१२ अपायापगमा तिशयसंयुताय श्रीअरिहंताय नमः ॥

॥ इत्यादि नमस्कार करके 'अनत्य ऊससिएणं' कहके बार लोगस्सका काउस्सग्ग करे । एक लोगस्स प्रगट कहे। पीछे स्वस्थानक जाके चैत्यवंदन करे । पच्चखाण पारके आंबिल करे । पहले जल पीवे जब चैत्यवंदन करके पीवे । पीछे फेर चैत्यवंदन करके तिविहार पचक्खाण करे । 'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं' इस पदको २००० गुणणो करे । श्रीपालजीको चरित्र, नव पद महिमा सुणे । पुण पहर दिन रहणेसे तीसरी वेर पांच शक्रस्तवे देव वांदे । सामायिक लेके दिन छते पडिक्कमण करे । आरतीके समय दीप, धूप, कुसुमपूजा करे । अथवा पहिले आरती प्रमुख करके पीछे पडिक्कमण करे । (सोनेके समय) इरियावही पडिकमके चैत्यवंदन करके राइ संथारा गाथा गुणके सोवे । निद्रा न आवे जहां तक नव पदका गुण स्मरण करे ॥ इति ॥

णं' इस पदको गुणणो दो हजार करे। आचार्यपदके ३६ गुण
गद करके छत्तीस नमस्कार करे सो लिखते हैं ॥

॥ आचार्यपदके ३६ गुण ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
६ धैर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
७ उपदेशगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
८ अपरिश्राविगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
९ सौम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१३ अचपलगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१६ ऋजुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१७ मृदुगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
१८ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥

१९. द्वादशविधतपगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२०. सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२१. सत्यव्रतगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः
२२. शौचगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२३. अकिंचनगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२४. ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्रीआचार्याय नमः ॥
२५. अनित्यभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२६. अशरणभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२७. समारम्भस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२८. एकत्वस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
२९. अन्यत्वभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३०. अशुचिभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३१. आश्रवभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३२. संवरभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३३. निर्जराभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३४. लोकस्वरूपभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३५. बोधिदुर्लभभावनाभावकाय श्रीआचार्याय नमः ॥
३६. [illegible] ॥

[illegible] इत्यादि [illegible] गाम्म [illegible]

॥ अथ चतुर्थ दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं' इस पदको २ हजार गुणणो करे। लील मूंगांकी–मगनी दाल प्रमुखका आंबिल करे। उपाध्यायपदके २५ गुण याद करके नमस्कार करे ॥

॥ उपाध्यायपदके २५ गुण ॥

१ श्रीआचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
२ श्रीसुयगडांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्या० ॥
३ श्रीठाणांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
४ श्रीसमवायांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
५ श्रीभगवतीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्याय० ॥
६ श्रीज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
७ श्रीउपासकदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
८ श्रीअन्तगडदशासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
९ श्रीअणुत्तरोववाईसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१० श्रीप्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
११ श्रीविपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१२ उत्पादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय नमः ॥
१३ आग्रायणीपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१४ वीर्यप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥
१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयुक्ताय श्रीउपाध्यायाय० ॥

३ अदत्तादानविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
४ मैथुनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
६ रात्रिभोजनविरमणव्रतयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
८ अप्कायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
९ तेउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१० वाउकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१२ त्रसकायरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१३ एकेंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१४ बेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१५ तेइंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१६ चौरिंद्रियजीवरक्षकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१७ पंचेंद्रियजीवरक्षकाय श्री साधवे नमः ॥
१८ लोभनिग्रहकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२० शुभभावनाभावकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२१ प्रतिलेखनादि क्रियाशुद्धकारकाय श्रीसाधवे नमः ॥
२२ संयमयोगयुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥

२४ वचनगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२५ कायगुप्तियुक्ताय श्रीसाधवे नमः ॥
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरिषहसहनतत्पराय श्रीसाधवे नमः ॥
२७ मरणान्तउपसर्गसहनतत्पराय श्रीसाधवे नमः ॥

॥ इस गिनतिसे सत्तावीश नमस्कार करे। खडा होके अ[illegible] इच्छामिखमासमणो इत्यादि कहके सत्तावीस लोगस्सका काउस्सग [illegible] [illegible] लोगस्स कहके पारे। पीछे पूर्वोक्त करणी करे। यह पंच परमेष्ठिपदके सर्व गुण मिलाणेसे १०८ होय। इसीसे जैनमें मा[illegible] [illegible] १०८ होते है॥ इति पंचम दिवस विधि॥

॥ अथ षष्ट दिवस विधि॥

[illegible] नमो दंसणस्स' इस पदकी २ हजार गुणणो [illegible] दर्शनपद सफेद वर्ण है, इसीसे चउलका-चोखाका आंबिल क[illegible] सम्यक्त्वके सडसठ गुण गिनकर नमस्कार करे॥

॥ सम्यक्त्वके सडसठी भेद॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वैयावृत्यरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
अर्हद्विनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
सिद्धविनयरूपदर्शनाय नमः ॥
चैत्यविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
श्रुतविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
धर्मविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
साधुवर्गविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
आचार्यविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
५ उपाध्यायविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
६ प्रवचनविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
७ दर्शनविनयरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
८ संसारे जिनसारमिति चिंतनरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
९ संसारे जिनमतिसारमिति चिंतनरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
० संसारे जिनमतिस्थितसाध्वादिसारमिति चिंतनरूपसद्दर्शनाय०॥
१ शंकादूषणरहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२ कांक्षादूषणरहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसादूषणरहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२५ तत्परिचयदूषणरहिताय सद्दर्शनाय नमः ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूपसद्दर्शनाय नमः ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूपसद्दर्शनाय नमः ॥

५० राजाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५५ गुरुनिग्रहाकारयुक्तश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
५६ सम्यक्त्वं चारित्रधर्मस्य मूलमिति चिं० श्री० ॥
५७ सम्यक्त्वं धर्मपुरस्य द्वारमिति चिं० श्रीस० ।
५८ सम्यक्त्वं धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिं० श्रीस० ॥
५९ सम्यक्त्वं धर्मस्याधारमिति चिं० श्रीस० ॥
६० सम्यक्त्वं धर्मस्य भाजनमिति चिं० श्रीस० ॥
६१ सम्यक्त्वं धर्मस्य निधिसंनिभमिति चिं० श्री० ॥
६२ अस्ति जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीसद्दर्शनाय०
६३ स च जीवो नित्य इति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री० ॥
६४ स च जीवः कर्म्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयुक्तश्रीस० नमः॥
६५ स च जीव कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धास्थानयुक्तश्रीस० ॥
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्त० ॥
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धानस्थानयुक्त० ॥

॥ इस रीतसे सतसठी नमस्कार करे । [illegible] ससिएणं० इत्यादि कहके ६७ लोगस्स अथवा ७ [illegible] स्सग करे । एक लोगस्स कहके पारे । [illegible]

१७ स्पर्शनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१८ रसनेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
१९ घ्राणेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२० चक्षुरिंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२१ श्रोत्रेंद्रियअपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२२ मनोऽपायमतिज्ञानाय नमः ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२४ रसनेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२५ घ्राणेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२६ चक्षुरिंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२७ श्रोत्रेंद्रियधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२८ मनोधारणामतिज्ञानाय नमः ॥
२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३० अनक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३१ संज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३२ असंज्ञिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३३ सम्यक्श्रुतज्ञानाय नमः ॥
३४ मिथ्याश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
३६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः
३७ सपर्यवसितश्रुतज्ञानाय नमः ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि ॥

॥ 'ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्स' इस पदको २ हजार गुणणो करे। चारित्रपदका उज्ज्वल वर्ण है, इसीते तंदुलका आंबिल करे। सित्तर भेद चारित्रपदके नितके नमस्कार करे ॥

॥ अथ चारित्रपदके ७० भेद ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
५ परिग्रहविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
७ आर्जवधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
८ मृदुलाधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
९ मुक्तिधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१० तपोधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
११ संयमधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१२ सत्यधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१३ शौचधर्मरूपचारित्राग नमः ॥
१४ अकिंचनधर्मरूपचारित्राय नमः ॥
१५ बंभधर्मरूपचारित्राय नमः ॥

ग्लानसाधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

साधुवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

९ श्रमणोपासकवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

० संघवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

१ कुलवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

२ गणवैयावृत्त्यरूपचारित्राय नमः ॥

३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारित्रा० ॥

४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० ॥

४५ स्त्रीआसनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

४६ स्त्रीअंगोपांगनिरीक्षणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय० ॥

४७ कुडयंतरस्थितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनब्रह्मगुप्ति० ॥

४८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

४९ अति सरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५० अतिआहारकरणवर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५१ अंगविभूषावर्जनब्रह्मगुप्तिचारित्राय नमः ॥

५२ अनशनतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५३ ऊनोदरीतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५४ वृत्तिसंक्षेपतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५५ रसत्यागतपोरूपचारित्राय नमः ॥

५६ कायक्लेशतपोरूपचारित्राय नमः ॥

७ संलेखनातपोरूपचारित्राय नमः ॥

॥ अथ तपपदके ५० भेद ॥

१ यावत्कथिंकतपसे नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नमः ॥
३ बाह्यऊनोदरीतपोभेदतपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊनोदरीतपोभेदतपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
६ क्षेत्रतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
७ कालतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
८ भावतपोवृत्तिसंक्षेपतपोभेदतपसे नमः ॥
९ कायक्लेशतपोभेदतपसे नमः ॥
१० रसत्यागतपोभेदतपसे नमः
११ इंद्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः ॥
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानअवस्थितसंलीनता० ॥
१३ आलोयणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१४ पडिक्कमणप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१५ मिश्रप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१६ विवेकप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१७ उपसर्गप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१८ तपःप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
१९ छेदप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२० मूलप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥

२१ अनवस्थितप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२२ पारंचियप्रायश्चित्ततपसे नमः ॥
२३ ज्ञानविनयरुपतपसे नमः ॥
२४ दर्शनविनयरुपतपसे नमः ॥
२५ चारित्रविनयरुपतपसे नमः ॥
२६ गुर्वादिकमनोविनयरुपतपसे नमः ॥
२७ वचनविनयरूपतपसे नमः ॥
२८ कायविनयरुपतपसे नमः ॥
२९ उपचारकविनयरूपतपसे नमः ॥
३० आचार्यवैयावच्चतपसे नमः ॥
३१ उपाध्यायवैयावच्चतपसे नमः ॥
३२ साधुवैयावच्चतपसे नमः ॥
३३ तपस्विवैयावच्चतपसे नमः ॥
३४ लघुशिष्यादिवैयावच्चतपसे नमः ॥
३५ ग्लानसाधुवैयावच्चतपसे नमः ॥
३६ श्रमणोपासकवैयावच्चतपसे नमः ॥
३७ संघवैयावच्चतपसे नमः ॥
३८ कुलवैयावच्चतपसे नमः ॥
३९ गणवैयावच्चतपसे नमः ॥
४० वाचनातपसे नमः ॥
४१ पृच्छनातपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥
४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥
४४ धर्मकथातपसे नमः ॥
४५ आर्त्तध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत्ततपसे नमः ॥
४७ धर्मध्यानचिंतनतपसे नमः ॥
४८ शुक्लध्यानचिंतनतपसे नमः ॥
४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥
५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥

॥ एसी रीते ५० नमस्कार करे । खडा होके अन्नत्थ ऊस-सिएणं० इत्यादि कहे । ५० लोगस्सका काउस्सग करे । पीछे पूर्वोक्त करणी करे ॥ इति नवम दिवस विधि ॥

श्री नवपद संक्षेप आराधन विधि.

उपर कह्या मुजब नवपदना गुण समजी शाश्वत सुखना अर्थी-ोए तेनुं सदा सद्भावथी सेवन करवुं. त्रिकाळ पूजा, सेवा क बहुमानपूर्वक मनमां निरंतर नवपदनुं स्मरण करवुं, दृढ भ्यासथी नवपदनुं ध्यान धरनार पोतेज नवपदरूप थई शके छे. थी अहोनिश हृदयकमळमां नवपदनुं स्थापन करी राखवुं जरुरनुं

पान वापरी देहने आधार आपवो. मैत्री प्रमुख भावना चतुष्टयनुं सदाय सेवन करवुं. सर्व जीवोनुं सदाय हित इच्छवुं, सद्‌गुणीने देखी प्रमुदित थवुं, दीन दुःखीनुं दुःख टाळवा यतन करवुं अने कठोर दिलना निर्दय प्राणि उपर पण द्वेष लाववो नहि. देहादिक पुद्‌गलीक वस्तुओनुं अनित्यपणुं अने असारपणुं विचारी सदा शाश्वत अने सारभूत धर्मनुंज दृढ आलंबन लेवुं सर्वज्ञप्रणित धर्मज आ दुःखोदधिमांडुबता जीवोने सहायभूत छे. नवपदमां देव, गुरु अने धर्म ए त्रणेनो समावेश थाय छे. तेथी तेनुं दृढतर अवलंबन करवुं उचित छे. एनवपदनुं सविशेष स्वरुप सद्‌गुरु समिपे समजी आशंशा रहित निष्कामीपणे तेनुं सेवन करवामां आवे तो अल्पकाळमां अक्षय सुख प्राप्त थइ शके छे. उक्त नवपद अनंत गुणनीधान छतां तेना अनुक्रमे १२, ८, ३६, २५, २७, ६७, ५१, ७०, अने १२ गुणो शास्त्रमां वर्णवेलां छे. ते प्रमाणे तेटला लोगस्सनो काउस्सग्ग, तेटलांज खमासणां अने तेटलीज प्रदक्षिणा विगेरे करणी स्थिर उपयोगथी नव दिवस सुधी अनुक्रमे करवी कही छे. वळी दिनदिन विनय, वैयावच्च, स्वाध्याय, ध्यान, प्रमुख धर्मव्यापार, शुद्ध मन वचन कायाना योगथी करतां आत्मा अवश्य मोक्षनो अधिकारी थाय छे. आ प्रमाणे नवपदनुं आराधन ४॥ वर्ष सुधी अने बनी शके तो जीवित पर्यंत करवानुं छे. ४॥ वर्षमां सर्व मळीने ८१ आयंबिल उपर मुजब करवाना छे, अने साथे साथे बीजी धर्मकरणी यथाविध समजपूर्वक सेववानी छे दरेक

,, ,, चारित्रसस	७०	७०	२०
,, ,, तवरस	५०	५०	२०



नवपदनु आराधन करनाराओने दरेक पद दीठ बोलवाना दूहा.

प्रथम श्री अरिहंतपद.

अरिहंत पद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जायेरे;
भेद छेद करी आतमा, अरिहंत रुपी थायेरे. १
वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभलजो चित्त लाइरे;
आतमध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवि आइरे. २

द्वितीय श्री सिद्धपद.

रुपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणीरे;
ते ध्याता निज आतमा, होय सिद्ध गुण खाणीरे. वी. ३

तृतीय श्री आचार्यपद.

ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानीरे;
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणीरे. वी. ४

चतुर्थ श्री उपाध्यायपद.

॥ श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत ॥

नवपदपूजा प्रारंभ.

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम अरिहंतपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ उपजातिवृत्तम् ॥

॥ उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं, सप्पाडिहेरासणसंठियाणं ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाणं, नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ नमोऽनंतसंतप्रमोदप्रदान, प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय ॥ थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा, सदा सिद्धचक्राय श्रीपाल राजा ॥ २ ॥ कर्या कर्म दुर्मर्म चकचूर जेणे, भलां भव्य नवपदध्यानेन तेणे ॥ करी पूजना भव्य भावे त्रिकाले, सदा वासीयो आतमा तेणे काले ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदये करीने, दीए देशना भव्यने हित धरीने ॥ सदा आठ महापाडिहारे समेता, सुरेशे नरेशे स्तव्या ब्रह्मपुत्ता ॥ ४ ॥ कर्या घातियां कर्म चारे अलग्गां, भवोपग्रही चार जे छे विलग्गां ॥ जगत् पंच कल्याणके सौख्य पामे, नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ तीर्थपति अरीहा नमुं, धर्मधुरंधर धीरो जी ॥ देशना अमृत वरसता, नीज वीरज वड वीरो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ वर अखय

नीर्मल ज्ञानभासन, सर्व भाव प्रकाशता ॥ नीज शुद्ध श्रद्धा आत्मभावे, चरणथीरता वासता ॥ जीन नामकर्म प्रभाव अतीशय, प्रातीहारज शोभता ॥ जगजंतु करुणावंत भगवंत भवीकजनने क्षोभता॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ त्रीजे भव वर स्थानक तप करी, जेणे बांध्युं जीननाम ॥ चोसठ इंद्रे पूजीत जे जीन, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भवीका ॥ सीद्धचक्रपद वंदो, जेम चीर काले नंदो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेहने होय कल्याणक दीवसे, नरके पण अजवालुं ॥ सकल अधीक गुण अतीशय धारी, ते जीन नमी अघटालुं रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २ ॥ जे तीहुं नाण समग्ग उप्पन्ना, भोगकरम क्षीण जाणी ॥ लेइ दीक्षा शीक्षा दीए जनने, ते नमीए जीन नाणी रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महागोप महामाहण कहीए, नीर्यामक सत्थवाह ॥ उपमा एहवी जेहने छाजे, ते जिन नमीए उत्साह रे ॥ ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४ ॥ आठ प्रातिहारज जस छाजे, पांत्रीस गुण युत वाणी ॥ जे प्रतिबोध करे जगजनने, ते जिन नमीए प्राणी रे ॥ ॥ भ० ॥ सि ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ अरिहंतपद ध्यातो थको, दव्वह गुण पज्जाय रे ॥ भेद छेद करी आतमा, अरिहंतरूपी थाय रे ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर उपदिशे, सांभळजो चित्त लाइ रे ॥ आतम ध्याने आतमा, ऋद्धि मळे सवि आइ रे ॥ वी० ॥ २ ॥ इति प्रथम अरिहंतपदपूजा समाप्ता ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय सिद्धपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ सिद्धाणमाणंसुरमालयाणं ॥
॥ नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं ॥ १ ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करी आठ कर्मक्षये पार पाम्या, जरा जन्म मरणादि भय जेणे वाम्या ॥ निरावरण जे आतमरूपे प्रसिद्धा, थया पार पामी सदा सिद्धबुद्धा ॥ १ ॥ त्रिभागोनदेहावगाहात्मदेशा, रह्या ज्ञानमय जातवर्णादिलेशा ॥ सदानंद सौख्याश्रिता ज्योतिरूपा, अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ सकल करममल क्षय करी, पूरण शुद्ध स्वरूपोजी ॥ अव्याबाध प्रभुतामयी, आतम संपत्तिभूपोजी ॥१॥ उलालो ॥ जेह भूप आतम सहज संपत्ति, शक्ति व्यक्तिपणे करी ॥ स्व द्रव्य क्षेत्र स्व काल भावे, गुण अनंता आदरी ॥ सुस्वभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्धसाधन पर भणी ॥ मुनिराज मानसहंस समवड, नमो सिद्ध महागुणी ॥२॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ समय पएसंतर अणफरसी, चरम तिभाग विशेष ॥ अवगाहन लही जे शिव पहोता, सिद्ध नमो ते अशेष ॥ भ० ॥ सि०

ाना ॥ १ ॥ भविप्राणीने देशना देश काले, सदा अप्रमत्त यथा सूत्र आले ॥ शिर शासनाधारदिग्दंतिकल्पा, जगे ते चिरं जीवजो शुद्धजल्पा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ आचारज मुनिपति गणि, गुणछत्रीशी धामोजी ॥ चिदानंद रस स्वादता, परभावे निःकामोजी ॥ १ ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी ॥ निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साधता व्यापारथी ॥ भविजीव बोधक तत्त्वशोधक, सयल गुणसंपत्ति धरा ॥ संवरसमाधि गतउपाधि, दुविध तपगुण आगरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ पंच आचार जे सूधा पाले, मारग भाखे साचो ॥ ते आचारज नमीए तेहशुं, प्रेम करीने जाचोरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ११ ॥ वर छत्रीश गुणे करी सोहे, युगप्रधान जन मोहे ॥ जग बोहे न रहे खिण कोहे, सूरि नमुं ते जोहेरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १२ ॥ नित्य अप्रमत्त धर्म उवएसे, नहीं विकथा न कषाय ॥ जेहने ते आचारज नमीए, अकलुष अमल अमायरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १३ ॥ जे दीए सारण वारण चोयण, पडिचोयण वली जनने ॥ पटधारी गच्छथंभ आचारज, ते मान्या मुनिमननेरे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १४ ॥ अत्यमीए जिनसूरज केवल, चंदे जे जगदीवो ॥ भुवनपदारथ प्रकटन पटु ते, आचारज चिरं जीवोरे ॥ भविका ॥ सि० ॥ १५ ॥

दक, आत्म परविभजनकरा ॥ भवभीरु साधन धीरशासन, वहन धोरी मुनिवरा ॥ सिद्धांत वायण दान समरथ, नमो पाठक पद-धरा ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

॥ द्वादश अंग सज्झाय करे जे, पारग धारक तास ॥ सूत्र अर्थ विस्तार रसिक ते, नमो उवज्झाय उल्लास रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १६ ॥ अर्थ सूत्रने दानविभागे, आचारज उवज्झाय ॥ भव त्रीजे जे लहे शिवसंपद, नमीए ते सुपसाय रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १७ ॥ मूरख शिष्य निपाइ जे प्रभु, पाहाणने पल्लव आणे ॥ ते उवज्झाय सकल जन पूजित, सूत्र अर्थ सवि जाणे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १८ ॥ राजकुमर सरिखा गणचिंतक, आचारजपद योग ॥ जे उवज्झाय सदा ते नमतां, नावे भवभय शोग रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ १९ ॥ बावनाचंदनरस सम वयणे, अहित ताप सवि टाले ॥ ते उवज्झाय नमीजे जे वली, जिनशासन अजुवाले रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥

॥ तप सज्झाये रत सदा, ध्दादश अंगनो ध्याता रे ॥ उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जगभ्राता रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति चतुर्थ उपाध्यायपदपूजा समाप्त ॥

॥ अथ पंचम मुनिपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ साहूण संसाहिअ संजमाणं ॥
॥ नमो नमो सुद्धदयादमाणं ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ करे सेवना सूरि वायग गणिनी, करुं वर्णना तेहनी शी मुणिनी ॥ समेता सदा पंच समिति त्रिगुप्ता, त्रिगुप्ते नहीं काम-भोगेषु लिप्ता ॥ १ ॥ वली बाह्य अभ्यंतर ग्रंथि टाली, होयेमुक्तिने योग्य चारित्र पाली ॥ शुभाष्टांग योगे रमे चित्त वाली, नमुं साधुने [illegible] निज पाप टाली ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

[illegible] विषय विष वारीने, निःकामी निसंगी जी ॥ भ[illegible] समावना, आतमसाधन रंगी जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे [illegible] रमणे, देह निर्मम निर्मदा ॥ काउस्सग्गमुद्रा धीर [illegible] अभ्यासी सदा ॥ तप तेज दीपे कर्म झीपे, नैव [illegible] ॥ मुनिराज करुणासिंधु त्रिभुवन, बंधु प्रणमुं हित

[illegible] ॥ ढाल ॥ श्रीपालना रासनी ॥

[illegible] संगे, पीडा मन न उतारे ॥ [illegible]
[illegible] नाखी [illegible] ॥ प० ॥ जि० ॥ [illegible] ॥

पंच इंद्रियने जे नित्य झीपे, षट्कायक प्रतिपाल ॥ संयम सत्तर प्रकारे आराधे, वंदु तेह दयाल रे ॥ भ० ॥ सि० ॥२२॥ अढार सहस्स शीलांगना धोरी, अचल आचार चरित्र ॥ मुनि महंत जयणा युत वंदी, कीजे जनम पवित्र रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २३ ॥ नवविध ब्रह्मगुप्ति जे पाले, बारसविह तप शूरा ॥ एहवा मुनि नमीए जो प्रगटे, पूरव पुण्य अंकुरा रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २४ ॥ सोना तणी परे परीक्षा दीसे, दिन दिन चढते वाने ॥ संजम खप करता मुनि नमीए, देश काल अनुमाने रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ २५॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जे नित्य रहे, नवि हरखे नवि शोचे रे ॥ साधु सुधा ते आतमा, शुं मूंडचे शुं लोचे रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति पंचम मुनिपदपूजा समाप्ता ॥ ५ ॥



॥ अथ षष्ठ सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ जिणुत्ततत्ते रुइलखणस्स ॥
॥ नमो नमो निम्मलदंसणस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ विपर्यास हठवासनारूप मिथ्या, टले जे अनादि अच्छे जेम पथ्या ॥ जिनोक्ते होये सहजथी श्रद्धानं, कहीए दर्शनं तेह परमं

॥ ढाल ॥

॥ शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशम जे आवे रे ॥ दर्शन
तेहीज आतमा, शुं होय नाम धरावे रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति षष्ट
सम्यक्त्वदर्शनपदपूजा समाप्ता ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तम सम्यग्ज्ञानपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ अन्नाणसंमोहतमोहरस्स ॥
नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ होवे जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधे, यथावरण नासे विचित्रावबोधे ॥ तेणे जाणीए॥ वस्तु षड् द्रव्य भावा, न हुये वितत्था (वाद) निजेच्छा स्वभावा ॥ १ ॥ होय पंच मत्यादि सुज्ञानभेदे, गुरूपास्तिथी योग्यता तेह वेदे ॥ वली ज्ञेय हेय उपादेयरूपे, लहे चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपे ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ भव्य नमो गुणज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावे जी ॥ परजय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोध भावविलच्छना ॥ मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी,

॥ अथ अष्टम चारित्रपदपूजा प्रारंभः ॥

॥ काव्यं ॥ इंद्रवज्रावृत्तम् ॥

॥ आराहिअखंडीअ सक्किअस्स ॥

॥ णमो णमो संजमवीरिअस्स ॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ वली ज्ञानफल चरण धरीए सुरंगे, निराशंसता द्वाररोध प्रसंगे ॥ भवांभोधिसंतारणे यान तुल्यं, धरुं तेह चारित्र अप्राप्तमूल्यं ॥ १ ॥ होवे जास महिमा थकी रंक राजा, वली द्वादशांगी भणी होय ताजा ॥ वली पापरूपोपि निःपाप थाय, थइ सिद्ध ते कर्मने पार जाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

चारित्रगुण वली वली नमो, तत्त्वरमण जसु मूलो जी ॥ परमणीयपणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलो जी ॥ १ ॥ उलालो ॥ प्रतिकूल आश्रवत्याग संयम, तत्त्वथिरता दममयी ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचई ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्ज्वल, कामकश्मलचूर्णता ॥ २ ॥

॥ पूजा ॥ ढाल श्रीपालना रासनी ॥

॥ देश विरति ने सर्वविरति जे, गृही यतिने अभिराम ॥ ते चारित्र जगत् जयवंतुं, कीजे तास प्रणाम रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३६॥

॥ भुजंगप्रयातवृत्तम् ॥

॥ त्रिकालिकपणे कर्म कषाय टाले, निकाचितपणे बांधीयां तेह बाले ॥ कह्युं तेह तप बाह्य अंतर दुभेदे, क्षमा युक्त निर्हेतु दुर्ध्यान छेदे ॥ २ ॥ होये जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि, अबां-छकपणे कर्म आवरणशुद्धि ॥ तपो तेह तप जे महानंद हेते, होय सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेते ॥ ३ ॥ इस्या नव पद ध्यानने जेह ध्यावे, सदानंद चिद्रूपता तेह पावे ॥ वली ज्ञान विमलादि गुण-रत्नधामा, नमुं ते सदा सिद्धचक्रप्रधाना ॥ ४ ॥

॥ मालिनीवृत्तम् ॥

॥ इम नव पद ध्यावे, पर्म आनंद पावे ॥ नवमे भव शिव जावे, देव नरभव पावे ॥ ज्ञान विमल गुण गावे, सिद्धचक्रप्रभावे ॥ सवि दुरित समावे, विश्व जयकार पावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ उलालानी देशी ॥

॥ इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदेजी ॥ आतमसत्ता एकता, परपरिणति उच्छेदेजी ॥ १ ॥ उलालो ॥ उच्छेदे कर्म अ-नादि संतति, जेह सिद्धपणुं वरे ॥ योगसंगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ॥ अंतरमुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी ॥ निज आत्मसत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

॥ एम नव पद गुणमंडलं, चउ निक्षेप प्रमाणेजी ॥ सात नये

तृण परे जे षट् खंड सुख छंडी, चक्रवर्ती पण वरीयो ॥ ते चारित्र अक्षय सुखकारण, ते में मन मांहे धरीयो रे ॥ भ० ॥ सि० ॥३७॥ हुआ रांकपणे जे आदरी, पूजित इंद नरिंदे ॥ अशरण शरण चरण ते वंदु, पूरयुं ज्ञान आनंदे रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३८ ॥ बार मास पर्याये जेहने, अनुत्तर सुख अतिक्रमीए ॥ शुक्ल शुक्ल अभिजात्य ते उपरे, ते चारित्रने नमीए रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ३९ ॥ चय ते आठ करमनो संचय, रिक्त करे जे तेह ॥ चारित्र नाम निरुत्ते भाख्युं, ते वंदु गुणगेह रे ॥ भ० ॥ सि० ॥ ४० ॥

॥ ढाल ॥

जाणो चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे ॥ [illegible] आतमने नवि भमतो रे ॥ वी० ॥ १ ॥ [illegible] समाप्ता ॥ ८ ॥

अथ नवम तपःपदपूजा प्रारंभः ॥

[illegible] आवृत्तम ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible], श्री-

[illegible] विश्व-

[illegible]

॥ ढाल ॥

॥ इच्छारोधे संवरी, परिणति समतायोगे रे ॥ तप ते एहीज आतमा, वर्त्ते निज गुण भोगे रे ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआगम तणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर होजो, परभावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घट मांहे ऋद्धि दाखी रे ॥ तेम नव पद ऋद्धि जाणजो, आतमराम छे साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव पद मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाणी वाचक जश तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इति नवम तपःपदपूजा समाप्ता ॥ ९ ॥

॥ अथ काव्यं द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं ॥ जिनवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इति काव्यम् ॥ आ काव्य प्रत्येक पुजा दीठ कहेवुं ॥

॥ स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देव विमल कलश नीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥२॥ हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ॥ जिहां लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवधिदेवो ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीमद्गच्छे विजयजीकृता नवपदपूजा समाप्ता ॥

॥ ढाल ॥

॥ इच्छारोधे संवरी, परिणति समतायोगे रे ॥ तप ते एहीज
ातमा, वर्त्ते निज गुण भोगे रे ॥ वी० ॥ १० ॥ आगम नोआ
म तणो, भाव ते जाणो साचो रे ॥ आतमभावे थिर होजो, पर
ावे मत राचो रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ अष्ट सकल समृद्धिनी, घ
ाहे रुद्धि दाखी रे ॥ तेम नव पद रुद्धि जाणजो, आतमराय
साखी रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ योग असंख्य छे जिन कह्या, नव प
मुख्य ते जाणो रे ॥ एह तणे अवलंबने, आतमध्यान प्रमाणो रे
वी० ॥ १३ ॥ ढाल बारमी एहवी, चोथे खंडे पूरी रे ॥ वाच
वाचक जश तणी, कोइ नये न अधूरी रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ इ
नवम तपःपदपूजा समाप्ता ॥ ९ ॥

॥ अथ काव्यं द्रुतविलंबितवृत्तम् ॥

॥ विमलकेवलभासनभास्करं, जगति जंतुमहोदयकारणं ॥ जि
नवरं बहुमानजलौघतः, शुचिमनाः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ इ
काव्यम् ॥ आ काव्य प्रत्येक पुजा दीठ कहेवुं ॥

॥ स्नात्र करतां जगद्गुरु शरीरे, सकल देव विमल कल
नीरे ॥ आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुध ग्रंथे प्रसिद्धा ॥
हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी एम आशीष भावे ॥ जि
लगे सुरगिरि जंबूदीवो, अम तणा नाथ देवधिदेवो ॥ २ ॥

॥ इति श्रीमद्यशो विजयजीकृता नवपदपूजा समाप्ता ॥

थ श्रीज्ञान विमलसूरि कृत [illegible]

देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि लखीये छीये ॥

प्रथम प्रतिमा चार मांडीये तथा चौमुख [illegible]
ि, तिहां प्रथम टीकां दश करवां, फूलना हार दश, [illegible]
वार उखेववो, दश दीपकनो दीवो करवो ॥ दश वार [illegible]
वो, दशवार चामर विंझवा, दश मागधना नामना करवा, [illegible]
जातिनां फल मले ते सर्व जातिनां प्रत्येके दश दश मुकवां, [illegible]
प्रमुख सर्व दश दश मुकवां, नैवेद्य पण [illegible]
वीपाक, द्राख, खारेक, सिंगोडां, निवजां, पीस्तां, [illegible]
। जे जातिना मले, ते सर्व जातिना प्रत्येके दश दश थालां ढोकवां.
वीयाणुं गोधूम सेर त्रण, लीला नाळियेर चार मुकवां; इत्यादिक
धी मेलवीने देव वांदवा पछी श्रीसिद्धाचलजीनां एकवीश नाम
ईये ते नाम लखीये छीये,

१ श्री शत्रुंजय.	८ श्रीपद.	१५ श्रीमहापद्म.
२ श्री पुंडरिक.	९ श्री पर्वतेंद्र.	१६ श्रीपृथ्वी पीठ.
३ श्रीसिद्धक्षेत्र.	१० श्री महातीर्थ.	१७ श्री सुभद्र.
४श्रीविमलाचल.	११ श्री शाश्वत पर्वत.	१८ श्री कैलाश.
५ श्री सुरगिरि.	१२ श्री दृढशक्ति.	१९ श्री पातालमूल.
६ श्री महागिरि.	१३ श्री मुक्ति निलय.	२० श्री अकर्मक.
७ श्री पुण्यराशि.	१४ श्रीपुष्पदंत.	२१ श्री सर्वकामद.

ए प्रमाणे एकवीश नाम लइए.

॥ अथ थोय जोडा वे ॥

श्री शत्रुंजय मंडण, रिसह जिणेसर देव ॥ सुर नर विद्याधर, सारे जेहनी सेव ॥ सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर श्रृंगार ॥ श्री नाभि नरेसर, मरुदेवीनो मल्हार ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेम विना सवि, समवसरचा सुखकार ॥ गिरि कंडणे आवी, पहोता गढ गिरनार ॥ चैत्री पुनम दिने, ते वंदू जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे, अंतगड सुत्र मझार ॥ सिद्धाचल सीद्धा, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिण भेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्केसरी, शासननी रखवाली ॥ ए तीरथ केरी, सान्निध्य करे संभाली ॥ गिरुओ जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमलसूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

त्रेशठ लख पूरव राज करी, व्रत लीपे संयम अति आणंद धरी ॥ वरस सहसे केवल लच्छी वरी, एक लख पुर्वे शिवरमणी वरी ॥१॥ चोवीशे पहिला रुषभ थया, अनुक्रमे त्रेविश जिणंद भया ॥ चैत्री पुनम दिन तेह नमो, जिम दुर्गती दुःखडां दूर गमो ॥ २ ॥ ए पर्वेत एकतालीश नाम कयां, आगमे गुरु वयणे तेह लह्यां ॥ अतिशय महिमा इम आणीए, ते निशि दिन मनमां आणीए ॥३॥

॥ अथ प्रथम त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदीश्वर अरिहंत देव, अविनाशी अमल ॥ अक्षय सरूपीने अनुप, अतिशय गुण विमल ॥ मंगल कमला केली वास, वासव नित्य पूजित ॥ तुझ सेवा सहकार वर, करतां फल कुंजित ॥ राजित युग आदि जिणे ए, सकल कला विज्ञान ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि गुण तणो, अनुपम निधि भगवान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

वंश इक्ष्वाग सोहामणो, सोवन वन काय ॥ नाभिराय कुल [illegible] ॥ भरतादिक शत पुत्रनो, जे जनक सोहाय ॥ [illegible] सुनंदा नम कंत कहाय ॥ ब्राह्मी सुंदरी जेहनी ए, जनक वर गुण खाण ॥ ज्ञानविमल गुण जेहना संभारी सुवि- [illegible]

[illegible] तृतीय चैत्यवंदन ॥

[illegible] जेहनो जग गाजे ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ठेकाणे वीश वीश वस्तु मूकवी. अखीयाणुं तेज मूकवुं, अने संतिकरंने स्थानके नमिऊण कहेवुं ॥

॥ अथ बीजा जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

नाभि नरेसर वंश मलय, गिरिचंदन सोहे ॥ जस परिमलशुं वासियो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ अपछर रंभा उर्वशी, जेहना अवदात ॥ गाय अह निश हर्षशुं, मरुदेवी जात ॥ निरुपाधिक जस तेजशुं ए, सम मय सुखनो गेह ॥ ज्ञानविमल प्रभुताघणी, अखय अनंती जेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजुं चैत्यवंदन ॥

जिम चैत्रीपूनम तणो अधिको विधु दीपे ॥ ग्रह गण तारादिक तणा, परम तेजने जीपे ॥ तिम लौकिकना देव ते, तुम आगे हीणा ॥ लोकोत्तर अति शय गुणे, रहे सुर नर लीणा ॥ निवृत्ति नगरे जायत्रा ए, एहिज अविचल साथ ॥ ज्ञान विमल सूरि एम कहे, भव भव ए मुज नाथ ॥ २ ॥

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

अजर अमर अकलंक अरुज, निरुज अविनाशी ॥ सिद्ध सरूपी शंकरो, संसार उदासी ॥ सुख संसारे भोगवी, नहीं भोग विलासी ॥ जीती धर्म कपायने, जे थयो जितकाशी ॥ दासी

आगमना गमता परे जाणो, सवि विपनो करे नाश जी ॥ पाप ताप विप दूरे करवा, निशि दिन जेह उवासे जी ॥ ममता कंचूकी कीजे अळगी, निर्विषता आदरीये जी ॥ इणी परे सहजथकी भव तरीये, म शिवसुंदरी वरीए जी ॥ ३ ॥ कवड जक्ष प्रत्यक्ष थइने, जेहना ता पूरे जी ॥ दोहग दुर्गति दुर्जननो डर, संकट सघलां चूरे जी दिन दिन दोलत दीपे अधिकी, ज्ञानविमल गुण नूर जी ॥ जीत गां निशान वजावो, बोधि बीज भरपूर जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ नायकानी देशी ॥

एक दिन पुंडरिक गणधरु रे लाल, पूछया श्री आदि जिणंद ॥ सुखकारी रे ॥ कहीयें भव जल उतरी रे लाल पामीश परमानंद ॥ भव वारी रे ॥ ए० ॥ १ ॥ कहे जिन इण गिरि पामशो रे लाल, ज्ञान अने निर्वाण ॥ जयकारी रे ॥ तीरथ महिमा वाधशे रे लाल, अधिक अधिक मंडाण ॥ निर्धारी रे ॥ ए० ॥ २ ॥ एम निसुणी तिहां आवीया रे लाल, घातिकर्म करयां दूर ॥ तम वारी रे ॥ पंच कोडी मुनिये परिवरया रे लाल, हुवा सिद्धि हजूर॥ भव वारी रे ॥ ए० ॥३॥ चैत्री पूनम दिन कीजीये रे लाल, पूजा विविध प्रकार ॥ दिल धारी रे ॥ फल प्रदक्षिणा काउस्सग्गा रे लाल, लोगस्स थुइ नमुक्कार ॥ नर नारी रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ दश वीश त्रीश चालीश भला रे लाल, पचास पुष्पमाल ॥ अतिसारी

आशी अवगणी ए, समीचीने सर्वांग ॥ नय कहे तस ध्याने रहो, जिम होय निर्मल अंग ॥ ३ ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

श्री शत्रुंजय मंडण रिसह जिणंद, पाप तणो उन्मूले कंद ॥ मरुदेवी मातानो नंद, ते वंदू मन धरी आणंद ॥१॥ त्रण चोवीशी बहोत्तेर जिना, भाव धरी वंदू एक मना ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, तिम अनंत जिनवर धरो ध्यान ॥ २ ॥ जेहमां पंच प्रकार व्यवहार, नय प्रमाण तणा विस्तार ॥ तेहना सुणता अर्थ विचार, जिम होय प्राणी अल्प संसार ॥ ३ ॥ श्री जिनशासन आणा धरे, चमत्कार पणो विस्तरे ॥ श्री ज्ञानविमलसूरि सान्निध्य करे, शासनदेवी संकट हरे ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

चैत्री पूनमने दिने, जे इणे गिरि आवे ॥ आठ सत्तर वहु भेदशुं, जे भक्ति रचावे ॥ आदीश्वर अरिहंतनी, तस सघलां कर्म ॥ दूर टले संपद मले, भांजे भव भर्म ॥ इह भव परभव भवे भवे ए, रूद्धि वृद्धि कल्याण ॥ ज्ञानविमल गुण मणि तणो, त्रिभुवन तिलक समान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा चे प्रारंभः ॥

चैत्री पूनम दिन, शत्रुंजय गिरि अहिठाण ॥ पुंडरिक वर गणधर, तिहां पाम्या निर्वाण ॥ आदीश्वर केरा, शिष्य प्रथम जयकार ॥ केवल कमला वर, नाभि नारिंद मल्हार ॥ १ ॥ चार जंबूद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अड धातकीखंडे, सुर नर सारे सेव ॥ अड पुष्कर अर्धे, इणिपरे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण सम, भवजल निधिने तारे ॥ क्रोधादिक महोटा, मत्स्य तणा भय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशासन सान्निध्य, कारी विघन विदारे ॥ समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरि सेवो, जेम पामो भव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

अष्टापद गिरनारे ॥ भ० ॥ अ० ॥ ६ ॥ कोटी गणुं फल श्री श-त्रुंजे भेटे, जेम रे अनादिनां दुरित उमेटे ॥ भ० ॥ दु० ॥ ७ ॥ भाव अनंते अनंत फल पावे, ज्ञानविमलसूरि एम गुण गावे ॥ भ० ॥ ॥ ए० ॥ ८ ॥ इति स्तवन संपूर्ण ॥ अहीं जयतिहुअण कहेवुं. पछी त्रीश नवकार गणवा. पछी श्री शत्रुंजयायनमः एवं एकवीश नाम सिद्धगिरिनां नमस्कार पूर्वक गणवा. पछी भंडार ढोववो एटले रुपा नाणुं मूकवुं, पछी त्रीश खमासमण देवां, पछी त्रीश प्रदक्षिणा देवी, एटले आ जोडानो विधि संपूर्ण थयो.

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

अहीयां पूर्वोक्त वस्तु सर्व चालीश चालीश ढोववी, तेमज अ-क्षीयाणुं पण मूकवुं अने बीजो पण सर्व विधि करवो.

॥ अथ त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, पुंडरिक गिरि साचो ॥ विमलाचलने तीर्थराज, जस महिमा जाचो ॥ मुक्ति निलय शतकूट नाम, पुष्पदंत भणी जे ॥ महापद्मने सहस्रपत्र, गिरिराज कहीजे ॥ इत्यादिक बहु भांति शुं ए, नाम जपो निरधार ॥ धीरविमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ १ ॥

अष्टापद गिरनारे ॥ भ० ॥ अ० ॥ ६ ॥ कोडी गणुं फल श्री श-त्रुंजे भेटे, जेम रे अनादिनां दुरित उमेटे ॥ भ० ॥ दु० ॥ ७ ॥ भाव अनंते अनंत फल पावे, ज्ञानविमलसूरि एमगुण गावे ॥ भ० ॥ ॥ ए० ॥ ८ ॥ इति स्तवन संपूर्ण ॥ अहीं जयतिहुअण कहेवुं. पछी त्रीश नवकार गणवा. पछी श्री शत्रुंजयायनमः एवं एकत्रीश नाम सिद्धगिरिनां नमस्कार पूर्वक गणवा. पछी भंडार ढोववो एटले रुपा नाणुं मूकवुं, पछी त्रीश खमासमण देवां, पछी त्रीश प्रदक्षिणा देवी, एटले आ जोडानो विधि संपूर्ण थयो.

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

अहीयां पूर्वोक्त वस्तु सर्व चालीश चालीश ढोववी, तेमज अ-खीयाणुं पण मूकवुं अने बीजो पण सर्व विधि करवो.

॥ अथ त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, पुंडरिक गिरि साचो ॥ विमलाचलने तीर्थराज, जस महिमा जाचो ॥ मुक्ति निलय शतकूट नाम, पुष्पदंत भणी जे ॥ महापद्मने सहस्रपत्र, गिरिराज कहीजे ॥ इत्यादिक बहु भांति शुं ए, नाम जपो निरधार ॥ धीरविमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ १ ॥

देह सदा पावन करे, दुरित ताप रजोमल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनशासन भासन कारिका, सुरसुरी जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रभुता दिये दंपती, दुरित दुष्ट तणा भय जीपती ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्लोक ॥ मालिनी वृत्तं ॥

सवि मलि करी आवो, भावना भव्य भावो ॥ विमलगिरि वधावो, मोतीयां थाल लावो ॥ जो होय शिव जावो, चित्त तो वात भावो ॥ न होय दुशमन दावो, आदि पूजा रचावो ॥ १ ॥ शुभ केशर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पहेरी सित पटोली, वासीये गंध धूली ॥ भरी पुष्कर नोली, टालिये दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजिये भाव भोली ॥ २ ॥ शुभ अंग अग्यार, तेम उपांग बार ॥ वली मूलसूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन उदार, छेद पट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, भाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जयनंदा, जैनदृष्टि सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरिंदा, साम्य मा कंद कंदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्यानथी नित्य भद्रा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥

ए गिरुओ गिरि राजीओ, प्रणमीजे भावे ॥ भव भव संचित आपदां, पातक दां जावे ॥ १ ॥ वज्रलेप सम जे होवे, ते पण तम

दूर ॥ एहनुं दर्शन कीजीए, धरी भक्ति पडूरे ॥ २ ॥ चंद्रशेखर राजा थयो, निज भगिनी लुब्धो ॥ ते पण ए गिरि सेवतां, क्षण माहे सिध्यो ॥ ३ ॥ शुकराजा जय पामीयो, एहने सुपसाये ॥ गौहत्यादिक पाप जे, ते [illegible] पलाये ॥ ४ ॥ अगम अपेय अभक्ष्य जे, [illegible] जेणे प्राणी ॥ ते निर्मल इणगिरिये थया, ए जिनवर वाणी [illegible] ॥ [illegible] सर्प प्रमुखा पशु, ते पण शिव पाम्या ॥ ए [illegible] थकी, सवि पातक वाम्या ॥ ६ ॥ चैत्री पूनम वंदतां, [illegible] ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, होय गुणस गिरि ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥ अहीं भक्तामर अथवा कल्याणमंदिर कहेवुं, [illegible] गणवा, श्री सिद्धाचलजीनां एकवीस नाम [illegible] इत्यादि कहेवुं, पाछीस लोगस्सना [illegible] इति देववंदननो चोथो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोडो ॥

[illegible] सुगम [illegible] [illegible] तो ही

[illegible] प्रारंभ ॥

[illegible]

आरती उतारीश ॥ मंगल दीपक ज्योति धुति, करी दुरित निवारीश ॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो ए, गणीश सफल अवतार ॥ नय कहे आदीश्वर नमो, जिम पामो जयकार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

तुज मूर्तिने निरखवा, मुज नयणां तरसे ॥ तुम गुण गणने बोलवा, रसना मुज हरखे ॥ काया अति आणंद मुज, तुम युगपद फरसे ॥ तो सेवक तारथा विना, कहो किम हवे सरशे ॥ एम जाणीने साहेवा ए, नेक नजरें मोहि जोय ॥ ज्ञान विमल प्रभु सुनजरथी, ते शुं जे नवि होय ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्य वंदन ॥

मादल ताल कंसाल सार, भुंगलने भेरी ॥ ढोल ददामा दडवडी, सरणाइ नफेरी ॥ श्री मंडल वीणा रवाप, सारंगी सारी ॥ तंबुरा कठ ताल शंख, जल्लरी झणकारी ॥ वाजित्र नव नव छंदशुं ए, गाओ गुणी जन गीत ॥ ज्ञानविमल प्रभुता लहो, जिम होये जगे जस रीत ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय जोडा वे लीख्यते ॥

जिहां उगण्योतेर कोडाकोडी, तेम पंचाशी लख वली जोडी, चुम्मालीन सहस्स कोडी ॥ समवसरया जिहां एती वार, पूर्व

खीलण मंत, भांजी भवभय भावठ भ्रांत, टाले दुःख दुरंत ॥ सुख संपत्ति होये जे समरंत, ध्याये अहनिश सघला संत, गाये गुण महंत ॥ शिवसुंदरी वश करवा तंत, पाप ताप पीलण ए जंत, सुणीए ते सिद्धांत ॥ आणी मोटी मननी खांत, भवियण ध्यावो एकणचित्त, रान वेला उलहुंत ॥३॥ आदि जिनेश्वर पद अनुसरती, चतुरंगुल उंची रहे धरती, दुरित उपद्रव हरती ॥ सरस सुधारस वयण झरंती, ज्ञानविमल गिरि सान्निध्य करंती, दुशमन दुष्ट दलंती ॥ दाडिम पक्ककली समदंती, ज्योति गुण इहां राजी पंती, समकित बीज वपंती ॥ चक्केसरी सुरसुंदरी हुंती, चैत्रीपूनम दिने आवंती, जय जयकार भणंती ॥४॥ इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

तीरथ वारु ए तीरथ वारु, सांभलजो सो तारु रे ॥ भवजल निधि तरवा भविजनने, प्रवहण परे ए तारु रे ॥ए० ॥१॥ ए तीरथनो महिमा मोटो, नवि माने ते कारु रे ॥ पार न पामे कहेतां कोइ, पण कहिये मति सारु रे ॥ ए० ॥ २ ॥ साधु अनंता इहां कणे सीधा, अंत कर्मना कीधा रे ॥ अनुभव अमृत रस जिणें पीधा, अभयदान जग दीधां रे ॥ ए० ॥३॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, द्राविड वारिखिल्ल जाणो रे ॥ यावचा शुको सेलग पंथग, पांडव पांच वखाणो रे ॥ ए० ॥४॥ राम मुनिने नारद मुनिवर, शांब प्रद्युम्न कुमार रे ॥

विनयथी अने बहु मानपूर्वक श्री रुषभदेव स्वामीने इक्षुरस (एटले सेरडीनो रस) नुं पारणुं कराव्युं तेना प्रभावथी पंच दीव्य प्रगट थया आकाशमां देवदुंदुभी वाजींत्र वागवा मांड्या देवताओ. अहो दान अहो दान एम आश्चर्यपूर्वक बोलवा लाग्या अने तेज दानना प्रतापथी श्री श्रेयांस कुमार अक्षयसुख एटले मोक्ष सुख पाम्या माटे आ दिवस अति उत्तम छे. ते दिवसे बार मासी तप करनाराओ श्री सीद्धाचलजी तीर्थ उपर जइ जात्रा करीने नीचे आवी. सुपात्रे दान दइ वरसी तपनुं पारणुं करे छे माटे हे भव्य जीवो तमारे पण अक्षय त्रीजने दिवसे सुपात्रने दान- देवुं शील पालवुं. तपस्या करवी भावना भाववी पुजा करवी स्नात्र महोत्सव करवो ॥ इति ॥

अषाड चोमासुं.

वर्षमां त्रण चोमासी आवे छे तेमां कार्तीक चौमासी फागण चोमासी अने छेल्लुं. अषाड चौमासु के जे वर्षाऋतु छे बार मासनी अंदर धर्म करणी करवानो विशेष प्रचार अषाड चोमासामां बने छे. तेना अनेक कारणो छे. तेमांथी कींचीत मात्र अत्रे जणाववामां आवे छे. भाग्यशाळी एवा चतुर्विध संघमां मुख्य साधु, साध्वी, श्रावक अने श्रावीका आ चार प्रकार छे तेमां प्रथमना जे साधु साध्वी महापुरुषो कार्तीक चोमासुं उतरे गामानुं गाम विहार कर्या करे छे पण एक स्थाने

विश्वास विना कोइ पण जीव कोइ कार्यमां प्रवर्ततो नथी. तो आ जीव अनादि काळथी मिथ्यात्व (अज्ञान दशा)ना प्रतापथी चारगति अने चोराशी लाख योनीये करीने महाभयंकर एवा संसार रुपी समुद्रमां भटकया करे छे तेनाथी तरवाने अने सर्वदुःखथी मुक्त थवाने माटे शरणभुत एक धर्मज छे तो तेनुं सेवन करवा माटे प्रथम श्रद्धा होवी जोईए. तो ते श्रद्धा मेळववा माटे प्रथम ज्ञाननी जरूर छे. ज्ञान विना सत् असत् पदार्थनी खबर पडे नही, माटे आ रत्नुमां जेम बने तेम बीजा संसारी कार्योमांथी मुक्त थइ ज्ञान मेळववा तरफ पुरतो प्रयास करवो जोईए. तो ते ज्ञान ज्ञानी पांसेथी मली शके माटे ज्ञान अने ज्ञानीनुं बहु मान पूर्वक व्याख्यानादि सांभलवाथी अवश्य धर्मनी करणीनी अने देव गुरू अने धर्मनी ओलखाण थाय छे. अने-शुद्ध-देव-गुरू अने धर्मनीं ओलखाण पूर्वक जे वर्तन तेनुं ज नाम श्रद्धा. अने ते श्रद्धाज रूप समकित कहेवाय छे ते:समकित सर्व कर्मथी मुकावीने मोक्ष फल मेलववानुं बीज छे माटे दरेक भव्य जीवो ए शुद्ध देव-गुरू अने धर्मनुं ओलखाण गुरु द्वाराए जरूर समजी लेवुं अने अनादि कालथी जे नहीं प्राप्त थयेलुं एवुं जे सम्यकत्व ते समजीने ग्रहण करवुं.

हवे-शुद्ध-देव-गुरू अने धर्मनुं कींचीत वर्णन

१ जगतमां अनेक देव देवोओ तरीके नामथी ओलखाय छे. परंतु. शुद्ध सत्य देव कोने कहेवा के जेओ-राग द्वेष

मरता जीवने छोडाववो ते अभयदान, बीजुं श्री संघने चार प्रकारनो अहार आपवो ते सुपात्रदान, त्रीजुं सर्व जीवनी उपर दयाभावराखवो तेने अनुं कंपादान कहीए, चोथुं याचक प्रमुखने दान आपवुं ते कीर्तिदान कहीए, पांचमुं कुंटुंब विगेरेने आपवुं ते उचितदान कहीए. ए पांचदान मांहेला प्रथमना बे दान थकी मोक्षनी प्राप्ति थाय अने पाछलना त्रण दान थकी इच्छितभोग वस्तुनी प्राप्ति थाय माटे सुखनी इच्छावाला जीवोए अवश्यदान देवुं जोइए तेमां पण जीव दयानी बाबतमां आठ मास करतां आ अषाड चोमासामां बहु ज यत्ना राखवानी जरुर छे. कारण के वरसादादिकारणे करी त्रसादिक धणा जीवोनी उत्पत्ति थाय छे. माटे श्रावकोए पोताना रहेवा आदिकना स्थानकोए दस ठेकाणेतो चंदरवा बांधवा जोइए. घरमां अथवा आंगणामां के रहेवाना स्थानमां वासणादि वापरवानी वस्तुओमां लील फुग विगेरेना थाय तेने माटे प्रथमथीज चुना आदिकनो उपयोग राखवो, बत्रीश प्रकारना अनंतकाय अने बावीस प्रकारना अभक्ष पदार्थो तो हंमेशने माटेजत्यागनहोय परंतु केटलाक भक्ष पदार्थो पण रुतुना फेरफारे करी अभक्ष थाय छे जेमके आद्रा नक्षत्र पछी केरी त्याग थाय छे फाल्गुण मास पछी भाजी पाले त्याग थाय छे तेमन चोमासामां पण लील फुलादिक अने त्रसादिक जीवोनी विशेष उत्पत्ति थवाथी. मेवो-फोलेले अभक्ष थइ जाय छे. चारोली पस्ता

वदाम सोपारी नाळीयेर विगेरे तेज दिवसना भागेला तेज दि-वसे खपे. बीजे दिवसे [illegible] अभक्ष्य गणाय छे इत्यादि गुरुगम समजीने उपयोग राखी जयणा पूर्वक वापरवा. वळी चोमासामां पाणी [illegible] नीचे प्रमाणे.

पाणीनो काळ [illegible] वईनो जाणवो-मुखवईनो [illegible] विगेरे पण हमेशां [illegible] जेम-[illegible]

हवे आ प्रमाणे चोमासा [illegible] कालना [illegible] देव मवक [illegible] -शारिर चोमासाना विपदा [illegible] देव वंदन करवुं [illegible] नाळ वाणी [illegible] वापरवा [illegible]

पर्युषणा महापर्व माहात्म्य.

[illegible]

शास्वता चैत्योमां महोटो महोत्सव करे छे. तो मनुष्यो करे तेमां तो आश्चर्यज शुं.

महा अतीषय पुन्यनो उदय होय तेज भाग्यशाळीने आ पर्व उजववानुं प्राप्त थाय छे. कारण के सर्व पर्वोमां आ पर्व श्रेष्ट छे.

आ पर्वनी शरूआत श्रावण वद १२ थी भादरवा सुद ४ सुधी एटले आठ दिवसनुं आ महापर्व छे. आ पर्व सर्व लोकोत्तर पर्वमां पण श्रेष्ट पर्व छे. जेना आराधनथी पापपंक धोवाइ जइ पुन्यनी श्रेणीओ प्रगट थाय छे. माटे भव्य जीवो ए अवश्य आ पर्वनुं आराधन करवुं केवी रीते करवुं तथा ते आठ दीवसोमां शुं शुं करवा योग्य छे ते अहीं किंचित जणावत्रामां आवे छे.

आ पर्व आवे छते सज्जनोए आरंभसमारंभ त्याग करी मन वचन अने कायाए करी ब्रह्मचर्य पालवुं जोइए–बे वखतना प्रतिक्रमण करवा जोईए चैत्य परिपाटी एटले गाममां रहेला जैन मंदीरोमां दर्शन करवुं तथा गुरुवंदन करवुं जोइए, सामायिक पोसह आदि शक्ति गोपव्या वगर धर्मकरणी करवी जोईए, यथा शक्ति तप करवो जोइए घणा भाग्यशाळीओ नो छट्ट तथा अट्ठम तप छोडता ज नथी.

चौदश अने अमावास्यानो छट्ट करे छे अने बीज त्रीज अने चोथनो अट्ठम तप करे छे वळी केटलाक भाग्यशाळीओ

आदि मेळव्या तेमज स्वामी भाइनी भक्ति विशे उदाइ राजा आदिक महा पुरुषोए आ पर्वनुं आराधन करवाथी केवा उत्तम प्रकारना लाभो मेळव्या विगेरे.

अधिकार आवे छे. अमावास्याथी सवारने सांज बे वखत कल्प सूत्र वंचाय छे तेना आठ वाख्यान अमावास्या–पडवो–बीजने त्रीज सुधीना आठ व्याख्यान अने भादरवा सुद ४ बारसा वंचाय छे. ए नवमुं वाख्यान तेमां पहेलामां धर्म सारथी पदनो अधिकार बीजामां चार सुपननो, त्रीजामां बाकीना सुपनो तथा तेना फल विगेरेनो अधिकार, चोथामां वीर भगवाननो जन्माधिकार, पांचमामां दिक्षा अधिकार, छठ्ठामां मोक्षाधिकार, सातमामां त्रेवीस जीननो अधिकार, आठमामां स्थिरावली एटले आचार्यो पट्ट परंपरा थया अने ते केवा प्रभाविक हता ते संबंधी अधिकार आवे छे नवमुं वाख्यान बारसा सूत्र पुरुं थयुं. तेज सांजना संवच्छरी प्रतिक्रमण करी सकल जीवो साथे खमत खामणा करवामां आवे छे. आ संबंधी घणो ज अधिकार छे. परंतुअहीं तो संक्षेपथी सुचन मात्र जाणवा लखेल छे. विशेप जाणवानी इच्छावालाए ग्रंथान्तरथी जाणी लेवुं.

अथ श्री पजुसण पर्वनुं स्तवन.

आंखडीएरे मे आज शेत्रुंजो दीठोरे. ए देशी.

सुणजो साजन सं...

तमे पुन्य करो पुन्यवंत भविक मन भाव्यां रे ॥
वीर जीणेसर अति अलवेसर ॥
वहाला मारा ॥ परमेश्वर एम बोले रे ॥
पर्व मांहे पजुसण मोहटां अवर न आवे तोले रे ॥
पजु० ॥ तुमे० ॥ भ० ॥ १

चौ पग माहे जेम केसरी मोटो ॥वा०॥ खगमां गरुड कहीएरे
नदी मांहे जेम गंगा मोटी, नगमां मेरु लहीएरे ॥ पजु० ॥ २
भुपतिमां भरतेसर भाख्यो ॥ वा० ॥ देव मांहे सुरेंद्र रे;
तीरथमां शेत्रुंजो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चंद्र रे ॥ पजु० ॥ ३
[illegible] दीवाली ने होली ॥ वा० ॥ अखात्रीज दीवासो रे ॥
बलेव सघुर पहुला छे पोता पण, ए मुक्तिनो वासो रे ॥पजु०॥४
ते मांहे समर पजारो ॥ वा० ॥ महाई महोत्सव कीजे रे ॥
[illegible] नर अविराइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे ॥ पजु० ॥ ५
[illegible] मेरी नफेरी ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने जगावो रे ॥
[illegible] करीने, गोरीनी टोली मली आवे रे ॥ पजु० ॥ ६
[illegible] रसाले ॥ वा० ॥ कल्पसूत्रने पूजो ॥
[illegible] श्रवणे, पाप मेवासी धुजे रे ॥ पजु० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ वा० ॥ [illegible]
[illegible]

तपनुं स्तवन.



तप पदने पुजि जे हो प्राणी ॥ तप पदने पुजि जे, सर्व मंगळ मांही पेहेलुं मंगळ कर्म निकाचित टाले ॥ खीमा सहित जे आहार निरीहता, आतमऋद्धि निहाळे ॥ हो प्राणी० ॥ १ ॥ ते भव मुगति जांणे जिनवर, श्रण चउज्ञाने नियमा ॥ तोही तप आचरणा न मुके, अनंत गुणो तप महिमा ॥ हो प्राणी० ॥ २ ॥ पीठ अने महा पीठ मुनिसर, पुरवभव मल्लि जिननो ॥ सावत्री लखमणा तप नवि फळीओ, दंभ गयो नवि मननो॥ हो प्राणी० ॥३॥ इग्यार लाखने ऐंसीहजार, पांचसें पांच दीन उणा ॥ नंदन ऋषिए मासखमण करी कीधां काम संपुन्ना ॥ हो प्राणी० ॥ ४ ॥ तप तपीया गुण रत्न-संवत्सर, खंधक खीमाना दरिया ॥ चउद सहस साधुमां अधिका, धन्नो तप गुण भरिया ॥ हो प्रा० ॥ ५ ॥ खटभेद बाहिर तपना प्रकाश्या, अंतर तप खटभेद॥ बार भेद तप तपता निर्मळ, पुगे अनेक उमेद ॥ हो प्राणी० ॥ ६ ॥ कनक: केतुए तपने आराधी, साध्यो आतमकाज॥ तीर्थंकर पद अनुभव उत्तम, सौभाग्य लक्ष्मी महाराज॥ हो प्राणी० ॥ ७ ॥

महावीर स्वामीनुं पारणुं.

माता त्रिसलाए पुत्र रत्न जाइओ, चोसठ इंद्रनां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञाने जोइ धार्यो श्री जिनवीरने, आवे क्षत्रिय कुंड

जडित मरकत दीसे मणीमां लाल ॥ त्रिसलाये जुगते आंजी अणी-
याली वे३ आंखडी, सुंदर कस्तुरीनुं टपकुं कीधुं गाल ॥ माता०
॥ १० ॥ कंचन शोळे जातनां रत्ने जडीयुं पाल्णुं, झुलावती वेळा
थाये घुघरनो घमकार, त्रिसला विविध वचने हरखे गाय हालरुं
खेंचे फुमति आलो कंचनदोरी सार ॥ माता० ११ ॥ मारो लाड-
कडो सरखा संघे रमवा जसे, मनोहर सुखलडी हुं आपीश ऐहने
हाथ॥ भोजन वेळा रमझम रमझम करतो आवशे, हुंतो धाइने भीडा-
वीश हृदयासाथ ॥ माता० १२ ॥ हंस कारंडव कोकिल पोपट
पारेवडां, म.दो बपैयाने सारस चकोर ॥ मेना मोर मेल्या रमकडां
रमवा तणा, घमघम घुघरा बजावे त्रीसला कीशोर ॥माता०॥ १३॥
मारो वीर कुमार निशाळे भणवा जायशे, साथे सज्जन कुटुंब परि-
वार ॥ हाथी रथ घोडा पालाये भलुं शोभतुं, करी निशाळ गरणुं
अति मनोहर ॥ माता० ॥ १४ ॥ मारा वीर समाणी कन्या सारी
लावशुं, मारा कुंवरने परणावीश मोठे घेर, मारो लाडकडो वरराजा
घोडे बेसशे, मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥
१५ ॥ माता त्रीसला गावे वीर कुमरनुं हालरु, मारो नंदन जीवजो
कोटी वरस ॥ एतो राज राजेसर थाशे भलो दीपतो, मारा मनना
मनोरथ पुरशे जगीश ॥ माता० ॥ १६ ॥ धनधन क्षत्रीकुंड गाम
मनोहरु, जिहां वीर कुंवरनो जन्म गवाय ॥ राजा सिद्धारथना
कुलमांहे दीनमणी, धनधन त्रीसला राणी जेहनी मात ॥ माता०
१७ ॥ एम सहीयर टोळी भेळी गावे हाल्रु, थाशे मनना मनोरथ

रणजग घंटा वाजतां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे दीठो. अग्निशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लइ राणीजी जाग्यां, राय समोवड पोहोतलां ए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी मेंतो सुहणलां लाधां, पाछली रात रलीयामणी ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहो रे पंडित फल एहनुं ए ॥ ६ ॥ अम कुल मंडण तुम कुलदीवो, धनरे महावीर स्वामी अवतरया ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तवनं ॥

॥ विमलांचल बेगें वधावो ॥ ए देशी ॥

॥ चउमासी पारणुं आवे, करि वीनति निज घर जावे ॥ मिया पुत्रने वात जणावे, पटकूल जरी पथरावे रे ॥ महावीर प्रभु घरें आवे, जीरण शेठजी भावना भावे रे ॥ महा ॥ १ ॥ ए आंकणी उभी शेरीयें जल छंटकावे, जाई केतकी फूल बिछावे ॥ निजघर तोरण बंधावे, मेवा मिठाइ थाल भरावे रे ॥ महा० ॥ २ ॥ अरिहाने दानज दीजें, देतां जे देखीने रीजें ॥ पटमासी रोग हरीजें सीजे दायक भव त्रीजेरे ॥ महा० ॥ ३ ॥ जिनवरनी सनमुख जाउं मुझ मंदिरीयें पधरावुं ॥ पारणुं भली भांते करावुं, युगतें जिनपूजा रचावुं रे ॥ महा० ॥ ४ ॥ पछी प्रभुने वोलावा जइशुं, कर जोडीने सनमुख रहिशुं ॥ नमी वंदीने पावन थइशुं. विरति अति रंगें वहीशुं रे ॥ महा० ॥ ५ ॥ दया दान क्षमा शील धरशुं, उपदेश सज्जनने करशुं ॥ सत्यज्ञानदिशा अनुसरशुं, अनुकंपा लक्षण वरशुं रे ॥

चोवीस जिनेश्वरना छंद.

॥ दुहा. ॥

आर्या ब्रह्मसुता गिर्वाणी । सुमति विमल आपो ब्रह्माणी । कमल कमंडल पुस्तक पाणी । हुं प्रणमुं जोडी जुग पाणी ॥ १ ॥ चोवीसे जिनवर तणा । छंद रचुं चोसाल । भणतां शिवसुख संपजे । सुणतां मंगल माल ॥ २ ॥

॥ छंद जाति सवैया ॥

आदि जिणंद नमे नरइंद सपुनमचंद समान मुखं ॥ समामृत कंद टाले भवफंद मरुदेवीनंद करत सुखं ॥ लगे जस पाय सुरिंद निकाय भला गुण गाय भविक जनं ॥कंचन काय नहि जस माय नमे सुख थाय श्री आदिजिनं ॥ १ ॥ अजितजिणंद दयाल मयाल विसाल नयन कृपाल जुगं । अनुपम गाल महामृग चाल सुभाल सुजानग बाहु जुगं ॥ मनुष्य मेलीह मुनिसरसीह अबीह नरीह गये मुगती । कहे नय चित्त धरी बहु भक्ति नमे जिननाथ भली जुगतीं ॥ २ ॥ अहो संभवनाथ अनाथको नाथ मुगतिको साथ मिल्यो प्रभु मेरो । भवोदधिपाज गरिबनिवाज सबे शिरताज निवारत फेरो ॥

चंद्रप्रभु स्वामी नाम लीजीये प्रभात जाम पामीये सुख ठाम ठाम गामज समान हे ।। महासेन अंगजात लक्ष्मणाभिधान मात जगमा सुवासवात चिहुं दिसे थात हे। कहे नय छोडी वात ध्याइये जो दिनरात पामीये तो सुख सात दुखको भीजात हे ।। ८ ।। दुर्धसिंधुफेन पींड उजलो कपुरखंड अमृत सरस कुंड शुद्ध जाको तुंड हे। सुधावी जिनंद संत कीजीये कर्म अंत शुभभक्ति जासदंत श्वेत जाको वान हे ।। कहे नय सुणो संत पूजीये जो पुष्प दंत पामीये तो सुख संत सुद्ध जाको ध्यान हे ।। ९ ।। शितल शितल वाणी धनाघन चाहत हे भविकोक किशोरा । काक दिणंद मजासु नरींद वली जिम चाहत चंद चकोरा ।। विंध गयंद सुचि सुरिंद सति निज कंत सुमेघ मयुरा ।। कहे नय नेह धरी गुण मेह तथा हु धावत साहेब मेरा ।। १० ।। विष्णु भूपको मल्हार जग जंतु सुखकार वंशको शृंगारहार रुपको आगार हे । छोडि सवि चित्तकार मान मोहको विकार काम क्रोधको संवार सर्व वेरी वार हे ।। आदर्यो संजमभार पंच महाव्रत सार उतारे संसारपार ज्ञानको भंडार हे । इग्यारमो जिणंद सार खडगी जिव चिन्हधार कहे नय वारोवार मोक्षको दातार हे ।।११।। लाल केसु फुल लाल रति अर्घ रंग लाल उगतो दिणंद लाल लालचोल रंग हे । केसरीकी जीह लाल केसरको घोल लाल चूनडीको रंग लाल लालवान रंग हे।। लाल कीर चंचु लाल

साथ सांतिनाथके दिदारथे ॥ १६ ॥ कहे कुंथु जिणंद मयाल दयाल निधि सेवकनी अरदास सूणो । भव भीम महार्णव पूर अगाह अथाग उपाधि सुनीर घणो । वहु जन्म जरा मरणादि विभाव निमित घणादि कलेस घणो ॥ अवतारकतार क्रिपा परसांहिव सेवक जाणीए छे आपणो ॥ १७ ॥ अरदेव सुदेव करे नर सेव सवे दुख दोहग दुर करे उपदेश घनाघन नीर भरे भवि मान समानस भूरीतरे ॥ सुदर्शन नाम नरेसर अंगज भव्य मने प्रभु जास वसे ॥ तस संकट शोक वियोग कुयोग दरिद्र कुसंगति न आवत पासे ॥ १८ ॥ नील कीर वरंवी नील नांगवलि पत्र नील तरुवर राजी नील नील नील द्राख हे ॥ काचको सुगोल नील इंद्र नील रत्ननील पत्रनील चास हे ॥ जमुना प्रवाह नील भृंगराज पंखी नील जेहवो अशोक वृक्ष नील नील रंग हे ॥ कहे नय तेम नीळ रागथे अतिव नील मल्लीनाथ देव नील जाको अंग नील हे ॥ १९ ॥ सुमित्र नरींद्र तणो वरनंद सूचंद्र वदन सोहावत हे । मंदर धीर सवेन रहीर सुसाम शरीर विराजित हे ॥ कज्जल-वान सुकच्छपयान करे गुणगान नरिंद घणो । मुनिसुव्रत स्वामी तणो अभिधान लहे नय मान आनंद घणो ॥ २० ॥ अरीहंत सरुप अनुपम रुपके सेवक दुःखने दुर करे ॥ निज वाणी सुधारस मेघ जले भवीमान समान सभूरी भरे ॥ नमी नायको दर्शन सार

पार सुमति तोखार हेखार करे ॥ कहे नयसार सुमंगल चार धरे तस संपद भूरी भरे ॥२६ ॥ संवेगी साधु विभूषण वंस विराजित श्री नय विमल जनानंदकारी ॥ तस सेवक संजमधारं सुधारके धीरविमलगणी जयकारी ॥ तासपदांबुज भृंग समान श्रीनयविमल महाव्रत धारी, कहे ए छंद सुणो भविवृंदके भावधरीने भणो नरनारी ॥ २७ ॥

॥ श्री॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

सोल महा सतीनो मांगलिक छंद.

आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजिये ए; प्रभाते उठी मांगलिक कामे, सोल सतीनां नाम लीजिये ए. ॥१॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेहेनडी ए; घटघट व्यापक अक्षररुपे, सोल सतीमांहि जे वडी ए. ॥ २ ॥ ॥ बाहुबलभगिनी सतीयशिरोमणि, सुंदरी नामे ऋषभसुताए. अंक स्वरुपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए. ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविकाय; अडदना बाकुला वीर प्रति लाभ्या, केवल लही व्रत भाविका ए. ॥४ ॥ उग्रसेन धुआ धारि- [illegible] [illegible]मती नेम वल्लभा ए; जोवन वेशे कामने जीत्यो,

णूजीता, पुष्फचूलाने प्रभावती ए; विश्व विख्याता कामिदाता, सोलमी सती पद्मावती ए. ॥ १६ ॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदयरतन भाखे मुदा ए; वाहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लेशे सुख संपदा ए. ॥ १७ ॥

॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरिक्रोधने मनथी दूर वारो॥ संतोष वृत्ति धरो चित्त मांहि, राग द्वेषथी दूर थाओ उछाहिं ॥ १ ॥ पडया मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जैनमार्ग छंडी भुला कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्य थी शुं रमो छो, नदी गंग मुकी गलीमां पडो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंढ माला ॥ केइ देव उत्संगें राखे छे वामा, केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसभक्षी महाविकराला ॥ केइ योगीणी भोगिणी भोग रागें, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥५॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिना सुखने केम चाखे ॥ जदा लोभना थोकनो

ना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुओ गुरु आज मैरो, विवेकें लयो में प्रभू दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्व जिन छंद ॥

॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुद्धें, नमो नाथ निश्चें करी कए बुद्धें ॥ देवी देवलां अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्यलोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रिलोकना नाथने शुं तजो छो, पडया पाशमां भूतने कां भजो छो ॥ सुरधेनु छंडी अजा शु अजो छो, महापंथ मूकी कुपंथें व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणि काचमाटें, ग्रहे कोण रासभने हस्ति साटें ॥ सुरद्रुम उपाडी कुण आक वावे, महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं, किहां केसरीने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा करो एकचित्तें प्रभु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूनो देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करे छे सनाथं ॥ महा तत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेनां दुःख दारिद्र दूरें पलाये ॥ ५ ॥ पामी मानुषोनें वृथा कां गमो छो, कु शीलें करी देहने कां दमो छो ॥ नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं, भजो भगवंतं वजो दृष्टिरागं ॥ ३ ॥ उदयरत्न भांखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजें प्रभु दास जाणी ॥ आज माहरे मोतीडे मेह वुठा, प्रभु पास संखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥

न्नचिते, भामिनी परणावीआ; कमठशठकृतअग्निकुंडे नागवलतोउद्धर्यो; नित्यजापजपीए पापखपीए, स्वामीनामशंखेश्वरो. ॥ ३ ॥ पोसमासे कृष्णपक्षे, दशमी दिनप्रभुजनमियो; सुरकुमरीसुरपतिभक्तिभावे, मेरुशृंगेस्थापियो; प्रभातेपृथ्वीपति प्रमोदे, जन्ममहोच्छव अति कर्यो, नित्यजापजपीए पाप खपीए, स्वामीनामशंखेश्वरो. ॥ ४ ॥ पोसवदिएकादशी दिन, प्रव्रज्या जिनआदरे; सुरअसुरराज भक्तिसाज, सेवनाझाझी करे; काउस्सग्गकरतां देखी कमठे, कीधपरिसह आकरो; नित्यजापजपीएपापखपीए स्वामी नाम शंखेश्वरो ॥ ५ ॥ तव ध्यान धारा रुढ जिनपति, मेघधारे नविचल्यो; तिहांचलितआसन धरण आया, कमठ परिसह अटकल्यो; देवाधिदेवनी करेसेवा, कमठनेकाढीपरो; नित्यजापजपीए पाप खपीए, स्वामी नाम शंखेश्वरो, ॥ ६ ॥ क्रमे पामीकेवळज्ञानकमळा, संघचउविहस्थापीने, प्रभुगया मोक्षे समेतशिखरे, मासअणसणपाळीने; शिव रमणीरंगेरमेरसीओ भविकतससेवा करो; नित्यजापजपीयेपापखपीए, स्वामीनामशंखेश्वरो. ॥ ७ ॥ भूत प्रेत पिशाचव्यंतर, जलणजलोदर भय टळे; राजराणी रमापामे, भक्तिभाव जो मळे, कल्पतरुथीअधिक दाता, जगतत्राता जयकरो; नित्यजापजपीए पाप खपीए, स्वामी नाम शंखेश्वरो. ॥ ८ ॥ जराजर्जरी भूतयादव सैन्य, रोगनिवारता, वढीयार देशे नित विराजे, भविकजीवनेतारता; एमप्रभुतणां पदपद्मसेवा, रुपकहे प्रभुता वरो; नित्यजापजपीएपापखपीए, स्वामी नाम शंखेश्वरो.॥९॥

अथ श्री सिद्ध भगवाननुं स्तवन.

सिद्धनीशोभारे शीकहुं ॥ ए आंकणी ॥

सिद्धजगतशिर शोभता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मीलीलानां लेहेरमां, सुखिया छे शिवठाम ॥ सि० ॥ १ ॥ महानंदअमृतपदनमां सिद्धि कैवल्यनाम ॥ अपुनर्भवब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेयनिःश्रेय अक्षरा, दुःख समस्तनी हाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्षमुक्ति निरवाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पदलह्युं, जोतां जगतना ठाठ ॥ निज निज रुपेरे जुजुआं, चीत्यां कर्म ते आठ ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरुलघु अवगाहना, नामें विकसेवदन ॥ श्री शुभवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

ॐ घंटाकरण महा मंत्र.

ॐ घंटाकर्णो महावीर । सर्वव्याधि विनाशक ॥ विस्फोटक भयप्राप्त । रक्ष रक्ष महाबल ॥ १ ॥ यत्र त्वं तिष्ठसे देव । लिखिताक्षरपंक्तिभिः ॥ रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति । वातपित्तकफोद्भवाः ॥२॥ तत्र राजभयं नास्ति । यांति कर्णोज पाक्षयं ॥ शाकिनीभूतवैताल । राक्षसा प्रभवंतिन ॥ ३ ॥ नाकाले मरणं तस्य । न च सर्पेण

दृश्यते ॥ अग्निचोरभयं नास्ति । ओँह्रीँ घंटाकर्णो नमोऽस्तु ठः ठः ठः । स्वाहा ॥ ४ ॥

विद्या साधवानो मंत्र.

ॐह्रींश्रींक्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम, जिह्वाग्रे वासं कुरु २ स्वाहा: ॥ दीन २९ ॥ वार १०८ जपवो एटले विद्या मावडे.

ॐ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ चंद्र प्रभ जिनेंद्राय ज्वालामालिनीए नमः

आ मंत्र १०८ वार गणवो [illegible] पाना [illegible] [illegible] मां [illegible] वार [illegible] पाईना [illegible] [illegible] [illegible] नोकार [illegible] गणवो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] पुरवो छे.

[illegible]नो जाप.

ॐ ह्रीं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ठः ठः ठः [illegible] [illegible]

ॐ श्री विषहर पार्श्वनाथनो महा मंत्र.

ओँजितुं ओँजितु ओँजिउपशमधरी॥ ओँह्रीँ पार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूत ने प्रेत जोर्तींग व्यंतर सुरा ॥ उपशमे वार एकवीस गुणंते ॥ ओँजितुं ॥ १ ॥ दुष्ट ग्रह रोग शोक जरा जंतु ने ॥ ताव एकांतरो दिनतपंते ॥ गर्भ बंधन वारण सर्प वींछी विष ॥ बालका बाळनी व्याधि हुं ति ॥ ओँ ॥ २ ॥ शायणि डायणि रोहिणी रांधणी ॥ फोटीका मोटीका दुष्टहंति ॥ दाढ उंदर तणी कोल नोला तणी ॥ स्वानशीयाल वीकराल दंति ॥ ओँ ॥ ३ ॥ धरण पद्मावति समरी शोभावति वाट अघाट अटवीअटंते ॥ लक्ष्मी लुंदो मले सुजस वेला वले ॥ सयल आशा फले मन हसंते ॥ ४ ॥ अष्ट महा भय हरे ॥ कानपीडा टले ॥ उतरेशूलशीशक भणंते ॥ वदतिवर प्रीत श्युं प्रीति वीमळप्रभो ॥ पार्श्वजिननाम अभिराम मंते ॥ ओँ ॥ ५ ॥

इति श्री गोडी पार्श्वनाथ स्तवन संपूर्ण.



१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

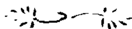


२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१	२	४	५	३
[illegible]	१	४	५	३
[illegible]	४	[illegible]	५	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	५	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३



[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३
[illegible]	१	५	[illegible]	३
[illegible]	५	४	[illegible]	३
५	१	४	[illegible]	३
[illegible]	[illegible]	१	[illegible]	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	२	१	५	२

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
१	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

१	४	५	३	२
४	१	५	६	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनजिनुं स्तवन ॥

महावीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥

नित्य समरुं साहेब सयणां, नाम सुणतां सीतल वयणां, गुण गातां उलसे नयणांरे शंखेश्वर साहिब साचो; बीजानो आशरो काचोरे शंखे० ॥१॥ ए आंकणि ॥ द्रव्यथि देव दानव पूजे । गुण संचितसो पण लीजे । अरिहापदपर्यंत छाजे । मुद्रापद्मासन राजेरे ॥ शंखे० बी० २ ॥ संवेग तजी घरवासो । प्रभु पासना गणधर थाशो । तब मुक्तिपुरीमां जाशो । गुण लोकमां वयणे गवाशोरे ॥ शंखे० बी० ३ ॥ एम दामोदर जिनवाणी । अपाढा श्रावक जांणी । जिनवंदी निजघर आवे । प्रभु पासनी प्रतिमा भरावेरे ॥ शं० बी० ४ ॥ त्रणकाल ते धूप उखेवे । उपकारी श्री जिनसेवे । पछी तेह वैमानिक थावे । ते प्रतिमापण तिहां लावेरे शं० बी० ५ ॥ घणा काल पूजा बहु-माने । वली सूरज चंद्र विमाने । नाग लोकनां कष्ट निवार्या । ज्यारे पार्श्व प्रभुजी पधार्यारे ॥ शं० बी० ६ ॥ यदुसेन रह्यो रणवेरी । जीत्या नविजाये वैरी । जरासेनें जरा तव म्हेली । हरि बल विना सघले फेलीरे शं० बी ७ ॥ नेमीश्वर चोकी विशाली । अट्ठम करे वनमाली । तूठी पद्मावती वाली । आपे प्रतिमा झाकझमालिरे । शं० बी० ८ ॥ प्रभू पासनी प्रतिमा पूजी । बलवंत जरातव धूजी । छंट-कावन्हवण जल जोती । जादवनी जरा जाय रोतीरे । शं० बी० ९ ॥ शंखपूरीने सहूने जगावे । शंखेश्वर गाम वसावे । मंदिरमां प्रभु पधरावे । शंखेश्वर नाम धरावेरे ॥ शं० बी० १० ॥ रहे जे जिन

सियेरे। पांम्यो आठमुं स्वर्ग। आ० ७। चंदन वालारे अडदन चाकुलारे। पडिलाभ्या तुमने स्वाम। तेहने कीधीरे साहूणिम चडिरे। पहोंचाडी शिवधांम। आ० ८। दिन छयासीनारे मात पिताहुवेरे॥ व्राह्मण व्राह्मणी दोय। शिवपुर संगीरे तेहनें तें कर्यारे मिथ्या मल तसधोय। आ० अर्जुन मालीरे जेमहापातकीरे। मनुष्यनो करतो संहार। ते पापीने प्रभु तुमे उधरयोरे। करि तेह सुपसाय। आ० १०। जे जलचारीरे हुंतो देडकोरे। ते तुम ध्यान सुहाय। सोहमवासिरे तें सुरवर कियोरे। समकित केरे सुपसाय आ० ११। अधम उधरयारे एहवा तें घणांरे। कहुं तसकेचां नाम। माहरे ताहरा नामनो आसरोरे। ते मुज फलस्येरे कांम आ० १२। हवें में जांण्युंरे पद वीतरागतुंरे। जोतें न धरयोरे राग। राग गयेथी गुण प्रगट्या सवेरे॥ ते तुज वांणि महाभाग। आ० ॥१३॥ संवेग रंगीरे क्षपक श्रेणे चढयारे॥ करता गुणनो जमाव। केवल पांम्यारे लोकालोकनारे। देखे सघलारे भाव। आ० १४। इंद्रे आवीरे जिनपद थापीयोरे। देशना दिये अमृतधार। पर्षदा बोधिरे आतम रंगथीरे। वरिया शिवपद सार। आ० १५॥ इति श्री महावीर निर्वाणसज्झाय समाप्त॥ श्री कल्याण मस्तु॥

॥ अथ धमाल प्रारंभः ॥

चिदानंदघन परमनिरंजन॥ जन मनरंजन देवललना॥ वामानंदन रति जस करे सेव॥ १॥ मन-

॥ १३ ॥ मनवचनादिक पुद्गल न्यारो ॥ न्यारो सकल विभावल० । सुध द्रव्य गुण पर्याय घटमां ॥ तुजसमसूद्ध स्वभाव ॥ म० ॥ १४ ॥ तुं घट अंतर प्रगट वीराजें ॥ ज्युं निर्मल मणिकं-तल० बाहिर ढुंढत मुढन पावे ॥ ज्यूं मृगमद मृग भ्रांत ॥ म० ॥ १५ ॥ गुंणठांणादिक भावें मिश्रीत ॥ सबमांहि तुज अंसल० ॥ खीरनीर जिमभिन करतहें ॥ उज्वल अनुभव हंस ॥ म० ॥ १६ ॥ आतमज्ञांनदसाजसजागी ॥ वैरागी तुजग्यां नल० ॥ सोपावे ज्यूं रत्न परिक्षा ॥ परखतं रत्न परधांन ॥ म० ॥ १७ ॥ पुन्य प्रकृति देवनको लक्षण ॥ मुढ लहें नहि धर्मल० ॥ ज्यूंपीलो कोइ कंच न मांनें ॥ लहंत न अंतर मर्म ॥ म० ॥ १८ ॥ गंधरुप रसफरस विवर्जित ॥ न धरें तिहां संठांण ल० ॥ अण अवतार असरिर अवेदि ॥ तुंप्रभु सुद्ध परमाण ॥ म० ॥ १९ ॥ केवल ज्ञान सदा अवलोकें ॥ लोकालोक पर-मांण ल० ॥ दर्शण वीर्य चरण गुंणधारी ॥ सोसेवतसवअहि ठांण ॥ म० ॥ २० ॥ सत्ता सूद्ध अरूपी तोरि ॥ नहीं जगको व्यवहार ल० ॥ कहा कहियें कछु कहेंतन आवें ॥ तुं प्रभू अलख अपार ॥ म० ॥ २१ ॥ दीपचंद रवीगहगणकेरो ॥ ज्यां दीपसरत नहि तेज ल० ॥ तिहां एक तुजधाम विराजें ॥ निर्मल चेतन सेज ॥ म० ॥ २२ ॥ आदिरहित अजरांमरनि-रांभय ॥ व्यापक एक अनंत ल० ॥ सुद्ध प्रकृति अकषाई अमाई ॥ तुंप्रभु बहु गुणवंत ॥ म० ॥ २३ ॥ तुं माता तुं त्राता भ्राता ॥ पीता बंधवतुं मित्त ल० ॥ सरण तुंहि तुज सेव

दोरो । देश विदेश पडावे शोरो । करे सबल तुंतो तोरो । ९ ।
तुं हाथीनां हाडां भांजे । पापीने तोडे करपंझो । भगतिवच्छ
लजो भगतने रंजे । तो सेवकने कोइ न गंजे ॥ १० ॥ फोडे
तुं डमरुंडाकं । सुरपती सरीखा मांने हाकं । धमके घ्रोसट
धींगड ढ्राकं ॥ चडतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥ पिशुनपछीडन
नही कोथी । तुजजस बोल्याझाए नकेथी । मेहेर करी अ-
लगा रहो मोथी । आड खेलकरोछोथोथी ॥ १२ ॥ भक्तथकी
एवडी कां खेडो । अवल अमीना छांटारेडो । लाख भगतो एहनी
पेडो । महाराजा मुंको मुंज केडो ॥ १३ ॥ लाजवस्योनां अ-
जयारांणी । गुरु आंणामांनो गुण खांणी । घरे सिधावो क-
रुणा आंणी । कहुंछुंनाके लीटी तांणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित
छंदए झपस्ये ॥ तेह ने ताव कदी नही चडशे । फंती फलाने ।
देहनीरोगं । लहस्ये लीला लक्ष्मी भोगं ॥ १५ ॥ कलश ॥
ॐ नमो धुरिआदि बीज गुरु नाम वदेजे । आनंद पुर अवनीश
अजयपाल अखीजे ॥ अजया जातअहार । चावासा ते चेटा ॥
एहझझपता झाप ॥ भक्ति सुं न करे भेटा । उतरे अंग चढीया ॥
अयल मही तारी वयणे मुदा । कहे कांती रोग नावे कदा ।
सार मंत्र झपेजे सदा ॥ १६ ॥ इति सर्वज्वर हरछंद पर्ततिसिद्धि ॥

१० मुं.	शौच मूळथी महा गुणी, सर्व धर्मनो सार;	
विनय पद.	गुण अनंतनो कंद ए, नमो विनय आचार.	१०
११ मुं.	रत्न त्रयी विणु साधना, निष्फळ कहि सदीव;	
चारित्र पद.	भावरयणनुं निधान छे, जयजय संजम जीव.	११
१२ मुं.	जिनप्रतिमा जिनमंदिरां, कंचननां करे जेह;	
ब्रह्मचर्य पद.	ब्रह्मव्रतथी बहु फळ लहे, नमोनमो शीयल सुदेह.	१२
१३ मुं	आतम बोध विण जे क्रिया, ते तो बाळक चाल;	
क्रिया पद.	तत्वारथथी धारीये, नमो क्रिया सुविशाल.	१३
१४ मुं	कर्म खपावे चीकणां, भाव मंगल तप जाण;	
तप पद.	पच्चास लब्धि उपजे, जय जय तप गुण खाण.	१४
१५ मुं	छठ छठ तप करे पारणुं, चउ नाणी गुण धाम;	
गोयम पद.	ए सम शुभ पात्र को नहि, नमो नमो गोयमस्वाम.	१५
१६ मुं	दोष अढारे क्षय गया, उपन्या गुण जस अंग;	
जिन पद.	वैयावच्च करीये मुदा, नमो नमो जिन पद संग.	१६
१७ मुं	शुद्धातम गुणमे रमे, तजी इंद्रिय आशंस;	
संयम पद.	थिर समाधि संतोषमां, जय जय संजम वंश.	१७
१८ मुं	ज्ञानवृक्ष सेवो भविक, चरित्र समकित मूळ;	
अभिनवज्ञान.	अजर अमर पद फळ लहो, जिनवर पदवी फुल.	१८
१९ मुं	वक्ता श्रोता योगथी. श्रुत अनुभव रस पीन;	
श्रुत पद.	ध्याता ध्येयनी एकता, जय जय श्रुत सुखलीन.	१९
२० मुं	तीर्थ यात्रा प्रभाव छे, शासन उन्नति काज;	
तीर्थ पद.	परमानंद विलासतां, जय जय तीर्थ जहाज.	२०

१२	,, बंभवयधारिणं	२०	९	९	९	एकेक पदनुं वीश वार गणणुं काउस्सग खमासण आदि करवां.
१३	,, किरियाणं	२०	२५	२५	२५	
१४	,, तवस्स	२०	१२	१२	१२	
१५	,, गोयमस्स	२०	२८	२८	२८	
१६	,, जिणाणं	२०	२०	२०	२०	
१७	,, संयमधारिणं	२०	१७	१७	१७	
१८	,, अभिनव नाणस्स	२०	५१	५१	५१	
१९	,, सुयस्स	२०	१२	१२	१२	
२०	,, तित्थस्स	२०	५	५.	५	

विहु उपवासे पारणुं ए, आपणपे विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल जयजयकार करंत तो. २६.[1]

वस्तु.

इंदभूइअ, इंदभूइअ, चडिअ बहु मानें, हुंकारो करि कंपतो, समोसरणे पहोतो तुरत, अह संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत, बोधि बीज संजाय मने, गोयम भवह विरत्त, दिख्ख लइ सिख्खा सहिअ, गणहर पय संपत्त. २७.

भाषा.

(ढाळ चोथी)

आज हुओ सुविहाण. आज पचेलिमां पुण्य भरो; दीठा गोयम सामि, जो निअ नयणे अमिय सरो. २८. सिरि गोयम गणधार; पंचसयां मुनि परवरिय; भूमिय करय विहार, भवियण जन पडिबोह करे.[2]) समवसरण मझारि, जे जे संसय उपजेए; ते ते परउपकार, कारणे पुछे मुनिपवरो. २९. जिहां जिहां दीजे दीख, तिहां तिहां केवळ उपजे ए; आप कन्हे अणहुंत, गोयम दीजे दान इम ३० गुरु उपरि गुरु भत्ति, सामी ' गोयम उपनीय;

---

१. आ ढाळनी दश गाथाने बदले केटलीक प्रतमां आठ आठ पदनी एकेके गाथा करी पांच गाथा गणेल छे.

२ आ गाथा जैन प्रबोधमां छपायेल छे पण अंक चडावेल नथी. ढखेल प्रतोम नथी.

भज्जा पुहवी, सयल गुणगण रुवनिहाण; ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण. ७

भाषा.

(ढाळ बीजी).

चरम जिणेसर केवळ नाणी, चउविह संघ पइट्ठा जाणी: पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहि जुत्तो. ८. देवे समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामनि खीजे, त्रिभुवनगुरु सिंघासणे बेठा, ततखिण मोह दिगंते पइट्ठा. ९. क्रोध मान माया मदपूरा, जाए नाठा जिम दिने चोरा; देवदुंदुभि आकाशे वाजे, धर्मनरेसर आव्या गाजे. १०. कुसुम वृष्टि विरचे तिहां देवा, चउसठ इंद्रज मागे सेवा; चामर छत्र शिरोवरि सोहे, रुपे जिणवर जग संमोहे (सहु मोहे), ११. उपसम रसभरभरि वरसंता, योजनवाणि वखाण करंता; जाणिअ वर्धमान जिन पाया, सुरनर किंनर आवे राया. १२. कांतिसमूहे झलझलकंता, गयण विमाणे रणरणकंता; पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह यज्ञ होवंते. १३. तीर तरंडक जिम ते वहता, समवसरण पहुता गहगहता; तो अभिमाने गोयम जंपे, तिणे अवसरे कोपे तणु कंपे. १४. मूढा लोक अजाण्यो बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले, मू आगळ को जाण भणीजे, मेरु किम ओपम दीजे. १५.

वस्तु.

वीर जिणवर वीर जिणवर. नाणसंपन्न, पावापुरि सुरमहिअ

विहु उपवासे पारणुं ए, आपणपे विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल जयजयकार करंत तो. २६.[1]

वस्तु.

इंदभूइअ, इंदभूइअ, चडिअ वहु माने, हुंकारो करि कंपतो, समोसरणे पहोतो तुरत, अइ संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत, बोधि बीज संजाय मने, गोयम भवह विरत्त, दिक्खय लइ सिक्खा सहिअ, गणहर पय संपत्त. २७.

भाषा.

(ढाळ चोथी)

आज हुओ सुविहाण. आज पचेलिमां पुण्य भरो; दीठा गोयम सामि, जो निअ नयणे अमिय सरो. २८. सिरि गोयम गणधार; पंचसयां मुनि परवरिय; भूमिय करय विहार, भवियण जन पडिवोह करे.[2]) समवसरण मझारि, जे जे संसय उपजेए; ते ते परउपकार, कारणे पुछे मुनिपवरो. २९. जिहां जिहां दीजे दीख, तिहां तिहां केवळ उपजे ए; आप कन्हे अणहुंत, गोयम दीजे दान इम ३० गुरु उपरि गुरु भक्ति, सामी 'गोयम उपनीय;

१. आ ढाळनी दश गाथाने वदले केटलीक प्रतमां आठ आठ पदनी एकेके गाथा करी पांच गाथा गणेल छे.

२ आ गाथा जैन प्रबोधमां छपायेल छे पण अक चडावेल नथी. लखेल प्रतोमां नथी.

...णि ... ... गज गाजे रंग भरे. ३१. जा अष्टापद
... जिण, आतमलब्धि वसेण, चरमशरीरी
... निसुणेवि, गोयम गणहर संचलियः
... ३३. ...
... नदमें ... , गज
... गराम ... मने
... किरण. ३५.
... परमानंद,
... प,
[illegible]

वस्तु.

इणे अनुक्रमे, इणे अनुक्रमे, नाण संपन्न, पन्नरहसयपरिवरिय; हरिअ दुरिअ, जिणनाह वंदइ; जाणेवि जगगुरु वयण, तीहनाण अप्पाण-निंदइ. चरम जिणेसर तव भणे, गोयम करिस म खेउ; छेहि जइ आपणे सही, होस्युं तुल्ला बेउ. ४४,

भाषा (ढाळ पांचमी.)

सामीओए वीर जिणंद, पुनिमचंद जिम उल्लसिय; विहरिओए भरहवासंमि, वरस बहोत्तर संवसीय; ठवतो ए कणय पउमेसु, पायकमळ संघहि सहिय; आविओए नयणानंद, नयर पावापुरि सुरमहिय. ४५, पेखीओए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोधकए; आपणो ए त्रिशलादेविनंदन पहोतो परमपए; वळतां ए देव आकासि, पेखवी जाण्यो जिण समे ए, तो मुनिए मने विखवाद, नादभेद जिम उपनोए. ४६. कुण समेए सामिय देख, आप कन्हे हुं टालिओए; जाणतो ए तिहुअणनाह, लोक विवहार, न पालिओए; अति भलुं ए कीधलुं सामि, जाण्युं केवल मागशे. ए; चिंतव्युं ए बाळक जेम, अहवा केडे लागशे ए. ४७. हुं किम ए विरजीणंद. भगते भोळो भोळव्यो ए; आपणोए अविहड नेह, नाह न संपे साचव्यो ए; साचो छे. एह वीतराग, नेह न जेहने लालिओए. तिणे-समे ए गोयम चित्त; राग विरागे वाळिओए. ४८. आवतुं ए जे उल्लट, रहेतुं रागे साहियुं ए; केवलुंए नाण उपन्न, गोयम सहेजे उमा-

छियुं ए; त्रिभुवने ए जयजयकार. केवलिमहिमा सुर करे ए; गणधर ए करे वखाण, भवियण भव जिम निस्तरे ए. [illegible]

वस्तु

पढम गणहर पढम गणहर [illegible] निरवाणे सयगिम. नीम वरिम संनय विभूसिय, [illegible] पुण [illegible] वरस निरूमण नर्दंमिय; रानगही नगर [illegible] गार्श गायन गुणनिलो, हांम्ये गीयतुम ठाउ [illegible].

भाषा (ढाळ छठ्ठी.

कामकुंभ सो वसि हुओ ए; कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महा सिधि आवे धामि, सामि गोयम अणुसरु ए. ५५ प्रणवाक्षर पहेलो पभणीजे, माया बीज श्रवण निसुणीजे; श्रीमुखे (श्रीमति) शोभा संभवे ए; देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनय पहु उवझाय थुणिजे, इणे मंत्रे गोयम नमो ए. ५६. पर परवसता कांइ करीजे, देश देशान्तर कांइ भमीजे, कवण काजे आयास करो; प्रह उठी गोयम समरी जे, काज सव ततखिण ते सीझे, नवनिधि विलसे तास घरे ५७. चउदहसे (चउदसय) बारोत्तर वरसो, गोयम गणधर केवळ दीवस[1]) खंभ नयर प्रभु पास पसाये, कीयो कवित उपगार परो; आदिही मंगळ एह भणीजे, परव महोत्सव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो. ५८.

धन माता जेणे उअरे धरीया, धन पिता जिण कुळे अवतरिया, धन सहगुरु जिणे दीखिया ए; विनयवंत विद्याभंडार, जस्स गुण पुहवि न लभे पार, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो (वड जिम शाखा विस्तरो ए.[2]) ५९.

जैन प्रबोधमां वधारे गाथाओ छपायेल छे ते नीचे प्रमाणे–

गौतमस्वामिनो रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजे, सघळ संघ आणंद करो; कुंकुम चंदन छडो देवरावो, माणेक मोती

१ आ गाथामां बीजा पदने बदले आ पद छपायेल छे.

२ छेल्ला पदने बदले आ पद छपायेल छे, ने आ गाथा एक .

अथ पडिलेहण करवानो वि[illegible]

[illegible] वडिरवी [illegible] करवो, [illegible] [illegible] इरियावहि पडिकमी [illegible] [illegible] [illegible] वार ३ [illegible] [illegible] ॥

अथ टंड [illegible]वानो विधि.

प्रथम इरियावहि पडिकमावी [illegible]

[illegible]

चार थोयो कहे पछी नमुथ्थुणं कही वे जावंती स्तवन कही अरधा जयवीयराय आभवमखंडा सुधी कही पछी चैत्यवंदन करी नमुथ्थुणं कही आखा जयवीअराय कहेवा. सवारे देव वांदवा तेमां मन्हजि-णाणंनी सझाय कहेवी, बपोरे तथा सांजे देव वांदे तेमां सझाय न कहेवी. ॥ इति ॥

अथ पोसहनी विधि.

प्रथम इरियावहियं पडिक्कमी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदि-सह भगवन् पोसह मुहपत्ति पडीलेहुं ? एम कही मुहपत्ति पडिलेहवी, पछी इच्छामि० इच्छाकारेण० पोसह संदिसाहु ? पछी इच्छामि० इच्छाका० पोसह ठाउं ? पछी नवकार गणी इच्छाकारी भगवान पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी एम कहेवुं गुरु माहाराज पोसहनुं पच्चखाण उच्चरावे. पछी इच्छामि० इच्छाका० सामायक मुहपत्ति पडिलेहुं त्यांथी ते सझाय करुं एम कही त्रण नवकार गणी उठे त्यां सुधी कहेवुं पछी इच्छा० इच्छाकारेण० बहुवेल संदिसाहु इच्छं पछी इच्छामि० इच्छा० बहुवेल करशुं इच्छं, इच्छाकारेण संदीसह भगवान्. पडीलेहण करुं एम कही मुहपति पडीलेहवी. इच्छामि० इच्छाकारी भगवन् पसाय करी पडी लेहणा पडीलेहावोजी पछी इच्छामि० इच्छाका० उपधिमुहपत्ति पडीलेहुं एम कही मुहपत्ति पडीलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० उपधि संदिसाहु पछी इच्छामि० इच्छा० उपधी पडीलेहुं पछी इच्छामि० इच्छाका० सझाय करुं एम कही एक नवकार गणी मन्हजिणाणंनी सझाय

करेवी, पोरसिना अवसरे इरियावहिया पडिकमी इच्छाका० पडी-
लेहण करुं एम कही मुहपत्ति पडीलेहवी.

मौ मवस पोसह उचरवो ते.

[illegible] प्रमाणे [illegible] करेवुं पण सज्झाय न करेवी ने पछी [illegible] निवडीलेहुं. एम कही राइ मुहपत्ति पडीलेहवी [illegible] इच्छाका [illegible] आलोइ एम कही [illegible] कही वन्दन होय तो वांदणां वे [illegible] बेसणुं ठाउं [illegible] वांदणां वे देइ पचक्खाण [illegible] आलोइ एम कही इरि-[illegible] मोहिरिआमिति, [illegible]

[illegible]

संदिसाहु इच्छामि० इच्छाका० उपधी पडीलेहुं एम कही जेटलां वस्त्र होय तेटलां पडीलेहवां पछी देव वांदी प्रतिक्रमण करवुं पछी पोसह पारी नवकार गणी सागरचंदो कहेवो.

प्रभातनो पोसो लीधेलाने रात्रे लेवानी विधि.

प्रभातनो पोसो लेवानी विधि छे ते प्रमाणे खमासमण देइ इरीयावहियंथी यावत् बहुवेल करशुं त्यां सुधी कहेवुं, पण पोसाना पच्चखाणमां फेर छे ते (सेस दिवसं अहोरत्तं) पद कहेवुं पछी खमासमण देइ इरियावहि पडिकमी इच्छामि० इच्छा० ठंडील पडीलेहुं कही मांडलां चोवीश करे.

सांजे नवो पोसो लेवानी विधि.

उपवासादि जघन्य एकासणुं कर्यु होय तो तेणे लेवाय. खमासमण देइ इरियावही पडीकमी पडीलेहण करे, पछी खमासमण देइ इरियावहीथी यावत बहुवेल करशुं त्यां सुधी कहेवुं, पछी इच्छामि० इच्छाका० पडीलेहण करुं कही इच्छामि० इच्छाका० पोसहसाल प्रमार्जु कही मुहपत्ति पडीलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० उपधि मुहपत्ति पडीलेहुं कही मुहपत्ति पडीलेहवी पछी इच्छामि० इच्छाका० सझाय करुं कही सझाय करे खाधुं होय तो वांदणां बे देइ पच्चखाण करे, खाधुं ना होय तो खमासमण देइ पच्चखाण करे पछी इच्छामि० इच्छाका० उपधि संदिसाहु इच्छामि० इच्छाका० उपधि पडीलेहुं कही पछी देव वांदी मांडलां करे, प्रतिक्रमण करे पछी पहोर एक

२ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे.
३ आघाडे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
४ आघाडे मज्झे पासवणे अणहियासे.
५ आघाडे दुरे उच्चारे पासवणे अणहियासे.
६ आघाडे दुरे पासवणे अणहियासे.
हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफनां.
६ उपर प्रमाणे पण अणहियासे छे त्यां अहियासे कहेवुं.
हवे उपाश्रयना बारणां नजीक रहिने करे.
६ प्रथम प्रमाणे, पण आघाडे छे त्यां अणाघाडे कहेवुं.
हवे उपाश्रयथी सो हाथ दुर रहे ने करवां.
६ प्रथमनां छ प्रमाणे पण आघाडे छे ते ठेकाणे अणाघाडे कहेवुं.
अणहियासेने ठेकाणे अहियासे कहेवुं.

अथ मन्हजिणाणंनी सज्झाय.

मन्हजिणाणं आणं मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं छव्विह आवस्सयंमिउज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवोअ भावोअ ॥ सज्झाय नमुक्कारो, परोवयारोअ जयणाय ॥ २ ॥ जिणपुआ जिण थुणिणं, गुरुथुअ साहम्मिआण वच्छलं ॥ ववहारस्सय सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ताय ॥ ३ ॥ उवसम विवेक संवर, भापासमिइ छजीव करुणाय ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरि बहुमाणो पुच्छय लिहणं पभावणा तित्थे । सड्ढाण किच्चमेअं, निचं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥

॥ बीजुं पोरिसि साढपोरिसिनुं ॥

॥ उग्गए सूरे, नमुक्कारसहिअं, पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठि-सहिअं, पच्चक्खाइ ॥ उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, ॥ अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरे ॥

विगइ निविगइनुं पच्चरकाण.

विगइओ निविगइअ पच्चक्खाइ, अन्नत्थणा भोगेणं सहसागा-रेणं, लेवालेवेणं गिहत्थसंट्ठेणं, उक्खित्त विवेगेणं, पडुच्च मक्खिएणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, वोसिरे.

बेआसणा तथा एकासणानुं पच्चरकाण.

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढ मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ. उग्गएसूरे चउव्विहं पिआहारं, असणं, पाणं. खाइमं, साइमं; अन्नत्थणा भोगेणं; पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, एकासणं, बे आसणं, पच्चक्खाइ, तिविहंपिआहारं, असणं, खाइमं, साइमं, अन्न-त्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरु-अब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणिआगारेणं, महत्तरागारेणं, पाणस्स लेवेणवा, अलेवेणवा, अच्छेणवा, बहु लेवेणवा, ससित्थेणवा असित्थेणवा, वोसिरे.

अथ आयंबिलनुं पच्चक्खाण.

उग्गएसूरे नमुक्कारसहिअंपोरिसिं [illegible] पच्चक्खाइ उग्गएसूरे चउव्विहंपि [illegible] अन्नत्थणाभोगेणं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रिसिं पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ अन्नत्थणा-भोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्त-रागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेणवा अलेवेणवा अच्छेणवा बहुलेवेणवा ससित्थेणवा असित्थेणवा वोसिरे.

अथ चउथ्थ अभत्तादिकनुं पच्चरकाण.

सूरेउग्गए चउथ्थभत्तं अभत्तठं, पच्चक्खाइ सूरेउग्गए छठ्ठ भत्तं अभत्तठं पच्चक्खामि.

पाणहार पोरसि मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ अन्नथ्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवे-णवा अलेवेणवा बहु लेवेणवा ससिथ्थेणवा असिथ्थेणवा वोसिरे

अथ गंठसहिअ आदि अभिग्रहोनुं पच्चरकाण

गंठसहिअं वेढसहिअंव दिवसहिअं थिबुगसहिअं मुठ्ठिसहिअं पच्चक्खाइ अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे,

अथ चौद नियम धारनारने देशावगासिकनुं पच्चरकाण.

देसावगासिअं उवभोगं परिभोगं पचक्खाइ अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेण वोसिरे, सचित्त दव्व विगइ वाणह तंबोल वथ्थ कुसुमेसु वाहण सयण विलेवण बंभ दिसि नाण भत्तेसु—

अथ सांजनां पच्चख्खाण.

अथ पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चख्खाण.

पाणहार दिवसचरिमं पच्चख्खाइ अन्नथ्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे.

अथ चउविहारनुं पच्चख्खाण.

दिवसचरिमं पच्चख्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं [illegible] सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि- [illegible]

[illegible] तिविहारनुं पच्चख्खाण.

[illegible] तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं [illegible]

[illegible]

[illegible]नुं पच्चख्खाण.

श्री अमृत विजयजी कृत.

श्री शत्रुंजय तीर्थमाला.

ढाळ १ गरवानी. तुमे शांने रोकोछो रांनमां. ए देशी.

वीमाचल वाला वारुरे भले भविअण मेटो भावमां ॥ तुम्हे सेवो ए तीरथ तारुरेजीम नपडो भवना दावमां ॥ भले० ॥ १ ॥ जगसघळा तिरथनो नायक, तुमे सेवो सीवसुख दायकरे ॥ भले० ॥ २ ॥एणेरी राजने नयणे नीहाली ॥ तुमे सेवो अवर्यी दोष टाळीरे ॥ भले० ॥ ३ ॥ मुक्तासावन फुले वधावी ॥ नमी पुजी भावना भावोरे ॥ भले० ॥ ४ ॥ कांकरे कांकरे सीद्ध अनंता ॥ संभारो पाजे चढतांरे ॥ भले० ॥ ५ ॥ आदि अजीत शांति गौत्तम केरां ॥ पहिलां पगलां पुजो भलेरांरे ॥ भले० ॥ ६ ॥ आगे धोळी परब ढुंके चढीए ॥ तिहां भरत चक्रीपद नमीएरे ॥ भले० ॥ ७ ॥ नीली परब अंतराले आवे ॥ हांरे नेमी वरदत्त पगलां सोहावेरे ॥ भले० ॥ ८ ॥ आदिपुंभनमी कुंडकुमारा ॥ हींगलाज हडे चढो प्यारारे ॥ भले० ॥ ९ ॥ तिहां फलीकुंडनमी श्रीपास ॥ हांरे चढो मांन मोडी उल्लासेरे ॥ भले० ॥ १० ॥ गुणवंतनागीरीना गुण गाइ ॥ छालाकुंडे वीसामो भाईरे ॥ भले० ॥ ११ ॥ तिहांथी मकागाली पंथे धसीए ॥ मभुगढ देखीने उल्लसीएरे ॥ भले० १२ ॥ नमीए नारद अयमत्तानी मुरती ॥ वळी द्रावीड वारीखील्ल मुरतीरे ॥ भले० ॥ १३ ॥ तीरथमुमी देखी सुख जागे ॥ नीरखो हेमकुंडनी आगेरे ॥ भले० ॥ १४ ॥ रांम भरतशुकसेलग स्वामि ॥ थावचा

अथ सांजनां पच्चखाण.

अथ पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चखाण.

पाणहार दिवसचरिमं [illegible] सहसागारेणं [illegible]

[illegible] पच्चखाण.

दिवसचरिमं पच्चखाइ [illegible]

अथ [illegible] पच्चखाण

[illegible]

१३ ॥ दीठा नाटक मारुदेवीनो ॥ बेठो तीरथ भावीजी ॥ पुरव क्रमांगार आव्यार्या ॥ जगमां कीरती व्यापी ॥ हुंतो० ॥ ४ ॥ श्री आदिश्वर तीर्थंगु वंदी । बीजा सर्व जुहारजी ॥ नमीवीनमी कायग्गोसा पासे ॥ जोडे जोडे आतप तरु ॥ हुंतो० ॥ ५ ॥ सांहमा गजवर खंधे बेठां ॥ भरत चक्रीनी माडीजी ॥ तीम मुनेंद्रा सुगंडा पासे ॥ प्रणमुं ते धन ल्हाडी ॥ हुंतो० ॥ ६ ॥ मुल्लग भागनो जीनमुद्रा ॥ एकेऊणा पंचासजी ॥ रंगमंडपमां पडीमा एकं ॥ वंदी भाव उल्लासे ॥ हुंतो० ॥ ७ ॥ चैत उपर चौमुख गाजा छे ॥ फीरती प्रतीमा बाणुजी ॥ वळी गोतम गणधरनी तगा ॥ श्री तार्गफ वखाणुं ॥ हुंतो० ॥ ८ ॥ देहरा बाहीर फीरती देरी ॥ चौपन रुडी दीसेजी ॥ तेहमां प्रतीमा एकसो त्रांणु ॥ देखी हीयडुं हीसे ॥ हुंतो० ॥ ९ ॥ नीलडी रायण तरुवर हेठल ॥ पीलडा प्रभुजीना पायजी ॥ पुजी प्रणमी भावना भावी ॥ ऊल्-ट्अंगनमाय ॥ हुंतो० ॥ १० ॥ तसपट हेठळ नागमोरनी ॥ मुरत ...सोहावेजी ॥ तमसुरपदवी सीधाचळना ॥ माहात्म मांही कहावे हुंतो० ॥ ११ ॥ सांहमा पुंडरीक स्वांमी वीराजे ॥ प्रतिमा छत्रीस ...जी ॥ तेहमां बोधनी एक जीनप्रतिमा ॥ टाळी नमीए रंगे ॥ ...० ॥ १२ ॥ तीहांथी बाहीर उत्तर पासे ॥ प्रतिमा तेर देहा- ...॥ एक रुपानी अवर धातुनी ॥ पंच तीरथ छे चारु ॥ हुंतो० ...॥ उत्तर सनमुख गणधर पगलां ॥ चउदसयां बावननांजी ॥ ...निजिणंद जुहारु ॥ पुण्या कोड तेमनना ॥ हुंतो० ॥१४॥ ...ने सहस कुटने ॥ देखी पाप पळायाजी ॥ एक सहस

नमुं भीरनरिंदरे ॥ भवि० ॥ १५ ॥ सुगनचंद [illegible] मोर वंदी ॥
शुक्लेनन्द सुर्नीवद गुणरंदोरे ॥ भवि० ॥ १६ ॥ [illegible] हनुवत
वीर कहावे ॥ हांरे मोहरांथी देरासे जतापे ॥ भवि० ॥ १७ ॥ दादी-
दीना वांव पोळडुरमीं ॥ [illegible] नहीं मोहुनीरे ॥ भवि० ॥ १८ ॥
मानां [illegible] ॥ [illegible] रे ॥
भवि० ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भवि० [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भवि० ॥ २१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ भवि० ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भवि०
॥ २३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भवि० ॥ २४ ॥

ढाळ चौथी.

[illegible]

[illegible]

॥ ३ ॥ दीठो लाडल मारुदेवीनो ॥ बेठो तीरथ थापीजी ॥ पुरव नवाणुंवार आव्यायी ॥ जगमां कीरती व्यापी ॥ हुंतो० ॥ ४ ॥ श्री आदिश्वर बीर्थाशु वंदी ॥ बीजा सर्व जुहारुजी ॥ नमीवीनमी काउसगीआ पासे ॥ जोई जोई आतम तारु ॥ हुंतो० ॥ ५ ॥ सांहमा गजवर खंधे बेठां ॥ भरत चक्रीनी माडीजी ॥ तीम सुनंदा सुमंगळा पासे ॥ प्रणमुं ते धन लाडी ॥ हुंतो० ॥ ६ ॥ मुळग भारामां जीनमुद्रा ॥ एकेऊंणा पंचासजी ॥ रंगमंडपमां पडीमा एशी ॥ वंदी भाव उल्लासे ॥ हुंतो० ॥ ७ ॥ चैत उपर चौमुख थाप्यो छे ॥ फीरती प्रतीमा वांणुंजी ॥ वळी गौतम गणधरनी ठवणा ॥ शी तारीफ वखांणुं ॥ हुंतो० ॥ ८ ॥ देहरा बाहीर फीरती देरी ॥ चोपन रुडी दीसेजी ॥ तेहमां प्रतीमा एकसो त्रांणुं ॥ देखी हीयडुंहीसे ॥ हुंतो० ॥ ९ ॥ नीलडी रायण तरुवर हेठल ॥ पीलडा प्रभुजीना पायजी ॥ पुजी प्रणमी भावना भावी ॥ उल्लटअंगनमाय ॥ हुंतो० ॥ १० ॥ तसपद हेठळ नागमोरनी ॥ मुरत बेहु सोहावेजी ॥ तसमुरपदवी सीधाचळना ॥ माहात्म मांही कहावे ॥ हुंतो० ॥ ११ ॥ सांहमा पुंडरीक स्वामी वीराजे ॥ प्रतिमा छवीस संगेजी ॥ तेहमां बोधनी एक जीनप्रतिमा ॥ टाळी नमीए रंगे ॥ हुंतो० ॥ १२ ॥ तीहांथी बाहीर उत्तर पासे ॥ प्रतिमा तेर देहारजी ॥ एक रुपानी अवर धातुनी ॥ पंच तीरथ छे बारु ॥ हुंतो० ॥ १३ ॥ उत्तर सनमुख गणधर पगलां ॥ चउदसयां बावननांजी ॥ तेहमां शांतिजिणंद जुहारु ॥ प्रुग्या कोट तेमनना ॥ हुंतो० ॥१४॥ दर्शीण पासे सहस कुटने ॥ देखी पाप पळायाजी ॥ एक सहस

त्री० ॥ ७ ॥ अष्टापद मंदीरमां जइने ॥ अवधी दोय तजिसरे ॥ च्यार आठ दस दोय नमिओ ॥ बीजा जिन चाळीसरे ॥ त्री० ॥८॥ शेठजी सुरचंदनी देहेरीमां ॥ नव जिन पडीमा छाजेरे ॥ धीआ कुंवरजिनी देहरिमां ॥ प्रतिमा त्रणवि राजेरे ॥ त्रि० ॥ ९ ॥ वस्तु-पाळना देहरा मांहीं ॥ थाप्या श्रीरीषभ जीणंदारे ॥ काउसगीआ वे एकत्रीस जीनवर ॥ संघवी ताराचंदरे ॥ त्री० ॥ १० ॥ मेरु सीखर नीठवणा मध्ये ॥ प्रतिमा वार भलेरीरे ॥ भांणा लींवडीआनी देहरीमां ॥ दस प्रतिमा जुओ हेरीरे ॥ त्री० ॥ ११ ॥ संघवी ताराचंद देवळ पासे ॥ देहरी त्रिण छे अनेरीरे ॥ तेहमां दस जीन प्रतिमा नीरखी ॥ थीर परणीत थइ मेरीरे ॥ त्री० ॥ १२ ॥ पांच भाइआना देहरा मांही ॥ प्रतिमा पांच छे मोटीरे ॥ बीजी तेत्रीस जीन पडीमाछे ॥ एह वात नहीं खोटीरे ॥ त्री० ॥ १३ ॥ अमदा-वादीनुं देहरु कहीए ॥ तेहमां प्रतिमा तेररे ॥ ते पछवाडे देहरी मांहीं ॥ प्रगमुं आठ सवेरीरे ॥ त्री० ॥ १४ ॥ शेठ जगनाथजीए कराव्युं ॥ जीन मंदीर भले भावेरे ॥ तेहमां नव जीन पडीमां वंदी ॥ कवी अमृत गुण गावेरे ॥ त्रीभोवन तारण तीरथ वंदो ॥१५॥

ढाळ ४

तुमे पीळां पीतांबर पेहेर्याजी मुखने मरकलडे.

रायणथी ऊत्तर पासेजी ॥ तीरथना रसीआ ॥ जीनवर जीनधर ऊल्लासेजी ॥ मुज हइडे वसीआ ॥ आंकणी ॥ सहू भाख्यो जोइ सीर नांमीजी ॥ ती० मुज मनना अंतर जांमीजी ॥ मुज. ॥ १ ॥ जीन-[illegible] ॥ ति० तीम भरत बाहुबळी वंदोजी ॥ मुज.

दीशाएजी ॥ मुज० पांचसेंहेंसडसठ सुख कंदोजी ॥ ती० फीरता जीन सघळे वंदोजी ॥ मुज० ॥ ११ ॥ मुळकोटनां चैत्य नीहाळेजी । ती० एकसो पांसठ सरवाळेजी ॥ मुज० तीहां प्रभु सगवीस सेंहे वंदोजी ॥ ती० कहे अमृत चीर नंदोजी ॥ मुज० ॥ १२ ॥

ढाळ ५.

वात करो वेगळा रही वीसरांमीरे ॥ ए देशी.

इवे हाथीपोळनी वाहीरे वीसरांमीरे ॥ बे गोखे छे जीनराज ॥ नमुं सीरनांमीरे ॥ तेहथी दक्षीण श्रेणीए ॥ वी० कहुजीन घरजीननो साज ॥ नमु० ॥ १ ॥ कुमरनरींदे करावीओ ॥ वी० धन खरची सार वीहार ॥ नमुं० वाजनसीखरे वंदीओ ॥ वी० तीहुंतरजीनपरीवीर ॥ नमु० ॥ २ ॥ वळी धनराजने देहरे ॥ वी० प्रतिमा वंदु सातः नमुं० देहरे वर्धमांन शेठने ॥ वी० प्रतिमा सात वीख्यात ॥ नमुं० ॥ ३ ॥ सारवजी राधनपुरी ॥ वी० तेहनुं जीनघर जोय ॥ नमुं० तीहां पन्नर जीन दीपता ॥ वी० प्रणमी पातीक धोय ॥ नमुं० तेहनी पासे विराजता ॥ वी० मंदीरमां जीनचार ॥ नमुं० हाथी आगळ जोइए ॥ वी० अद्भुत रचना सार ॥ नमुं० ॥ ५ ॥ जगत शेठजीएकीओ ॥ वी० ग्रीणसीखरो प्रासाद ॥ नमु० तीहां पन्नरजीन पेखतां ॥ वी० मुज परणती हुइ आल्हाद ॥ नमु० ॥ ६ ॥ पासे भुवन जीनराजनुं ॥ वी० तीहां खट प्रतिमा धार ॥ नमु० मुर्च्छा उत्तारी कीयुं ॥ वी० तेहीरवाइ ए सार ॥ नमुं० ॥ ७ ॥ कुंवरजी ल्हाधा तणुं ॥ वी० दीपे देवळ खास ॥ नमु० तेवीस जीननुं थापीआ ॥ वी० सहसफण श्री पास ॥ नमुं० ॥८॥ सीमळ [illegible] छे ॥ वी० जुओ भुली वर्णीमां च्यार ॥ नमु०

वेलजी साहने देहरे ॥ मणमुं पांच जगीस ॥ भवि ॥ ४ ॥ नथमल आणंदजीए किधु ॥ जीनमंदिर सुविलास ॥ तिहां जइ पांच जीनेश्वर भेटे ॥ मेरे भवजंजाळ ॥ भवि ॥ ५ ॥ वधुसा परणिने देहरे ॥ अष्टादस जीनराय ॥ पासे देहरि चिनाइ बींबनां ॥ देश बंगाळा कहींया ॥ भवि ॥ ६ ॥ अती अदभुत जिन मंदिर रुडु ॥ लाधा वोहोरा केरु ॥ तिहां सत्तरजीन पडिमा वंदे ॥ तेहनुं भाग्य भलेरु ॥ भवि ॥ ७ ॥ सा. मीठाचंद लाधा जाणुं ॥ पाटण शेहरेना वासी ॥ जिनमंदीर सुंदर करी पडिमा ॥ पांच ठवी छे खासि ॥ भवि ॥ ८ ॥ गुणोत जयमलजीने देहरे ॥ चोमुख जइने जुहारु ॥ प्रतिमा दोय दिगंवर देहरे ॥ भुवने ॥ निरखी भाख्यु सारु ॥ ९ ॥ रिखभ मोदिए प्रसाद कराव्यो ॥ तिहां दस पडीमावंदो ॥ राजमीसाहना देहरा मांहीं ॥ भेटया सात जीणंदो ॥ भवि ॥ १० ॥ तिरथ शंघ तणो रखवालो ॥ यक्षकपरदि कहिए ॥ बीजी मातचक्केसरि वंदी ॥ सुखसंपत्ति सहु लहीए ॥ भवि ॥ ११ ॥ नांहानां मोहोटां भुवन मळीने ॥ बेंतालिस अवधारो ॥ संख्याए जिनजिनी पडिमा ॥ पांचसेंसोळ जुहारो ॥ भवि ॥ ॥ १२ ॥ इणिपेरे सघळां चैत्य मळीने नाही सुरज कुंड ॥ जयणाए सुचिअंग करिने ॥ पेहरो वस्त्र अखंड ॥ भवि ॥ १३ ॥ विधी पूर्वक सांमग्री मेली ॥ बहु उपचार संघाते ॥ नाभीनंदन पुजी सहु पूजे ॥ जीनगुण अमृत गावे ॥ भवि ॥ १४ ॥

ढाळ ७

भरत नृप भावशुंए ए देशी.

यांजु टुंक जुहारीएए । दावडीए चढी जोई ॥ नमोगीरी राजनेए आंकणी० पेहेलां ते अदभुद देखीए ॥ मुज मन अचरीज होय ॥

आंगणमांहे छे देहरांए ॥ श्री शांतीनाथनो देव ॥ नमो ॥ गुरुनो सारांसत्रीण नयुंए ॥ बीजे पंचासतुं जोय ॥ नमो० ॥ १४ ॥ मुळ कोट मांही दक्षिण दीसेए ॥ देहरी ग्रण छे जोड ॥ नमो ॥ तीहां सट प्रतीमा वंदीएए ॥ फळे अमृत मदमोड ॥ नमो० ॥ १५ ॥

ढाळ ८

एतो गेहेलो छे गीरधारीजी । एहने शुं कहीए । ए देशी.

उत्तर पुरब वीचले भागे ॥ देहरी ग्रण सोहायेरे ॥ हरखीने तेथानीक फरसी ॥ वरसी समता भावे ॥ एहने सेवोने ॥ हांरे तुमे सेवो सहु नरनार ॥ ए ॥ एतो सेवो एणे संसार ॥ ए ॥ एतो भव जल तारणहार ॥ ए ॥ आंकणी० ॥ १ ॥ तेहमांथी पश्चम सुधरो लग ॥ सुरी प्रमुख सुखदाइरे ॥ ईणे गेरी गीद्धां तेहनां पगलां ॥ वंदु सहस अढाई ॥ ए ॥ २॥ पासे मोहार ठाण वीराजे ॥ रंग मंडप दीसी च्याररे ॥ सेठ सवा सोमजीए कराव्यां ॥ करणी सीम उदार ॥ ए ॥ ३ ॥ अनंत चतुष्ट्य गुण नीपजावी ॥ सर्गमा च्यारे रुपरे ॥ परमेश्वर शुभ सगे थाप्या ॥ च्यार दीशाए अनुप ॥ ए ॥ ४ ॥ ते मुळ नायक रीखभ जीनेश्वर ॥ मांजा जीन बेसाडरे ॥ शुद्ध नीमीत्त कारण लहीए एवा ॥ हुं प्रणमुं त्रीण काळ ॥ उपर चोमुख छत्रीस जीनशुं ॥ देखी दुरीत नीकंदुरे ॥ चोवीस पट्टो एक मळीने ॥ चोपन प्रतीमा वंदुरे ॥ ए ॥ ६ ॥ सांहमा पुंडरिक स्वामी बेठा ॥ पुंडरिक परणा राजेरे । ए सम पर वंदी पहार देहरी ॥ तेहमां शुभ बीराजेरे ॥ ए ॥ ७ ॥ रीखभ प्रभुने पुत्र नवाणुं ॥ आठ भरत सुत गेरे ॥ एकगो आठ समय एक सीद्धा ॥ प्रणमुं तस पद रंगे ॥

तेम एह देरी दुरीत नीकंद ॥ मोहा मार्ग मणुने मंद राज ॥
आज ॥ ६ बावन देहरां पाळज फरतां ॥ जीन मंदिर शोभा करतां
राज ॥ आज तेहमां अभीत जिनेश्वरराया ॥ में प्रणमिने गुण गाया
राज ॥ आशुनांनां मोटां भुवन निहाळि. ॥ सगतिस गण्यां संभाळि
राज ॥ आज संख्या ए जीन प्रतिमा जाणीए ॥ पांचसेंनव्यासी
गणीए राज ॥ आज ॥ ८ ॥ ए तीरथ माळाशु वीचारी ॥ तुमे
जात्रा करो हीतकारी राज ॥ आज दर्शन पुजा सफळी थाए ॥
शुभ अमृत भावे गाए राज ॥ आज ॥ ९ ॥

ढाळ १०

मुने संभव जीनशुं प्रीत अवीहड लागीरे ॥ एदेशी ॥

तुमे सीद्धगेरीनां वेहु टुंक जोइ जुहारोरे ॥ तुमे शुल्य अनादीनों मुंवय ए भव आरोरे ॥ तुमे धरमी जीव संघात ॥ परणती रंगेरे ॥ तुमे करज्यो जात्रा सनाथ ॥ सुवीहीत संगेरे ॥ १ ॥ तुमे वावरज्यो एकवार । सचीत सहु टाळोरे ॥ करो पडी कमणां दोय वार ॥ पाप पखाळोरे ॥ तुमे धरज्यो सीळ सणगार ॥ भुमी संथारोरे ॥ अळु आंणे पाय संचार ॥ छहीरी पाळोरे० ॥ २ ॥ इम सुणी आगम रीत ॥ हीयडे धरज्योरे ॥ डरी सहहणा परतीत ॥ नीरथ करज्योरे ॥ आद्यः सम काळे जोय ॥ वीघन घणेरांरे ॥ कीधुं ते नीधुं सोय ॥ शुछे सवेरांरे० ॥ ३ ॥ एहीन नीशा जांण ॥ गुगुणा हरखोरे ॥ वळी तीरथनां अहीं ठांण आगे नीरखोरे ॥ देवकीना खटनंद । नमी प्रभुमगीएरे ॥ आतमशक्तेप्रमंद ॥ प्रदक्षणा करीएरे० ॥ ४ ॥ पेहेली ऊल्ल ग्वाल्लोळ ॥ भरी ते जळ्युंरे ॥

[illegible]रे ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
ऊ[illegible] हुय धार ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] देवारे ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मनु मुर्ती [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]रे ॥ १४ ॥ इणी [illegible] ॥ भावे भगतेंरे । [illegible]
[illegible] ॥ बोलेसे गुणदेरे ॥ [illegible] मंगळमाळ ॥ [illegible] घर-
रे ॥ वळी सुखसंपत सुर्वीसाळ ॥ [illegible] वरसेरे ॥ १५ ॥ तप
गच्छगयणदीणंद ॥ रुपे छाजेरे ॥ श्रीवीजय देवसुरींद ॥ [illegible]
दीवाजेरे ॥ रत्नवीजय तससीस ॥ पंडीतरायारे ॥ [illegible]
[illegible] ॥ तासपसायारे ॥ १६ ॥ कीधो एह अभ्यास ॥ अढार
चाळीसेरे ॥ ऊजळ फागुण मास ॥ तेरश दीवसेरे ॥ श्री वीमळा
चळचीत्त ॥ धरी गुण गायारे ॥ कहे अमृत भवीयण नीत ॥ नमो
गीरीरायारे ॥ कळस० इम तीरथमाळा ॥ गुणहवीसाळा ॥ वीमळ
गीरीवर राजनी ॥ कहे स्वपर हेते ॥ पुण्य संकेते ॥ एह जीनघर
साजनी ॥ तप गच्छगयण दीणंद गणधर ॥ वीजय जीणंद सुरी-
श्वरो ॥ रचीतास राजे ॥ पुन्य साजे ॥ अमृत रंग सुहंकरु ॥

अथ श्री आदी जीनने वीनंती.

श्री विनयवीजयजी कृत.

पांमीसुगुरु पसाअरे, सेत्रुंजा धणी, श्री रीसहेसरवीनवुंए
१ त्रीभुवन नायक देवरे, सेवक वीनती, आदीश्वर अवधारीए,
ए० २ शरणे आव्यो स्वांमीरे, हुं [illegible] रमां, वीरुए वयरीए
नडयो. ए० ३ तारी तारी मुज [illegible] कीसी कहुं भवी

[illegible] ॥ वीनवो सुरतम [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] भार ॥ [illegible] [illegible] । १३ ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] देनारे ॥ वदनी [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] ॥ ननु सुनो [illegible] ॥ पुरव [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ १४ ॥ इणां वरवीजयमाळ । पाने [illegible] । [illegible] [illegible] नीहाळ ॥ वीशेषे गुणशेरे ॥ म्हेने मंगळमाळ ॥ [illegible] [illegible] ॥ वधी सुखसंपत सुरीमाळ ॥ [illegible] [illegible] ॥ १५ ॥ तप गच्छगयणदीणंद ॥ [illegible] छाजेरे ॥ श्रीवीजय देवसुरींद ॥ [illegible] दीवाजेरे ॥ रत्नवीजय तसशीश ॥ पंडीतरायारे ॥ गुरुराज [illegible] मुनीश ॥ तासपसायारे ॥ १६ ॥ कीधो एह अभ्यास ॥ अढार चाळीसेरे ॥ ऊजळ फागुण मास ॥ तेरश दीवसेरे ॥ श्री वीमळा चळवास ॥ धरी गुण गायारे ॥ करे अमृत भवीयण नीत ॥ नमो गीरीरायारे ॥ कळस० इम तीरथमाळा ॥ गुणदवीसाळा ॥ वीमळ गीरीवर राजनी ॥ कहे स्वपर हेते ॥ पुण्य संकेते ॥ एह जीनवर साजनी ॥ तप गच्छगयण दीणंद गणधर ॥ वीजय जीणंद सुरीश्वरो ॥ रचीतास राजे ॥ पुन्य साजे ॥ अमृत रंग सुहंकरु ॥

अथ श्री आदी जीनने वीनंती.

श्री विनयवीजयजी कृत.

पांमीसुगुरु पसाअरे, सेत्रुंजा धणी, श्री रीसहेसरवीनवुंए १ त्रीभुवन नायक देवरे, सेवक वीनती, आदीश्वर अवधारीए, ए० २ शरणे आव्यो स्वांमीरे, हुं संसारमां, वीरुए वयरीए नडयो. ए० ३ तारी तारी मुज तातरे, वात [illegible] कहुं भवी

चीजो आवशे. ए० २४ वळी जांणो अरीहंतरे, एहने वीनती; करतां आवडती नथी. ए० २५ तो तेहज माहाराजरे, मुजने शीखवो; जीम ते वीर्धी शुं वीनवुं. ए० २६ मायताय वीण कुंणरे, प्रेमे सीखवे; बाळकने कहो बोलवुं. ए० २७ जो मुज जाणो देवरे, एह अपावन; खरडयो छे कळी कादवे. ए० २८ कीम लेऊ ओछंगरे, अंग भर्युं एहवुं; वीषयकषाय असोच श्युं. ए० २९ तो मुज करो पवीत्ररे, कहो कुण पुत्रने; वीण मावीत्र पखाळशे. ए० ३० कृपा करी मुज देवरे ॥ इहां लगे [illegible] थकी. ए० ३१ आव्यो हवे हजुररे, ऊभो थइ रह्यो; सांमुं शे जुवो नहीं. ए० २९ आदो माडी आजरे, बेठो बारणे; मावीत्र तुम्हे मनावशो. ए० ३३ तुमे छो दया समुद्ररे, तो मुजने देखी; दया नथी शे आंणता. ए० ३४ उवेखश्यो अरीहंतरे, जो आणीवेळा; तो माहरी शी परी थशे. ए० ३५ ऊभा छे अनेकरे, मोहादीक वयरी; छळ जुए छे माहरा. ए० ३६ तेहने वारो वेगेरे, देव दया करी; वळी वळी शुं वीनवुं ए० ३७ मरु देवनीजपायरे, वेगे मोकली, गज वेसारी मुगतीमां. ए० ३८ भरतेसर नीज नंद्ररे, कीधो केवली; आरीसा अवलोकतां. ए० ३९ अठांणुं नीज पुत्ररे, प्रतीबोध्या प्रेमे; सुझ करंतां वारीया. ए० ४० बाहुबलने नेटरे, नाण केवळ तुमे; स्वामी सामुं मोकल्युं. ए० ४१ इत्यादीक अवदातरे, सघळा तुम तणा; हुं जाणुंछुं मुळगा. ए० ४२ माहारी वेळा आजरे, मौन करी बेठा; ऊत्तरशे आपो नहीं. ए० ४३ वीतराग अरीहंतरे, समता सागरु; माहारां ताहारां शुं करो. ए० ४४ एकवार माहारामरे, मुजने सनमुखे; बोलावो सेवक